

24

27. 28. 29. 30.

31. 32. 33. 34.

35. 36. 37. 38.

39. 40. 41. 42.

43. 44. 45. 46.

47. 48. 49. 50.

51. 52. 53. 54.

55. 56. 57. 58.

59. 60. 61. 62.

63. 64. 65. 66.

67. 68. 69. 70.

71. 72. 73. 74.

75. 76. 77. 78.

79. 80. 81. 82.

83. 84. 85. 86.

87. 88. 89. 90.

91. 92. 93. 94.

95. 96. 97. 98.

99. 100. 101. 102.

103. 104. 105. 106.

107. 108. 109. 110.

111. 112. 113. 114.

115. 116. 117. 118.

119. 120. 121. 122.

123. 124. 125. 126.

127. 128. 129. 130.

131. 132. 133. 134.

135. 136. 137. 138.

139. 140. 141. 142.

143. 144. 145. 146.

147. 148. 149. 150.

151. 152. 153. 154.

155. 156. 157. 158.

159. 160. 161. 162.

163. 164. 165. 166.

167. 168. 169. 170.

171. 172. 173. 174.

175. 176. 177. 178.

179. 180. 181. 182.

183. 184. 185. 186.

187. 188. 189. 190.

191. 192. 193. 194.

195. 196. 197. 198.

199. 200. 201. 202.

203. 204. 205. 206.

207. 208. 209. 210.

211. 212. 213. 214.

215. 216. 217. 218.

219. 220. 221. 222.

223. 224. 225. 226.

227. 228. 229. 230.

231. 232. 233. 234.

235. 236. 237. 238.

239. 240. 241. 242.

243. 244. 245. 246.

247. 248. 249. 250.

251. 252. 253. 254.

255. 256. 257. 258.

259. 260. 261. 262.

263. 264. 265. 266.

267. 268. 269. 270.

271. 272. 273. 274.

275. 276. 277. 278.

279. 280. 281. 282.

283. 284. 285. 286.

287. 288. 289. 290.

291. 292. 293. 294.

295. 296. 297. 298.

299. 300. 301. 302.

303. 304. 305. 306.

307. 308. 309. 310.

311. 312. 313. 314.

315. 316. 317. 318.

319. 320. 321. 322.

323. 324. 325. 326.

327. 328. 329. 330.

331. 332. 333. 334.

335. 336. 337. 338.

339. 340. 341. 342.

343. 344. 345. 346.

347. 348. 349. 350.

351. 352. 353. 354.

355. 356. 357. 358.

359. 360. 361. 362.

363. 364. 365. 366.

367. 368. 369. 370.

371. 372. 373. 374.

375. 376. 377. 378.

379. 380. 381. 382.

383. 384. 385. 386.

387. 388. 389. 390.

391. 392. 393. 394.

395. 396. 397. 398.

399. 400. 401. 402.

403. 404. 405. 406.

407. 408. 409. 410.

411. 412. 413. 414.

415. 416. 417. 418.

419. 420. 421. 422.

423. 424. 425. 426.

427. 428. 429. 430.

431. 432. 433. 434.

435. 436. 437. 438.

439. 440. 441. 442.

443. 444. 445. 446.

447. 448. 449. 450.

451. 452. 453. 454.

455. 456. 457. 458.

459. 460. 461. 462.

463. 464. 465. 466.

467. 468. 469. 470.

471. 472. 473. 474.

475. 476. 477. 478.

479. 480. 481. 482.

483. 484. 485. 486.

487. 488. 489. 490.

491. 492. 493. 494.

495. 496. 497. 498.

499. 500. 501. 502.

503. 504. 505. 506.

507. 508. 509. 510.

511. 512. 513. 514.

515. 516. 517. 518.

519. 520. 521. 522.

523. 524. 525. 526.

527. 528. 529. 530.

531. 532. 533. 534.

535. 536. 537. 538.

539. 540. 541. 542.

543. 544. 545. 546.

547. 548. 549. 550.

551. 552. 553. 554.

555. 556. 557. 558.

559. 560. 561. 562.

563. 564. 565. 566.

567. 568. 569. 570.

571. 572. 573. 574.

575. 576. 577. 578.

579. 580. 581. 582.

583. 584. 585. 586.

587. 588. 589. 590.

591. 592. 593. 594.

595. 596. 597. 598.

599. 600. 601. 602.

603. 604. 605. 606.

607. 608. 609. 610.

611. 612. 613. 614.

615. 616. 617. 618.

619. 620. 621. 622.

623. 624. 625. 626.

627. 628. 629. 630.

631. 632. 633. 634.

635. 636. 637. 638.

639. 640. 641. 642.

643. 644. 645. 646.

647. 648. 649. 650.

651. 652. 653. 654.

655. 656. 657. 658.

659. 660. 661. 662.

663. 664. 665. 666.

667. 668. 669. 670.

671. 672. 673. 674.

675. 676. 677. 678.

679. 680. 681. 682.

683. 684. 685. 686.

687. 688. 689. 690.

691. 692. 693. 694.

695. 696. 697. 698.

699. 700. 701. 702.

703. 704. 705. 706.

707. 708. 709. 710.

711. 712. 713. 714.

715. 716. 717. 718.

719. 720. 721. 722.

723. 724. 725. 726.

727. 728. 729. 730.

731. 732. 733. 734.

735. 736. 737. 738.

739. 740. 741. 742.

743. 744. 745. 746.

747. 748. 749. 750.

श्रीकृष्ण जी का सा भा.
२ प्र. ९ का. ४ पर
श्रीकृष्ण

भा.
१

ॐ श्रीगणेशाय नमः यमिदंकारुणिकं शरणं गतोऽपि स होदरश्चापमदत्तं तमदमाशु हरिं परमाश्रये जनकजोक
मनंतसावकृतिं १ श्रीगोपीसकलार्थदेनिजपदं भोजेन मुक्तिप्रदं प्रोढं विज्ञवनेदं तमनघं श्रीदेवितेशसिना वंदे
चर्मकपालिकोपकरणैर्वैराग्यमोक्षात्परेनास्तीति प्रदिशंतं तं विपुलं श्रीकाशिकेशं शिवं २ यत्कृपालवमात्रेण मू
को भवति पंडितः वेदशास्त्रशरीरोक्तं वाणी बोधकं राभजे ३ कामादीदतदुपप्रचुरसुरनतप्राप्त्यभोऽपि प्रप्य श्री
गोरीनायकाभित्यकटनशिवगुमायं लब्ध्वात्मवोधः श्रीमहोपालगौमिः प्रकटितपरमादेतभासास्मितास्पृश्रीम
होविंदवाणीचरणकमलगोनिर्गतो देयशालिः ४ मोक्षपुण्यांकां श्रीकामात्पादतं यायसंदेवैरपि स्तुतं प्राप्त्वं संप्र
र्णं प्रकृष्टाय पुक्तं वायुज्ञेयमंत्रेनाधिपूज्यः श्रीशिवगमयोगिनः किंच शिवश्चासौ रामश्चेति स्तुता स्त्रा श्रीगोरीनाय
कपोरभटं प्रकटयति ते भोगरुभो लब्ध्वात्मवोधोपः श्रीमहोपालसरस्वतीभिस्तेरित्यर्थः श्रीशंकरभाष्यकृतं प्रणम्य
यासंदेहं सत्रकृतं च वचि श्रीभाष्यतीर्थपरदे सतस्यैवागजालवंधं छिदमभ्युपाये ५ अत्र भाष्यकदिनवाग्वृणाले
नयोबंधः जालवद्धर्षाणि मित्रपरमदे सानां केशः तत्राशकमभीष्टमुपायवचीत्यर्थः विस्तृतं यद्यवोदायामल
संयस्यमानं संध्यात्तदर्थं प्रारब्धभाष्यरत्नप्रभाभिधा ६ श्रीमच्छंरीरकं भाष्यं प्राणवाक्यशुद्धिवाच्यं इति श्रीम
मेसफलो गंगारक्षेदकं यथा ७ यदज्ञानं समुद्रतमिंश्च जालमिदं जगत् सत्यज्ञानं सत्त्वानं तं तददं वृत्तिर्भयं ८
रक्षतलस्वाध्यायो ध्यानं चरितं निष्ठाया न विधिना पीतं सागस्वाध्याये तद्विज्ञासस्वमोक्षं वृत्तः सविजिज्ञासितव्यः
आत्मा वा अरेदृष्टव्यः आतव्यरतिश्च वृणविधिरूपलभ्यते तस्यार्थः अस्तत्त्वकामेनादेतात्मविचारणववेदातवाकोः
कर्तव्यरतितेन कामेन नियमविधिना र्थादिज्ञात्वात्तत्प्रवृत्तिर्वैदिकानां पुराणादिप्राधान्यं वा निरस्यते इति वस्तु
मितिः तत्र कश्चिदिदं जन्मनिजन्मंतरेवानुष्ठितयत्तादिभिर्निर्गतं तं विमलं सातोस्य अवागविधेः कोविषयः किं फलं
कोधिकारीकः संबन्धः इति जिज्ञासते तं जिज्ञासुमुपलभ्यमानो भगवान्वादयथाः तदनुबंधं च तदुपेयं च वृणत्सक
पणस्तारं प्रयोजकं व्यापेन निर्णेतुमिदं सत्त्वं च योचकार श्रीम अथातो वसतितासिति नन्वनुबंधं ज्ञातं विधि
संनिदिताथवादवाकोरेवज्ञातं शकं तथादि तद्यथैदं कर्मचिन्तो लोकः लीयते एवमेवामत्र प्राप्य चिन्तो लोकः

यामते अवरो विधिर्नास्ति तेषां मविदित प्रवणो धिकार्यादि निर्माणानपेक्षणात्सुत्रं व्यर्थमित्या पतति रन्य
लेप्रसंगेन तथाचास्पृश्यसूत्रस्य अवरो विध्यपेक्षिनाधिकार्यादिश्रुतिभिः स्वार्थनिर्णयायो न्यायितत्वादेतदे
त्वमद्भावः श्रुतिसंगतिः शास्त्रारम्भरेत्वनबंधनिर्णयकत्वेनोपोह्यतन्वातशास्त्रादौ संगतिः अधिकार्यादिश्रु
तीनां स्वार्थसमन्वयोक्तेः समन्वयाध्यायसंगतिः एतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यसंज्ञात्मा तत्त्वमसीत्यादिश्रुती
नां सर्वात्मत्वादिस्यष्टब्रह्मलिङ्गानां विषयद्वयसमन्वयोक्तेः पादसंगतिः एवं सर्वसूत्राणां क्रमार्थनिर्णयक
त्वात् श्रुतिसंगतिः ततश्च ध्यायेत ज्ञानादेव समाप्तप्रमेयत्वेन संगतिरुद्धनीया प्रमेये च कृत्स्नशास्त्रस्यैव
स अध्यायानां समन्वयाविरोधापादनफलानि तत्र प्रथमपादस्य स्यष्टब्रह्मलिङ्गानां समन्वयः प्रमेयः
द्वितीयत्वं तीर्थयोरस्यष्टब्रह्मलिङ्गानां चतुर्थपादस्य षडमात्रसमन्वय इति भेदः अस्याधिकरणस्य प्राथम्यात्त्रा
धिकरणसंगतिरपेक्षिता अथाधिकरणमारभ्य ते आतव्य इति विहितप्रवणोक्तकवेद्यं तमीमांसाशास्त्रं
विषयः तत्किमारब्धव्यं न वेति विषयप्रयोजने संभवासंभवाभ्यां संशयः तत्र नाहं ब्रह्मेति भेदश्चादिपत्यदे
एककर्तृत्वाकर्तृत्वादिविरुद्धधर्मवत्त्वलिङ्गाका नमानेन च विरोधेन ब्रह्मात्मनो रेकास्यासंभवात् सत्यबंधस्य
ज्ञानात्रिवृत्तिरूपफलासंभवाच्चारंभाणीयमिति शास्त्रे सिद्धान्तः अथातो ब्रह्मजिज्ञासेति अत्र अवरो विधिस्त
मार्थत्वाय कर्तव्येति पदमध्यादत्तं च अध्यादत्तं च भाष्यकृता ब्रह्मजिज्ञासाकर्तव्येति तत्र प्रकृतिप्रत्ययार्थ
योः ज्ञाने छयोः कर्तव्यत्वात् नन्वयात् कृत्या फलीभूतं ज्ञानमजदस्य ज्ञानायोच्यते प्रत्ययेनेच्छा साध्यावि
चारो जहलक्षणया तथाच ब्रह्मज्ञानाय विचारः कर्तव्य इति सूत्रस्य श्रोतार्थः संपद्यते तत्र ज्ञानस्य स्वतः फ
लत्वायोगात् प्रमादत्वकर्तृत्वभोक्तृत्वात्मकानर्थनिवर्तकत्वेनैव फलत्वं वक्तव्यं तत्रानर्थस्य सत्यत्वे
ज्ञानमात्रात्रिवृत्त्योगादध्यस्तत्वं वक्तव्यमिति बंधस्थाध्यस्तत्वमथात्सचितं तच्च शास्त्रस्य विषयप्रयोज
नवत्वमिदं हेतुः तथाहि शास्त्रमारब्धव्यविषयप्रयोजनवत्वात् भोजनादिवत् शास्त्रप्रयोजनवत्

लीयत इति श्रुत्या यत्कृतं तदनिवृत्तिरिति न्यायवत्त्वात् न जायते स्मियते वा विपश्चित् यो वै भूमा तदस्मत् अतो मदाते
 इत्यादि प्रमाच भूमात्मानि न्यः ततो न्यदनिवृत्तिरिति विवेको लभ्यते कर्मण कृष्णादिना चितः संपादितः सस्यादि
 लोको भोष्य इत्यर्थः विपश्चित् नित्यज्ञान स्वरूपः परीक्ष्य लोकात्कर्म चित्तात्मा स्यात्ते निर्वेदमायां त्रास्य कृतः कृतो
 न आत्मनस्तत्कामाय सर्वे प्रिये भवतीत्यादि श्रुत्या नात्ममात्रे वैराग्यं लभ्यते परीक्ष्या नित्यत्वेन निश्चिन्त्या कृतो
 मोक्षः कृतेन कर्मण नास्तीति कर्म तत्फलं भो वैराग्यं प्राप्तवानित्यर्थः शांते दांत उपरत स्मिति तः अस्मा चित्तं भ
 त्वेति श्रुत्या शमादिषु हेतुभ्यते समादितो भूत्वेति का एव पाठः उपरति संन्यासः न च पुनरावर्तते इति स्वयं ज्ञेयं
 रानेदात्त कर्मोदात्त स्यात् नित्यत्व श्रुत्या मुमुक्षात् लभ्यते तथा च विवेकादिविशेषणवानधिकारीति ज्ञाते शक्यं य
 यमेयता राज्ञी रुषयतीति राज्ञि सत्रविधौ प्रतिष्ठेतीत्यर्थं वादस्य प्रतिष्ठा कामस्तदुत तथा चोत चरति प्रत्यया
 र्थस्य योगस्य प्रकृत्यर्थं विचारो विषयः विचारस्य वेदांता विषय इति शक्यं विज्ञाते आत्मादष्टम्य इत्यहेता
 त्मदर्शनमुद्दिश्य श्रुतं चरति विचारविधानात् तन्न विचारः साक्षादर्थानेदेतः अप्रमाणात् न अपि प्रमाणा
 विषयत्वेन प्रमाणा चाहेतात्सनिवेदांता एव ततोपनिषदं प्रकृत्य वेदांतं विज्ञानं सुनिश्चिता र्था इति श्रुते वै
 दांता नोच प्रत्यक्षं तत्त्वमसि अद्वैतमाप्नोति श्रुतेः एवं विचारविधेः कलमपि ज्ञानं ह्यभा
 मुक्तिः तदतिशोकमात्मवित्तं ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवतीति श्रुतेः तथा संवेधोपधिकारिण विचारस्य कृतं य
 तारूपः कलस्य प्राप्य तारूप इति यथायोगं सुबोधः तस्मादिदं सूत्रं बाधमिति चेत् न तासां अधिकार्यादि श्रु
 तीनां सार्थता तस्य निर्णयकत्वात् सत्राभावे किं विवेकादिविशेषणवानधिकारी उता न्यः किं वेदांताः
 पूर्वतंत्रेण गता र्था गता र्था वा किं ब्रह्म प्रत्यगभिन्नं वा किं मुक्तिः स्वर्गादिव लोकांतरमात्मस्वरूपा
 वेति संशयानि हन्ते तस्मादागमवाक्ये रापातप्रतियोगाधिकार्यादि निर्णयार्थं मिदं सूत्रमावश्यकमि
 ति तदुक्तं प्रकाशान्मजी चरमोः अधिकार्यादीनामागमिकत्वे पि न्यायन निर्णयार्थं मिदं सूत्रमिति चे

निरु
 हि

भा
३

चो शास्त्रसाधुत्वेण साधुत्वात् नमदंकाराद्यनात्मनोऽयमिति प्रत्ययविषयत्वमस्तीति चेन्न गोचरपदस्य योग्य
त्वपरत्वात् चिदात्मात्मावदस्यत्यस्ययोगः तस्य युक्तसंशयादिनिवृत्तिफलभाक्त्वात् न तावदयमेकांतेनावि
षयः अस्मत्प्रत्ययविषयत्वादिति भाष्योक्तेश्च यद्यप्यदंकारादिरपि तद्योग्यस्तथापि चिदात्मनः सकाशादने
तभेदसिध्यर्थं युष्मत्प्रत्यययोग्यस्य चेतोऽप्यमश्रीचरणस्तटीकायां जनापामेवमाहुः संबोधयेत नो युष्म
त्प्रत्ययः अदंकारादिविशिष्टचेतनोऽस्मत्प्रत्ययः तथा च युष्मदस्य दोः स्वार्थं प्रयुज्यमानयोरेवत्वमादेश
नियमोऽस्मत्प्रत्ययस्य न तावत्प्रत्ययः युष्मदस्य दोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वा नावाविति सूत्राभावात्
तत्प्रसंगात् अत्र शास्त्रलक्षकयोरिव चिन्मात्रजडमात्रलक्षकयोरपि नत्वमादेशः लक्षकत्वाविशेषादिति
यदितयोः शाब्दबोधकत्वे सत्येवत्वमादेशाभाव इत्यनेन सूत्रेण ज्ञापितं तदास्मिन् भाष्ये युष्मत्प्रत्ययेन युष्मच्छब्दस्य

युष्मदस्यत्यस्य गोचरयोर्विषयविषयिणोऽस्मत्प्रत्ययः प्रकाशवद्विरुद्धस्वभावयोरितरेतदभावात् नपपत्तौ सिद्धि

3

न्यप्रत्यययोगः परागर्थात् लक्ष्यते अस्मच्छब्देनास्मच्छब्दस्य प्रत्यययोगः प्रत्यगात्मा तथा च लक्षणावच्छेदकत
याशास्त्रापि बोधयति नत्वमादेशः न च पराकत्वप्रत्यययोरेव लक्षणावच्छेदकत्वेन शाब्दयोग्यत्वोपपत्तौ
दिति वाच्यं पराकत्वाच्च विरोधस्तु राग्यर्थविरुद्धशाब्दयोग्यत्वस्यापि वक्तव्यत्वात् अतएव दमस्यत्यस्य गो
चरयोरिति वक्तव्येपीदं शाब्दोऽस्मदर्थत्वे के वैदेच बहूशः इमेव यमास्मदेदु मे विदेहाग्रयमदमस्मीति च प्रयो
गदर्शनात् नास्मच्छब्दविरोधीति मत्वा युष्मच्छब्दः प्रयुक्त इदं शाब्दप्रयोगे विरोधास्तर्तः एतेन चेतनवा
चित्वादस्य च्छब्दः पूर्वप्रयोजकः अभ्यर्तितं हि पूर्वमिति स्यात् तदादीनि सर्वानित्यमिति सूत्रेण विहितं
कशेषश्रुत्यादिति निरस्तं युष्मदस्य दोरिति सूत्र इव अत्रापि पूर्वनिपाते कशेषयोर्मप्राप्त्येकशेषे विवक्षित
विरोधास्तर्तेश्च बृहत्स्य युष्मदस्य दोरिति सूत्रेण विहितं कशेषयोर्मप्राप्त्येकशेषे विवक्षित
हाद्योतयितुं आदौ युष्मदुदाहृतमित्याहुः तत्र युष्मदस्य दाम्भा पराकत्वकनात्मानात्मनो वस्तुतः विरोध

३

वंधनिवर्तकहेतुत्वात् रज्जुरियमित्यादिवाक्यवत् वंधोत्ताननिवर्तः अधस्तत्वात् रज्जुसर्पवदिति प्र
 योजनसिद्धिः एवमर्थाद्भूतज्ञानान् जीवगतानर्थभूमिनिवृत्तिफलसंज्ञयजीववृत्तणैरेकविषयमप्यर्थ
 तत्त्वयति अन्यज्ञानादन्यत्रभूमिनिवृत्तेः जीवोद्भवमभिन्नः तद्ज्ञाननिवर्तकध्यासाप्रयत्नात् यदित्येतत्तथायथा
 शुक्तमभिन्न इदमंश इति विषयसिद्धिहेतुरध्यास इत्येवंविषयप्रयोजनवत्वात् प्रणस्यमानभाषीयमिति अत्र सर्वपक्षे
 वंधस्य समत्वेन ज्ञानादनिवृत्तेरुपायांतरसाध्यासमुक्तिरिति फलं सिद्धांतज्ञानादेवमुक्तिरिति विवेकः एतत्सर्ववृद्धि
 निधाय च सत्त्वज्ञाणि व्याख्यातकां मोभावाभाषाकारः सूत्रेण विचारकर्तव्यतारूपश्रोतार्यमपानुपपत्तार्थान्
 सूत्रितं विषयप्रयोजनवत् उपाह्वानत्वात् सिद्धिहेतुध्यासमात्रेण समाधानभाषाभाषाप्रथमं बाणयति युष्मद
 स्मात्प्रत्ययगोचरयोरिति एतेन सूत्रार्थाप्यर्थित्वात् अध्यासप्रथमं न भाष्यमिति निरस्तम् आधिकार्यस्यार्थित्वा
 त यत्तमेगत्वाचरणभावादव्याख्यायामिदं भाष्यमिति तत्र सत्त्वमित्येतत्तभावात् न पपत्तिरित्येतत्तभाष्यरचनायं
 तदर्थस्य सर्वोपसवरदित्वात् न च प्रत्ययार्थस्य तत्त्वस्य सत्त्वत्वात् अतो निर्दोषत्वादिदं भाष्यं व्याख्येयं लोकेषु
 तौ इदं रज्जुतमिति भूमः सत्त्व रज्जुत इदं रज्जुतमित्यपि ह्यनसामान्यारोप्य विशेषयोरैकप्रमादितसंस्कारजन्यो
 रदृष्टिः अत्राप्तात्मनो नात्मादंकाराध्यासे पूर्वप्रमावाच्यासाचात्मानात्मनोर्वास्तवेकमयेतत्तदितदस्ति
 तयादि आत्मा नात्मा नावैकप्रत्ययपरस्परैकाग्र्यत्वात् तमः प्रकाशवदिति मत्वा देलभतं विरोधं वस्तुतः
 प्रतीतिर्नो व्यवहारतश्चाथयति युष्मदस्मात्प्रत्ययगोचरयोरिति न च प्रत्ययोत्तरपदयोश्चेति सूत्रेण प्रत्यये
 चोत्तरपदे च परतो युष्मदस्मादोर्मपर्वतस्य त्वमादेशोस्त इति विधानात् त्वदीयेमदीयेत्वत्प्रोमत्प्रतिवत्
 त्वन्मत्प्रत्ययगोचरयोरिति स्थादित्वाच्च त्वमावेकवचन इत्येकवचनाधिकारात् अत्र च युष्मदस्मात्प्रत्यये
 योरैकार्थवाचित्वाभावादनात्मनो बहुत्वात् अस्मादर्थ्यैतन्मत्प्रत्ययप्रकाशितो बहुत्वात् नन्वेवं सति कथमत्र
 भाष्यविग्रहः न च ययमिति प्रत्ययो युष्मत्प्रत्ययः वयमिति प्रत्ययो स्मात्प्रत्ययः तद्गोचरयोरिति विग्रह इति वा

ति भासमानवुच्चादेक्यमिदमर्थं नमिन्नत आद विषयस्येति साक्षिभास्यस्येत्यर्थः साक्षिभास्यत्वरूपलक्षणयोगा
दुच्चादेर्द्येदिवदिदमर्थं न प्रतीतिभासजतिभावः अथवायदात्मनोमात्रासर्वानतरत्वरूपप्रत्यक्षत्वं प्रतीतिवमदेवसा
म्योतिव्यवहारयोगचरत्वे चोक्तं तदसिद्धमर्थमिति प्रतीतिमानत्वात् अदेकारवदित्याशंकाह अस्मत्प्रत्ययगोचररति अ
स्माच्चासौ प्रत्ययश्चासौ गोचरश्च तस्मिन्निर्णयः अदेवतिव्यवहारस्य स्वरूपविषयत्वं वादेतः आद्यदृष्टोत्तेदेतमिद्विः
द्वितीयतुयत्वेतदसिद्धिरित्यात्मनोमुख्यप्रत्यक्षदियुक्तमिति भावः न च यदात्मनोविषयित्वं तदसिद्धमनभवामीति
प्राप्तवत्वात् अदेकारवदित्यत आद विषयिणीति वाच्यत्वं लक्षणात्वादेतुः नायः पक्षे तदसिद्धेः नायः दृष्टान्तदेक
त्वादिति भावः देहजानामीति देहादेकारयोः विषयविषयित्वेपिमनुष्यादमित्यभेदाध्यासवत् आत्मादेकार्यारण्य
ध्यासः स्यादित्यत आद चिदात्मक इति तयोर्ज्ञात्यात्मध्यासादृश्यादध्यासेपि चिदात्मन्यनवस्त्रिजज्ञात्यादेकारादेना
ध्यास इति भावः अर्हमिति भास्यत्वादात्मवददेकारस्यापि यत्प्रत्यक्षदिकमात्राभवत्ततः प्रतीतिपरात्काद्यमिद्विरित्याशंका
ह पुष्पादिति अदेवतिभास्यत्वमदेकारेनास्ति कर्तृकर्मत्वविरोधात् चिदात्मत्वं चिदात्मनि नास्तीति देहत्वमिद्विः अता
तद्विपर्ययेण विषयिणास्तदुच्चादेर्मात्रेण च विषये ध्यासो मिथ्येति भवितुं युक्तं तथाप्यन्यात्पस्मिन्नान्यात्मकतामन्योन्यधर्मो
आध्यास्यतेतराविवेकेनात्मनोविचिक्तयोर्धर्मधर्मिणोर्मिथ्याज्ञाननिमित्तः सत्यान्तेमिथुनीकृत्यादमिदममदमिति नै
सर्गिकोयलोकव्यवहारः

उच्चादेः प्रतीतिभासतः प्रत्यक्षेपि परात्कादिकमेव मुख्यमिति भावः पुष्पात्परात्काच्चासौ प्रतीत्यत
इति प्रत्ययश्चासौ करत्वादित्यवधारणचरश्च तस्येति विग्रहः तस्य देयत्वार्थमाह विषयस्येति विज्ञबन्धने विषयोतिवभातिरिति
विषयः तस्येत्यर्थः आत्मन्यनात्मतदुच्चादेर्मात्रेण च विषये ध्यासो मिथ्या भवत्तदुच्चादेर्मात्रेण च विषये ध्यासः किं न स्यात् अदेवत्पराभिस्वावीत्याद्य
नुभवदित्याशंकाह तद्विपर्ययेणेति तस्मादनात्मनोविषययोर्विरुद्धत्वभावश्चेतन्यरत्वेभावे ततोयाचेतन्यात्मनोविष
यिणः तदुच्चादेर्मात्रेण च योदेकारादो विषये ध्यासः समिथ्येति नास्तीति भवितुं युक्तमध्याससामग्र्यभावात् न घञश्च प्रमा
संस्कारः सादृश्यमज्ञानेवास्ति निरवयवनिर्गण्यत्वात् प्रकाशान्तिगुणवयवसादृश्यस्य चान्नस्य चापेरात् नन्वात्मनोति
गणत्वेतदुच्चादेर्मात्रेण मिति भाष्यकथमिति चेदुच्चात्त उद्दिष्टत्वमिथ्यत्वं चेत्तन्मज्ञानेविषयाभेदेनाभिवाक्तस्य राणो शुभकर्म
जन्यवृत्तिवत्तमानदेरत्वेव ह्यपाधिकृतभेदात्तजानादीनामात्मधर्मत्वव्यपदेशः तदुक्तेटीकाया आनेदाविषयानुभवा

उक्तः प्रत्ययपदेन प्रतीतिविरोधः प्रतीत्यतिप्रत्ययोहंकारादिरनात्मादृश्यतयाभातिआत्मातप्रतीतित्वात्प्रत्ययः स्वप्रका
 शानयाभाति गोचरपदेन व्यवहारतोविरोधः उक्तः पुष्पादर्थः प्रत्यगात्मनि रस्कारेण कर्तारमित्यादिव्यवहारगोचरः अस्मद
 येत्तनात्मप्रवित्तापनेनाद्वैतमित्यस्य हारगोचर इति त्रिधा विरोधः स्फुटीकृतः पुष्पाद्यास्य च पुष्पादस्मदीतेष्वप्यत्र प्रत्यये च
 नो गोचरो चेति पुष्पादस्मदस्य प्रत्ययगोचरो तयोक्तिर्याविरुद्धत्वाद्येति तरेतरभावात्संताभेदस्तादात्म्यवानदनुपपत्तौ सि
 द्धापामित्यन्वयः एकासंभवे पितृकोट इत्यादिव तादात्म्य किंनस्यादित्यत आदिविषयविषयिणोरिति चिन्तयौविषय य
 विषयित्वादीपचटयोरिव न तादात्म्यमिति भावः पुष्पादस्मदीपराज्यमवस्तुनोतेष्वप्यत्र प्रत्ययश्च गोचरश्च इति वाविग्रहः अ
 त्रप्रत्ययगोचरपदाभावात्तादात्म्यनोः प्रत्ययकाराभावे चिदचित्ते देत रुक्तः तत्र देतमाह विषयविषयिणोरिति अना
 त्मनोप्राप्तत्वादचित्त्वात्मानवस्तुत्वादकत्वाचित्त्वाच्च अचित्तेन स्य स्वतन्त्र इत्येकमेकदेत्वविरोधेनासंभवात् अप्रत्य
 तापतेरित्यर्थः यथेष्टत्वादेतदेतमद्वावः नन्वेवमात्मानात्मनोः पराकात्म्यत्वेन चिदचित्तेन ग्राहकत्वेन च विरो

तदुर्माणां मपि सुतरां सितरेतरभावात्तदप्यतिरिक्ततोऽस्मत्प्रत्ययगोचरे विषयिणि चिदात्मके पुष्पात्प्रत्ययगोचर

धानमः प्रकाशवदैकस्यादात्म्यस्यावानुपपत्तौ सत्यांतत्यमित्यभावेऽपि तदुर्मा ॥ स्पष्टविषयस्य तदुर्मासंवाध्यासः
 एतच्चैतन्यसात्वताशुःखादीनां विनिमयेनाध्यासोक्तिस्तदुर्माणां मपीति तयोरात्मानात्मनोः धर्मास्तदुर्मास्तेषा
 मपीतरेतरभावात्तदप्यतिः इतरत्र धर्म्यतरेतरेषां धर्माणां भावः संसर्गः तस्यानुपपत्तिरित्यर्थः नदिधर्मिणोः संसर्गविनाश
 माणां विनिमयोक्तिस्फटिकेलेहितवस्तुसंनिधानात्लोहितवर्णमसंसर्गः असंगतधर्मिणोः केनाप्यसंसर्गात् धर्मिसंस
 र्गपूर्वको धर्मसंसर्गः कुतस्तस्य भिद्येत्याह सुतरांमिति नन्वात्मानात्मनोस्तादात्म्यस्य तदुर्मासंसर्गस्य चाभावेऽप्यध्यासः
 किंनस्यादित्यत आह इत्यत इति इत्युक्तरीत्या तादात्म्याद्यभावेन तत्प्रमाया अभावादतः प्रमाजन्य संस्कारस्याध्यासहेतो रभा
 वादध्यासोपपत्तिरिति भवितुं युक्तमित्यन्वयः मिथ्याशब्दोऽर्थः अप्रत्यक्षवचनो निवेचनीयतावचनमेतच्च अप्रत्यक्षवचनार्थः ननु कु
 त्रकस्याध्यासोपपत्त्यत इत्याशङ्क्यात्मन्यनात्मतदुर्माणां मप्यासां निरस्यत इत्याह अस्मात्प्रत्ययगोचर इत्यादिना अहमिति प्र
 त्ययगोचरत्वेऽप्यसंभवेऽप्यस्तीति सत्यात्तत्तत्तात्मानो विवेचयति विषयिणीति पुष्पादिस्मादिति तर्थाः साचित्ते देतु चिदात्मक
 इति अहमिति भासमाने चिदंशात्मनीत्यर्थः पुष्पात्प्रत्ययगोचरस्येति त्वंकारेण प्रत्यये दमर्थेऽप्येति यावत् नन्वहमि

कोद्याध्यासः तद्विषयो वावदोरोभिमान इति ज्ञानाध्यासो दर्शितः द्विविधाध्यासस्वरूपलक्षणमाह अन्यासस्मि
 त्रित्यादिनाथर्मधर्मिणो रित्यनेन ज्ञायते तस्यादिधर्मिणा धर्मिणा वदेकरात्मानोत्तयोरत्यंतभिन्नो रित्यनेन
 भेदाद्यदेणान्येन स्मिन्ननेन तादात्म्यमन्येन धर्मिणा च तादात्म्यस्य लोकावधार इति योजना अतः साय
 मिति प्रमायानाध्यासत्वं तद्विदमर्थयोः कालभेदेन कल्पितभेदेणान्तभेदाभावादिति वक्तुमर्हते न च ध
 मिनादात्म्याध्यासे धर्मिणा सांसिद्धेर्धर्मि श्रुतिवर्धमिति वाच्यं अधत्वादीनामिद्विधधर्मिणा धर्मिणा साभ्युदने
 यं धोदमिति सुदोधास इति तापनार्थत्वात् नन्वात्मानात्मनोः परस्परार्थस्त्वेषु न वादः स्यादित्याशङ्काद्
 समानतेमिधुनीकृत्येति सत्यमनिदेचेतन्येन तस्यानात्मनि संसर्गमात्राध्यासो न स्वरूपस्य अन्तर्गुह्यदर्थः
 तस्य स्वरूपनाथध्यासात् तयोर्मिधुनीकरणस्य सासृतिश्च न्यते तथैः नन्वाध्यासमिधुनीकरणलो
 कवावधारशब्दानामेकार्थत्वे ध्यासमिधुनीकृत्येति पूर्वकालत्वे वाचित्वाप्रतपादेशस्य त्यपः कथं प्रयोग
 इति चेत्त्र अध्यासव्यक्तिभेदात् तत्र पूर्वपूर्वाध्यासस्यान्तरोत्तराध्यासप्रतिसंस्कारद्वारा सर्वकालत्वेन देतत्
 योतनार्थत्वाप्यपाराः तदेव स्पष्टमिति नैसर्गिकरति प्रत्यागत्सनिदेतदेतमज्ञावेनाध्यासप्रवाहनादिरित्यर्थः
 तत्र प्रवादस्यावस्तुत्वादध्यासव्यक्तौ नासादित्वात्कथमनादित्वमिति चेदुच्यते अध्यासत्वावच्छिन्नव्यक्तौ नाम
 धन्यतमयासात्ताविना नादिकालस्यावर्तने कार्यानादित्वमित्येगीकारात् एतेन कारणभावादितिकल्पानि
 रस्तः संस्कारस्य निमित्तस्य नैसर्गिकपदेनोक्तत्वात् न च पूर्वप्रमाणन्यएव संस्कारो देतोरिति वाच्यं लाघवेन प्र
 वानुभवजन्यसंस्कारस्य देतत्वादतः पूर्वोपासजन्यः संस्कारोत्तीतिसिद्धे अध्यासस्योपादानमाह मिथ्याज्ञाने
 निमित्त इति मिथ्याचतुदत्ताने चेति मिथ्याज्ञाने तन्निमित्तस्तदुपादानं यस्य स तन्निमित्तस्तदुपादान इत्यर्थः
 अज्ञानस्योपादानत्वेपि संस्कारदात्मतत्वावरकतया दोषत्वेनादेकराध्यासकर्तरीश्वरस्यापाधित्वेन संस्कारका
 लकर्मादेनिमित्तपरिणामित्वेन च निमित्तत्वमिति द्योतयितुं निमित्तपदे स्वप्रकाशात्मन्यसंरोक्यमविद्या
 संसर्ग इति शङ्कानिरासार्थमिथ्यापदं प्रवेष्टुमर्हत्तुमंडलेपे च कानुभवसिद्धांधकारवत् अहमज्ञानं न भवसि
 द्धमज्ञाने इत्यनेन वेकल्यतस्यापि घृष्टानां स्थित्वात् नित्यस्वरूपज्ञानस्याविरोधित्वाच्चेति यदज्ञानं ज्ञानाभि
 वदति शङ्कानिरासार्थमिथ्यापदं मिथ्यात्वे सति साक्षात्ज्ञाननिवर्तनं तन्मज्ञानस्य लक्षणा मिथ्याज्ञानपदेनोक्त
 तानेनेच्छापराभावः साक्षात्प्रवर्तन इति वदंते प्रतिमिथ्यात्वे सतीत्यक्तं अज्ञाननिहेति हाराज्ञाननिवर्तनं वेधे

नित्यत्वेनेतिसेतिथीः अथत्वेनेतिथीः अथत्वेनेतिथीः अथत्वेनेतिथीः अथत्वेनेतिथीः अथत्वेनेतिथीः
 ध्यासत्वायोगात्मात्वेसमत्वेवादेनवसितिसामानाधिकरण्यस्यगोणत्वमितिमतमास्पृश्येतथाचतुर्थस्यसत्यतयाज्ञानात्रिहृति
 रूपफलसंभवात्तद्वहमुक्तयोर्जीवज्ञानादौवैकल्याणैक्यायोगेनविषयासंभवाच्चरन्तरेभारतीयमितिप्रत्यक्षभाष्यतात्पर्ययुक्तप्रदण
 त्वत्वेपक्षस्यइवेत्येवमुच्यते तथाहि किञ्चाध्यासस्यनास्तित्वमयुक्तत्वात् अभावाद्वाकारणभावाद्वा आद्यइष्टस्यादे तथा
 योति एतदनुरोपादादौयद्यपीतिपादितव्यं अथास्यस्यसंगत्याकाशस्यन्ययुक्तंअलंकारवतिभावः नहितीयस्यादे अ
 यमिति अतःकर्तामनुष्यादमितिप्रत्यक्षानुभवात् अथास्यस्यभाजनसिद्धमित्यर्थः नचदेप्रत्यक्षकदेत्वादौप्रमेतिवा
 च्यं अपौरुषेयतयातिदीपेणपञ्चक्रमादिनिर्गवधृततात्पर्येणचतुस्त्वमस्यादिवाक्येनाकर्तृत्वसंबोधनेनास्यभूमत्वनिश्चया
 त नचमेष्टप्रत्यक्षविरोधादागमज्ञानस्यैववाधरतिवाच्यं देहात्मवादप्रमेणात् मन्येष्टादमितिप्रत्यक्षविरोधेनाप्याप
 मशरीरस्यादिप्रत्यादेहात्म्यासिद्धेः तस्यादिदेवतमितिचित् सामानाधिकरण्यप्रत्यक्षस्यभूमत्त्वशक्यकलेकितस्य
 नागमात्मावत्त्वमित्याख्यं किञ्चनेष्टत्वंपूर्वभाविस्त्वा आगमज्ञानेप्रत्यक्षजीवत्वेवासाधेनयावत्त्वज्ञेष्टस्यापिरततभूम
 स्पष्टाज्ञाविशुक्तिकात्तानेनवाधदर्शनात् नहितीयः आगमज्ञानात्तत्त्वतौप्रत्यक्षादिमूलवृद्धव्यवहारेचसंगतिप्रदहा
 राण्यलोपलब्धिद्वाराचप्रत्यक्षादेर्वहारिकप्रामाण्येणयत्जीवत्वेपितात्विकप्रामाण्यस्यानपेक्षितत्वात् अनपेक्षितो
 शास्त्रागमेनवाधसंभवादिति यत्तुदण्डिकयागस्यअतिवृत्तात्कालांतरभाविफलदेतत्त्ववतथाविहात्रामरुणादिसुक्त
 इतिप्रतिबलान्सात्त्वस्यापितानात्रिहृतिसंभवादध्यासवर्णितमिति तत्र ज्ञानमात्रनिवर्त्यस्यकापिसत्यत्वादर्शनात्
 तस्यचात्मनेनिहृतदर्शनाच्चयुगोपतानिश्चयेमनिसत्यवधस्यज्ञानात्रिहृति अलेवीधकत्वायोगात् नचसेतदर्शना
 तस्यस्यपाषण्णनाशदर्शनात्रागम्यतानिश्चयवतिवाच्यं तस्यअहानियमादिमापेक्षज्ञाननाशत्वात् वयस्यचानात्यः
 पंधारातिप्रत्याज्ञानमात्रत्रिहृतिप्रतीतेः अतःअतज्ञाननिवर्त्यत्वनिर्वाहयोमथास्तत्वेवर्णनीये किञ्चज्ञानेकनि
 वर्त्यस्यकिंनामसत्यत्वंनतावदज्ञानान्नन्यत्वंमायातप्रकृतिप्रतिविरोधात्मायाविद्ययोरेकात् नापिस्वाधिष्ठानेस्वाभा
 वश्चन्यत्वंअस्थूलमित्यादिप्रतिविरोधात् नापिद्रव्यवदायायोमतेज्ञानात्रिहृतिप्रतिविरोधात् अथवावदास्का
 लेवाधश्चन्यत्वंतर्हिवावदारिकमेवसत्यत्वमित्यागतमित्यर्थस्तत् तच्चप्रत्यक्षयोगतत्त्वज्ञानार्थवर्णनीयमवयवागस्याप्र
 वेद्वारत्ववत् नचतदन्यत्वाधिकरणेनस्यवर्णनात्वेनरुक्ततत्रोक्तध्यासस्यैवप्रवृत्त्यगविषयादिसिध्यार्थमा
 दोषार्थमाणात्वादितिदिक् अथासदेष्टादर्शयति लोकव्यवहारवति लोकानेमनुष्यादमित्यभिमन्यतेरित्वा

त्य

ने

शा
भा
६

स्मृतिरूपमिति स्मर्यत इति स्मृतिः सत्परजतादिः तस्मिन् रूपमिव रूपमस्मृतिरूपः स्मर्यमाणसदृशत्वर्थः सादृश्या
त्वात् स्मर्यमाणदारेण स्पष्टं भवेत्तत्रान्यथा व्यातिरित्युक्तं भवति सादृश्यमुपपादयति पूर्वदृष्टं न संस्कारद्वारा
पूर्वदर्शनं न दवभास्यत इति पूर्वदृष्टावभासः तेन संस्कारजन्यज्ञानविषयत्वं स्मर्यमाणरोपयोः सादृश्यमुक्तं भवति स्मर्या
रोपयोः संस्कारजन्यत्वादारेण स्पष्टं नित्यापत्तिरिति वाचं दोषसंप्रयोगजन्यत्वस्यापि विवक्षितत्वेन संस्कार
सत्ताभावात् अत्र संप्रयोगशब्देनापि ह्यतः सामान्यज्ञानमुच्यते अदंकाराध्यास इदं प्रयोगालाभात् एवं च दोषसंप्रयो
गसंस्कारवत्ताच्छ्रुतादौ रजतमूलत्रयमस्तीति परत्र परावभास्यत्वलक्षणमुपपन्नमिति स्मृतिरूप पूर्वदृष्टपदार्थामुपपा
दितं अन्यतथा दौषादित्रयजन्यत्वकार्याध्यासलक्षणमुक्तमित्याहुः अपरेतस्मृतिरूपः स्मर्यमाणसदृशः स
दृश्ये च प्रमाणजन्यज्ञानविषयत्वस्मर्यमाणोः प्रमाणजन्यत्वात् पूर्वदृष्टपदेन ज्ञातीय परे अभिनवरजतादेः पूर्व
दृष्टत्वाभावात् तथा च प्रमाणजन्यज्ञानविषयत्वे सति पूर्वदृष्ट ज्ञातीयत्वं प्राप्तीति कार्यासलक्षणं ताभ्यामुक्तं पर
त्रावभासशब्दाभ्यामप्यासमात्रलक्षणं व्याख्यातमेव तत्र स्मर्यमाणसदृशतादवभिनववदेवातिव्याप्तिरसायप्रमा
णोत्पादिपदद्वयमित्याहुः तत्रार्थाध्यासे स्मर्यमाणसदृशः परत्र पूर्वदर्शनादवभास्यतरतियोजनात्ताभ्यासितुं स्मृति
सदृशः परत्र पूर्वदर्शनादवभास इति वाक्यं योजनीयमिति संक्षेपः ॥

मात्रज४

७

निष्ठाप्रतिनिर्वासायसाक्षात्ति अनाद्युपादानत्वेसतिमिथ्यात्वंवालक्षणं त्रस्यनिर्वासायमिथ्यात्वमिति सदादिनि
 रासायम नदीति अविद्यात्मनोः संबन्धनिर्वासायमपादानत्वेसतीति संप्रत्ययसंदर्भितमभिलयति अहमिदं
 ममेदमिति आध्यात्मिककार्याप्यासेषदमितिप्रथमोप्यासः नचपिष्टानारोप्यशहयानपलभात्रायमप्यासरितिवाच्यं
 अयोदरतीतिवदहमुपलभरतिहकृदशयोरुपलभादिदंपदेनभोग्यः संज्ञातुच्यते तत्राहमिदमित्यनेनमनुष्णाहमिति
 तादात्म्याप्यासोदर्शितः ममेदंशरीरमितिसेसर्गाप्यासः ननुदेहात्मनोस्नाहान्पमेवसंसर्गइतितयोःकोभेदइति
 चेत् सत्यं सनैकोसतिमिथ्याभेदस्तादात्म्यं तेनमनुष्णाहमित्येकाशभाजंममेदमितिभेदोशरूपसंसर्गाभाजमिति
 भेदः एवेसायमप्यासत्वादनभवमन्वाहप्यासोस्तीत्यतोत्रस्यान्मेवोविरोधाभावेनविषयप्रयोजनयोःसत्ताच्छास्त्रमा
 रंभणीयमिति सिद्धांतभाष्यानामर्थं एवेसत्रेणार्थात्सत्रितेविषयप्रयोजनेप्रतिपाद्यतेइतमप्यासलक्षणसभावनाप्रमा
 तैः साधयितुंलक्षणंएवमिति आदेति किंलक्षणकोप्यासरत्वादहववादीत्यर्थः अस्यास्तत्त्वान्तर्निर्णयप्रधानत्वे

आहकोणमप्यासोनामेत्युच्यतेस्वरूपः परत्रपूर्वदृष्टावभासः

नवादकथात्वघोतनार्थं आदेतिपरोक्तिः आदेत्यादिकथं पुनः प्रत्यागन्मनीयं तः प्रमाप्यासलक्षणपरंभाष्यं तदारभ्यसंभा
 वनापरं तमेतन्मविद्यात्मितारभ्यसर्वलोकप्रत्यक्षेयं तं प्रमाणपरमिति विभागः लक्षणमाह उच्यतेस्वरूप इति अ
 प्यासरत्यनुषंगः अत्रपरत्रावभासरत्वेवलक्षणोपिष्टपदद्वयंततउपपादनार्थं तथादि अवभास्यतरत्वंवभासोरनतभ्य
 र्थः अधिकं साक्षाद्योग्यत्वमप्यास्यताभावत्वेतदुक्तं तत्राचैकावच्छेदेनस्वसंसृज्यमानस्यान्यताभाववत्त्वभास्य
 त्वमप्यासत्वमित्यर्थः इदंच सायनाद्यप्याससाधारणंलक्षणं संयोगे निष्ठाप्रतिनिर्वासायैकावच्छेदेनेति संयोगास्यसंसृ
 ज्यमाने बुद्धेस्तत्त्वताभाववत्त्वभास्यत्वमपि स्वसात्त्वताभावयोर्मत्तायावच्छेदकभेदात्त्रातिव्याप्तिः पूर्वस्याभाववतिभूत
 लेपश्चादानीतोद्योभातीतिबुद्धेतिव्याप्तिनिर्वासायस्वसंसृज्यमान इतिपदं तेनस्वाभावकालेप्रतियोगिसंसर्गस्यवर्त
 मानतोच्यतरतिनानिव्याप्तिः भूतावच्छेदेनावभासगंधेतिव्याप्तिवारणायस्वात्वेताभाववतीतिपदं पुनरुच्यतेत्वावच्छे
 देनरजतसंसर्गकालेताभावोस्तीतिनानिव्याप्तिः ननुसलक्षणस्यासंभवः युक्तो रजतस्यसामग्र्यभावेनसंसर्गसत्ता
 त नचसर्वमप्यासत्वरजतस्यैवपरत्रयुक्ताववभास्यत्वेनाप्यस्त्वोक्तिरितिवाच्यं अन्यथात्वानिप्रमादित्यत्रआह

तस्याद्योग्यमधिकंरत्नपत्रपदार्थः ५१०

पु.
भा.
६

आत्मन्यथासंभावनाप्रतिज्ञातीति उच्यते इति अविद्यानाशेऽप्येकस्मिन्क्षाने भासमानत्वमात्रमाध्यासवाचकं न च भानप्र-
युक्तसंशयानि वृत्त्यादिफलभाक्तेतदेव भानमिदं त्वत्तदिते विषयत्वं तत्राध्यापके गोव्यादिति मत्वा न तावदिति अयमात्मा
नियमेनाविषयानभवति तत्रदेवमाह अस्मदिति अस्मत्प्रत्ययान्तराध्यासस्तत्राध्यासमानत्वादित्यर्थः अस्मदर्थेऽपि दत्ता
प्रतिविबलेन यत्र प्रतीयते साध्यास्योद्देकारस्तत्राध्यासमानत्वादिति वाच्यः न चाध्यासमतिभासमानत्वेन सिद्धतिरिति
परस्परानुयतिवाच्यं अनादित्वात्साध्यासभासमानात्मन उत साध्यासाध्यानत्वेन संभवान्न नन्वदमित्युद्देकारविषयक
भानरूपस्यात्मनो भासमानत्वं कथं तद्विषयत्वं विना तत्फलभाक्तायोगादित्यत आह अपरोक्षत्वाच्चेति च शङ्कः याकानिरा-
सार्थः स्वप्रकाशत्वे साधयति प्रत्ययिति आवात्ययेति तन्मात्मनः संशयादिशून्यत्वेन प्रसिद्धेः स्वप्रकाशत्वमित्यर्थः अतः
स्वप्रकाशत्वेन भासमानत्वादात्मनोऽध्यासाध्यानत्वं संभवतीति भावः यदुक्तमपरोक्षाध्यासाध्यानत्वस्यैव दियम्

उच्यते न तावदयमेकांतेनाविषयोऽस्य तस्य विषयत्वादपरोक्षत्वाच्च प्रत्यगात्मत्वप्रसिद्धेः न चायमस्ति नियमः
परोक्षस्थित एव विषये विषयान्तरमध्यस्थितव्यमिति अत्रत्यक्षेपि ह्याकाशे वा लासलमलिनताद्यध्यास्यति एवमवि-
रुद्धः प्रत्यगात्मन्यप्यनात्माध्यासस्तमेव लक्षणमध्यासमिति तद्विद्येति मन्यते तद्विद्येकेन च वस्तुस्वरूपा
वधारणाविद्यामाहः तत्रैव सति यत्र दध्यासस्तत्काले न दोषेन गृह्ये न वा एवमात्रेण पिसन संबध्यते ॥

युक्ततया यत्नं व्यापकमिति तत्राह न चायमिति तत्रदेवमाह अत्रत्यक्षेपीति इन्द्रियाग्राहेयत्वार्थः बाला अविवेकिनः त-
लरेडनीलकटाहकल्पेन भोमलिनयो तमितेव मयरोक्ष मध्यस्थति तत्रेन्द्रियग्राह्यत्वं नास्तीति यमिचारात्रयाभिः एतेना-
त्मानात्मनो सादृशभावात्राध्यास इत्यथास्ते नीलनभसोस्तदभावेऽप्यध्यासदृशान्तिरुते आलोकाकारवात्त्वयुतिवाक्य-
सात्त्विकेयत्वं न भवति ते ये संभावनां निगमयति एवमिति ननु ब्रह्मज्ञानात्वेन सूत्रितामविद्यादित्वाध्यासः किमिति
वर्णित इत्यत आह तमेतमिति आतिप्रसमादित मुक्तलक्षणालक्षितमध्यासमविद्याकार्यत्वादविद्येति मन्यते तस्यार्थः वि-
द्यानिवर्त्यत्वाच्चास्याविद्यात्वमित्याह तद्विद्येकेनेति अथ स्तनिषेधेनाधिष्ठानस्वरूपनिर्धारणाविद्यामध्यासनिवर्तिका
माहुरित्यर्थः तयापि कारणाविद्यात्वात्कार्याविद्या किमिति वर्णते तत्राह तत्रेति तस्मिन्त्रयासे उक्तत्वायेन विद्यात्म-
के सतीत्यर्थः मूलाविद्यायाः सुषुप्तावनर्थात्वादर्शनात्कार्यात्मना तस्या अनर्थत्वतापनार्थं तद्वर्णमिति भावः अथ स्तकृत

महासुखासुखमपि ध्यानं न लिप्यत इत्यस्यार्थः

२५

२७

न

न नवपासेचादिविप्रतिपत्तेः कथमुक्तलक्षणसिद्धिमात्रायाधिष्ठानशेषात्परत्रपरावभासरितिलक्षणे
 संवादायात्किमिः सत्याधिष्ठानेमिच्छायावभाससिद्धेः सर्वतत्रसिद्धांतरदेलक्षणमिति सत्यान्वात्तत्वातिवादिनोर्मतमाद
 तंकेचिदिति केचिरन्यथात्वातिवादिनोन्वयश्रुतादावन्वयमस्य स्वावयवमस्य देयांतरस्य रूपादेरथास रतिवदंति आ
 त्मात्मातिवादिनस्तथाष्टे श्रुतादौ बुद्धिरूपात्मनोपमं पारजतस्याध्यासः आंतरपरजतस्य वदिवेदवभासरतिवदंतौ तथैः
 आत्मातिमत आह केचिदिति यत्रयस्याध्यासो लोकासिद्धः नयोभयेनोक्तद्विषयप्रभेदादस्य तत्त्वलोभमः इदेक्यमिति
 विशिष्टव्यवहाररतिवदंतौ तथैः तैरपि विशिष्टव्यवहारानुपपत्त्याविशिष्टभातेः स्वीकार्यत्वात् परत्रपरावभाससम
 ति^{दी}तिरिभावः शून्यमत आह शून्यत्वमिति तस्यैवाधिष्ठानस्य श्रुतादेर्विपरौ तथमंत्यकत्वनंतियरीतो विरुद्धाधर्मो यस्य तद्वत्तस्य
 रजतादेरत्यंतासतः कल्पनामाचक्षते तथैः एतेषुपदेषु परत्रपरावभासत्वं लक्षणं संवादमाह सर्वथापित्वमिति अन्यथा
 त्वातिवादिप्रकारविवादेण ध्यासः परत्रपरावभासत्वं लक्षणं न तदातीत्यर्थः श्रुतावपरात्परजतस्य देयं तत्रेव चादौ वास
 तंकेचिरन्यत्रान्यधर्माध्याससिद्धेदिति केचित्तत्रयदध्याससिद्धिवेकाग्रहानिबन्धनोभमसति अन्येन यत्रयदध्याससत
 यैव विपरौ तथमंत्यकत्वनामाचक्षते सर्वथापित्वमस्यान्यधर्माध्यासतानवाभिचरति तथाच लोकेन भवः शुक्ति
 कादिरजतवदवभासने एकचंद्रः सद्वितीयवदितिकथं पुनः प्रत्यागतात्वाविषये ध्यासो विषयधर्मात् सर्वदिपुरोच
 स्थिते विषये विषयान्तरमप्यस्य तिष्ठत्यन्यथापेक्षया च प्रत्यागतात्मनो विषयत्वं त्रयोपि =
 त्यायोगात् शून्यत्वे प्रत्यक्षत्वायोगाच्च तौ सत्त्वाध्यायोगात्प्रतिपत्तेः ॥ आशेषमिच्छात्वेन युक्तपेक्षानुभवं
 सिद्धत्वादित्याह तथाचेति वाधानंतरकालीनोपमनुभवः तत्सर्वश्रुतिकान्तानायागादजतस्य बाधप्रसक्तसिद्धे मिच्छात्वं
 च वच्छेदोच्यते आत्मनि निरुपाधिकारेकारणध्यासैरुद्घातमाह एकरति द्वितीयचंद्रसरितवदेकवामस्यादिविधाभा
 नीत्यर्थः लक्षणप्रकरणे कथमेवार्थ इति शब्दः प्रवक्तव्यासः श्रुतादावात्मनि तजसंभवतीत्यादिपुति कथं पुनरिति यत्र
 परेताध्यासाधिष्ठानत्वं तत्रैवियुक्तत्वं विषयत्वं चेति व्याप्तिः श्रुतादौ रूपात्तत्रयापकभामादात्मनोधिष्ठानत्वं तजसंभवती
 तमिप्रत्याह प्रत्यागतात्मीति प्रतीतिपूर्वकारिणाश्रयविषयस्याहकारादेस्तदुपमायाध्यासः उक्त्यामिमाह सर्वोद्दीति पुरो
 वस्थितत्वाभिद्वियसंयुक्तं नन्वात्मनोधिष्ठानत्वात्तद्विषयत्वादिकमस्ति तत्र आह पुष्पादिति इदं प्रमाणं न दं स्य प्रत्याग
 त्मनो न च लयागद्वयतत्वादि श्रुतिमजसत्त्वं विषयत्वं त्रयोविसेप्रमथासत्तामे न विषयत्वातीकारे अतिसिद्धातयावी
 धः स्यादित्यर्थः ॥

दृष्टान्तमुक्त्वा ब्रह्मजीवांतरमेदस्याविद्याधुयाधिकस्याध्यासे ७ टी०

पुनः
भा.
८
६

नन्वात्मनो देहादिभिराध्यासिकसंबंधोपि प्रमात्तत्त्वतश्चेतनतया प्रमात्तत्त्वोपपत्तेः न च सुषुप्तौ प्रमात्तत्त्वोपपत्तिः कारणे
परमादिनित्यत्वात् न चैतस्मिन्निति प्रमात्तत्त्वत्वेति प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति चिन्मात्रे तद्यथा प्रमात्तत्त्वोपपत्तिः कारणे
दिह निमात्रे जगदोपपत्तिः संगः चेतने जडत्वात् अतो वृत्ती देहोपपत्तिः प्रमात्तत्त्वत्वेति प्रमात्तत्त्वोपपत्तिः कारणे
ध्यासे विना न संभवतीति भावः देहाध्यासे तदुपाध्यासे वा सतीत्युक्त्यर्थः तदात्मनः प्रमात्तत्त्वमास्ति तिवदने प्रमा
ह न चेति तस्मादात्मनः प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः यदा प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति तस्मादिति अदमित्यध्यासस्य प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति
ति प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः यदा प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति तस्मादिति अदमित्यध्यासस्य प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः
दोषत्वादविद्यावदाध्यासोपपत्तिरिति भावः यदा प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति तस्मादिति अदमित्यध्यासस्य प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः
तु प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः यदा प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति तस्मादिति अदमित्यध्यासस्य प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः

न चैतस्मिन् सर्वस्मिन् समसंगस्य आत्मनः प्रमात्तत्त्वमुपपद्यते न च प्रमात्तत्त्वमंतरंगा प्रमाणप्रवृत्तिरिति
ति तस्मादविद्यावद्विषयाणि प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः यदा प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति तस्मादिति अदमित्यध्यासस्य प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः
सादयः शब्दादिभिः आत्रादीनां संबंधे सति शब्दादिविज्ञाने प्रतिकुले जाते ततो निवर्तते न कुले च प्रवर्तते यथा
देहोपपत्तिरिति भावः यदा प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति तस्मादिति अदमित्यध्यासस्य प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः
तस्मिन् विभवति एव पुरुषा अपि च तत्र चित्ताः कूटस्थानां क्रोशतः खड्गोपपत्तिरिति भावः यदा प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति तस्मादिति अदमित्यध्यासस्य प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः

रोध्यामकार्यः तिनदयुक्तं विदुषामध्यासाभावेऽपि व्यवहारदृष्टेरित्यत आह तस्मादविद्यावद्विषयाणि प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः
पश्चादिभिश्चेति च शब्दः शब्दानिरासाद्यः किं विदुषां त्रस्यतीति मात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः यदा प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति तस्मादिति अदमित्यध्यासस्य प्रमात्तत्त्वोपपत्तिरिति भावः
आद्ये बाधिताध्यासानुवृत्त्या व्यवहारश्चेति समन्वयसंज्ञवत्तु द्वितीये परात्तत्त्वान्मापरो दभ्योत्पन्नित्वं कत्वात्
विचेकितां मपि व्यवहारकाले पश्चादिभिरविशेषात् अध्यासवत्तत्त्वत्वाच्च व्यवहारो ध्यासकार्य इति युक्तमर्थः
अत्राप्यप्रयोगः विवेकिनो ध्यासवतः व्यवहारवत्त्वात् पश्चादिवदिति तत्र सप्रवृत्त्या कावाका कुर्वन्तु ध्याते देवमु
दयति यथाहीति विज्ञानस्यानुकूलत्वे प्रतिकूलत्वे च ध्यानिष्ठसाधनगोचरत्वे तदेवादाहरति यद्यति अयं देह
मदनिष्ठसाधनं दंडत्वात् अनुभूतं दंडवत् दंडत्वात् मिष्ठसाधनं अनुभूतजातीयत्वात् अनुभूततत्त्वावदिति
नुमाय व्यवहारंतीत्यर्थः अपुनादितोः पक्षधर्मतामाह एवमिति अतश्च चित्ता अपीमन्वयः विवेकिनोऽपीत्यर्थः

एवमप्यासस्य लक्षणसंभावने उक्ता प्रमाणमाह तमेतमिति नैवर्णितमेतं सति प्रत्यक्षसिद्धे पुरस्कृत्य देतु कृता लौकिकः क
 मेषास्त्रीयो मोक्षस्त्रीयश्चेति त्रिविधो व्यवहारः प्रवर्तते इत्यर्थः तत्र विधिनिषेधपराणि कर्मणस्त्यागवेदादीनि विधिनिषेध
 शून्यप्रमाणपरानि मोक्षरास्त्राणि वेदांतवाक्यानि इति विभागः एवमवधारदेतत्वेनाप्यासे प्रत्यक्षसिद्धे पुरमाणं त्ररंस्तु
 ति कथं पुनरिति अविद्यावानरमित्यप्यासवानात्मा प्रमाता सविषय आश्रया येषां तान्यविद्यावद्विषयाणीति विप्रहः तत्र त्रमेव
 व्यवहारदेतु भूतयाः प्रमाया अप्यासात्मके प्रमात्राश्रितत्वात् समानतामविद्यावद्विषयत्वे यद्यपि प्रत्यक्षे तयापि पुनरपि क
 थं केन प्रमाणेन विद्यावद्विषयत्वमिति योजनं यद्वा विद्यावद्विषयाणिकथं प्रमाणानि स्युः आश्रयदोषादप्रमाणापत्तेरित्या
 लेपः तत्र प्रमाणप्रशेवधारयापत्तिरिति ज्ञेयं कानुमानेचाह उच्यते इत्यादिना तस्यादित्येतन्न देवदत्तकर्तृको व्यवहारः तदी
 यदेवादिष्वेव प्रमाया समतः तदन्वयव्यतिरेकानुसारित्वात् योदन्त्यतस्तथा यथासंभवात् तद्वति प्रयोगः तत्र व्यतिरेकदर्शय

तमेतमविद्यावाप्यात्मनान्ता नो रितरेतरायां संपुरस्कृत्य सर्वे प्रमाणा प्रमेयव्यवहार लौकिकाः प्रवृत्ताः सर्वाणि च वेदिकाश्च
 शास्त्राणि विधिनिषेधमोक्षपराणि कथं पुनरविद्यावद्विषयाणि प्रमातादीनि प्रमाणा निष्ठास्त्राणि च तत्राने देह
 दियादिष्वेव प्रमाभिमानहीनस्य प्रमात्मानु यणेन प्रमाणा प्रवृत्त्यनुपपत्तेः नदीदिषाण्यनुपादयुं प्रत्यक्षादिष्व
 वधारः संभवति न चाधिष्ठानसंतरेणैदियव्यापारः संभवति न चानधस्तात्मभावेन देहेन कश्चिदपि प्रयते ॥

ति देहेति देवदत्तस्य पुमावध्यासाभावोदधः जायन्त प्रयोरध्यासे सति व्यवहार इत्यन्वयः स्पृष्टत्वाच्चातुः अनेन लिंगेन
 कारणतया ध्यासः सिध्यति व्यवहाररूप कार्यानुपपत्त्या चेति भावः ननु स न सत्त्वादिजातिमति देहे दमित्यभिमानमा
 त्रायवधारः सिध्यत किमिदियादिषु ममाभिमानेन तया वाकाह नदीति इदियपदं लिगादेरप्युपलक्षणं प्रत्यक्षादीत्यादि
 पदप्रयोगात् तथाच प्रत्यक्षलिंगादिप्रयुक्तेषां व्यवहारः इष्टानुमाता आता दमित्यादिरूपः सरदिषादीनि समतास्य दान्याह
 हीनान संभवतीत्यर्थः यद्वा तानिममत्वेनानुपादययो व्यवहारः सनेति योजनं पूर्वज्ञानुपादाना संभवति ययोरैक्य
 वधारः कर्तृतिक्ता प्रत्ययः साधुः उत्तरज्ञानुपादान व्यवहारयोरेकात्मक कर्तृकत्वात् तन्मा पुनमिति भेदः इदियादिषु ममे
 तप्यासाभावेयादेरिवदृष्टत्वादिष्ववहारो न स्यादिति भावः इदियाणां सैव व्यवहारादलं देहायासनेत्यत आह नचेति इ
 दिषाणमधिष्ठानमाश्रयः नन्वस्यात्मना संयुक्तशरीरे तेषामाश्रयः किमप्यासेनेत्यत्राह न चानधस्तात्मभावेनेति अ
 नधस्तात्मभावः आत्मनादात्म्यं यस्मिन्नेत्यर्थः असेगोही ति श्रुतेराध्यासिक एव देहात्मनोः संबंधेन संयोगादिरिति

॥ ३० ॥

शा.
भा.
१.

अधुना संभावितमर्थोत्तरं ह्यर्थमिति संगतयेति वाक्यार्थो विचारकर्तव्यतान्दित्तु संगतस्य कर्तृत्वादित्यान्वयोऽस्तीत्यर्थः ननु सञ्ज्ञ
ताशास्त्रादौ मेगलकार्यमिति अथ शब्दः प्रयुक्त इति चेत् सत्येन तस्यार्थो मेगल किं न तच्छ्रवणाच्चारणोच्चमेगलकृत्यकारिति न
दृश्येत्तान्तर्यमेवेत्याह अर्थोत्तरमिति अर्थोत्तरमानेतर्यं अस्याथवापि न शब्दविवक्षादिना प्रवृत्तादौ काराद्यशब्दयोः अथवा मेग
लफलकं उकाराद्याशब्दश्च द्वेतेतौ ब्रह्माणः पुरा के वे भित्तिचिनिर्णयते तस्मात्संगतिकावुभौ इति स्मरणमिति भावः ननु
प्रपञ्चो मियेति प्रकृतमिति अथ मते प्रपञ्चः सत्यस्य प्रपञ्चप्रकृतार्था इतरार्थस्यार्थोत्तरत्वाद्यशब्दादृष्टत्वात् किं न स्यादत
च्चाह पूर्वमिति फलतः फलस्येत्यर्थः ब्रह्मजित्तासायाः पूर्वमर्थविशेषः प्रकृतो न्नस्ति यस्मात्तस्या अर्थोत्तरत्वमशब्दो नोच्यत
यतः कुतश्चिदर्थोत्तरत्वं सञ्ज्ञकतानवक्तव्यं फलाभावात् यदि फलस्य नित्यासापदेन कर्तव्यविचारस्य हेतुत्वेन यत्पूर्वप्रकृ
तेतदपेक्षास्तीत्यपेक्षाबलात्कृतहेतुमादिष्यते तर्थात्तरत्वमचेततदर्थोत्तरत्वमानेतर्योत्तरत्वमिति हेतुफलभावज्ञानायाने
तयस्यावश्यावच्छात्वात् तस्मादिदमर्थोत्तरमित्युक्तेतस्य हेतुत्वप्रतीतिः न च अज्ञानेतराणिरित्यत्र हेतुत्वभानायतिरिति वाच्यं

थी २

मंगलस्य च वाक्यार्थसमन्वयाभावात् अर्थोत्तरप्रयुक्तव्यशब्दः अस्यामेगलप्रयोजनो भवति पूर्वप्रकृतार्थेता
याश्च फलतश्चान्तर्यामिरेकात् सति चान्तर्यामिरेकात् सति चान्तर्यामिरेकात् सति चान्तर्यामिरेकात् सति चान्तर्यामिरेकात् सति चान्तर्यामिरेकात्
वं ब्रह्मजित्तासापियत्पूर्ववृत्तेनियमेनापेक्षते तद्वक्तव्यं स्यात्प्राधान्येन तर्थात्तममाने नन्विह कर्मावबोधानेतर्यत्ववि
तयोर्देशात् कालतो वा व्यवधानेनानेतर्यस्यासुखत्वात् अतः सामग्रीफलयोरेव सुखमानेतर्यमवधानात् शेषो
तस्मिन्नुक्तसत्यार्थोत्तरत्वेन वाच्यता तच्चाह फलस्येति भावः फलस्य विचारस्य पूर्वप्रकृतहेतुपेक्षाया बलाद्यर्थोत्तरत्वेतस्याने
तर्थाभेदात्प्रयुक्तव्यशब्दार्थत्वमित्याह तस्य भाष्येनोक्तनीयं यद्वा पूर्वप्रकृतार्थेतापस्या अर्थोत्तरतायास्तस्याः फलज्ञानेन हारा
नेतर्थावतिरेकात्तानेतर्याः तान्नोतर्भावात्तथाशब्दार्थेनेत्यर्थः न चान्तर्यामिरेकात्तस्यावधिः करत्याशब्दाद
मतिर्चेति यत्रियमेन पूर्ववृत्ते पूर्वभाविपुष्कलकारणमिति यावत् तदेवावधिरिति वक्तव्यमित्यर्थः ननु स्वपमविचारश्च
ब्रह्मविचारेपिवेदापयने पुष्कलकारणमित्यत आह स्थाप्यायेति समाने ब्रह्मविचारे साधारणकारणान पुष्कलकारण
मित्यर्थः ननु संयोगाद्यत्कस्यायेनयत्तेतदनेन तादि क्रमाद्यत्तादिकर्माणि तानाय विधीयेत इति सर्वापेक्षाधिकरणो वे
द्यतेतथाच पूर्वतत्राणतदवबोधः पुष्कलकारणमिति शङ्कते नन्विति इह ब्रह्मजित्तासायाविशेषः असाधारणः ॥

अतः समानः पक्षादिभिः पुरुषाणां प्रमाणप्रमेयत्वे द्वारः यथादीनोच प्रसिद्धत्वाविवेकपूर्वकः प्रत्यक्षादिव्यव
हारस्तत्समानादर्शनाद्युत्पत्तिमतामपि पुरुषाणां प्रत्यक्षादिव्यवहारस्तत्कालः समान इति निश्चीयते यस्मात्तीयेत्य
वदारेयद्यपि बुद्धिपूर्वकारो नाविदित्वात्मनः परलोकसंबन्धमधिक्रियते तथापि न वेदांतवेद्यमशुनायासतीत
मयेतच्च सत्तादि भेदसंस्पर्शात्मतत्त्वमधिकारे पेक्षते न प्रयोगादधिकारविशेषाच्च प्राकृतथाभूतात्मविता
नात्यवर्तमानं शास्त्रमविद्यावदिष्यत्वेनातिवर्तते तथादि व्याकरणयन्तत्त्वादीनि शास्त्राणां तन्निवर्णप्रभव
यो वस्थादिविशेषाया समाश्रित्य प्रवर्तते ॥

नि

५०
॥

20

ननुमीमांसयोः शेषेष्वित्यमथि कृताधिकारत्वं च मास्तेकप्रोक्तफलकत्वेनैककर्तृकत्वं स्यादेव वदन्ति हि ज्ञानकर्मभांस्तु
 किमिति समुच्चयवृद्धिः एवमेकैव दार्ष्टान्त्यास्य कत्वा चेककर्तृकत्वं तथा चाग्रेयदिषदागानामेकस्वर्गफलकानां
 हादशाध्यायानां चेककर्तृकत्वात् तदास्य कत्वा चेककर्तृकत्वं क्रमाविवक्षित इति क्रमाद्यर्थे यथा श्रुत्या शक्यं फलेति फल
 भेदाज्ज्ञासास्य भेदाच्च न क्रमाविवक्षित इति तन्वयः यथा सौम्यार्थे माणा ज्ञानाय चरुणां ब्रह्मवेचसस्वर्गायः फलभेदान्
 यथा वा कामचिकित्सा तत्र योजितास्य भेदाच्च क्रमापेक्षा तदन्वीमांसयोर्न क्रमापेक्षेति भावः तत्र फलभेदविज्ञाणेति
 अभ्युदयेति विषयाभिसृत्वेनादेतीत्यभ्युदयो विषयाधीनं सत्त्वं स्वर्गादिकं तच्च धर्मज्ञानदेतोमीमांसायाः फलमित्यर्थः
 न केवलं फलस्य स्वरूपतो भेदः किंतु हेतुतोपीत्याह तच्चेति ब्रह्मज्ञानदेतोमीमांसायाः फलतत्तद्विरुद्धमित्याह निःश्रे
 यसेति नित्यनिरपेक्षश्रेयोनिः श्रेयसप्रोक्तस्तत्फलमित्यर्थः ब्रह्मज्ञानेन वक्ष्यमिति व्यतिरिक्तमनुष्ठाननापेक्षत्वाद्
 नचेति स्वरूपतो हेतुतश्च फलभेदाच्च समुच्चय इति भावः ज्ञासास्य भेदविज्ञाणेति भव्येति भवतीति भव्यः साध्य इत्यर्थः
 फलज्ञासास्य भेदाच्च अभ्युदयफलं धर्मज्ञानेन चानुष्ठानापेक्षानिः श्रेयसफलं तु ब्रह्मविज्ञानं न चानुष्ठानात्
 पक्षे भव्यश्च धर्मी ज्ञासास्य न ज्ञानकाले स्ति पुरुषापा रतत्रत्वादि हतभूत ब्रह्म ज्ञासास्य नित्यतिष्ठेत्तत्वात्
 न पुरुषापा रतत्रे चादनाप्रवृत्तिभेदाच्च यदि चादना धर्मस्य च लक्षणं सास्त्वविषयेति युजानेव पुरुषमह
 वबोधयति ब्रह्म चादना तपुरुषमवबोधयत्येव केवलमवबोधयत्येव चादना जसत्वाच्च पुरुषावबोधेनियुजते
 साध्यत्वेनेवमाह नेति न हि तद्वत्त्वेनेत्याह पुरुषेति पुरुषापा रः प्रयत्नः तत्र हेतुर्गत्या तत्त्वादित्यर्थः कृति साध्यत्वा
 त्कृतिजनकज्ञानकाले धर्मस्यासत्त्वेन तत्र ज्ञानादित्यर्थः ब्रह्मण्यध्याहेतुता एवमाह इदमिति उत्तरमीमांसाया मित्यर्थः
 भूतप्रसाध्यं तत्र हेतुः नित्येति सदा सत्त्वादित्यर्थः साध्यासाध्यत्वेन धर्मब्रह्मणः स्वरूपभेदमुक्त्वा हेतुतोप्याह न
 ति धर्मवत्कृत्यधीनत्वेत्यर्थः मानतोपि भेदमाह चादनेति अज्ञात्तापकवाक्यमत्र चादना तस्याः प्रवृत्तिर्वाधकत्वं
 हेतुता एव चादनास्य भेद इत्यर्थः संयद्वाक्यविज्ञाणेति यादौति लक्षणाप्रमाणस्वर्गकामायनेतेत्यादिवाक्यैस्त्वि
 विषये धर्मयोगादिकरणाकस्वर्गादिक फलकभावनास्य फलहेतुतायादिगोचरनियोगावादितासाधनयागादी
 वा पुरुष प्रवर्तयदेव बोधयति अयमात्मा ब्रह्मेत्यादिवाक्ये तत्त्वमर्थकेवलमप्रयच्छेत्तत्र बोधयत्येव न प्रवर्तयेति
 विषयाभावादित्यर्थः नन्ववबोध एव विषयस्तत्राह न पुरुष इति ब्रह्म चादना पुरुषावबोधेन प्रवर्तत इत्यत्र हेतु
 एवंवाक्याद् अवबोधयति सत्तन्मज्ञाने स्वयंप्रमाणेन प्रवर्तकमित्यत्र रक्षतमाह यथेति मानादेव बोधयत्येव

तत्ताज्ञाते च विषययोगात्तवाकार्थज्ञाने पुरुषप्रवृत्तिः तथा च प्रवर्तकमनने यो धर्मः
 उदासीन मानमिदं त्रयेति ज्ञासास्य भेदात् नतन्वीमांसयोः क्रमाद्यर्थे यथा श्रुत्या शक्यं फलेति भवः

॥

परिरक्ति नोत्तदिना अयमाशयः नतावसूतं तत्रस्थन्यायसद्वेत्तव्रह्मज्ञाने तद्विचारे वा पुष्कलकारणा तस्य धर्मनिर्णयमा
 प्रदेतुं तान् नापि कर्मनिर्णयस्तस्यानुष्ठानदेतत्वात् नहि धर्माग्राहिवधर्मव्रह्मणो वाग्राहिरस्ति यथा धर्मज्ञानाद्ब्रह्मज्ञानं
 भवेत् यद्यपि बुद्धिविवेकादिद्वारा कर्मणि देतवः तथापि तेषां नाधिकारिविशेषणत्वं अज्ञानान्नोत्पद्यमानांतरकृता
 नामपि फले देतुं त्वान् अधिकारिविशेषणोत्तापमानं प्रवृत्तिपुष्कलकारणमानं तथा वधित्वेन वक्तव्यं अतः कर्मणि त
 दवबोधस्तत्राय विचारोक्तानां विधित्तिनवस्य जित्तासाया धर्मजित्तासा नंतर्धमिति ननु धर्मव्रह्मजित्तासयोः कार्यका
 रणत्वाभावेप्यान्तर्धमिद्वारा कर्मज्ञानार्थो यथा हृदयस्याग्नेश्च यथा यजिद्वारा अथ वत्सस्पृशत्पदानां क्रमज्ञाना
 र्थाय प्राचुरवदित्याशंकार यथेति अवदानाज्ञानानंतर्धनियमः क्रमाकांक्षायां प्रत्यादिभिः क्रमो बोध्यते न वेत्तितासायाः
 शेषेष्वपि त्वेतिंगादिकं मानमस्ति ननु ब्रह्मचर्यं समाप्तरही भवेत् यदा ह नो भूत्वा प्रवृत्तेदिति क्रतापीत्यविधिवदेवा
 नुज्ञानस्याय धर्मतश्चाचर्यकितो यत्तैर्मनोमोदो निवेशयेदिति स्मृत्या चाधिकृताधिकारत्वं भातीति ननु ब्रह्मचर्यादेव प्र
 जेत आसादयति फलदासा मोक्षवेपथमाश्रमश्रुतिस्मृतिभ्यां तयोदाहृत्य प्रतिस्मर्य रभुदचितविषयत्वावगमात् ए

न धर्मजित्तासाया प्रागण्यपीतवेदांतस्य ब्रह्मजित्तासोपपत्तेः यथा च हृदयाद्यवदाना नामानंतर्धनियमः क्रमस्य
 विवक्षितत्वात् तत्र तद्वदक्रमविधितः शेषेष्वपि त्वेति कृताधिकारे वा प्रमाणभावाद् धर्मव्रह्मजित्तासयोः ॥

तदुक्तं भवति यदि तन्मांतरकृतकर्मभिः शुद्धचित्तं तदा ब्रह्मचर्यादेव संन्यस्य ब्रह्मजित्तासित्वं यद्दिन शुद्धमिति रागोपात्ताय
 ते तदाग्रही भवेत् तत्राप्यशुद्धौ तथैव कालमाकलयेत वने शुद्धो प्रवृत्तेदिति तया श्रुतिः यदद्वैतविरजे तदद्वैतव प्रवृत्ते
 दिति तस्याज्ञानपारधिकाधिकारत्वे किंचिन्मानमिति क्रमो यथा यथा ह्यर्थस्तस्य विवक्षितत्वात् नतप्यद्वैतधर्मव्रह्मजि
 तासयोः क्रमो विवक्षितः एककर्तृत्वाभावे नतयोः क्रमानपेक्षणात् अतो न क्रमाधीयथा हृदयः ननु तयोः क
 कर्तृकत्वे कुतो नास्तीत्यत आह शेषेति येषामेकप्रधानशेषता यथा वदाना नाप्रयानादीनां च यथा अशेषशेषिते
 यथा प्रयानादीनां येषां च अधिकृताधिकारत्वं यथा प्राणायनं दर्शपूर्णमासा गमाधित्यगोदाहननपशुकामस्यति
 विदितस्य गोदाहनस्य यथा वा दशपूर्णमासाभ्यामिष्टासोमेन यजेतेति दर्श इत्येकाले विदितस्य सोमयागस्य दर्शयधि
 कृताधिकारत्वे तेषामेककर्तृकत्वं भवति ततश्चैकप्रयोगवचनादग्रहीतं नातेषां मृगायदेनृषाणां संभवात् ॥

एवमयथावस्थायां तस्य संभवादाने तर्थावचित्वे सति तदवहितेन पुष्कलकारणावक्तव्यमिह तस्यादिति अदिश्यते सत्तत्वेति
 शेषः तत्किं मित्यत आह उच्यते इति विवेकादीनामागमिकत्वेन ग्रामाणिकत्वेन पुरस्तादेवोक्ते लौकिकवापारात्मन उपर
 मः शमः वाद्यकरणानामुपरमोदमः ज्ञानार्थविदितनित्यादिकर्मसंभवासुपरतिः शीतोष्मादिद्वंद्वसदनेति तिष्ठानिद्रा
 लस्य प्रमादत्वेन मनःस्थितिः समाधाने सर्वत्रास्तिकता प्रज्ञा एतत्सु प्राप्तिः शमादिसंपत्तः अत्र विवेकादीनामुत्तरो
 तरे देवत्वेनाधिकारिविशेषाणां त्वमेतत् तेषामन्वयव्यतिरेकाभावात्सज्जित्वा सादेतत्प्रकारे तेष्विति अथ कथंचिन्कु
 तद्वत्तया त्रसविचारप्रवृत्तस्यापि फलवर्णनं ज्ञानानुदयात् व्यतिरेकमिदं अथ शब्दवाच्यस्य संप्रसारितं तस्यादिति
 ननु तत्तद्विवेकादिकं न संभवत्यस्य देवत्वात्तस्मात्सु याज्ञिनः सकृत्तमिहादिश्रुत्या कर्मफलस्य नित्यत्वेनेते तौ वेदाव्याप्तिः
 जीवस्य त्रसत्वरूपमाह व्यायुक्तः भेदात् तस्य लोकादिवत्पुरुषार्थत्वायोगाच्च ततो ननु मुक्तासंभवस्याहोपरिहाराधीनः

ब्रह्म २ शांति २

तस्यास्ति मयि वक्तव्यं यदनेतरे ब्रह्मजित्वा सोऽपदिश्यते स चाते नित्यनित्यवस्तुविवेकरदामुत्रार्थभेगविराभाः समद
 मादिमाधनमप्यनुमत्तत्वेन तेषु हि सत्सु प्रागपि धर्मजित्वा साया ऊर्ध्वं च का तैजित्वा सितुं च न विपर्यये तस्याद
 यथा ह्येन यथा तत्साधनसंपत्तयेन तर्था मुपरिदृश्यते यात्रोद्वेग्योऽस्यादृष्टवाग्निहोत्रादीनां प्रयः साधनाना
 म नित्यफलतो दर्शयति तद्यथैव कर्मजित्वा लोकः दीयते एवमेवासु त्रुणजित्वा लोकदीयते इत्यादि तस्या ब्रह्म
 वित्तानादपि परंपुरुषार्थदर्शयति ब्रह्मविदोऽपि परमिहादितस्या यथा क्तसाधनसंपत्तयेन तरे ब्रह्मजित्वा साकं तै
 जित्वा साधनसंपत्तयेन तरे ब्रह्मजित्वा साकं तै

शब्दः तेषां च शब्दः शब्द इति अथ शब्देनानंतर्थावचिना तदवहितेनार्थादिवेका
 दिचतुष्टयस्य ब्रह्मजित्वा सादेतत्तय उक्तं तस्यार्थिकदेतत्तस्य लोपनिरासायां नुवादको तः शब्द इत्यर्थः उक्तं विवृणोति य
 स्यादिति तस्यादित्युत्तरेणासंबेधः यदस्य तन्मर्थं यत्कृतकं तद नित्यमिति नित्यायवती तद्यथेदेत्यादिश्रुतिः कर्मफला
 त्वयत्नप्रतेवाधिका तस्यादतो नुदाने मिति श्रुत्या तत्तमात्रस्या नित्यत्वविवेकात् वैराग्यलाभ इति भावः समुत्ता
 संभावयति तथेति यथा वेदः कर्मफलानित्यत्वे दर्शयति तथा ब्रह्मज्ञानात्पश्चात्तथा कानल अपारस्य यत्नो नित्यनंद
 दर्शयतीत्यर्थः जीवत्वादेरथा सोऽपि त्रसत्त्वसंभव उक्त एवेति भावः एवमयत्नः शब्दाभां पुष्कलकारणावतोऽधिका
 रिणः समर्थनात् स्यात्तस्मात्तदव्यापित्वा तस्यादिति सूत्रवाक्यप्रणयार्थमथाह तर्कनं यपदान्वयार्थं ब्रह्मजित्वा
 साधनेन चित्तचरं न च चित्ते तस्यात्मा भिन्नं तस्मात्सकलानेन अवयवार्थं दर्शयति ब्रह्मज्ञान इति ॥

पृ
१३

ननु केन मानेन वक्ष्यामः प्रसिद्धिः ननु समं मानमनेन तत्र हेति प्रकृत्या सेति वाच्यं अस्य दृष्टान्तो के संसृतिप्रदाभावेन तत्र
चरितवाक्यमात्रेण कत्वादिना शब्दात्तदस्य दृष्टान्तो प्रथमे तस्य निमित्तं तस्य सगुणस्य च प्रसिद्धिरित्यारं वक्ष्यामः सहीति अ
स्यार्थः प्रतो सत्रे च वक्ष्यामः दृष्टान्तप्रयोगान् यथा नृपपत्या कश्चिदर्थो स्त्रीति ज्ञायते प्रमाणवाक्ये निरर्थकपदप्रयोगादर्शनात्
सचार्थो महत्त्वरूप इति वाक्यकरणं त्रिंशो यते हेति ह्युदाविति स्मरणं त्वाच्च ह्युदाविति निरवधिकमहत्त्वमिति संकोचकाभावा
त् अत्राचनेन तपदेन सदप्रयोगाच्च ज्ञायते निरवधिकमहत्त्वे चान्यथादिदोषवत्त्वे सर्वतत्त्वादिगुणादीनत्वे च न संभवति लो
के गुणादीनदोषवत्त्वे रत्नत्वप्रसिद्धेरनोद्वेदाणां दुष्टं नित्यमन्तादेशकाले वस्तुतः परिच्छेदाभावरूपं नित्यत्वे प्रतीयते
अविद्यादिदोषशून्यत्वं बुद्धत्वे जाय गतिरिव बुद्धत्वं वेधकाले पितृत्वे च तथाभावो मुक्तत्वे च प्रतीयते एवं सकलदोषशून्य
निर्गुणप्रसिद्धतया सर्वतत्त्वादिगुणां कंच तत्पदवाच्यमिदं तेषां कार्यस्य वा परिशेषत्वं प्रमाणं सर्वतत्त्वस्य सर्व
कार्यशक्तिमत्त्वस्य च लाभादिति एवं पदवाच्यमिदं प्रमाणत्वेनापातत्वात् दत्तानां नित्यत्वं कत्वात्तिज्ञासाप पतिरिति

वक्ष्यामः सहीति अस्यार्थः प्रतो सत्रे च वक्ष्यामः दृष्टान्तप्रयोगान् यथा नृपपत्या कश्चिदर्थो स्त्रीति ज्ञायते प्रमाणवाक्ये निरर्थकपदप्रयोगादर्शनात्
सचार्थो महत्त्वरूप इति वाक्यकरणं त्रिंशो यते हेति ह्युदाविति स्मरणं त्वाच्च ह्युदाविति निरवधिकमहत्त्वमिति संकोचकाभावा
त् अत्राचनेन तपदेन सदप्रयोगाच्च ज्ञायते निरवधिकमहत्त्वे चान्यथादिदोषवत्त्वे सर्वतत्त्वादिगुणादीनत्वे च न संभवति लो
के गुणादीनदोषवत्त्वे रत्नत्वप्रसिद्धेरनोद्वेदाणां दुष्टं नित्यमन्तादेशकाले वस्तुतः परिच्छेदाभावरूपं नित्यत्वे प्रतीयते
अविद्यादिदोषशून्यत्वं बुद्धत्वे जाय गतिरिव बुद्धत्वं वेधकाले पितृत्वे च तथाभावो मुक्तत्वे च प्रतीयते एवं सकलदोषशून्य
निर्गुणप्रसिद्धतया सर्वतत्त्वादिगुणां कंच तत्पदवाच्यमिदं तेषां कार्यस्य वा परिशेषत्वं प्रमाणं सर्वतत्त्वस्य सर्व
कार्यशक्तिमत्त्वस्य च लाभादिति एवं पदवाच्यमिदं प्रमाणत्वेनापातत्वात् दत्तानां नित्यत्वं कत्वात्तिज्ञासाप पतिरिति

वक्ष्यामः सहीति अस्यार्थः प्रतो सत्रे च वक्ष्यामः दृष्टान्तप्रयोगान् यथा नृपपत्या कश्चिदर्थो स्त्रीति ज्ञायते प्रमाणवाक्ये निरर्थकपदप्रयोगादर्शनात्
सचार्थो महत्त्वरूप इति वाक्यकरणं त्रिंशो यते हेति ह्युदाविति स्मरणं त्वाच्च ह्युदाविति निरवधिकमहत्त्वमिति संकोचकाभावा
त् अत्राचनेन तपदेन सदप्रयोगाच्च ज्ञायते निरवधिकमहत्त्वे चान्यथादिदोषवत्त्वे सर्वतत्त्वादिगुणादीनत्वे च न संभवति लो
के गुणादीनदोषवत्त्वे रत्नत्वप्रसिद्धेरनोद्वेदाणां दुष्टं नित्यमन्तादेशकाले वस्तुतः परिच्छेदाभावरूपं नित्यत्वे प्रतीयते
अविद्यादिदोषशून्यत्वं बुद्धत्वे जाय गतिरिव बुद्धत्वं वेधकाले पितृत्वे च तथाभावो मुक्तत्वे च प्रतीयते एवं सकलदोषशून्य
निर्गुणप्रसिद्धतया सर्वतत्त्वादिगुणां कंच तत्पदवाच्यमिदं तेषां कार्यस्य वा परिशेषत्वं प्रमाणं सर्वतत्त्वस्य सर्व
कार्यशक्तिमत्त्वस्य च लाभादिति एवं पदवाच्यमिदं प्रमाणत्वेनापातत्वात् दत्तानां नित्यत्वं कत्वात्तिज्ञासाप पतिरिति

ननु केन मानेन वक्ष्यामः प्रसिद्धिः ननु समं मानमनेन तत्र हेति प्रकृत्या सेति वाच्यं अस्य दृष्टान्तो के संसृतिप्रदाभावेन तत्र

१३

22

नहिने सासवेति मूलकृत्यनुसारचकर्मणिषहीमाह कृत्यनुगमाचेति अति सूत्रयोरेकार्यत्वलाभाचेत्यर्थः जि
 ज्ञासापदस्यावयवार्थमाह सातमिति ननु नवगतवस्तुनीत्याया अदर्शनात् सा मूलविषयत्वात् न वक्तव्यं वस्तुतानं
 जिज्ञासायाः फलतदेव मूलकथमित्याशंसाह अवगतौति अवगतिरुपाभिसात्मिकमचेतनमवगतिः
 पर्यतोवधिर्धर्मविदमात्माकार इति तानस्यतदेव जिज्ञासायाकर्मतदेव फलं मूलत्वापातज्ञानमित्युक्तावस्य
 नेति फलमूलत्वात्तयोभेदाच्च जिज्ञासानुपपत्तिरित्यर्थः ननु गमनस्य ग्रामः कर्मतत्प्राप्तिः फलमिति भेदात्कर्म
 वफलमित्युक्तं तत्राह फलेति क्रियातरेतयोभेदे यो ह्यायाः फलविषयत्वात्कर्मवफलमित्यर्थः ननु तत्तावता
 तोरेकादे दोक्तेरपुनरित्यत्राह ज्ञानेनेति ज्ञानवृत्तिः अवगतिस्तत्फलमिति भेद इति भावः अवगतमभिधानेन
 ने अवगतः फलत्वस्य दृष्टि रिति द्रष्टेति दिशोक्तं हेतुमाहति शेषेति वीजमविद्यायादिर्यस्यानर्थस्य तत्राशक
 कृत्यनुगमाच्चयनेवास्मानिभूतानिनायेतरत्यायाः कृत्यतद्विजिज्ञास स्वतद्रूपेति प्रत्यक्षमेव तत्र सतेति
 ज्ञासाकर्मिकत्वं दर्शयति तच्च कर्ममधीषणिर्यदेसत्रेण नुगतं भवति तस्माद्दृष्टाण इति कर्मणिषही ज्ञावमिद्धा
 जिज्ञासा अवगतिपर्यंतं ज्ञानमन्वाच्यायाः कर्मफलविषयत्वादित्यायाज्ञानेन हि प्रमाणात्तावगतं
 मिष्टं त्रयं त्रयं अवगतिर्हि पुरुषार्थः निः शेषसंसारवीजा विद्याद्यनर्थ निवर्हणत्वात् तस्माद्दृष्टं जिज्ञासितं
 तन्मनसं प्रसिद्धमप्रसिद्धं नैति ज्ञासितं यमया प्रसिद्धं नैव शक्यं जिज्ञासितमिति अथ ते अस्तित्वं दृष्टमित्युक्तं
 त्वदित्यर्थः अवयवार्थमुक्ता सूत्रवाक्यार्थमाह तस्मादिति अत्र सत्या मुक्तसंभावसर्वतंसर्वशक्तिसमन्वितं
 तस्य विचारतदाकलंतव्यपत्येन सूचयति अथातः शब्दाभासमधिकारिणाः साधित्वात् तेन त्रयं ज्ञानाय विचारः कर्तव्य
 इत्यर्थः स्तित्तोयं वार्तिकं प्रथमवार्तिकं तेषां भासनात्तावविषयादिसिद्धावपि त्रयं प्रसिद्धं प्रसिद्धो विषयादिसंभवा
 संभवाभासासारभसंदेह एव पदमाह तत्सन्नरिति पुनः शब्दवार्तिकं तावत्तनार्थः यदि वेदतत्विचारात्तावगतं
 स्तत्ताने तर्हि ज्ञानत्वरूपविषयत्वात् न हि अज्ञानाभावेन तत्रिचुतिरूपं फलमपि नास्तीति न विचारयितव्यं अथात्तात्
 केनापि तर्हि तदुद्देशेन विचारः कर्तव्यं न शक्यते अतस्तत्तद्देशगोपानात् तथा च बुद्धवन्नारूढस्य विचारात्प्रकशास्ते
 तावेदो नैव प्रतिपादनायोग्यत् तत्प्रतिपाद्यत्वरूपः संवर्णो नास्तीति ज्ञानानुत्पत्तेः फलमपि नास्तीत्यनारभ्यशा
 स्त्रमित्यर्थः आपातप्रसिद्धाविषयादित्वाभावेन आरंभणीयमिति सिद्धांतयति उच्यते इत्यादिना प्रसिद्धं तावदित्यर्थः अ
 स्तित्वस्याप्रकृतत्वेनास्ति पदस्य प्रसिद्धिरित्याह

वास्याद्यदिप्रसिद्धं

॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥

योतत्त्वारणत्वं तर्कतत्त्वमात्रं किं तु कर्तव्योपादानत्वे भयरूपमिद्विषयसम्पत्तिं निरुवृत्तं
 तौ भयकारणत्वे लक्षणमिलच्छान्तिविना तत्त्वं ननु निदास्य निरुपावस्याः कारणत्वं किं
 च लक्षणमिति चेदुच्यते यथा दन्तं प्रकृतं लक्षणं यदन्तं तस्मात्प्रति शिति न्यायस्य

तत्र सत्त्वसत्त्वकमेव विप्रतिपत्तीरूपमस्ति देहमात्रमिमादिना यास्तु ज्ञानशून्याः प्राकृताः वेदवाङ्मनान्तरा
 तार्किकादिमनमाह अस्तीति सास्वमनमाह भोक्तेति किमात्मादेहादिरूपः उत न द्वित्रिविप्रतिपत्तिको दित्वेन देह
 दियमनो बुद्धिशून्यान्तरा तद्विज्ञेयिकत्वादिमात्रवेति विप्रतिपत्तिको दित्वेन तार्किकसास्वपदावुपन्यसाकर्तृपी
 श्वराद्विज्ञेयवेति विवादको दित्वेन योगिमनमाह अस्ति तद्यतिरिक्त ईश्वर इति निरतिशयसत्त्वं गृहीत्वेश्वरः स
 वंतत्वादिसंयत्र इति योगिनो वदेति मेदको दिसुक्ता सिंसंतको दिसाह आत्मा स भोक्तेरिति भोक्ते जीवसाकर्तृ सा
 दित्वाः स ईश्वर आत्मा स्वरूपमिति चेदंति नो वदेतीत्यर्थः विप्रतिपत्तीरूपसंदूरति एवं वदवति विप्रतिपत्तीनां
 प्रपंचेनिरासस्य विवरणोपन्यासो दृष्टान्तः सुखबोधायेतीदं परमार्थे तत्र युक्तिवाकाश्याः सिंसंतिनः जीवोत्र
 खेव प्राप्तात्मा तत्र अस्ति वदइत्यादि युक्तेः तत्त्वमसीत्यादि श्रुतेः आवाधितयाः सत्त्वात् अनेन देहादिरात्मा ह्यन्यथ गोचरत्वा
 देहमात्रं चैतन्यविशिष्टमात्रेति प्राकृतज्ञाना लोकायनिकायु विप्रतिपत्ता इन्द्रियाण्येव चेतनात्मा मेति अपरे म
 नो नो विज्ञानमात्राणि कश्चित्के शून्याभिप्राये अस्ति देहादिव्यतिरिक्तः संसारीकर्ता भोक्ते त्वपरे
 भोक्ते वक्तव्यं न कर्तव्यं के अस्ति तद्यतिरिक्त ईश्वरः सर्वज्ञः सर्वशक्तिरिति केचिदात्मा स भोक्तेरित्यप
 रं एवं वदो विप्रतिपत्ताः युक्तिवाक्यतदाभाससमाश्रयाः संतुल्य विचार्य यत्किंचिन्मतिपद्यमानो
 धतिरेकेण तद्वदित्यादियुक्ताभासं स निःश्रेयसात्यतिद्वेषतान धेयेयात्
 बाणप्ररुषात्र समयः इन्द्रियसंवादे चक्षुरादयः ते देवान्तराः मनश्चाद्योयं विज्ञानमयः असदेवेदमग्र आसी
 त्कर्तृवोद्भूतशून्यः आत्मानं मंतरोयमयति वाकाभासवाप्रित्ता इति विभागः देहादिरनात्मा भोक्ते कत्वा
 दृष्टत्वादित्यादि चैवानंदमयोभासा हिंसा श्रेयसाभासं विवक्षते ननु संतविप्रतिपत्तयस्तथापि कस्याय न्मते अहं
 दाश्रयाणां तस्यार्थः सेत्स्यति किं त्रस्य विचारं भेदोपपत्त्याह तत्रा विचार्यति अस्यात्मेकाज्ञानादेव मुक्तिरिति
 वस्तुतः मंतं तत्राश्रयो न दभावात्मा दाप्रतिः किं चात्मानं मन्वात्मा तस्याप्यन्यसंग्राहकं पतते अथ तम
 प्रविशति ये के चात्मा दन्ता न शतिश्रुतेः यो न्यथा संज्ञात्मानं मन्वात्मा प्रतिपद्यते किं तेन न कृतं पापं चोपायमा
 यहा रिणति वचनाच्चैत्यर्थः अतः सर्वेषां मुसहृणतिः अथ साफल्यं वेदातविचारः कर्तव्य इति ॥

शुभा
प्र.
२५

देहो जायते अस्ति वर्धते विपरिणामते अपक्षीयते नश्यतीति यावत्कस्मिन्निवाकं पतत्तत्र मूलं किं न्यादित्यत्राह यास्क इति या
स्कमुक्तिः किल महाभूतानामुत्पत्त्यानां स्थितकालं भातिकेषु प्रत्यक्षेण जन्मादिषट्कमप्युक्तमनिरुक्तवाच्यकारन
मूली कृत्यजन्मादिषट्ककारणान्तराणां सत्तायुतिश्रद्धा सत्तकृता त्रस्यलक्षणानां संगृहीतं किंतु महाभूतानां ल
क्षणमुक्तमिति शंका स्यात्तासां भादित्येकस्य कृत्यजन्मादयस्त्रयस्य च श्रद्धाद्युतेश्च यः यदि निरुक्तस्यापि श्रुतिमूलमिति
महाभूतजन्मादिकमर्थस्तद्विज्ञाप्रतिरेव सत्तमूलमस्ति किमेतर्गुनानि कृतेनेति भावः यदि जगतो ब्रह्मातिरिक्त
कारणस्यात् तदा त्रस्यलक्षणस्यात् जतिवास्यादिदोषस्यादत्तत्तत्रिंशत्सायलक्षणसूत्रेण ब्रह्मविना जगत्तन्मादिकं न
संभवति कारणतः रासंभवादिति युक्तिः सूत्रितासातर्कपादे विस्तरेण वक्ष्यते अधुना संक्षेपेण तां दर्शयति न च

स्मादु

यास्कपरिपठितानां तज्जायते स्तीत्यादीनां श्रद्धांतेषां जगतः स्थितिकालेपि संभावमानत्वात् मूलकारण इत्य
ति स्थितिना जगत्तज्जायते नरदीताः स्वरित्याशंको तन्माशो कीति योऽप्यति संज्ञास्तत्रैव स्थितिः प्रलयश्चेत्तद्व्युत्पत्ते
न यथा कविशेषाणां जगतो यथा कविशेषाणां मीश्वरमुक्ता न्यतः प्रधानादचेतनादणुभ्यो वा भावात्संसारि
णो वात्यादिकं संभावयितुं शकं न च संभावतो विशिष्टदेशकालनिमित्तानां मिश्रपादानात् ॥

२४

श्रोतेत्यादिना नामरूपाभां व्याकृतस्येतादीनां चतुर्णां जगद्विशेषाणां व्याख्यानां वसरे प्रधानशून्ययोः संसारिणश्च
निरासो दर्शितः परमाण्वनामचेतनानां स्वतः प्रत्यययोगात् जीवान्यसत्तानां शून्यत्वनियमेनानुमानात्सर्वज्ञस्य
सिद्धौ तेषां प्रकाभावात् जगदारभकत्वा संभव इति भावः संभावादेव विचित्रजगदितिलोकायतस्तत्पत्त्याह न च
ति जातउत्पादिसंभावयितुं न शक्यमित्यन्वयः किं स्वयमेव स्वस्य देव इति स्वभावः उत्कारणानपेक्षत्वं ना
यः आत्मा श्रयात् न द्वितीयश्चाह विशिष्टेति विशिष्टात्मनः साधारणानि देशकालनिमित्तानि तेषां कार्या
धिभिरुपादीयमानत्वात् कार्यस्य कारणानपेक्षत्वेन पुक्तमित्यर्थः अनपेक्षत्वेनान्याधिनां भूविशेषेष्वपि काले
वीजादिनिमित्तैव प्रवृत्तिर्न स्यादिति भावः

२५

शा
प्र
१६

यथाकश्चिद्विधा रदेशोपपन्नो नैव तत्रावस्थेय इति चेन्नैव तत्रावस्थेयः केनचिन्मुक्तवन्धस्तदुक्तमार्गप्रद्वारा समर्थः पेरितः स्वयंतर्ककुशा
लोमेधावीस्वदेशानेव प्रामुखा देवमेवेहा विद्या कामादिभिः स्वरूपानेदात्म्यात्वा स्मिन्नाहने संसारे हिमः केनचिद्विधा परव
शान्तरूपेणानासितं संसारं किं न तत्त्वमसीत्पदिष्टस्वरूपः स्वयंतर्ककुशालश्चेत्स्वरूपेण नीचात्रात्पथेति प्रतिः स्वप्नाः
पुरुषमतिरूपतर्कापेक्षोदशयति इत्याह पेरित इति आत्मनः प्रतेरित्यर्थः ननु ब्रह्मणो मननाद्यपेक्षानयुक्ता वेदार्थत्वा
न धर्मवत् किंतु प्रतिनिर्गता च दय एवापेक्षिता इत्यत आह नेति जिज्ञास्येधमं इव जिज्ञासो ब्रह्मणो नित्यत्वेन अनुभवे
ब्रह्मसाक्षात्कारात्वा विदुर्न भवः आदिपदाम्नननिदिष्टा धर्मोदः तत्र हेतुमाह अनुभवेति मुक्तार्थं ब्रह्मज्ञानस्य सा
क्षात्कारावसानत्वापेक्षान्न प्रत्यभूतमिदु ब्रह्मणो चरत्वेन साक्षात्कारफलकत्वसंभवात् तदर्थं मननाद्यपेक्षायुक्ता
धर्मतुलितपरोक्षे साधे साक्षात्कारस्य नपेक्षितत्वादसंभवाच्च अत्रानिर्णयमात्रमनुष्ठाप्येक्षितलिंगादयस्तु क्रतुं त
पेरितोमेधावीगांधारानेवोपसंप्रयेतैवमेवेहा चार्थवान्पुरुषो वेदेति च पुरुषवुद्धिमादायमात्मनो दर्शयति न धर्मंति
हासायामिव अत्रादय एव प्रमाणं ब्रह्म जिज्ञासायां किंतु अत्रादयो नु भवादयश्च यथा संभवमिदं प्रमाणमनुभ
वावसानत्वात् तत्त्ववस्तुविषयत्वाच्च ब्रह्मविज्ञानस्य कर्तव्ये दिविषये नानुमानापेक्षास्तीति अत्रादीनामेव प्रामा
ण्यस्यात् पुरुषाधीनात्मलाभत्वाच्च कर्तव्यं कर्तुं स न्यथा वा कर्तव्यं वा लौकिकं वेदिकं च कर्म यथा येन गच्छति
पद्मामन्यथा वा न वा गच्छतीति तथातिरात्रे चोदशिनैरह्नातिनातिरात्रे चोदशिनैरह्नात्तदिते न दोषानुदिने
भूता एव प्रतिहारातिगोपयोगित्वेनापेक्षते न मन चादयः अनुपयोगादित्यर्थः निरपेक्षः शास्त्रः प्रतिः शास्त्रार्थप्रका
शनसामर्थ्यलिंगोपदेशो गेतरपदाकांक्षवाक्यं अगवाक्ये साधे च प्रधानवाक्यप्रकरणक्रमवित्तासमर्थानां क्रमपठिते
यथाक्रमं संबन्धः स्थानयथैसा आदयः इष्टयोदशक्रमेणापठिता इत्यादिपदप्रयोगेन तदर्थमात्रं दर्शयति
इष्टीरोचनादिवादितादयस्तत्र प्रथमं द्विप्रथमं त्रयविनियोगादयः घटनीये संज्ञासाम्यसमाख्यायार्थवत्सत्त्वानामे
जाणा माध्वयवसंज्ञकैर्कर्मणि विनियोग इति विवेकः एवता बहु स्मन मननाद्यपेक्षे वेदार्थत्वाद्भवदित्यनुमाने साध्यत्वेन
धर्मस्यानुभवाद्योपत्वमनपेक्षित्वानुभवत्वे चोपाधिरित्युक्तमुपाधिव्यतिरेका इत्यणि मननाद्यपेक्षत्वे चोक्तत्रयदिवेदा
र्थमात्रेण ब्रह्मणो धर्मणा साम्यत्वे च तत्तर्हि कृतिसाध्यत्वे विधिनिषेधविकल्पोत्सर्गपदाश्च ब्रह्मणि धर्मवत्पुनरिति वि
पदे वापकमाह पुरुषेणादिना पुरुषकृत्यधीनात्मलाभतयि स्थित इवाच्च धर्मश्रवणादीनामेव प्रामाण्यमित्यन्वयः
धर्मस्य साध्यत्वे लौकिककर्म इष्टोत्तेन स्फुटयति कर्तुमिति लौकिकवदित्यर्थः इष्टात् स्फुटयति यथेति दर्शयति कमाह

मकर्तुः स्थ

25

इति चेन्नैव तत्रावस्थेयः केनचिन्मुक्तवन्धस्तदुक्तमार्गप्रद्वारा समर्थः पेरितः स्वयंतर्ककुशा
लोमेधावीस्वदेशानेव प्रामुखा देवमेवेहा विद्या कामादिभिः स्वरूपानेदात्म्यात्वा स्मिन्नाहने संसारे हिमः केनचिद्विधा परव
शान्तरूपेणानासितं संसारं किं न तत्त्वमसीत्पदिष्टस्वरूपः स्वयंतर्ककुशालश्चेत्स्वरूपेण नीचात्रात्पथेति प्रतिः स्वप्नाः
पुरुषमतिरूपतर्कापेक्षोदशयति इत्याह पेरित इति आत्मनः प्रतेरित्यर्थः ननु ब्रह्मणो मननाद्यपेक्षानयुक्ता वेदार्थत्वा
न धर्मवत् किंतु प्रतिनिर्गता च दय एवापेक्षिता इत्यत आह नेति जिज्ञास्येधमं इव जिज्ञासो ब्रह्मणो नित्यत्वेन अनुभवे
ब्रह्मसाक्षात्कारात्वा विदुर्न भवः आदिपदाम्नननिदिष्टा धर्मोदः तत्र हेतुमाह अनुभवेति मुक्तार्थं ब्रह्मज्ञानस्य सा
क्षात्कारावसानत्वापेक्षान्न प्रत्यभूतमिदु ब्रह्मणो चरत्वेन साक्षात्कारफलकत्वसंभवात् तदर्थं मननाद्यपेक्षायुक्ता
धर्मतुलितपरोक्षे साधे साक्षात्कारस्य नपेक्षितत्वादसंभवाच्च अत्रानिर्णयमात्रमनुष्ठाप्येक्षितलिंगादयस्तु क्रतुं त
पेरितोमेधावीगांधारानेवोपसंप्रयेतैवमेवेहा चार्थवान्पुरुषो वेदेति च पुरुषवुद्धिमादायमात्मनो दर्शयति न धर्मंति
हासायामिव अत्रादय एव प्रमाणं ब्रह्म जिज्ञासायां किंतु अत्रादयो नु भवादयश्च यथा संभवमिदं प्रमाणमनुभ
वावसानत्वात् तत्त्ववस्तुविषयत्वाच्च ब्रह्मविज्ञानस्य कर्तव्ये दिविषये नानुमानापेक्षास्तीति अत्रादीनामेव प्रामा
ण्यस्यात् पुरुषाधीनात्मलाभत्वाच्च कर्तव्यं कर्तुं स न्यथा वा कर्तव्यं वा लौकिकं वेदिकं च कर्म यथा येन गच्छति
पद्मामन्यथा वा न वा गच्छतीति तथातिरात्रे चोदशिनैरह्नातिनातिरात्रे चोदशिनैरह्नात्तदिते न दोषानुदिने
भूता एव प्रतिहारातिगोपयोगित्वेनापेक्षते न मन चादयः अनुपयोगादित्यर्थः निरपेक्षः शास्त्रः प्रतिः शास्त्रार्थप्रका
शनसामर्थ्यलिंगोपदेशो गेतरपदाकांक्षवाक्यं अगवाक्ये साधे च प्रधानवाक्यप्रकरणक्रमवित्तासमर्थानां क्रमपठिते
यथाक्रमं संबन्धः स्थानयथैसा आदयः इष्टयोदशक्रमेणापठिता इत्यादिपदप्रयोगेन तदर्थमात्रं दर्शयति
इष्टीरोचनादिवादितादयस्तत्र प्रथमं द्विप्रथमं त्रयविनियोगादयः घटनीये संज्ञासाम्यसमाख्यायार्थवत्सत्त्वानामे
जाणा माध्वयवसंज्ञकैर्कर्मणि विनियोग इति विवेकः एवता बहु स्मन मननाद्यपेक्षे वेदार्थत्वाद्भवदित्यनुमाने साध्यत्वेन
धर्मस्यानुभवाद्योपत्वमनपेक्षित्वानुभवत्वे चोपाधिरित्युक्तमुपाधिव्यतिरेका इत्यणि मननाद्यपेक्षत्वे चोक्तत्रयदिवेदा
र्थमात्रेण ब्रह्मणो धर्मणा साम्यत्वे च तत्तर्हि कृतिसाध्यत्वे विधिनिषेधविकल्पोत्सर्गपदाश्च ब्रह्मणि धर्मवत्पुनरिति वि
पदे वापकमाह पुरुषेणादिना पुरुषकृत्यधीनात्मलाभतयि स्थित इवाच्च धर्मश्रवणादीनामेव प्रामाण्यमित्यन्वयः
धर्मस्य साध्यत्वे लौकिककर्म इष्टोत्तेन स्फुटयति कर्तुमिति लौकिकवदित्यर्थः इष्टात् स्फुटयति यथेति दर्शयति कमाह

सर्वोक्तसर्वज्ञत्वादिविशेषणमीश्वरमुक्ताजगदसत्तादिकं न संभवतीति भाष्येण कर्तारं विना कार्यनास्तीति व्यतिरेक उक्तः तेन
 यत्कार्यं तत्सकत्वं कमिति वापि नोपपत्तये एतदेव वापि ज्ञानेन जगत्तत्त्वज्ञानेन कर्तारं साधयति किं प्रसूतिना किं कर्माभातिपुण्यस्यति एत
 देवेति एतदेवानुमानमेव साधनेन श्रुतिविरहितमन्यत इति योजनम् अथवा एतदुपपत्तानमेव श्रुत्यनुयादक्युक्तिमात्रेण नास्म
 त्समस्तं सदनमानं स्वतंत्रमिति मन्यत इत्यर्थः सर्वज्ञत्वमादिश्यात्तः यद्वा व्यापितानमदकृतमेतत्तत्त्वज्ञानमेवानुमानमन्यत
 इत्यर्थः तत्रायं विभागः व्यापितानाज्ज्ञातः कर्तास्तीत्यस्मिन् च सिद्धिः पश्चात्सकतासर्वज्ञः जगत्कारणत्वाद्यतिरेकेण कुल्य
 लादिवदितिसर्वज्ञत्वसिद्धिर्लक्षणमिति अत्र मन्यत इत्यनुमानस्याभासत्वं सूचितं तच्चादि अकुरादोतावज्जीवः कर्तान
 भवति जीवादिभ्यश्च न ददते न त्वनियमादन्यः कर्तानास्येवेति व्यतिरेकेण निश्चयाद्यत्कार्यं तत्सकत्वं कमिति वापि ज्ञान
 नासिद्धिः लक्षणलिंगकानुमानेनैव बाधः अथागौरव्यजन्यज्ञानायोगात् यत्ज्ञानेन तन्मनोज्ञत्वमिति वापि विशेषेण निश्चयानासिद्धौ
 नाभावनिश्चयात् तस्मादतीरिष्यार्थप्रत्यर्थसंभावनायत्वेनानुमानयुक्तिमात्रेण स्वतंत्रमिति भावः नन्विदमपुनश्चातेरनुमा

अनुमानमेव

एतदेवानुमानं संसाधितिरित्येव श्रुतिरित्यादि साधनमीश्वरकारणानामन्यते नन्विदमपि तदेवोपपत्तयज्ञानादिसूत्रे
 न वेदांतवाक्येन नान्यथा नान्यथा तत्त्वज्ञानेन वेदांतवाक्यानि रिसूत्रे रुदादय विचार्यते वाक्यार्थविचारणाय च सा
 ननिर्हृतादिप्रसावगतिर्नानुमानादिप्रमाणतरे निवृत्ता नानुमानादिप्रमाणतरे निवृत्ता नानुमानादिप्रमाणतरे निवृत्ता
 विचारणाय च सा ननिर्हृतादिप्रसावगतिर्नानुमानादिप्रमाणतरे निवृत्ता नानुमानादिप्रमाणतरे निवृत्ता नानुमानादिप्रमाणतरे निवृत्ता
 कारणवादिषु तदर्थग्रहणादार्हानुमानमपि वेदांतवाक्याविशेषि प्रमाणं भवन्ननिवार्यते अतएव च सहायत्वेन त

नांतर्भावमभिप्रेत्य भवदीयसंज्ञकतानुमानस्यैवोपपत्तयज्ञानादिति वैशेषिकः कस्याभ्युपेयत्वात् ज्ञानयोमतव्यतिश्रुतिः
 शक्यते नन्विति ततो मन्यत इत्यनुमानस्याभासक्तिरयुक्तेति भावः यद्विष्णुर्नास्वतंत्रमानत्वेन स्यात्तद्विज्ञानसमन्व
 यादित्यादिना तासोतात्पर्यसंज्ञकत्वं न विचार्येत तस्मादुत्तरसंज्ञाणां श्रुतिविचारार्थत्वाज्ज्ञानादिसूत्रेपि श्रुतिरेव स्यात्
 अगाविचार्यते नानुमानमिति पविदयति नन्वि किंच समुदायस्य वगतिरभीष्टाय दध्यमस्य सारं सारं साचनानुमाना
 तनौ पत्रिषदमिति श्रुतेः अतो नानुमानं विचार्यमित्याह वाक्यार्थेति वाक्यस्य तदर्थस्य च विचाराद्यदप्यवमानं तात्पर्यं नि
 शुष्यः प्रमेयसंभवनिश्चयः तेन ज्ञाता ब्रह्मावगतिः मुक्त्यभवतीत्यर्थः संभवेद्यादाभावः अनुकिमनुमानमपेक्षितमे
 वनेत्याह सासन्निति विमतमभिन्ननिमित्तापादनकं विमतं चेत्तज्ज्ञानप्रकृतिकं कार्यत्वात् तस्यादिवदिति अनुमाने श्रुत्य
 र्थदार्ढ्यापापेक्षितमित्यर्थः दार्ढ्यसंशयविपर्ययसन्निवृत्तिः मतव्यतिश्रुत्यर्थस्तर्केण संभावनीय इत्यर्थः ॥

शा
प्र
१२

इदियाग्राह्यत्वं कुतश्च न आह स्वभावतश्चैतत् पराचिह्नानि चान्नान्त्यं भवितुमिति श्रुते चैव प्रमाणरूपादिहीनत्वाच्चेत्यर्थः इदियाग्राह्य
त्वमिवापि गृहः किं न स्यादित्यत आह सति होति तच्चास्तीति शेषः इदं कार्यं ब्रह्मजमिति वासिष्ठस्य तत्र स्यात्तौ दियुत्वा त्रमे
भवतीत्यर्थः द्वितीयकारणमिच्छावधिकारणस्य ब्रह्मत्वप्रतिबिम्बितत्वात् तन्मशकामित्याह कार्यमात्रमिति संबद्धं कृतयस्माद्
तिमन्तरेण जगत्कारणं त्रमेति निश्चयात् लाभस्य तन्मात्राभावाच्च प्रतिरेव पापान्तेन विचारणीयानुमानतया सनत्तादितिसाध्या
न्यदाराददिवद्ब्रह्मणः स्वप्रकाशकत्वादित्येतादर्थसंभावनां यथागतया विचार्यमित्युपसंहरति तस्मादिति एते
सूत्रस्य विषयवाक्यं सञ्जति किं पुनरिति इदं ब्रह्मण्यलक्षणार्थत्वेन विचारयितुमिष्टं वाक्यमिति त्वर्थः अत्र हि प्रथ
मसूत्रे विशिष्टाधिकारिणे ब्रह्मविचारं प्रतिपाद्य ब्रह्मज्ञातकामस्याद्वितीयसूत्रे लक्षणमुच्यते तथैव श्रुतावपि सुसुज्ञात्रे

स्वभावतो विषयविषयाणो रियाणि न ब्रह्मविषयाणि सति होति विषयत्वे ब्रह्मण इदं ब्रह्मण संबद्धं कार्यमिति ग
येत कार्यमात्रमेव ब्रह्मणो विषयस्य संबद्धं किमन्येन केन चिद्वा संबद्धमिति न शक्यं निश्चेतुं तस्मात्तन्मादि
सूत्रेनानुमानोपन्यासाद्य किं न हि वेदं जगत्का प्रदर्शनाद्ये किं पुनस्तद्देववाक्यस्य त्रैण इह लिलक्ष्यिषितं स
मवेवारुणिवरुणपितरस्य पससारग्रहीदिभरावोत्र सोतीस्य पक्रयादयतो वा इमानि भूतानि जायते येन ज्ञा
तानि जीवन्ति यत्पुंयं तमिं विंशति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्म तत्तस्मिन् निर्णयवाक्यमानं दाद्ये वावलिमानि भू
तानि जायते आनंदेन ज्ञातानि जीवन्ति आनंदे प्रयत्यमिं विंशती त्वन्मान्यप्येवं ज्ञातीयकानि वाक्यानि नि
मशुद्धबुद्धस्तत्स्वभावसंबद्धस्वरूपकारणविषयाण्यदाहर्तव्यानि

त३

26

संज्ञातकामस्य जगत्कारणत्वोपलक्षणानुवादेन ब्रह्मज्ञाप्यत इति श्रुतादर्थक्रमानुसारित्वं सूत्रस्य दर्शयितुं सोपक्रमे
वाक्यं पठति सूर्यरिति अर्थादिसारयुत्पदेशोऽर्थः अत्र येनैकत्वं विवक्षितं नानात्वे ब्रह्मत्वविधानायोगात् य
जगत्कारणतदेकमित्येवांतरवाक्ये यदेककारणत इत्येति वाच्यकारणतदेकं ब्रह्म इति वा महावक्त्रमिति भेदः किं
तद्विस्वरूपे लक्षणमित्याशंकावाक्ये पात्रिणीतौ पतः प्राज्ञार्थः सत्यज्ञानान्तरात् तस्यैव यः सर्वज्ञस्तस्मादित
द्वस्वनामरूपमन्त्रे च ज्ञायते विज्ञानमानंदे ब्रह्मत्वादिशास्त्रांतरीयवाक्यान् प्रत्यक्षविषयस्याह प्रमाण्यपीति एवं ज्ञाती
यकत्वमेवाह निरूपीति तदेव सर्वोत्तमं शास्त्रासलक्षणं देववाक्यानि जिज्ञासा ब्रह्मणि समन्वितानि तद्विद्यामुक्तिरिति
सिद्धे २ यस्य निश्चितत्वे देवतायै न शक्तयः श्रीरामे सर्वदेवतादेव देवमदेभजे ॥

१०

धर्मप्रसाधत्वमुपपाद्यतत्रविधादियोगतामाह विधीति विप्रतिषेधाश्रयिकत्वादयमर्थः साधयेत्यर्थवतः सावकाशाभवेति तेन
 स्थापयितुमर्थः यजेत नमुरागि वेदित्वा द्योविधिनिषेधाः जीदिभिर्धैवैवायजेतेति संभावितो विकल्पः अदृष्टाप्रदायो वैज्ञिकः ३
 दितानुदितेहमयोर्व्यवस्थितविकल्पः नदिस्थादिमुत्सर्गः अग्नीषोमीयेपशुमालभेतेत्यादः तथादवनीयजुदेतीमुत्सर्गः अथ ५३
 अपदेपदेजुदेतीत्युपवादोऽतिविशेषः एतेष्वपि स्मृत्युपपत्तिवारयति नतिनादिनाभूतवस्तुविषयत्वादित्येतेन इदं
 स्वेवैवंचटः एतेवेतिप्रकारविकल्पः अतिनास्तिवेति सतात्वरूपविकल्पः ननु वस्तुन्यथात्मादेवादिनामस्तिनास्ती
 त्यादिविकल्पादप्येतेन तत्र विकल्पनास्ति अतिनादिकोऽस्मिन्पुरुषबुद्धिस्तत्त्वज्ञानस्येदितमात्रासंप्रत्ययविपर्ययेति
 कल्पानप्रमारूपारूपद्वयार्थः अथभावः धर्मोदियवाययत्तायतेतथातथा कर्तृशक्त्यन्तरेति प्रमाणसंप्रत्ययविकल्पः सर्व
 प्रमारूपत्वमेवेति तत्त्वज्ञानेन तत्रापि सर्वविकल्पायथायाः स्मृतिरिति तत्रापि मिति वदंत प्रत्याह नेति यदिति वस्तुज्ञानम
 विसाधयानवत पुरुषबुद्धिमेव तत्त्वज्ञानेन तदास्ति विकल्पः यथायासुः नस्मिन् वस्तुज्ञाने पुरुषकिं तर्हि प्रमाणवस्तु ज्ञानेन
 विधिप्रतिषेधाश्रयार्थवतः स्याद्विकल्पात्साधयार्थवत् ननु वस्तुवैवैवमस्ति नास्तीति वा विकल्पाते विकल्पनास्तु पु
 रुषबुद्धयेदाः ननु वस्तुयाथातथज्ञानेन पुरुषबुद्धयेदा किं तर्हि वस्तुनेत्रमेव तत्र दिष्टाणां वेकस्मिन् स्थाणुवापुरुषो
 नोवेति तत्त्वज्ञानमेवेति तत्र पुरुषो न्योवेति मिथ्याज्ञाने स्थाणुवेति तत्त्वज्ञानवस्तुनेत्रत्वात् इव भवतु वस्तुवि
 षयाणां प्रामाण्यवस्तुनेत्रं तत्रैवं सति त्रयज्ञानमपि वस्तुनेत्रमेव भवतु वस्तुविषयत्वात् ननु भवतु वस्तुनेत्रत्वात्
 न प्रमाणतव विषयत्वमेवेति वेदान्ताका विचारणार्थं केचन प्रामाण्येदिया विषयत्वे संबधायदातः ॥
 याचवस्तुन एक रूपत्वादेकमेवज्ञानं प्रमाणमन्ये विकल्पा अथ यार्था एवेत्यर्थः अत्र दृष्टेतामाह नदिस्थाणविति स्था
 णुरेवेत्यवधारणे सिद्धे सर्वविकल्पायथाधानभवेतीत्यर्थः तत्रयदस्तु तेज्ञानं तद्यथायं पुरुष तेनेत्रमिति विभजते
 तत्रेति स्थाणवित्यर्थः स्थाणुवुक्त्यायं च ददिष्टातिदिष्टाति एवेमिति प्रकृतमाह तत्रैवं सतीति सिद्धेयं ज्ञानप्रमात्वस्य
 वस्तुधीनत्वे सति त्रयज्ञानमपि वस्तुनेत्रमेव यथायं पुरुष तेनेत्रमिति विषयत्वात् स्थाणुज्ञानवेदित्यर्थः अतः सा
 धयेत्यर्थं सर्वविकल्पाः पुंनत्रानसिद्धे इति वैलक्षण्येन धर्मप्रमाणे त्रयज्ञान इति मन्नाद्यप्येतासिद्धेति भावः ननु तर्हि त्रय
 प्रत्यक्षादिगोचरं धर्मविलक्षणत्वात् तथाच ननादिसूत्रे जगत्कारणानुमानविचारैस्मिद्धा येतसामान्यतात् ननु त्रिः
 सिद्धेयं तस्याप्रमानत्वे न तद्विचारस्यापि फलत्वादिति शङ्कते नत्विति प्रमाणान्तरविषयत्वमेव प्राप्तिमिति कृत्या प्रमा
 णान्तरमेव विचारप्रामाण्यविशेषः अत्र पूर्वापत्ती प्रसङ्गः किंयत्कार्यं तदुक्तं नमिस्त्वनुमानं त्रयसाधकं किं वा यत्कार्यं तत्स
 कारणकमितिः नायः व्याप्तासिद्धेर्विषयाह नेति त्रयज्ञानोदित्याश्रयत्वात् तदा त्रयसाधकं तत्र प्रमाणान्तर

५३

२

विषयत्वमित्यर्थः

वेदः स्वविषयादधिकार्थज्ञानवृत्तयः प्रमाणा वाक्याद्याकरणाभावात्तद्विदित्यनुमानात्तद्वत्तत्राप्रिमाद् यद्यदिति
विस्तरः शब्दाधिक्येनेनार्थतोत्पत्तेर्वेदवक्तृत्वात्तान्स्याद्याधिक्येन च यतिदृश्यते चाद्येवादाधिक्येवेद अत्रेवाप्येतन्ना य
यन्मात्रयस्यादात्मात्सम्भवतिसत्तः शब्दादधिकार्थज्ञादिति प्रसिद्धेयथा शब्दसाधुत्वादित्येकदेशेर्थायस्यतदपि व्याक
राणादिप्राणिन्यादेरधिकार्थज्ञानसम्भवति यद्यल्यार्थमपिशब्दमधिकार्थज्ञानसम्भवति तदास्यमदतस्यादिश्रुतेः य
स्यान्मदतपरिच्छिन्नात्मनात्सत्याद्यानेः सकाशादनेकशब्देत्यादिविशिष्टस्य वेदस्य पुरुषनिष्ठासुवत् अप्रयत्नेनै
वसंभवः तस्य सर्वतत्त्वं सर्वशक्तित्वेति किमवक्तव्यमिति तत्र वेदस्य पौरुषेयत्वं शक्यं निरासार्थं प्रतिपत्तिरिति निश्चि
तं पदार्थमाह अप्रयत्नेनेति प्रमाणतरेणार्थज्ञानप्रयासविनानिमेष्टादिप्रामेयतेत्यर्थः अत्रानुमानेनयः स
र्वतत्त्वं प्रतिपत्त्युक्तसर्वतत्त्वादौ यथाप्राणिन्यादिवृद्धेदेकर्तृयधिकार्थज्ञानस्यतामात्रसाध्यतेन त्वर्थज्ञानस्य वेददेतत्त्वं निश्चि

ॐ यद्यदिस्तरार्थं शास्त्रं पश्चात्पुरुषविशेषात्संभवति यथावा करणदिपाणिन्यादेर्ज्ञेयकदेशार्थमपि न तोष्यधिक
 तरविज्ञान इति प्रसिद्धं लोके किमु वक्तव्यं अनेकशाखाभेदभिन्नस्य देवतिर्यस्य नृष्यवाणश्चमादिप्रविभागदेतो
 रस्येव दाद्यात्स्यसर्वज्ञानाकरस्याप्रयत्नेनैव लीलात्मणेन पुरुषनिष्ठासुवद्यस्यान्महतो भूताद्यानेः संभवः
 अस्यामहतो भूतस्य निश्चितमेतद्यद्वेदस्यादिश्रुतेस्तस्य महतो भूतस्य निरतिशय सर्वज्ञत्वं सर्वशक्तित्वेति
 अथवाप्येतत् ऊरवेदादिशास्त्रयोर्निकारणं प्रमाणमस्य ब्रह्मण्यथावत्सकृपाधिगमेशास्त्रादेव प्रमाणमनो

अतिविरोधाद्देहज्ञानमात्रेण ध्येतव्यं देहकर्मत्वोपपत्तेश्च श्रयान्विशेषः अध्येतापरापेक्षैश्चरत्स्वकृतवेदानुश्रवोस्वयमेव
स्मरत्वात्तथैव कल्पादौ न स्मरिष्याविर्भावयत्र नानुवृत्तज्ञानत्वात्तदर्थमप्यवज्ञेनीयतया नानातीति सर्वज्ञरूपत्ववद्यं अथुना ब्रह्म
लक्षणानंतरं प्रमाणजिज्ञासायां वर्णिकांतरमाह अथेति लक्षणाप्रमाणाद्यो वसन्ति नार्थात्वादेकफलत्वसंगतिः ते
नैव निषिद्धपुरुषमिति ब्रह्मणो वैदेकवेद्यत्वं वृत्तेन वेति संशये कर्णलिंगेनैव लोचवाक्कर्तुरेकस्य सर्वज्ञस्य ब्रह्माणाः सिद्धेर्न
वृत्त इति शब्दे वेदप्रमाणकत्वाद्ब्रह्मणो न प्रमाणान्तरवेद्यत्वमिति सिद्धं नयति शास्त्रेणानित्यादिति प्रसंगात्तयोद्घातोद्देहत्वा
वसरत्वात्तानिर्वाहकैककार्यत्वेणोदासंगतिः ध्यते इति तद्याचष्टे यथोक्तमिति सर्वज्ञश्रवोतररूपक्षयक्तिह्यं संशयवीजं द
ष्टव्यं अत्र सर्वपदेन समानस्यैव विचार्यतामितिः फलं सिद्धं ते वेदानानामिति भेदः अन्वमानादिर्न ब्रह्ममिदं इत्यस्यैव प्रमा
त्रिरस्मा किंच विचित्रप्रपञ्चस्य प्रासादादिवदेककर्तृकतावापात्रलाघवावतारः न च सर्वज्ञत्वात्कर्तृरेकत्वं संभव एकत्वत्वात्

नात्सर्वज्ञानेन तत्तत्तद्विषयो न्यायः यमभिधेयादुपपन्नोति

हतानुवादेन संगतिवदन् नरसत्रमवतारयति जगदिदं चेतनस्य त्रयस्य लोकात्कारणत्वोक्ता सर्वज्ञत्वमर्थान्तरितान्तं सत्रक
 ताचेतनस्य हेतुतान पूर्वकत्वात् तथा च त्रयस्य सर्वकारणत्वात् यो यत्कृतं स तन्तः यथा कुलाल इति स्थितं तदेवार्थिकं सर्वज्ञत्वं
 प्रथमादिनिरासाय वेदकत्वं तदेव तानाद्वयत्रादेत्यर्थः हेतुद्वयस्य कार्यसाधनत्वादेक विषयत्वमवतारसंगतिः यद्वा वेद
 स्य नित्यत्वाद् हेतुः संगतः सर्वहेतुतानाभूतीत्याक्षेप संगत्या वेदहेतुत्वमुच्यते अस्य मद्भो भूतस्य नित्यसितमेतद्वदवेदोपपन्नं
 दः सामवेदो यथा गिरस इति वाक्यविषयः तत्किं वेदहेतुत्वेन त्रयस्यः सर्वज्ञत्वं साधयति उत नरिति सुदेहः तत्र व्याकरण
 दिव हेदस्य पौरुषेयत्वे मूलप्रमाणसापेक्षत्वेन प्रासादपातात्रसाधयति इति पूर्वपदे जगदेतौ धृतनत्वा सिद्धिः फलं
 सिद्धेते तन्निधिः अस्य वेदात्वात् सा स्य सत्रस्य लिंगस्य वेदकर्तृरि समन्वयोक्तेः कृतिशब्दात् प्रायुपादसंगतयः
 एवमापादंशकानां संगतयः कुर्याः वेदेहं सर्वार्थप्रकाशनशक्तिरूपलभ्यते सातदुपादानत्रयगतशक्तिप्रविकातद्व
 तत्वाप्रकाशनशक्तित्वात् कार्यगतशक्तित्वाद्वा प्रदीपशक्तिवदिति वेदोपादानत्वेन त्रयस्यः स्वमेव ह्यरोवाय

जगत्कारणत्वप्रदर्शने सर्वज्ञत्वं त्रयस्य पदसि संनदेव हेतुद्वयनाह सा स्यो नित्यादिति ३ मस्तत्र वेदादेः सा
 स्रस्यानेकविद्यास्थानोपलब्धितस्य प्रदीपवत्सर्वार्थप्रकाशयति नः सर्वज्ञकत्वं स्योनिः कारणो ब्रह्म
 हीदृशस्य सा त्रयस्य वेदादिलक्षणस्य सर्वज्ञगणान्वितस्य सर्वज्ञादन्यतः संभवोति ॥

प्रकाशनसामर्थ्यरूपं सर्वसाक्षित्वमिति यद्वा यथा धेतारः सर्वकर्मज्ञानावेदकुर्वन्ति तथा विचित्रगुणमायासदा
 यो नानुत्तानतस्तु प्रकाशचित्वात्रः परमेश्वरः स्वकृतं सर्वकल्पीयकर्मसंज्ञातीयकमवतं वेदराशितदर्थं श्रुयतप
 ज्ञानत्रयकरोतीति न वेदस्य पौरुषेयता यत्र यथा तान्त्रिकं वाक्यज्ञानवाक्यस्य हेतुकारण तत्र पौरुषेयता त्रयचयो
 गपद्या त्रयाश्रतो वेदकर्ता वेदमिव तदर्थमपि स्वसंबन्धुजातरीयकतया जानातीति सर्वज्ञ इति सिद्धं तयति शास्त्रेति शा
 स्रप्रतिहेतुत्वाद्भूतसर्वज्ञं सर्वकारणं चेति संगतिरुपानुसाराणां सत्रयोजनमधिभूतयदा निबान्धनमद्वैत इति हेतोः
 सर्वज्ञत्वमिदं वेदस्य विशेषणानि तत्र यथेत्येतत्तमरत्नं दितशसनात्वात् त्वयसा सुशब्दः शब्दमात्रापत्तेनाल्लघ
 इति मत्वाद् अनेकेति पुराणान्वायमीमांसाधर्मशक्त्याणि सिद्धाकल्पव्याकरणानिरुक्तद्वेदोपतिषातिषड्गानीति दश
 विद्यास्थाना निवेदार्थज्ञानहेतवत्कैरुपकृतस्य त्वयः अनेन मन्वादिभिः परिगृहीतत्वेन वेदस्य प्रामाण्यसूचिने अ
 वोपकत्वाभावादपि प्रामाण्यमिमांसा प्रदीपवदिति सर्वार्थप्रकाशनशक्तिमत्त्वेन चेतनतात्मेवैतत्कल्पत्वं यानिरु
 पादानकर्तृच ननु सर्वज्ञस्य योगाः सर्वार्थज्ञानशक्तिमत्त्वे वेदस्य न दन्ति तत्पितृयानेः सर्वज्ञत्वं कुत इत्यत आह

नदीति ३ पादमेतत्त्वमिति विना कार्येतरयोगात् वेदोपादानस्य सर्वज्ञत्वमनु
 स्रजं त्वसर्वदर्शितं न च विद्यायाः सदापतिः एति मत्त्वेन चेतनस्य दिग्भातः

पूर्वमीमांसा

शा.
भा.
२१

19

ननुपमं ब्रह्म जित्तासासत्रकारभासिदकांडदुयेर्यभेदउक्तः एककार्थार्थत्वे शास्त्रभेदानुपपत्तेः तत्रकांडदुयेजि
तास्यभेदसतिफलवैलक्षण्यवाच्यं तथाचमुक्तिफलानुपपत्तौ नान्यविधेयता मुक्तेविधेयक्रियानुपपत्तेकर्मफलभेद
विशेषप्रसंगात् अविशेषजित्तास्यभेदासिद्धः अतः कार्यफलविलक्षणत्वात् नित्यसिद्धमुक्तेः तद्येजकतानुविधि
रयुक्तइतिशकते नन्वेति मुक्तेकर्मफलभेदलक्षणमसिद्धमिति तदर्थं ज्ञानविधेयं नचतदिसफलकार्यमेववे
दातेषापिजित्तास्यमितितरेदोमिदिरितिवाच्यं रघुत्वात् नचब्रह्मणजित्तास्यत्वसत्रविशेषः ज्ञानविधिशेषत्वेनस
त्रकृतब्रह्मप्रतिपादनादितिपरिहरति नेति ब्रह्मणोविधिप्रयुक्तत्वेत्सुदयति आत्मावासीति ब्रह्मवेदेत्यत्रब्रह्मभाव
कामेब्रह्मवेदनेक्यदितिविधिपरिणाम्यतश्चिदृष्ट्या लोकज्ञानस्वरूपेवेदांतानेवाथतोदर्शयति नित्यसति ननु
नन्विदजित्तास्यवैलक्षण्यमुक्तेकर्मकांडेभयोपमौजित्तास्यरदतभूतनित्यनिर्भूतेब्रह्मजित्तास्यमिति तत्रपमंता
नफलादनुष्ठानायेतादिलक्षणब्रह्मज्ञानफलभवितुमर्हति नादेत्येवभवितकार्यविधिप्रयुक्तत्वेवब्रह्मणः
प्रतिपाद्यमानत्वादात्मावाशुरेदृष्ट्याः यथात्मापदतपाशासोत्वेष्ट्याः सविजित्तासितयः आत्मेत्येवापासीता
त्मानमेवलोकमुपासीत ब्रह्मवेदब्रह्मेवभवतीत्यादिषुदिविधानेषुसत्सुकासावात्मा ब्रह्मेत्याकांक्षायातत्स
रूपसमर्थानसर्वेवेदांतउपयुक्ताः नित्यः सवेतः सर्वगतैः नित्यतन्मोनिन्युदवदमुक्तस्वभावोवित्तानमान
देवस्येवमोदयस्तुडपासनाचशास्त्ररष्टादष्टामोतः फलंभविष्यतीति कतंयविधाननुप्रवेशतवस्तुमात्र
कथनेदानापादानासमवात्समदीपावस्तुमतीराज्ञायोगज्ञतीत्यादिवाक्यवेदांतवाक्यानामानर्थसमेवसात्र
चवस्तुमात्रकथनेपिरुज्जरियेनायंसर्वरसादोभोतिजनितभीति निवर्तनेनार्थवत्त्वेदृष्टंतथास्यसंसाधनत्व
स्तकथनेनसंसारित्वभातिनिवर्तनेनार्थवत्त्वेसातस्यादेतदेवयदिरजुस्वरूपप्रवारावसर्ग्यभोतिः संसारित्वभा
तिब्रह्मस्वरूपप्रवाराभात्रेणनिवर्तनेनलुनिवर्तनेनप्रतब्रह्मणोपिपथापूर्वसत्त्वः स्वादिसंसारधर्मदर्शना
ज्ञानव्योमतयोनिदिध्यासितेचरतिअवर्णेतरकालयोर्मनननिदिध्यासनयोर्दंशनात् तस्मात्प्रतिपत्तिविधिवि
किंविधिकलमितितदाह तदुपासनामिति प्रत्यग्रहोपासनातब्रह्मविदाप्रोतिपरमितिशास्त्रोक्तोमोद-स्वर्गचलो
काप्रसिद्धफलमित्यर्थः ब्रह्मणः कर्तव्योपासनाविधिविधिविशेषत्वानुगोकारेवापकमाद कर्तव्येति विध्यसंबद्धसिद्ध
वोपेप्रवृत्त्यादिफलाभावादेदांतानां वैफल्यमादित्यर्थः नन्विदशंकास्पृष्ट्यादृष्टातवैषम्यणपरिहरतिस्मादिति एतदर्थ
वत्तंपवचत्वादिनार्थः एवंशब्दाद्येमाद यदीति किंचयदित्तानादेवमुक्तिसदाश्रयानुज्ञानानतर्मननादिविधिनेसा
न तदर्थेयकार्यसाध्यामुक्तिरित्याह आतवाति शब्दानाकार्यान्वितशक्तेः प्रवृत्त्यादिफलसंबंधास्त्वान्तिदेफलाभावात्तम

तस्मादिह
ननुपमं ब्रह्म
जित्तासासत्रकारभासिदकांडदुयेर्यभेदउक्तः
एककार्थार्थत्वे शास्त्रभेदानुपपत्तेः
तत्रकांडदुयेजि
तास्यभेदसतिफलवैलक्षण्यवाच्यं
तथाचमुक्तिफलानुपपत्तौ नान्यविधेयता
मुक्तेविधेयक्रियानुपपत्तेकर्मफलभेद
विशेषप्रसंगात् अविशेषजित्तास्यभेदासिद्धः
अतः कार्यफलविलक्षणत्वात् नित्यसिद्धमुक्तेः
तद्येजकतानुविधि
रयुक्तइतिशकते नन्वेति मुक्तेकर्मफलभेदलक्षणमसिद्धमिति
तदर्थं ज्ञानविधेयं नचतदिसफलकार्यमेववे
दातेषापिजित्तास्यमितितरेदोमिदिरितिवाच्यं
रघुत्वात् नचब्रह्मणजित्तास्यत्वसत्रविशेषः
ज्ञानविधिशेषत्वेनस
त्रकृतब्रह्मप्रतिपादनादितिपरिहरति नेति
ब्रह्मणोविधिप्रयुक्तत्वेत्सुदयति आत्मावासीति
ब्रह्मवेदेत्यत्रब्रह्मभाव
कामेब्रह्मवेदनेक्यदितिविधिपरिणाम्यतश्चिदृष्ट्या
लोकज्ञानस्वरूपेवेदांतानेवाथतोदर्शयति
नित्यसति ननु
नन्विदजित्तास्यवैलक्षण्यमुक्तेकर्मकांडेभयोपमौ
जित्तास्यरदतभूतनित्यनिर्भूतेब्रह्मजित्तास्यमिति
तत्रपमंता
नफलादनुष्ठानायेतादिलक्षणब्रह्मज्ञानफलभवितुमर्हति
नादेत्येवभवितकार्यविधिप्रयुक्तत्वेवब्रह्मणः
प्रतिपाद्यमानत्वादात्मावाशुरेदृष्ट्याः
यथात्मापदतपाशासोत्वेष्ट्याः
सविजित्तासितयः
आत्मेत्येवापासीता
त्मानमेवलोकमुपासीत
ब्रह्मवेदब्रह्मेवभवतीत्यादिषुदिविधानेषुसत्सुकासावात्मा
ब्रह्मेत्याकांक्षायातत्स
रूपसमर्थानसर्वेवेदांतउपयुक्ताः
नित्यः सवेतः सर्वगतैः
नित्यतन्मोनिन्युदवदमुक्तस्वभावोवित्तानमान
देवस्येवमोदयस्तुडपासनाचशास्त्ररष्टादष्टामोतः
फलंभविष्यतीति कतंयविधाननुप्रवेशतवस्तुमात्र
कथनेदानापादानासमवात्समदीपावस्तुमतीराज्ञायोगज्ञतीत्यादिवाक्यवेदांतवाक्यानामानर्थसमेवसात्र
चवस्तुमात्रकथनेपिरुज्जरियेनायंसर्वरसादोभोतिजनितभीति निवर्तनेनार्थवत्त्वेदृष्टंतथास्यसंसाधनत्व
स्तकथनेनसंसारित्वभातिनिवर्तनेनार्थवत्त्वेसातस्यादेतदेवयदिरजुस्वरूपप्रवारावसर्ग्यभोतिः संसारित्वभा
तिब्रह्मस्वरूपप्रवाराभात्रेणनिवर्तनेनलुनिवर्तनेनप्रतब्रह्मणोपिपथापूर्वसत्त्वः स्वादिसंसारधर्मदर्शना
ज्ञानव्योमतयोनिदिध्यासितेचरतिअवर्णेतरकालयोर्मनननिदिध्यासनयोर्दंशनात् तस्मात्प्रतिपत्तिविधिवि
किंविधिकलमितितदाह तदुपासनामिति प्रत्यग्रहोपासनातब्रह्मविदाप्रोतिपरमितिशास्त्रोक्तोमोद-स्वर्गचलो
काप्रसिद्धफलमित्यर्थः ब्रह्मणः कर्तव्योपासनाविधिविधिविशेषत्वानुगोकारेवापकमाद कर्तव्येति विध्यसंबद्धसिद्ध
वोपेप्रवृत्त्यादिफलाभावादेदांतानां वैफल्यमादित्यर्थः नन्विदशंकास्पृष्ट्यादृष्टातवैषम्यणपरिहरतिस्मादिति एतदर्थ
वत्तंपवचत्वादिनार्थः एवंशब्दाद्येमाद यदीति किंचयदित्तानादेवमुक्तिसदाश्रयानुज्ञानानतर्मननादिविधिनेसा
न तदर्थेयकार्यसाध्यामुक्तिरित्याह आतवाति शब्दानाकार्यान्वितशक्तेः प्रवृत्त्यादिफलसंबंधास्त्वान्तिदेफलाभावात्तम

२१

शा.
भा.
२१

मनुष्यात्वाद्धर्मागतेषु सुखलवण्योदनाल्लक्षणार्थमसाध्यवेति गम्यते तारतम्येन वर्तमानस्तथाह
ले प्रपंचयति तथार्थमिति विविधकर्मफलमोक्षस्य तदेतल्लक्षणानां यथाचितमुपसर्जति एवमिति अस्मिताका
मक्रोद्यमभयान्यादिशब्दार्थः तेषां भुक्तास्तीक्ष्णलोकां विशालमित्याद्यास्पृतिः काष्ठापचयाज्जलोपचयदर्शनात् फले
तारतम्येन साधनतारतम्याच्च मानेनार्थः अतिमाद तयाहीति मोक्षो न कर्मफलकर्मफलविरुद्धातीरित्यतस्त्रिषो
कत्वशरीराद्यभोग्यत्वादियमवत्ताद्यनिरुक्तास्तीक्ष्णलोकां विशालमित्याद्यास्पृतिः काष्ठापचयाज्जलोपचयदर्शनात् फले
तत्त्वतो विदेहसंतमात्मानं वैषयिके सुखदः खनेव स्थित इत्यर्थः मोक्षश्चेदुपासना रूपं यमफलं तदेव प्रियमस्तीति त
त्रिषेधायोगादित्याह यमेकार्यत्वे हीति ननु प्रियं नाम वैषयिकं सुखं तत्रिषिधयते मोक्षस्तु यमफलमेव कर्मणो विचि

न५

२०

स्यात् १ ति२

५ तथामानुष्यादिषु तारकस्यावरोतेषु सुखलवण्योदनाल्लक्षणार्थमसाध्यवेति गम्यते तारतम्येन वर्तमानस्तथाह
६ गतेषु योगतेषु च देहवत्सुखदः खतारतम्यदर्शनात् तदेतौ यमस्य प्रतिषेधचोदनाल्लक्षणस्य तदनुष्ठापितं
७ च तारतम्यगम्यते एवमिति घाटिदाष्वतां यमो यमतारतम्यानिमित्तं शरीरापादानं प्रवेकं सुखदः खतारतम्य
८ मनिस्तसंसाररूपप्रतिस्पर्शिन्यायप्रसिद्धं तयाहि अतिनैद्वैतसंशरीरस्य सतः प्रियाप्रिययोरपदतिरस्तीति
९ यथावर्णितं संसाररूपमनुवदति अशरीरवाव संतं प्रियाप्रियस्पर्शत इति प्रियाप्रियस्पर्शनप्रतिषेधाच्चोदनाल्ल
१० णार्थमकार्यत्वं मोक्षात्साशरीरत्वस्य प्रतिषिध्यत इति गम्यते यमकार्यत्वेदि प्रियाप्रियस्पर्शनप्रतिषेधाच्चोदनाल्ल
११ यते अशरीरत्वमेव यमकार्यमिति चेन्न तस्य स्वाभाविकत्वादशरीरं शरीरेषु न वस्येष्टवस्थितं मरानेविभुमत्मानं
१२ मत्वाधोरेन शेषेति अत्राणोद्यमनः शुभासंगोद्येषु कुरुष्व इत्यादि प्रतिभोजनं वा नष्टं फलविलक्षणं मोक्षाद्यम
१३ शरीरत्वेनित्यमिति सिद्धं तत्र किंचित्परिणामित्वेनैव स्मिन्त्रिक्रियमाणोपितदेव दमिति बुद्धिर्न विदम्यते यथाप्रियं वा
१४ उफलदानसामं ग्यादिति शोकते अशरीरत्वमेवेति आत्मनो देहासंगित्वमशरीरत्वे तस्यानादितात्र कर्मसाधनेत्यार
१५ नेति अशरीरस्थलदेहस्य न देहस्यनेकेषु निरुपेयकनित्यमवस्थितं मरानेवापि न आपेदिकमदत्त्वेवारयति वि
१६ भूमिति तमात्मानं तात्वाधीरः सच्छोकोपलक्षितं संसारं नानुभवतीत्यर्थः सत्सदेहाभावे अतिमाद अत्राणा इति
१७ प्राणमनसोः क्रियाज्ञानशक्तौ निषेधात्तदधीता नो कर्मज्ञानेदियाणा निषेधो रित्यतः अतः शुद्ध इत्यर्थः देहदयाभा
१८ वे अतिः अमोहीति निर्देहात्मस्वरूपमोक्षस्यानादिभावत्वे सिद्धे फलितमाद अतएवेति नित्यत्वपि परिणामितया
१९ यमकार्यत्वं मोक्षस्य ताशकानि सहेया विभजते तत्र किंचिदिति नित्यवस्तुमप्य इत्यर्थः परिणामि च तत्रिष्ये चेति परिणामि

वि
ति
२१

२२

वेदांतात्तन्निधिपयः स्वार्थफलवत्तेसमिनिनियोज्यविधुरत्वात्त्रापेसर्गश्रुतिवाक्यवत् सोरोदीत्तराकामोयजेतेतिवाक्योनिगमायदे
 तोविशेषादयमिति सिद्धं तद्यति अत्रेति यदुक्तं मोक्षकामस्यनियोज्यस्यज्ञानेविधेयमितितत्रेताद नेति मोक्षो नविधित्तयः क
 म्यत्तविलक्षणत्वात् आत्मवदित्यर्थः उक्तदेतत्तानाथकर्मतत्त्वत्वेप्रपंचयति शरीरमित्यादिनावहितेसंसाररूपमनुवदतीत्य
 तेन अथवेदाययनानेतरेअतोवेदेस्यफलवदध्यपरत्वात् धर्मनिर्णयायकर्मवाक्यविचारः कर्तव्य इति सूत्रार्थः न केवलं धर्मोक्तं
 कर्मकित्त्वधर्मोपीत्याद अथर्मोपीति निषेधवाक्यप्रमाणकत्वादित्यर्थः कर्मोक्तफलमार तपोयिति मोक्षत्वतोद्विषयोविशोकः
 शरीराद्यभोग्याविषयादिजन्योनात्मवित्त्वप्रसिद्धरिति वैलक्षण्यज्ञानाप्रत्यक्षत्वादीनि विशेषणानिसामान्येन कर्मफलमुक्त्वा
 धर्मफलेश्चक्यपंचयति मनुष्यत्वादिति संप्रकाशमान्यज्ञानंदस्ततः शतगुणैर्गंधर्वादीनामिति श्रुतेरनुभवानुसारत्वमनुश
 यत्राभिधीयतेन कर्मवृत्त्यविद्याफलयोर्वैलक्षण्यकारणं वाचिकं मानसेच कर्मश्रुतिस्मृतिसिद्धेधर्माप्ययद्विषयान्तिता
 साग्रथातो धर्मनिर्णयसिद्धिस्तत्रा अथर्मोपीदिसिद्धिप्रतिषेधचोदनालक्षणत्वान्तितास्यः परिहारायतयोद्योदनालक्षण
 योर्यथा नर्थाप्योर्धर्माप्ययोः फलेप्रत्यक्षेसावहः तेषामीरवाग्रनोभिरेवोपभूतमानेविषयेद्विषययोगजन्यवृत्त्यादिपुष्पा
 त वगतेषु प्रसिद्धे मनुष्यत्वादिभ्यः अत्रातेषु देवत्वादिभ्यः अत्रातेषु देवत्वादिभ्यः अत्रातेषु देवत्वादिभ्यः अत्रातेषु देवत्वादिभ्यः १

विधेयं विद्वत्
 सते

त विकारितारतम्यप्रसिद्धे चार्थित्वसामर्थ्यादेरुक्तमधिकारितारतम्यं तस्याचयागमनानुप्रायिनामेवविद्यासमाधिविशेषादितरेण
 यथागमनं केवलैरिहाप्रतदतसाधनेधर्मादिक्रमेणयत्तिनोनयथागमनं तत्रापिसावितारतम्यं तस्यापनतारतम्यं चशरायाव
 त्स्यात्तन्मयित्वेयस्याज्ञमते ॥
 त्वार्थः ततश्चसावेतारतम्यादित्यर्थः मोक्षस्तानिरतिशयस्तस्याधनेचतत्त्वज्ञानमेकरूप
 मिति वैलक्षण्य किंचसाधनचतस्रस्यसंज्ञकस्यैवमोक्षविद्याधिकारीकर्मणिगुणानाविधुरतिवैलक्षण्यमाह धर्मनि
 गम्यतेन केवलं किंतुप्रसिद्धेचेत्यर्थः अर्थित्वफलकामित्वे सामर्थ्यं लौकिकं पुत्रादि आदिपदादिद्वत्वासास्त्रानिदितत्वेच
 किंचकर्मफलसार्गपाप्यंमोक्षस्तानिरतिशयेदमाह तत्रेतिपुष्पासनायचित्तस्थेयं प्रकृष्टात् अतिरादिमार्गीतात्रयलो
 कगमनंतेविषयमित्यादिनाश्रुयतेत्यर्थः अग्रिमेवचः सत्यंवेदानां चानुपालने आतिथ्यंवे अदेवचरस्यमित्यभिधीयते
 वापीकृत्यतशागदिदेवतायतेनानिच अत्रप्रदानसारासः पूर्णमितिभिधीयते २ शरणगतसेवाभूतानां चैषादिसून
 वदिर्वदिचणदानेदततदभिधीयते २ तत्रापिचंदलाकेपीत्यर्थः सेयतनिगम्यस्यालोकादमुलोकमनेनेतिसंघातकर्म
 यावत्कर्मभोक्तव्यंतावन्निष्ठापुनरायोतीत्यर्थः ॥

इति ॥

[illegible]

प्रतिज्ञाचतुष्टयेदेतमाह संपदादीति उपकमादित्तिगैर्ब्रह्मात्मैकत्वेवस्तु निप्रमिति देतः यः समानाधिकरणावाक्या
नांपदनिष्ठः समन्वयः तात्पर्यनिष्ठितेतत्प्राप्तयेत किंचैकत्वज्ञानादाज्ञानात्किं स्पष्टदृश्यस्यातः करणस्योपागमादिप्र
तिष्ठिन्मनस्तादात्म्यरूपादेकारुं धिर्वा नशतीमज्ञाननिवृत्तिफलत्वाक्यमर्थवादः स्यात्संपदादित्ज्ञानस्याप्रमा
तेनाज्ञानानिवर्तकत्वात्किंच जीवस्य ब्रह्मत्वसंपदाकथं तद्भावः पूर्वरूपे स्थिते नष्टे वा न्यस्यान्यात्मना योगात्तस्या
त्रसंपदादिरूपमित्यर्थः फलितमाह अतएति प्रमान्त्रकृतिसाध्या किंतदिनिमित्तैव प्रमाणसाध्येत्यर्थः उक्तरीत्या

संपदादिरूपेदिब्रह्मात्मैकत्ववित्तानेभ्युपगम्यमानेतत्तमस्यद्वैतस्यास्यसमात्मात्रस्यैवमादीनांवाक्या
नांपदोक्तैकत्ववस्तुप्रतिपादनपरः पदसमन्वयः पीद्येतभिद्येतदृश्येयधिः सिद्येतैसर्वसंशया इति चैवमा
दीनां विद्यानिष्ठतिफलात् स्युपरुपे रत्न ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीति चैवमादीनितद्वावापतिवचना निषेध
दादिपक्षेन सामंजस्येनोपपद्ये रस्तस्यात्र संपदादिरूपे ब्रह्मात्मैकत्ववित्तानमज्ञानपुरुषव्यापारतेत्राब्रह्मवि
द्या किंतदिप्रत्यक्षादिप्रमाणविषयवस्तुज्ञानवदस्तु तत्रैवैवभूतस्य च ब्रह्मणास्तज्ञानस्य च न कया विद्युत्त
शक्तः कार्यानुप्रवेशः कल्पयितुं न च विदिक्रिया कर्मत्वेन कार्यानुप्रवेशो ब्रह्मण्यन्यदेव तदिदितादृशो
विदितदृशीति विदिक्रिया कर्मत्वप्रतिषेधायेनेदं सर्वविज्ञानातिवर्तकं न विज्ञानीयादिति च तयोपास्तिक्रिया
कर्मत्वप्रतिषेधोपि भवति यद्वाचानभ्युदितेयेन वागभ्युद्यतस्य विषयत्वब्रह्म उपन्यस्तदेव ब्रह्मविद्धिनेदं यत्

दिदमुपासत इति

सिद्धिब्रह्मरूपमोक्षसाधकं साधत्वेन ज्ञानस्य नियोगविषयत्वे च कल्पयितुं मशकं कल्पसाधत्वादिमाह एवं
भूतमिति ननु ब्रह्मकार्यो गकारकत्वात्सावेताण कर्मकारका अपवादिति चेत्किं ज्ञाने ब्रह्मणः कर्मकारकत्वसं
तोपासनायां नापत्त्याद न चेति शास्त्रज्ञाने विदिक्रिया शब्दार्थः विदितं कार्यं मविदितं कारणं तस्मादप्यन्य
दित्यर्थः येनात्मनारदं सर्वदृश्यं लोको ज्ञानातिवर्तकं न कारणेन जानीयात् तस्मादविषयश्रुत्यस्यार्थः न हि तोय इत्य
इ तथेति यत्मानसात्तमनुत्त इति श्रुत्या लोको मनसा यद्ब्रह्म तज्ज्ञानातीत्या विषयत्वमुक्ता तदेव वेद्यं च ब्रह्म त्वेवि
द्वियत्तयाधिविशिष्टदेवतादिकमिदमित्युपासते जनाः नदब्रह्मस्यार्थः ॥

शा.
भा.
२५

शंकते स्वात्मधर्ममिति ब्रह्मात्मस्वरूपवमोक्षोनायविद्यामलावृतः उपासतुयामलेनष्टे भिद्यन्ते रत्न उदघोतः
यथेति संस्कारो मलनाशः किंमात्मनिमलः सत्यः कल्पितोवादितीयेतानादेवतत्रागेनक्रिययाप्रायेक्रियाकि
मात्मनिष्टाचन्यतिष्टावा नाशरत्याह नक्रियेति अनुपपत्तिस्तुटयति युदिति क्रियादिस्वाश्रयसंयोगादिविकारम
कुर्वती ननुयतस्मर्थः तच्चवाकावोधने नदितीयुत्त्याह अतोति अविषयित्वाक्रियाश्रयश्चासंयोगित्वादिति
पावरूपेण तसाचयवेक्रियाश्रयेष्टुक्चूर्णदिद्वयसंयोगित्वात्संक्रियत इति भावः अन्यक्रियया न संक्रियत

स्वात्मधर्म एव संस्तिरोभूतोमोक्षः क्रिययात्मनि संस्क्रियमाणो भिद्यन्ते यथादर्शनिर्वाणक्रियया संस्क्रि
यमाणो भास्वरत्नधर्म इति चेन्न क्रियाश्रयत्वानुपपत्तेरन्तर्भावो यदाश्रयाक्रियातमविकुर्वती नैवात्माने लभ
ते यथात्माक्रियया विक्रियेतानि सत्वमात्मनः प्रसङ्गे ताविकाश्रयसुच्यत इति चेन्न मादीनिवाका निवाधे
रस्तु चानिष्टं तस्मात्तस्याश्रयाक्रियात्मनः संभवति अस्याश्रयात्क्रियाया अविषयत्वात्तयात्मा संक्रियते या
ननु देहाश्रययास्त्रानाचमनयतोपवीतादिकया क्रियया देहो संस्क्रियमाणो दृष्टः न देहादिसंदत्तस्य वा वि
द्यारहीनस्यात्मनः संस्क्रियमाणत्वात्तस्य चेद्विज्ञानाचमनादेहं समवायित्वेन या देहाश्रयया तत्संदत्त एव
कश्चिदविद्ययात्मत्वेन परिरह्यतः संक्रियत इति युक्तं यथा देहस्य अपचिकित्सा निमित्तेन धातुसाम्येन तत्संद
त्तस्य तदभिमानिन आरोग्यफलमदमरोग इति यत्र बुद्धिरुत्पद्यते एवं त्रानाचमनयतोपवीतादिना देहश्रुः
संस्क्रुत इति यत्र बुद्धिरुत्पद्यते सः संक्रियते स च देहेन संदत्त एव तेनैव दृष्टे कर्त्ता देहप्रत्ययविषयेण प्रत्ययिना स
कैः क्रियानिर्वर्तते फले च स एवाति

इयत्र यमिचारं शंकते नन्निति आत्मनोमूला विद्याप्रतिबिंबित्वेन रहीतस्य नरोदमिति भांसादेरतादन्त्यमापन्नस्य
क्रियाश्रयत्वभावात्संस्कार्यत्वभूमात्रयमिचार इत्याह नेति कश्चिदिति अनिश्चितवस्वरूप इत्यर्थः यत्रात्मनि वि
षये आरोग्यबुद्धिरुत्पद्यते तस्य देहसंदत्तस्य वा रोगफलमित्यन्वयः ननु देहाभिन्नस्य कथं संस्कारस्तस्यासुखिक
फलभोक्तृत्वायोगादित्यत आह तेनेति देहसंदत्ततेनैवातः करणप्रतिबिंबित्वान्नाकर्त्ता इमिति भासमानेन प्रत्यया
कामाद्यो मनस्तदात्मादस्य संतोषिप्रत्ययिता क्रिया कले भुज्यत इत्यर्थः मनोविशिष्टस्यासुखिकभोक्तृसंस्कारेण युक्तं

संस्क्रियते

२५

अस्यः शब्दो धाविषयत्वे प्रतिज्ञाद्वानिरिति संकते अविषयत्वरिति वेदांते जगत्कृतिकृताविषयनिवृत्तिरिति लक्षणं
 नया शास्त्रप्रमाणकत्वेन विषयत्वेन प्रकाशय प्रमाणस्य भिन्नकस्य प्रमाणविषयत्वादप्येवमिति परिहरति
 नेति परत्वात्फलत्वादित्यर्थः निवृत्तिरूपप्रमाणत्वादिति वार्थः उक्तं विज्ञाते न निवृत्तिरिति विदित्विषयत्वं
 मविषयतया प्रतिदंतया अदृश्यत्वे प्रतिमाद तया चेति यस्याप्रत्यक्षमनं चेतन्याविषयत्वं निश्चयत्वेन सम्यगवग
 नेयस्य तत्प्रत्यक्षमचेतन्यविषय इति मतं सन्न वेद उक्तमवदाह्यं ये मनवदति अविज्ञातमिति अविषयतया प्रत्यक्ष
 ज्ञाननाम विज्ञातमदृश्यमिति पक्षः अज्ञानात् अविज्ञातं दृश्यमिति पक्ष इत्यर्थः दृष्टे ईष्टारे च तत्प्रमाणो हनेः सा
 त्वात् अतया दृश्यया दृष्टान्नपक्षः विज्ञाते तु विज्ञाते निश्चयरूपायाः साक्षिणो नवानविषयीकृत्या इत्याह नेति

अविषयत्वे अस्यः शब्दो धाविषयत्वे प्रतिज्ञाद्वानिरिति चेन्न विद्या कल्पितभेदनिवृत्तिपरत्वात् तस्य न हि शास्त्रमिदं
 तया विषयभूते अस्य प्रतिपादयितुं किं तद्विषयगत्यगत्वात् नानाविषयतया प्रतिपादयद्विद्या कल्पितं वेद्यवेदित्वे
 दनादिभेदस्य नयति तया च यत्तु यस्यामृतं तस्यामृतं मतं यस्यामृतं रसः अविज्ञाते विज्ञानना विज्ञातमविज्ञान
 नां विज्ञातमविज्ञानं न दृष्टे ईष्टारे पक्षे अविज्ञाते विज्ञाना र विज्ञानोपा रति चेन्नमादि अतो विद्या कल्पितं स सा
 रित्वं निवर्तनेन नित्यस्य कृत्यरूपसमवेष्टात् अतो दृष्टान्तिरित्येव दोषः यस्य तस्या गोमोक्षलक्षणमानसवाचिकका
 रिकं वा कार्यमपेक्षित इति युक्तं तथा चिकार्यत्वे च तथाः पक्षयोर्मौल्यप्रत्यक्षमनित्यत्वेन दिदृष्टादि विकार्यस्य
 यो वाच्यतादिनित्यं दृष्टो केन चाप्यनेना विचार्यता यदा सात्म्यरूपत्वं सत्यनाप्यत्वात् त्वयानिरिक्तत्वेन प्रमाणेना
 प्यत्वं सर्वगतत्वेन नित्यामस्वरूपत्वात् त्वयैवावस्थात्वात् आकाशस्य च नापि संस्कारो मोक्षो येन व्यापारमपेक्षेतेन स
 स्कारो नाम संस्कार्यस्यागुणधानेन वास्या होषाय न येन वा नानावहुताधाने न संभवत्वात् अपेक्षानि शय अस्य स्वर
 नन्वविद्यादिनिवर्तकत्वेन सत्यस्य शास्त्राण्यपि निवृत्तेरगंतुकत्वात् मोक्षस्यानित्यत्वे सादिति नेत्याह अत इति तत्त्वज्ञा
 नादित्यर्थः अं सस्य नित्यत्वादात्मरूपत्वाच्च नानित्यत्वं प्रसक्त इत्यर्थः अत इति विज्ञातमिति संस्काररूपं च त्वविषयं च क्रियाफलं
 तद्विज्ञातानां तस्यानोपासनासाधनमित्याह यस्यातिव्यादिना तस्यान्तोन मेकं मुक्तं तेन तत्तथासाधुत्ववत् विकार्य
 त्वे चापेक्षित इति युक्तमित्यन्वयः दृश्यति तया रिति स्थितस्यावस्थात्वं विकार्यः नन्वित्यस्य निरासार्थं क्रियास्थितत्वं
 अस्य शास्त्रमनुदागिरित्येव नेत्याह न चेति अज्ञानो वा भिन्नवाच्यमप्यथा प्रत्याज्ञा क्रियापेक्षेताद सात्त्विकदिना यथा श्रीही
 दोल्लसंस्कारेण न प्रादुर्भावोक्त्या तया मोक्षस्य नेत्याह नापीत्यादिना गुणधानेन मोक्षे प्रोक्षणादिना तात्त्विकवत्तादौ मत्वा

नादि

भा.
सा.
२६

विषयवस्तुनयेता कृत्तिसाध्याचक्रियेसत्रदृष्टोत्तमाद् यथेति गृहीतमधर्पुमोतिशेषः वषट्कारिष्यन्तेतासंथां देवतामिति
चैवमादिवाक्येषु यथायादृशी ध्यान क्रिया वस्तुनयेता पुनत्राचोयनेतादृशी क्रियेत्यर्थः ध्यानमपिमानसत्वात्तान
वत्रक्रियेत्यतश्चाद् ध्यानमिमादिना तथापि क्रियेवेति शेषः कृत्यसाधनत्वमप्यधिरितिभावः ध्यानक्रियामुक्ताततो
यैल्लक्षणं तानस्य स्फुटं ति ज्ञानेति श्रुतः प्रमाणाच्चोदनात्त्रविधेर्विषयः पुरुषः कृत्तिसारात्त्रहेतुर्यस्यातस्य
रुषतंत्रं तस्यादृष्टव्यमिच्छासदपुनत्रत्वाच्च ध्याना ज्ञानस्य मयनभेदरूपः भेदमेव दृष्टोत्तमरेणार्थः यथाचेति श्रुते
दासतेपि विधितो ध्यानेकर्तृशकं न ज्ञानमित्यर्थः ननप्रत्यक्षज्ञानस्य विषयस्तनयातनं तत्रापि शास्त्रोपस्यतदभा

यथायस्यै देवतायैद्विर्गृहीतं तन्मात्रं मनसा ध्यायेदृषट्कारिष्यन्ति तिसंथां मनसा ध्यायेदिति चैवमादिषु ध्यानेति
तनेययपिमानसतथापि पुरुषाण कर्तृमनसा वा कर्तृशकं पुरुषतंत्रत्वात् ज्ञानतप्रमाणान्नं प्रमाण
च यथाभूतवस्तुविषयमतो ज्ञानेकर्तृमकर्तृमनसा कर्तृमशकं केवलवस्तुतंत्रमेव तत्रोदनात्त्रेता
पि पुरुषतंत्रं तस्यान्तानसत्तेपि ज्ञानस्य मद्दैलक्षणं यथाच पुरुषोत्तमवर्गो नमाधिरस्य योषित्पुरुषयो
रग्निबुद्धिमानसीभवति केवलचोदना जन्मसात्क्रियैव तसा पुरुषतंत्राच्च यानप्रसिद्धे प्रावप्तिबुद्धिर्न चोद
नात्त्राज्ञापि पुरुषतंत्राकि तर्हि प्रत्यक्षविषयवस्तुतंत्रेवेति ज्ञानमेव तत्र क्रियायवस्तुतंत्रं प्रमाणविषयवस्तुतंत्रं
दित्यं तत्रैवं सति यथाभूतवस्तुविषयमपि ज्ञानेन चोदनात्त्रेतादृष्टयेति श्रुतदयः श्रुत्याणां श्रुत्यानियो
गविषयत्वात्केटी भवंत्यपत्तदिषु प्रपुक्तत्वरैतद्विषादवददेयान् पादेयवस्तुविषयत्वात् ॥

24

वात विधेयक्रियात्वमिति नेत्ताद् एवं सवेति शास्त्रानुमानाद्यर्थेषु पि ज्ञानमविधेयक्रियात्वेन ज्ञातव्यं तत्रापिमाना
देवज्ञानस्य प्रामेविधयोगादित्यर्थः तत्रैवं सति लोके ज्ञानस्याविधेयत्वे सतीत्यर्थः यथाभूतत्वमवाधितत्वं तन्वासा
नेपक्षेदृष्टत्वे विद्वि आत्मा दृष्टव्यरतिज्ञानेति लोकोदतव्यप्रत्यया विधायकाः श्रुयतेतो ज्ञानं विधेयमित्यतश्चाद् तद्विष
यइति तस्मिन् ज्ञानरूपविषये विधयः पुरुषं प्रवर्तयितुमशक्तमवेति श्रुति यो नोक्तसाधनियाम् शून्यवात्ताने तद्विषय
त्वादित्यर्थः ममायं नियोगरतिबोद्धनियोजो विषयश्च विधेनास्तीतिभावः तद्विज्ञेयं त्रसविधीयतां नेत्याद् अदेयेति व
स्तुस्वरूपो विषयस्तत्वा दृष्टमाणेति श्रुत्या साध्यात्तत्र विधेयत्वमित्यर्थः उदासीनवस्तुविषयकत्वाच्च ज्ञानेन विधेय

प्रमाणं तदभावादिनर्थः ॥

२६

विशिष्टस्य भोक्तृत्वेन केवलं स्यात् साक्षात्प्राप्तत्वात् तयो रिति प्रमादसाक्षितोर्मध्ये सत्त्वसंस्पर्शमात्रेण कल्पितकर्मत्वादिसाम्यमा
 तापिष्णुलकर्मफलभेदे सपश्यो धितत्वेनान्यः साक्षित्वा प्रकाशतरत्यर्थः आत्मादेहः देहादिपुक्तप्रमात्रात्मानमित्यर्थः एवं योप
 धिकस्य चिदात्मिण्या संस्कार्य मन्त्रानिरूपणधिकस्या संस्कार्यत्वे मानमाद एक रति सर्वभूतेषु द्वितीयोपकोदेवः स्वप्रकाशस्थथा
 पिमायावृत्तत्वात् प्रकाशतस्याद गृह्यति ननु जीवेनासंबंधाद् द्वित्रत्वाद् देवस्याभानेन तमायागदनादि नित्येनाद सर्वे व्यापी स
 र्वभूतानां तस्येति देवस्याविभूतान् सर्वं प्राणिप्रत्यक्षाद्यावरणदेवामानमित्यर्थः प्रत्यक्कर्मत्वेन्यादिति चेन्न कर्मभावात् क्रियासा
 तीत्यर्थः तदिसात्त्वमस्तीति हेतावतिः न सर्वभूतानामपि धानभूतत्वासाक्षीभवति सात्त्विकमपि धाने साक्षित्वा कल्पितमिति भावः सा
 क्षित्वाद्यर्थमाद चेत्ता केवलरति योद्यते सत्यकती साक्षीति लोकप्रसिद्धं चकारादेवाभावसमुच्चयार्थः निर्गुणत्वात् त्रिदोषत्वाच्च

तयोरमः पिष्णुलं स्वादुतन अन्नमो भिद्याकरी नीतिमंत्रवर्णं दातुं द्रियमत्रोपुक्तं भोक्तेत्याहर्मनीक्षित्वा रति च तथा
 एको देवः सर्वभूतेषु गुरुः सर्वव्यापी सर्वभूतानां त्मा कर्मभावात् सर्वभूताधिवासः साक्षी चेत्ता केवलं निर्गुणाश्च
 तिस्रपयगा च्छुक्रमकाय सचलामसाविरे शुद्धमयापविडमिति चेत्ता मंत्रावनाथे पातिशयतां निमग्नदत्तच वंर
 एण दर्शयतः तस्य भावश्च मोक्षस्तस्या त्रसंस्कार्योपि मोक्षः अतो न्यमोक्षं प्राति क्रियानु प्रवेशाद्वारं नशक केनचि ज्ञानं विना
 दर्शयितुं तस्य ज्ञानमेकं मन्त्रा क्रियायां पमात्रस्याप्यनु प्रवेशाद्वारं नशक केनचि न न ज्ञानेनाममानसी क्रिया न
 वैलक्षण्यक्रिया दिनामसायत्र वस्तुत्वरूपनिरपेक्षे वैलक्षण्यप्रदुष्य चित्तव्यापारपी ना च ॥

गुणो दोष नाशो वा संस्कारो नेत्यर्थः सरस्य प्रकमा च्छुकादिशब्दः पुंस्त्वेन वाच्यः स आत्मा परिसर्वमगाद्यातः प्रको दीप्तिमा
 न अकापोलिगशून्यः अत्राश्रयदत्तः असाविरे शिराविधुरः अनश्वर रति वा आभ्यां पदाम्भास्यलदेहशून्यत्वमुक्तं अ
 द्दोरागादिमलशून्यः अयापविदः शुष्णपापाभास संस्काररत्यर्थः अत रति इत्यस्यामि विकार संस्कारेभ्यो न्यग्वचमकि
 याफलं नास्ति यन्मोक्षसा क्रियासा धाने द्वारं भवेदित्यर्थः ननु मोक्षसाध्यायत्वेण स्वार्थं भोचया न ज्ञानाद्यत्वं तदिसाद
 तस्यादिति द्वाराभावादित्यर्थः आत्मा तेश कते न निति तथा च मोक्षे क्रियानु प्रवेशे नास्तीति याद तमिति भावः
 मानसमपि ज्ञानेन विधिद्योगक्रिया वस्तुनैव ज्ञानात्कृत्य साध्यात्वाच्चेत्याद नेति वैलक्षण्यं प्रयंचयति क्रिया दीति यत्र
 विषये तदनुपेक्षे चया चोद्यते तत्र सादिकियेति याजना ॥

25

ॐ मानाभावोसिद्धिराह तत्रेति अत्रानुपपत्त्यस्यैवकारणत्वात्तत्रेति उपनिषदेकवेद्यस्याकार्येणैव तत्त्ववेदस्य कार्यपरत्वमसि
द्धे नचप्रवृत्तिनिवृत्तिभ्यांलिंगभ्यांश्रोतस्य हेतुकार्ये बोधजनमायवत्तत्वात्कारणकार्यपरत्वंतिष्ठित्वावावस्थपदानां कार्य
न्वितेशक्तिप्रदात्रसिद्धस्यापदार्थस्यवाक्यार्थत्वमितिवाच्ये पुत्रेतेजान्तश्मिवाकाशोत्पत्तिरुद्देशंलिंगेनेष्टं पुत्रजननानुपा
यपुत्रादिपदानांसिद्धे संगतिप्रदात्कारणान्वितापेक्षान्वितार्थशक्तिरित्यंगोकारेणाद्यवाक्किं हस्यापिवाक्यार्थत्वादित्यलं
किंच पुत्रसंगेनास्ति त्वादेवकृत्स्नवेदस्यकार्यपरत्वंउतवेदानेष्टतस्याभावात् अथवाकार्येणैव तत्त्ववेदस्यकार्यपरत्वंतिष्ठित्वा
अदोस्तिन्मानानंतरविरोधान्न तत्राद्यप्यत्रयनिराचष्टेयं साधयति अनन्यशेषार्थमसंसारोत्पादिविशेषाणां नास्ति त्वा
तत्रौपनिषदस्यपुरुषस्यानन्यशेषत्वात् योसादुपनिषत्स्ववाधिगतः पुरुषोसंसारोत्पत्त्योत्पादादिचतुर्विधद्वयवि
लक्षणः स्वप्रकरणाद्येनन्यशेषोनासौनास्तिनाधिगम्यतरतिवाशकं वदितं स एष नेतिनेत्यात्मैवात्मशा
दात्मनश्च प्रमात्यानस्याशकत्वात् नन्वात्मादेशतयविषयत्वादुपनिषत्स्वविवक्षा यत इत्यनुपपत्तेरनतत्त्वा
दित्वेन प्रत्युक्तत्वात्तदप्रत्ययविषयकारकत्वातिरेकेणातस्मात्सर्वभूतस्यः सम एकः कूटस्थनित्यः पुरु
षोविधिकंउतर्कसमयेवाकेनचिदधिगतः सर्वस्यात्मातः सन्नकेनचित्स्यात्वात्तुशक्यविधिषत्वानेत
आत्मत्वादेवच सर्वेषां नद्वयोनाप्युपादेयः सर्वदिविनश्यदिकारणं पुरुषानेतिनश्यतिपुरुषोविनाशदेत्
भावादविनाशीविक्रियादेत्वभावाच्च कूटस्थनित्यः तेष्वनित्यप्रवृत्तुमुक्तस्वभावस्तस्यात्पुरुषात्परेकिं न
भावेहेतुवेदोत्तमानसिद्धत्वादेवंतरमात्मत्वमाह स एष इति रतिरिदमर्थेइदंनइदं चित्त्वाकाशासापरागतिः
नेतिसर्वदृष्टनिषेधेनय आत्माउपादेष्टुः स एष इत्यर्थः चतुर्थशकते नन्वात्माइमिति आत्मनेदेकारादि सात्त्वित्वेनादे
धोविषयत्वमनिरस्तत्वात्तलोकसिद्धतेत्याह नेति यतीर्थकभावाच्चिनजानेतिनस्यात्मेकिकत्वेकिसुवाचमित्याह न
दीति समस्तारतमवर्जितः ततस्मत्त आत्मानधिगतिद्योतकार्तिविशेषणानि पंचमनिरस्यति अत इति केनचिद्वा
दिनाप्रमाणेनचतुर्थः अगम्यत्वात्तमानंतरविरोध इतिभावः साक्षीकर्मांतचेतनत्वात्कर्तृवदितितत्राह विधीति
अत्रानुपपत्तिर्ननुपयोगात्तातस्पृष्टात्तत्त्वान्नकर्मशेषत्वमित्यर्थः सात्त्विकाः सर्वशेषित्वाद्दद्यान्नुपादेयत्वाच्चन
कर्मशेषत्वमित्याह आत्मत्वादिति अनित्यत्वेनात्मनेदेयत्वमाशङ्काह सर्वदीति पाण्डोर्मतेनद्वयोनिराचष्टे

विक्रियेति उपादेयत्वेनिएच है अतएवेतिनि विंकारत्वादि
सर्गः उपादेयत्वेदिस्मापममनत्वात्मनः निद्रासिद्धत्वादिग

विधिपदानां गतिं ह्यत्र किमर्थं नोति विधिज्ञापानिप्रसिद्धाणां दिविधित्वं नोत्तर्यः विधिप्रत्यये आत्मज्ञानं परमपुरुषा
यं साधनमिति स्तुत्यते स्तथा आत्मनिकेष्टदेतत्त्वभोक्तृणां विषयेषु प्रवृत्तिः आत्मप्रवृत्त्यादिप्रतिबंधिका तत्रिह नित्यकला निविधि
पदानोत्तरं स्वाभाविकेति विदुषोति योहीत्यादिना तत्र विषयेषु संज्ञातस्या प्रवृत्तिस्तत्रैव चराच्छब्दादेरित्यर्थः स्वातंत्र्य
तद्वति प्रवादः प्रवर्तयेति साधनं प्रवृत्त्यादिविधिप्रोषः प्रवृत्त्यात्वरूपमाह तस्येति अन्वेषणात्ज्ञानं यदिदं न गतं न
वैमात्मेवेत्यनात्मवायेनात्मा चोपपत्तेः द्वितीयादृश्यात्मा चोपेकविधिसंपत्तौ हेतव नोपजीवनः कः स्यात्स्वीतीति भावः

किमर्थानि तेषां त्वा वा अरे इष्टं वा इत्यादीनि विधिज्ज्ञायाः वचनानि स्वाभाविकप्रवृत्तिविषयविमूढीकर
णार्थानीति ब्रूमः यो दिवदिमृतः प्रवर्तते ते पुरुष इष्टं मे भूयादिति संभ्राम्दिति न च तत्रात्यंतिकं पुरुषार्थं त्वम
तेन मात्यंतिकं पुरुषार्थं वांछितं स्वाभाविककार्यकारणसत्तानि प्रवृत्तिगोचरादिमूढीकृत्य प्रत्यगात्मनो तत्त
पाप्रवर्तयं त्यात्मा अरे इष्टं वा इत्यादीनि तस्यात्मानेष्टाणां प्रवृत्तस्यादेयमनुयादेयं चात्मतत्त्वमुपदिश्यते इदं
वैयर्थ्यमात्मा यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूतत्वेन केन केन केन केन विज्ञानीयाद्विज्ञातारमरे केन विज्ञानीयादयमात्मा
ब्रह्मेत्यादिभिर्वैयर्थ्यकर्तृत्वाप्रधानमात्मज्ञानेदानायापानायायवानभवतीति तत्र ये वैयर्थ्यपरास्ते त्वं करोम
मस्माकं यद्वात्मा वागतौ सत्यां सर्वकर्तृत्वादायानिःकृतकृत्यता चेति तत्राचक्रानिः आत्मानं चेद्विज्ञानीया
दयमस्मीति पुरुषः किमिच्छन्कस्य कामाय शरीरमनुसज्येत एतदुद्धावृत्तिमान्स्यात्कृतकृत्यप्रभारतेति
स्मरतेः तस्मान्न प्रतियतिविधिविषयतया ब्रह्मसमर्थता एव विवेचिता इह प्रवृत्तिनिवृत्तिविधितज्ज्ञेयव्यतिरे
केण केवलवस्त्ववादीवेदभागेनास्तीति

आत्मज्ञानिनः कर्तव्याभावेमानमाद तथाचेति अयं स्वयं प्रभाजैदः
परमात्मादमस्मीति यदि कश्चित्पुरुषः आत्मानं ज्ञानी यातदा किं फलमिच्छन् स्वभाक्ः प्रीत्ये शरीरं तपमाने
अनुसन्धरेत् तप्येतभोक्तृभोग्यद्वैताभावात्कृतं कृत्य आत्मविदित्यभिप्रायः ज्ञानदोलभाद्येष्टं ब्रह्म एतद्भूतमन
तेह निकारमतनिरासमुपसंहरति तस्मादिति आभाकारोक्तमुपन्यस्यति यदपि केचिदितिकर्तात्मात्माकमिदं ॥८॥

तत्त्वज्ञानार्थं तत्त्वज्ञानस्यैव वेदस्य कार्यपरत्वेन
मानभावादित्याद्यः

द्वितीयमंगीकरोति क्रियार्थत्वेनिति तस्य भूतविशेषस्य दध्यादेः क्रियाशेषत्वे फलस्य दृश्यमंगीक्रियत इत्यर्थः ननु ब्रह्माणां
नित्यशब्दार्थः ननु भूतस्य कार्यशब्दत्वांगीकारे स्वतंत्रेण कथं शब्दार्थत्वेन तत्राह नचेति फलार्थशेषत्वांगीकारमात्रेण
शब्दत्वभंगेनास्तीत्यर्थः आनर्थको फलभावरिति पक्षशंकते यदीति यद्यपि दध्यादिसत्त्वो निष्फलमपि क्रियाद्वारा स
फलत्वा उपदिष्टं तथापि कूटस्थवृत्त्यदिना क्रियाद्वारा भावते न दृष्टेते न किं फले स्यादित्यर्थः अतस्त्वसा फले क्रियैव
हारमिति न नियमः रत्नाः तानमात्रेण साफल्यदशनादित्याह उच्यते इति तथैव दध्यादिवदेवेत्यर्थः दध्यादे क्रियाद्वारा सा
फल्यवस्था स्तस्वतः इति विशेषस्तथापि वैद्यनाभासफलभूतार्थकत्वमात्रेण दध्यादुपदेशसाम्यमित्यनवघं इदानीं वैद्यना
नानिषेधवाक्यवत्सिद्धार्थपरत्वमित्याह अपि चेति ननः प्रकृत्यर्थन संबन्धो ननाभावो ननर्थ इष्टमाधनत्वेन व्यादिप्रत्य

क्रियार्थत्वेन प्रयोजने तस्य न चैतावता वस्तुन उपदिष्टं भवति यदिनामोपदिष्टं किं तवने न स्यादित्युच्यते अनवगाता
त्ववस्तुपदेशश्च तथैव भवितुमर्हति तदवगात्यामिच्छा तानस्य संसारदेतोर्निवृत्तिः प्रयोजनं क्रियत इत्यविशिष्टम
व३ र्थत्वे क्रियासाधनवस्तुपदेशेन अपि च प्राप्तौ न देतव्य इति चेव माया निवृत्तिरुपदिश्यते न च सा क्रियानापि क्रि
यासाधनमक्रियायां नामुपदेशे नर्थक्ये इत्यस्य न देतव्य इत्यादि निवृत्त्युपदेशानामानर्थको प्राप्तत्वा निवृ
त्तिरनवस्तुभावप्राप्तदर्थानुरागेण ननः शक्यमप्राप्तं क्रियार्थत्वे कल्पयिते न न क्रियानिवृत्त्यो दासीत्यतिरेकं

26

यार्थः इष्टात्र नरकउः स्वाभावस्तत्परिणालको दननाभाव इति निषेधवाक्यार्थो दननाभावोऽस्वाभावदे तस्मिन्नावर्थादुन
नस्पदः स्वसाधनत्वपरिणालपुरुषो निवर्तते नात्र नियोगः कश्चिदस्ति तस्य क्रियातत्साधनदध्यादिविषयत्वात् न च दनना
भावरूपान्न ज्ञातानि वृत्तिः क्रियाभावत्वात्त्रापि क्रियासाधनमभावस्य भावार्थादेतत्वाद्वाच्यं सत्त्वाच्चैत्यर्थः अतो निषे
धशब्दस्य सिद्धार्थप्राप्तापमिति भावः विप्रक्षेपेऽस्माद् अक्रियेति ननु स्वभावतो रागतः प्राप्तेन दंत्यर्थेनानुरागेण न
नः संबन्धेन देतुना दननविरोधिनी संकल्पक्रिया बोध्यते सा च ननर्थरूपा तत्र प्राप्तत्वादिधीयते अदन्तं कुप्यादिति
तथा च कार्यार्थकमिदं वाक्यमिदं वाक्यमिति निषेधो नचेति यो दासीमपुरुषस्य स्वरूपे तच्च दननक्रियानिवृत्त्यर्थं
सिद्धनिवृत्त्यो दासीमपुरुषस्य भावरतिवत् तद्यतिरेकेण ननः क्रियार्थकत्वं कल्पयिते न च शक्यमिति योजनमा
त्रार्थस्याभावस्य ननर्थत्वसंभवे तद्विरोधिक्रियानन्तत्वात्तत्रायाश्रयात्वात् निषेधवाक्यस्यापि कार्यार्थकत्वे निषिद्धि

ननः प्रकृत्यर्थन संबन्धो ननाभावो ननर्थ इष्टमाधनत्वेन व्यादिप्रत्य

आ.
भा.
३१

एवंतत्सदीक्षित्वाकाशं चापुं च सृष्टातेजः सृष्टवदित्याद तदिति मिथञ्चलत्वात्कांनमितियावत् सजीवाभिन्नः पर
मात्मा प्राणमसृजतप्राणत आहुत्वं वा युजोतिराणः पृथिवीदियं मनोत्रयपञ्चादीयेन यमंत्राः कर्मलोके पुनामचेमकाः
षोडशकलाः नत्विक्थितेपातनिर्देशो श्रुति कात्यायनस्य सृष्टादीक्षतेरिति पदेन श्रितवन्तेन धातु रुच्यतेनेन धात्वर्थ
इत्यांकथं व्याख्यायते इत्यांशं बालदागयेत्याद ईक्षतेरिति चेति इति कर्तव्यताविधेयं जतेः पूर्ववत्त्वमिति सूत्रेण शाय
जतिपदेन लक्षणया धात्वर्थोपागच्छतेतद्वदिसापीत्यर्थः सौर्वादि विष्कृतिप्रागस्यागतामविधानात्पूर्ववत्त्वदर्शादिप्र

ततेजोसृजतेतितत्रेदेशाहवाच्यं नामरूपविकृतं जगत्प्राप्ततेः सदात्मनावधार्यतस्यैव प्रकृतस्य स च्छब्दावाच्ये
क्षणापूर्वकेतेजः प्रभृतेः सृष्टत्वे दर्शयति तथा नृजात्मा वारुदमेक एवाग्रश्रासोऽन्यत्किंच न मिथत्वे सत्तत्त्वोक्त
त्रसृजति ससोत्पन्नानसृजतेतीक्षाप्रविकामेव सृष्टिमाचष्टे कचिच्छोडशकलप्ररुषं प्रस्तुत्याद सईक्षोचक्रे सप्रा
णससृजतेतीक्षाप्रविकामेव सृष्टिमाचष्टे ईक्षतेरिति च धात्वर्थनिर्देशो भिद्ये तोय जतेरिति वज्रपातनिर्देशात्तेन
यः सर्वज्ञः सर्वविद्यमानमयं तपस्सात्मा देत इत्यनामरूपमत्र च जायते तस्यैव प्रादीन्यपि सर्वज्ञेयकारणाप
राणि वाका मुदादन्त्या निघनक्तं सत्वधर्मेण ज्ञानेन सर्वज्ञं प्रधानं भविष्यतीति तदपि तोययते न हि प्रधाना
वस्थायोगा सामान्यतः धर्मे ज्ञाने संभवति न नक्तं ज्ञानशक्तिसत्त्वेन सर्वज्ञं भविष्यतीति तदपि तोययते यत्तदपि
गुणसामे सति सत्वया प्राधानं ज्ञानशक्तिमाश्रित्य सर्वज्ञे प्रधानमुच्येत कामे रजस्तमोऽयमाश्रयामपि ज्ञानमिति
त्व३ वेधशक्तिमाश्रित्य किंचित्तुमुच्येत अण्विचना सादिका सत्ववृत्तिर्ज्ञानातिना भिधीयते न चाचेतनस्य प्रधानस्य
सात्त्विकमस्ति तस्मादनुपपन्नं प्रधानस्य सर्वज्ञत्वं ॥

30

कृतिस्थाभावत्त्वमिति सूत्रार्थः धात्वर्थनिर्देशेन लाभमाद तेनेति सामान्यतः सर्वज्ञेविशेषतः सर्वविदिति भेदः ता
नमीक्षणा मेव तपः तपस्विनः फलं माद तस्मादिति एतत्कार्यं सजात्ये त्रस्य केवलमत्ववृत्तेर्ज्ञानत्वमंगीकृत्य प्र
धानस्य सर्वज्ञत्वं निरस्तं संप्रतिन केवलज इति ज्ञानशार्थः किंतु सादिवोधविशिष्टावृत्तिर्हृतिव्यक्तवोधोवा
चानेतच्चोपस्य प्रधानस्य नास्तीत्याद अपि चेति सात्त्विकमस्ति येनोक्तज्ञानवत्त्वे स्यादिति शेषः ॥ ॥

३१

पु
भा
३१

31

अथनातकुंभकारस्य सोपाधुनः करणवृत्तिरूपेणावदोश्चरस्यापि सोपाधुविद्ययाः विविधसहि संस्कारायाः प्रलया
वसानेनोदुसंस्कारायाः समेन्यावः कश्चित्तरिणमस्तस्यामूलरूपेणानिलीनसर्वकार्यविषयकमोदागतस्य कार्य
त्वात्मसंज्ञावाच्यं तत्कर्मत्वमप्यामिति शोतयति सतयमिति ननु मायोपाधिकविद्यविद्ययात्रये श्रस्यकथमोदाग
प्रतिमुत्पत्तिरूपेणैव कथयति चेन्नकार्यो नु कृतज्ञानवत एव कर्तृत्वादोश्चरस्यापीत्यामवक्तुं तन्मिज्ञानवत्त्वात्तत्र च
नित्यज्ञानेनैव कर्तृत्वनिर्वाह्यस्मिन्मोदागनेति वाच्यं बाध्यादेशवशाच्च तसंभवात्किमाकाशोनेत्यपि प्रसंगदतः अत
त्वात् बाध्यादिकरणत्वेनाकाशवत एव तत्प्राप्तं कर्तृत्वेन अतमोदागमाकाशादिहेतुत्वेनांगीकार्यमित्यत्र अथाक
तेसुत्यात्मनास्थितेवाकर्तृत्वमिष्टेत्पथः अथाकृतकार्यपरकचेतस्य रूपेणास्यकारकानपेक्षत्वेपि

सतयामुपपत्ताः किं पुनस्तत्कर्मयत्प्राप्त्यनेरीश्वरज्ञानस्यविषयोभवतीति तत्त्वज्ञत्वाभ्यामनिवेचनीयेना
मरूपेणवाक्येनाचिकीर्तयति अत्र यत्प्राप्त्यादादियोगिनामप्यतीतानागतविषयेप्रत्यक्षज्ञानमिच्छति
योगशास्त्रविदः किमुक्तव्यं तस्य निरुद्धस्य श्रस्यसहि स्थितिमिति विषयं नित्यज्ञानं भवतीति यदप्य
तं प्राप्नुते तत्र सताः शरीरादिसंबन्धमंतरोगहितत्वमनुपपन्नमिति नतद्योयमवसरतिसहितप्रकाश
वद्वेष्टोत्तानस्वरूपनित्यत्वेज्ञानसाधनापेक्षानुपपत्तेः अथिचाविद्यादिमतः संसारणः शरीराद्यपेक्षा
ज्ञानात्यतिः स्यात्तज्ञानप्रतिबध्का रणादितस्य श्रस्यमंत्रोच्चार्योद्यस्य शरीराद्यनपेक्षतामनावराण
ज्ञानताचदर्शयतः नतस्य कार्यकरणं च विद्यते नतस्मश्चाभ्यधिकश्रयते श्रस्यशक्तिर्विविधैव अथ
तत्त्वाभाविकीज्ञानवतक्रियाचेति अथापि पादो जवनोग्रहीतापश्यतचतुःसंख्योत्तकार्णः सवेति चेद्यं न च
वृत्तिरूपेणास्यकारकं वाच्यं रणशंकाद अथिचाविद्यादिमत इति यथैकस्य ज्ञानेन तथान्यस्यापीति नियमाभावात्साधितो
शरीरस्यापि जने तस्याकारणमिति भावः ननु यत्तन्मज्ञानं तच्छरीरसाधमिति व्याप्तिरस्तीत्याशंक्य अतिवादमाह सं
ज्ञैवेति कार्यशरीरं करणमिदं यं अस्म्यश्रस्यशक्तिर्मायासकार्योपेक्षयापराविचित्रकार्यकारित्वदिविधा सात्वति
यमात्रमिदं प्रमाणमात्रमिदं साद अयतरिति ज्ञानरूपेणावलेनयासहि क्रियासासाभाविकानादिमायात्मकत्वाद
तयः ज्ञानस्य चेतन्यस्य वलमायावृत्तिप्रतिबिंबितत्वेन स्यादतन्तस्य क्रियानामविबत्वेन च सताजनकताज्ञानतापिसा
भाविकीति वाच्यः अथापि र्पादोताअपादोपिनवनः ईश्वरस्य स्वकार्यलौकिकहेतुपेक्षानास्तीति भावः अथमना

पु
भा
३१

दिपुरुषमनेन मदेते विभुमित्यर्थः

३३

ननु सत्वज्ञानमात्रेण योगिनां सर्वज्ञत्वमुक्तमित्यत्राह योगिनां ज्ञानमिति सर्वज्ञत्वमात्रमस्य
 सर्वज्ञत्वज्ञानवत्त्वं न तान् कर्तृत्वं तान् स्पृह्यमाणानां धर्मादिति कृत्वा प्रकृतं इदं तावदिति सर्वज्ञानातीति प्राप्तायुत्वं शक्यं
 ज्ञानमित्यत्राह नित्यमपि ज्ञानमप्यतदर्थोपरि तत्त्वं न च सत्त्वात् रूपेण देवकल्पयित्वा कार्यतोपचयमादुस्य सत्त्वात्
 त्वयपदेशः साधुरिति रक्षातमाह नपततेति संततेत्यर्थः असत्यपि प्रविष्टितेति ननु प्रकाशतेरकर्मत्वात् सवित

योगिनां ज्ञानचेतनत्वात् सत्वोक्तं निमित्तं सर्वज्ञत्वमुपपन्नमित्यत्राह दृग्गमस्य पुनः साक्षिनिमित्तमीति
 तत्त्वप्रधानस्य कल्पेन यथाश्रित्य निमित्तमपः पिरादेर्दृग्गमत्वं तथा सति यत्र निमित्तमीति तत्त्वं प्रधानस्य तदेव स
 र्वज्ञं मुख्यं ब्रह्मजगतः कारणमिति युक्तं यत् न रक्तं ब्रह्मणोपि न मुख्यं सर्वज्ञत्वमुपपद्यते नित्यज्ञानक्रिया
 प्रतिष्ठाने आसंभवादि सञ्जायते इदं तावदुक्तं यथाः कथं नित्यज्ञानक्रियत्वं सर्वज्ञत्वज्ञानरित्यस्य दिसर्व
 विषयावभासनत्वं सत्त्वात् नित्यमस्ति सा सर्वज्ञरतिविशेषिदमिति तत्त्वे दिज्ञानस्य कदाचिन्मृतात् कदाचि
 न्मृतात् नित्यं सर्वज्ञत्वमपि स्यात्तामोक्षात् नित्यत्वे दोषोक्तिज्ञाननित्यत्वे ज्ञानविषयः सत्त्वात् अत्रापदेशो नोपपद्य
 त इति चेत् तत्त्वतोऽप्यत्राशेषवितीरदृशति प्रकाशयतीति सत्त्वात् अत्रापदेशो नोपपद्यते ननु सवितर्दाय प्रका
 शसंयोगेर्दृशति प्रकाशयतीति अपदेशः स्यान्न ब्रह्मणः प्रागुत्पत्तेर्ज्ञानकर्मसंयोगोऽस्तीति विद्यमाने रक्षातः
 नासत्यपि कर्मणि सवित्प्रकाशतरितिकर्तृत्वयपदेशो नोपपद्यते ननु सवितर्दाय प्रका
 शकर्तृत्वयपदेशो नोपपद्यते नैवैषां कर्मणोदात्तात् अस्तीति इदं तत्त्वं प्रकृतं

प्रकाशतरिति योगे विज्ञानात्तेः सकर्मकत्वात् कर्मभावेन तदेतत्तत्त्वमुक्तमित्यत्राह कर्मणोदात्तायति कर्मविवक्षा
 यामपि प्रकाशरूपे सवितरि प्रकाशतरितिकर्तृत्वयपदेशो नोपपद्यते ननु सवितर्दाय प्रका
 शकर्मणोदात्तात् अस्तीति इदं तत्त्वं प्रकृतं

ननु प्रधानस्य चेतनेन किं साध्यं येन गौणमिति तत्राह यथेति निपतकमवत्कार्यकारित्वं सामान्यमित्यर्थः उपचारप्रापेवचनादि
नित्यैर्गौणैः प्रचुरैः प्रकरणैः समासात् आदिमर्थः अमेजसैरिवाचेतने सति गौणैर्द्वितीयमिति चेन्न तत्रात्मशब्दात् सत्प्रधानमिति प्रयादिति
सूत्रार्थमाह यदुक्तमिमादिना साधकतमकं ह्यवाच्या इयमीति जीदेवतापरोक्षत्वं तद्वदानीं भूतसंज्ञानं तत्रासाः स्रष्टा मित्यस्य
संज्ञोवत्ररूपः पर्येतत्वादेवताशक्तिरित्येव वदन्ने अनेन सर्वकल्याणभूतेन जीवेनात्मनाममस्वरूपेणातामनुप्रवि
ष्यतां भोग्यत्वाय नाम चरुपं च स्थूलं करिष्यामीत्ये तत्तेत्यन्वयः लौकिकप्रसिद्धे जीवप्राणधारणे रतिधातो जीवति

यथा लोके कश्चिच्चेतनः स्नात्वा भुक्त्वा चाप्याने ग्रामं रथेन गमिष्यामीतीति त्वानंतरं तथैव नियमेन प्रवर्तते त
था प्रधानमपि सददायाकारेण नियमेन प्रवर्तते तस्माच्चेतनवदुपचर्यते कस्मात्सुतः कारणमिहायमुक्त्यमौ
दित्वत्वेमौपचारिककल्पते तत्रेतेन तत्ताप्येतेति चाचेतनयोरप्यमेजसोश्चेतनद्वयचारदशेनातस्मा
त्सत्कृतं कमपौत्तरामौपचारिकमिति गम्यत उपचारप्रापेवचनादित्येवं प्राप्तिरदसूत्रमारभ्यते गौणैश्चैत्रात्मशब्दा
त ६ यदुक्ते प्रधानमचेतनं स्रष्टृ ह्यवाच्या तस्मिन्नेव चारिक ईदिति रमेजमौपचारिकेति तदसत्कस्मादात्मशब्दात्सदे
वसौमेदं सग्रामीदित्युपक्रमत देहात्तेनो स्रज्जेति चेतेनोवत्रानां स्रष्टृसत्कातदेवप्रकृतं सदीदित्वेतां नि
चेतेनोवत्रानि च देवताशब्देन परास्पर्शादसंयं देवतैस्तदहंतादीममात्मिसादेवता अनेन जीवेनात्मनानुप्र
विष्यतामरूपेणा करवाणीति तत्र यदि प्रधानमचेतनं ग्राह्यत्वे हि तत्कल्पे ततदेवप्रकृतत्वात्सेयं देवते
नियमास्येतेन तदा देवता जीवसात्मशब्देनाभिदधान्तीवोदिनामचेतनः शरीराद्यत् प्राणानां धारयिता
प्रसिद्धे निर्वचनाच्च सकृद्यमचेतनस्य प्रधानस्यात्मा भवेदात्मा हि नाम स्वरूपं नाचेतनस्य प्रधानस्य चेतनो जीवः स्वरूपेभ
वित्तमरेति अथतुचेतनं ब्रह्मसात्म्यमिति तदपरिग्रहतेन स जीवविषयशब्दप्रयोग उपपद्यते तथा स उपपद्येति
मेतदात्म्यमिदं सचेतनस्य स आत्मा तत्त्वमसि येन केतो इत्यत्र स आत्मेति प्रकृतं सदिति मानसात्मशब्देनापदिष्टत्वे

प्राणान्धारयतीति निर्वचनाच्चेत्यर्थः अथत्विति स्वयदेतद्विषयप्रतिबिंबयोर्लोके भेदस्य कल्पितत्वदर्शनात् जीवो ब्रह्मणः सत्
आत्मेति युक्तमित्यर्थः जीवस्य स्रष्टृह्यार्थप्रत्यात्मत्वशब्दात्सन्नप्रधानमित्युक्त्या सतो जीवे प्रत्यात्मशब्दात्प्रधानमिति वि
धांतराणां हेतुमाचष्टे तथेति सयः सदात्वापवोणिमापरमसूक्ष्मः ऐतदात्म्यकमिदं सर्वं जगत्सदेवसत्त्वं विकारमपि ष्या
त्वात्सदायः सर्वस्यात्मादेवेतकेतोत्वे च नापि संसारी किं ततदेव सदवाधितं सर्वात्मकं ब्रह्मासीति प्रत्यर्थः इत्यत्रोपदिशति अ

ननु प्रधानस्य चेतनेन किं साध्यं येन गौणमिति तत्राह यथेति निपतकमवत्कार्यकारित्वं सामान्यमित्यर्थः उपचारप्रापेवचनादि
नित्यैर्गौणैः प्रचुरैः प्रकरणैः समासात् आदिमर्थः अमेजसैरिवाचेतने सति गौणैर्द्वितीयमिति चेन्न तत्रात्मशब्दात् सत्प्रधानमिति प्रयादिति
सूत्रार्थमाह यदुक्तमिमादिना साधकतमकं ह्यवाच्या इयमीति जीदेवतापरोक्षत्वं तद्वदानीं भूतसंज्ञानं तत्रासाः स्रष्टा मित्यस्य
संज्ञोवत्ररूपः पर्येतत्वादेवताशक्तिरित्येव वदन्ने अनेन सर्वकल्याणभूतेन जीवेनात्मनाममस्वरूपेणातामनुप्रवि
ष्यतां भोग्यत्वाय नाम चरुपं च स्थूलं करिष्यामीत्ये तत्तेत्यन्वयः लौकिकप्रसिद्धे जीवप्राणधारणे रतिधातो जीवति

अपि सिद्धांतं शक्यते नन्विति ज्ञाने प्रतिबंधकमण्यविद्यारागदीनि कृतावतंसरादन्योत्पत्तीत्यन्वयः औपाधिकस्य जीवेश्वर
भेदस्य मयोक्तत्वात्त्रापि सिद्धांतस्याद अत्रोच्यते इति तत्कृत उपाधिसंबंधकृतः शब्दतत्त्वप्रत्ययरूपोच्यवहारस्य संकीर्णश्लेषः अ
वतिरेके कथमसंकरस्तत्राद तत्कृता चेति उपाधिसंबंधकृतेत्यर्थः देहादिसंबंधस्य देतस्विवेको नाद्यविद्यातया कृतेत्यर्थः
अविद्यायां प्रतिविंबो जीवः विवचैतन्मसीश्वर इति भेदो विद्याधीनसत्ता कः अनादिभेदस्य कार्यत्वायोगान्न कार्यबुद्धादिक
तत्प्रमात्रादिभेदवस्तु कार्य एवेति विवेकः नन्वस्वस्वप्रकाशान्न निकयमविवेकस्तत्राद दृश्यते चेति वस्तुतो देहादिभिन्न

ननु नास्तित्वत्वात् न प्रतिबंधकारणात्तानीश्वरादन्यः संसारी नान्यो तोति चित्तात्तेत्यादि कृतेस्तत्र किमिदमुच्यते सं
सारिणः शरीराद्यपेक्षात्वात् नोत्पत्तिर्नैश्वरस्य तत्रोच्यते सत्यनेश्वरादन्यः संसारी तयापि देहादिसंज्ञानोपाधिसंबंध
एतत्पचत्तदकरकमिरिगदाद्युपाधिसंबंधवद्यो मन्तव्यं तच्च शब्दप्रत्ययवदो लोकादहो सुदृष्टिं करकच्छिद
मित्यादिरा काश्यावतिरेके पितृत्वात्तत्वात्तदाकाश्यादिभेदमिच्छा बुद्धिर्देहात्तथा देहादिसंज्ञानोपाधिसंबंधा विवे
ककृते श्वरसंसारिभेदमिच्छा बुद्धिः दृश्यते चात्मन एव सतो देहादिसंज्ञानेनात्मनोभिनिवेशो विद्यमाने बुद्धिमात्रेण
एतत्तत्त्वमिति चेत्संसारित्वे देहाद्यपेक्षा मीक्षितत्वं मुपपन्नं संसारिणो यदप्युक्तं प्रधानस्यानेकात्मकत्वात्तद्वदिव
त्कारणात्तयोपपत्तिर्ना संदृश्यते स्यात्तद्वद्विधानस्याशब्दत्वेनैव प्रसूते यथा तत्तत्कै एव पित्रस्य एव कारणात्तन्नि
र्वाहंशकत्वेन प्रधानादीनां तथाप्यपंचविधमिति न विलक्षणत्वात्तदस्यैव मादिनां त्रादय इकेनाचेतने प्रधाने न गत्वा
रागमीलनत्वप्रवणदितितद्व्याप्युपपद्यते अचेतनेपि चेतनवदुपचारदर्शनात्प्रमासन्नपत्तनतो कृतस्य लक्ष
कूलोपपत्तिरुत्तीत्यचेतनेपि कूलैवेतनवदुपचारोदृष्टस्तद्वचेतने प्रधाने प्रमासन्नपत्तनवदुपचारो भविष्य

न्यास ५

स्वप्रकाशमेव सत आत्मनेन रोदमिति भूमीरुष्टत्वादुपपन्नवः सच मिच्छा बुद्ध्या मीयत इति मिच्छा बुद्धिमात्रेण भांति सिद्धा
ज्ञानेन कल्पित इति चकार्यः यद्वा कल्पमिच्छा बुद्धौ लोका नुभवमाद दृश्यते चेति इत्यभावेन तौ याभात्यात्मना दृश्यते
इत्यर्थः पूर्वपूर्वभातिमात्रेण दृश्यते न प्रमयेति वार्थः कृतस्य म्यापि मापिकं कारणत्वे पुक्तमित्याह यथा त्विति यत्तवेद्येण
देहात्ति प्रदायग इति तत्र सत्यादिपदाना मवादिना मुद्युक्ता का वगतशक्ति कानो वा च कदेशत्वेनापस्यितत्वं उच्यते तत्तक
त्वादिति स्थितं सप्रत्युत्तरात्तत्र निरणाशकामाद अत्रादेति अन्यथा च चेतनत्वेपि "

धि=

शा
भा
३५

अनर्थायेत्युक्तं प्रपंचयति यद्विचारस्येति कश्चित्किल दुष्कृतात्मा मदारण्यमार्गे पतितमंथं स्वबोधुन गरे निगमिषु च भावे किमत्र
युष्मताः दुःखेन स्थीयते इति सचाथः सुखावाणो मा कर्णतमा प्रमत्तो वाच अहो मद्रागधेयं यदत्र भवान्मादीनं स्वाभीष्टं न
गराप्रमत्तमर्थं भावत इति सच विप्रस्तिष्ठु दुःखं पुवान्मानो यत दीयतो गलमंथं प्रादया मास उपदिदेश चैनमंथं एव गाय
कत्वा न गरेनेषति मास जलं गलमिति सचाथः अहा लतया तदन्वजन्तु भीष्टमप्राप्य अनर्थं परपराप्राप्तं न नायेनेत्य
र्थः तथा सतीति आत्मज्ञानभावेति विदुः तमोत्तं न प्राप्नुयात्सुतानर्पं संसारे च प्राप्नुयादित्यर्थः ननु जीवस्य प्रपाने

यदि चात्तस्य सतो मुमुक्षोरचेतनमनात्मानमात्मस्य पदिशेत्तमाणा भूतं शास्त्रं मधुरं धानं तया धगोलो गलन्याये
न तदात्मदृष्टिर्न परित्यजेत इति रिक्तं चात्मानं न प्रतिपद्येत तथा सति पुरुषार्थादिदमेतानर्पं चर्कं तस्माद्यथा
स्वर्गाद्यर्थिनोऽपि होत्रादिमाधने यथा भूतमुपदिशति तथा मुमुक्षोरपि स आत्मा तन्मपि शेतकेतो इति यथा
भूतमेवात्मानमुपदिशतीति पुक्तं एवंच सति तत्र परशुश्रूणा मोक्षदृष्टान्तेन सत्याभि संध्या मोक्षोपदेशः
पपद्यते न यथा मुमुक्षो सदात्मत्वापदेशो दमुमुक्षु मस्मीति विद्यादिति वत्सेपन्यात्र मिदमनित्यफले स्यात्तत्र मो
क्षोपदेशो नोपपद्येत तस्मात्र सद्विप्रमयात्मशब्दयोगात्वेन तत्त्वाभिभूतस्य भेदस्य प्रत्यक्षत्वात् उपपत्त्या गौणा
स्वात्मशब्दो ममात्मा भेदमेव इति अपि च कश्चिद्गौणशब्दो ह इति नैतावता शब्दप्रमाणा केर्यगौणी कल्पना
न्याया सर्वत्रानास्य प्रसंगत यत्तत्तं चेतनाचेतनयोः साधारण आत्मशब्दः कृतज्ञ लनयो रिवत्येति श
ह इति तत्र अनेकार्थत्वस्यान्यायत्वात् तस्माच्चेतनविषय एव मुख्य आत्मशब्दश्चेतनत्वोपचाराद्गौण इति युक्तं

33

को संपदुपासनार्थं मिदं वाक्यमिति तत्राह एवं च सतीति अवाधितात्मप्रमायां सत्यामित्यर्थः कस्यचिदगोपितचौरत्वस्य सत्ये
न तत्र परशुश्रूणा मोक्षोपदेशः तदृष्टान्तेन सत्येन सत्येन दमित्यभि संधि मते मोक्षोपदेशा सत्याभि संधिस्तत्र परशुपरिरह इति
सनदस्य तेयमुच्यते इति श्रुत्योपदिष्टः स उपदेशः संपत्तयेन युक्त इत्याह अन्येति देहमुत्थापयतीत्युक्त्यप्रमाणः तस्मान्मोक्षो
पदेशो न्युक्तो संभवति गौणात्वस्यान्यायत्वात् आत्मशब्दः सति मुख्य इत्याह अपि चेति कश्चिद्गौणोपदेशो ममात्मा तत्रापि मुख्य
आत्मशब्दो न स्यादित्यर्थः चेतनत्वोपचारात् भूतादिषु सर्वत्र चेतनतादात्म्यादित्यर्थः ॥

३५

शम
मा
१६

सौत्रशुक्राणेन कस्य समुच्चयार्थरत्नाद चशब्दरति विह्वलेति सत्यपीति अविशयात्राक्षेवेति सूचयति चेन्नधीत्यागतं स्तब्धं
पुत्रं पिता वाचदेपुत्रउत अथि आदिशुभतरत्नादेश उषदेशे कलभाः सदात्मानमप्यशब्दः गरुनिकदेशे चवानसि यम्यश्वानेन
मननेन चित्तानेनामप्यश्वानादिकं भवतीत्यन्वयः नन्वा नन्वातेन कथमन्यदज्ञातमपि ज्ञातं स्यादिति पुत्रः शकते क
थमिति हे भगवः कथं नृवत्तसंभवतीत्यर्थः कार्यस्य कारणात्पत्वं नास्तीत्याद यथेति पिंडः स्वरूपेनेन विज्ञातेनेति शेषः
तत्र युक्तिमाद वत्तेति वाचयावार्गिदियेण रभ्यतरति विकारो वाचारेभ्यो ननु वाचानामैवारभ्यतेन घटादित्याशंसना
ममात्रेणैव विकाररत्नाद नामपेयमिति नामपेयविकारोपेवाचाकेवलसुच्यते वस्तुतस्तकारणाद्विज्ञानास्ति तस्यान्वयव

चशब्दः प्रतिज्ञाविरोधाभ्युच्यप्रदर्शनार्थः सत्यपि देयत्ववचने प्रतिज्ञाविरोधः प्रसज्येत कारणाविज्ञानादिसर्वविज्ञा
नमिति प्रतिज्ञाते अतस्तुततमादेशमप्राप्तो येनाश्रुतं अतं भवत्यप्रतं मतमविज्ञातं विज्ञातमिति कथं नृभावाः
स आदेशो भवतीति यथा सोम्येकेन मस्मिन्नेन सर्वमन्मये विज्ञातं स्यात्वाचारभागे विकारो नामपेयं स्तितिकेत्यवस
तमेवं सोम्यस आदेशो भवतीति वाकोपक्रमेण वाणान्न न च सच्छब्दवाच्ये प्रधाने भोग्यवर्गकारणादेयत्वेनादेय
त्वेन वा विज्ञाते भोक्तव्ये विज्ञातो भवत्यप्रधानविकारत्वाद्भोक्तव्यस्य तस्मात् प्रधाने सच्छब्दवाच्ये कुतश्च न प्रधा
ने सच्छब्दवाच्यं स्वाप्ययात् तदेव सच्छब्दवाच्यं कारणं प्रकृत्य श्रूयते यत्रैतत्पुरुषः स्वपिति नाम सता सोम्यत
दासंपन्नो भवति स्वमपीतो भवेति तस्मादेनं स्वपितीत्याचक्षते स्वमपीतो भवतीति

34

सरतिभावः विकारमिच्छात्वेन तदभिन्नकारणाणां पिमिच्छात्वमिति तेत्याद स्तितिकेति कारणां कार्याद्विज्ञानात्कंनकार्यका
रणाद्विज्ञानात्कारणातिरिक्तस्य कार्यस्य स्वरूपस्याभावात् कारणाज्ञानेन तज्ज्ञानं भवतीति स्थितेदा स्तितिकमाह एवमि
ति सद्दृष्टौ वसत्यवियदादिविकारोऽस्वेति त्रस्तज्ञानेन सति तेयं किंचिन्नावशिष्यतरत्यर्थः यद्यपि प्रधाने तत्तादात्म्या
द्विकारभागे ज्ञानं भवति न पुरुषाणां तेषां प्रधानविकारत्वाभावादित्याह नचेति अस्माकं जीवानां सुदृढत्वात् तत्तादात्म्यमिति नेत्याह
भावः कुतश्चेति पुनरपि कस्मादेतोरित्यर्थः सप्रमौ जीवस्य सदात्मानिसस्मिन्नप्यश्वानात् सच्चतनमेवेति सत्रयो
जन्त एतत्स्वपने यथा स्यात्तथा यत्र स्वप्नौ स्वपितीति नाम भवति तदा पुरुषः सत्तमपेन्न एकी भवति सदैकेपि नाम प्रवृत्तिः
कथं तत्राह स्वमितितत्रत्वेकप्रसिद्धिमाह तस्मादिति यस्मात्सं सदात्मानमपीतो भवति तस्मादित्यर्थः ३६

कृष्णदेवराय शिल्पिकात् कुलश्रुतिं प्रयागं मुखे हनुमान् विराजते त्रिक

आत्मशब्दश्चेतनस्यैवासाधारण्यत्वं अस्तुवाचापि च स्तनोसाधारण्यत्वापितस्यात्र अतौ प्रधानपरत्वे निश्चायकाभावात्
त्र प्रधानवृत्तितेसाह साधारण्यत्वेपीति चेतनवाचित्वेन प्रकरणे चेतनकेतवदेच निश्चायकमस्तीत्याह प्रकृतैस्त्रितिउ
पपदस्य निश्चायकत्वं स्पष्टयति नहीति ततः किंतु तत्र तस्यादिति आत्मशब्दो ज्योतिः शब्दवत् नानार्थक इत्युक्तं दृष्टान्त
निरूपति ज्योतिरिति कथं तद्भिज्योतिषा यजेतेति ज्योतिषो मे प्रयोगस्तत्राह अर्थवादेति एतानि वाक्यानि स्यान्ती धिद्य एतस्मिन्
मा इत्यर्थं वादेन कल्पितेन चेतनेन सादृश्यं त्रिवृत्य च दशास्त्रिवृत्तस्य दशास्त्रिवृत्तस्य दशास्त्रिवृत्तस्य दशास्त्रिवृत्तस्य दशास्त्रिवृत्तस्य
न ज्योतिषोक्तः अकृत्याः स्यान्ती धिद्येताम अस्मिन् ज्योतिषोक्तस्य त्रयज्योतिः शब्दो गोला इत्यर्थः न न्यात्मा शब्दादिति पूर्वसूत्र एव

साधारणतया तत्त्वज्ञानप्रवृत्त्यन्यकरणमप्यपदेव किंचिन्निश्चायकमन्त्ररेण्यनर्तकतितानि हीनयितुं शक्यते न चात्र चेत्
न स्यान्निश्चायकं किंचिन्कारणमस्ति प्रवृत्तेतसदीक्षितमनिहितमचेतनः सचेतकेतुः न हि चेत्तस्य सचेतकेतोरचे
तन आत्मा संभवतीत्यवाच्यमनस्याचेतनविषय इह तन्मशास्त्ररतिनिश्चीयते न्यायः प्राज्ञोपिलौकि केन योगे न
ज्वलनवद्वरुहोर्ध्वादप्रकल्पितेन तु ज्वलनसादृश्येन क्रतौ हनद्वयहसतः अथवा प्रवेसत्रयवत्तन्मशास्त्रनिवृत्त
समस्तगोप्यस्य धर्मगुणैर्लोकतया वा व्यायतनः स्वतन्त्रवपथानकारणानिकरणदेतुयावेयत्तत्रिष्टयमोतो
पदेशादितितस्माच्चाचेतनप्रधाने सत्त्वहवाचो बुद्धश्च न प्रधाने सत्त्वहवाचो देयत्वावचनाच्च ८ यद्यन्तानैव
प्रधाने सत्त्वहवाचांस आत्मा तत्त्वमसीतीदोषदिष्टं स्यात्सतडपदेशाच्च तन्मशास्त्रतत्त्वतया तत्रिष्टोमाभूदिति सत्त्व
मात्मानमुपदिदित्तत्त्वस्य देयत्वव्याप्या कथंतीदिदृष्टीपि सुक्तमोपस्थास्युक्तोत्तरासमाख्याय च समकथंती
ति प्रादुषित्वातां प्रत्याख्याय पश्चादकथंतीमेव प्रादुषितं तत्रायमात्मेति त्रयान्नचैवमवोचन्मन्त्रात्मा च गतिनिष्टे

[illegible]

शा
भा
३०

ततश्चेदं न जन्मानामवगतौ नो चेत्ततः कारणाविषयकत्वेन सामान्याच्चाचेतनं जगतः कारणमिति सूत्रार्थं चेति रेकमखेना
 द यदि तार्किकेत्यादिना अन्यत्वरमानादिकं न चेत्तदिति अवगतिर्येषामपि तर्कः विप्रतिषेधनिविष्टेनानादिशः प्रति
 गच्छेयुः प्राणाप्युत्तरादयो यथा गोलकं प्रादुर्भवति प्राणोभ्यो न तरे देवः सखादयस्तदनु प्रादुर्भवति तदनु तत्त्वोक्तं तदिति लो
 काविषयाभ्यर्थः ननु वेदांतानां स्वतः प्राणाप्येव न प्रत्येकं तार्क्यनिश्चायकत्वं संभवात् किं गतिसामान्येन तत्प्रादु
 मध्येति एकस्यावगतिरित्येवेदांतानां प्राणाप्यसंशयनिश्चयितेति तदित्यत्र ह्येतः चत्तरिति यथा सर्वेषां एकस्या

यदि तार्किकसमयेऽववेदांतेषु पिभिन्नाकारणावगतिरभविष्यत्कचिचेतनं ब्रह्म जगतः कारणं कचिदचेत
 नं प्रधानं कचिदुपदेवेति ततः कदाचित् प्रधानकारणावादानुरोधेनापीक्ष्यति यथा मकल्ययिष्यत न
 तेन दत्तिसमाने वरि सर्वेषु वेदांतेषु चेतनकारणावगतिः यथाग्नेर्ज्वलतः सर्वादिसोविष्णुलिङ्गाविप्रति
 षेधत्रेवमेवेतस्मादात्मनः सर्वप्राणायथायतनं विप्रतिष्ठेते प्राणोभ्यो देवा देवोभ्यो लोकानि तस्मादात्मनः
 दात्मनः प्राकाशः संभूत इति आत्मन एवेदे सर्वमिवात्मन एषाणो जायत इति चात्मनः कारणत्वेदरीयं
 तिसर्ववेदांताः आत्मन एवेतन्नवचनस्योच्चासमस्यैव प्राणाप्यकारणमेतद्यदेदांतवाक्यानां चेत्ततः कार
 णत्वे समानगतिरित्येव चत्तरादीनामिव रूपादिषु नो गतिसामान्यात्सर्वं ब्रह्म जगतः कारणं कृतञ्च सर्वं तं
 ब्रह्म जगतः कारणं १ अतस्त्वाच ॥ स्वयमेवैव सर्वं तद्विश्वं ब्रह्म जगतः कारणमिति श्रूयते येतां च त
 एणां मे त्रौपति यदि सर्वं तमीशं प्रकृतसत्त्वरूपं करणधियापि न चास्य कश्चिन्नितानां च धिपर
 तितस्मात्सर्वं जगतः कारणं नाचेतनं प्रधानमन्यदेति सिद्धे ॥

वेदांतानां गतिसामान्ये प्राणाप्यदार्ढ्ये हेतुरित्यर्थः एवमीक्ष्यत्वादिलिङ्गैरचेतने वेदांतानां समन्वये निरस्य चेतनवा
 चकशब्देनापि निरस्यति अतस्त्वाचेति सूत्रवाच्यं स्वयमेवेति स्वस्य चेतनस्य वाचकः सर्वविक्रमः ततः का
 लकालो गुणिसर्वसंपरमेश्वरं प्रकृतसर्वविकारमिति श्रुतत्वाच्चाचेतनकारणमिति सूत्रार्थः कारणधिया
 जीवालोषामधिपः अधिकरणार्थमुपसंहरति तस्मादिति हेतुणात्मशब्दादिकं परमाणवादावप्युक्तमिति

अथ
सर्वं
सर्वं

३१

अनेस्तात्पर्यमाह पक्षेनादिना एतेर्धातोर्गत्यर्थस्यापि पूर्वस्य लयाद्यन्ते पिकथेनिस्यस्यजीवस्य लय इत्याशं वा उपाधिलयादि
निवर्तकं नाग्रत्सप्रयोरुपाधिसाह मनश्चि ऐन्द्रियकमतो हनेय उपाधयस्तेर्वदादि स्यात्तार्थविशेषाणां आत्मना संबन्धादात्मा
नानिन्द्रियाद्यां स्थूलविशेषेणादेदे नैवाभातिमापत्रोविशुसंज्ञागतिः ज्ञाप्रहासनाश्रयमनोविशिष्टः सन्नेजससंज्ञः
स्वमेविचित्रवासनासरूतमायापरिणामान्यथ नैवात्मनश्चनश्चि अतिस्थमनः शब्दवाचोभवतिस आत्मा स्थूल

एषा अतिः स्वपितीत्येतत्सुखस्य लोके प्रसिद्धं नाम निर्वर्तिस्य शब्देनेहात्मा च ते यः प्रकृतः स ह्यहं वाच्यत्तम
पीतोभवत्यपिगतोभवतीत्यर्थः अपि पूर्वस्यैते लयाद्यन्ते प्रसिद्धं प्रभवाप्यया विसृज्यति प्रलयोः प्रयोग दर्शना
न्मनः प्रचारोपाधिविशेषसंबन्धादिन्द्रियार्थानरूतदिशेषापत्रो जीवो ज्ञागतिः तदा सनाधिशिष्टः स्वप्नान्य
प्रणमनः शब्दवाचोभवतिस उपाधिद्वयोपरमेसु प्रसावस्याया सुपाधिकृतिशेषाभावात् आत्मनि प्रलीनश्च
नित्येष्टपीतोभवतीत्युच्यते यथा हृदयशब्दनिर्वचनप्रत्यादर्शितं सवाप्य आत्मा हृदि तस्य तदेव निरुक्तं ह्य
यमिति तस्माद् हृदयमिति यथा वा शब्दनायोद्वयशब्दप्रवृत्तिमूलं दर्शयति अतिराप्य च तदंशितं न संतेते ज एव
तत्पीतं न यत इति च एवं समानान स ह्यहं वाच्यमपीतोभवतीती ममार्थस्य पितिनाम निर्वचनेन दर्शयति
नचचेतन आत्मा चेतने सरूपत्वेन प्रतिपद्यत यदि पुनः प्रधानमेवातीयत्वात् तस्य शब्देनोच्यते नमपि चेतनो
चेतनमप्येतीति विरुद्धमापद्यत प्रत्यंतरं च शब्देनात्मना संपरिज्ञातं न वाप्ये किंच न वेदनांतरमिति सुषुप्ता
वस्थायां चेतनेष्यं दर्शयति अतोयस्मिन्नप्ययः सर्वेषां चेतनानां चेतनं स ह्यहं वाच्यं न गतः कारणान्न प्र

धानं कृतं न प्रधानं ज्ञातः कारण ९ गतिमात्रायात्

सत्त्वोपाधिरूपोपरमेहं नरः कर्तृतिविशेषाभिमात्राभावात् लीन इत्युच्यते न ह्यहं ननु स्वपितीति नाम निरुक्तेरर्थ
वादत्वात् त्रयस्यार्थमित्याह यथेति तस्याहृदयशब्देन तन्निर्वचनं तदपि तमत्र इवीकृत्य न यते ज्ञायतीत्याप्यवाशाना
यापदार्थः त्पीतं उदकं जयते शोषयतीति तेज एवोदकं अचरीतं मूत्रादसः एवमिदमपि निर्वचनं यथा र्थमित्याह एव
मिति इदं च प्रधानपक्षेन युक्तमित्याह नचेति स्वशब्दस्यात्मनीयात्मीयेपि शक्तिरस्तीत्याशं वाद यदीति प्राप्तेन
विवचेतन्येनेश्चरेणासं परिष्ठागामेदभ्यसाभावेनामेद इत्यर्थः ॥

शा
भा
३८

निर

रूपद्वयेक्यतिमाह नूनमिति द्वैतस्थानेनूनमत्येसगुणरूपेति निर्गुणत्वात्तथासंपूर्णनिर्गुणत्वादित्यर्थः एकस्यदिरूपत्वं
विरुद्धमित्यत आह विधेति विद्याविषयोत्तयेति निर्गुणत्वं सत्यं अविद्याविषयउपास्यसगुणत्वं कृतमित्यविरोधः तत्रावि
द्याविषयविबुद्धेति तत्रेति निर्गुणाज्ञानाद्येमा रोधितप्रपंचमाश्रित्यवाधात्मा कालेगुडजिह्विकन्यायेनतनफलायां
पासनानिविधीयन्तेतेयोचितैकाग्रदृष्ट्याज्ञानेमुत्पलमिति तद्वाक्यानामपिमहातात्पर्यत्रस्मृतीतिमंतयेनामत्रस
त्पास्तीनां कामचारादिरभ्युदयः फलददराधुपास्तीनां क्रममुक्तिः उद्गीथादिध्यानस्यकर्मसमृद्धिः फलमितिभेदः ध्या
नानोमानसत्वाज्ञानोत्तरगत्या चज्ञानकोडेविधानमितिभावः ननूपास्यत्रस्मृणाएकत्वात्कथमुपासनानांभेद

नूनमन्यत्स्थानेसंप्रणिमन्यदितिचैवंसदृशेणविद्याविद्याविषयभेदेनत्रस्मृणादिरूपतोदर्शयेतिवाक्यानि
तत्राविद्यावस्थायांचस्मृणाउपास्योपासकादिलक्षणाः सर्वाव्यवहारस्तत्रकानिचिद्वस्मृणाउपासनान्यभ्युदया
द्यानिकानिचित्कममुत्तरार्थानिकानिचित्कमसमृद्ध्यानितेषांगुणविशेषोपाधिभेदेनभेदकएवम
परमात्मसुरतेसैर्गुणविशेषेविशिष्टउपास्योपाधिभवति तथापियथागुणोपासनमेवफलानिभि
द्यन्तेतेयथायथापासतेतदेवभवतीतिश्रुतेयथाकृत्यस्मिंलोकेपुरुषोभवति तथेतः प्रेम्भवतीतिचस्य
तेश्चयंयवापिस्मरन्भावेत्यजत्येकत्वेवरं तेतमेवेतिकौतयेसदातद्भावभावितइति यद्यप्येकआत्मा
सर्वभूतेषुस्थावरतंगमेषुगूढस्तथापिचितोपाधिविशेषतारतम्यादात्मनः कृत्यनित्यस्यैकरूपस्या
पुनरोत्तरमाविष्टस्यतारतम्यसैर्धर्मशक्तिविशेषैः श्रूयतेतस्ययआत्मविस्तरावेदेत्यत्र

तत्राह तेषामिति गुणविशेषाः सत्यकामत्वादयोहृदयादिरूपाधिः अत्रस्वयमेवाशंकापरिहरति एकइति परमा
त्मस्वरूपाभेदेषुपाधिभेदेनोपहितोपास्यरूपभेदादुपासनानांभेदेसतिफलभेदइतिभावः तंपरमात्मानेयद्गुणत्वे
नलोकाराज्ञानमिवोपासनेतत्तद्गुणत्वमेवतेषांफलंभवति क्रतुःसंकल्पेध्यानमिदंशशयानवान्भवतिस्
त्वातादृशोपास्यरूपोभवतीत्यत्रैवभगवद्वाक्यामाह स्मृतिश्चेति ननुसर्वभूतेषुनिरतिशयात्मनः एकत्वाउपास्य
पासकयोस्तारतम्यश्रुतयः कथमित्याशंकापरिहरति यद्यप्येकइति उक्तानामुपाधीनांश्रुतितारतम्यादेश्चयज्ञानस
त्वरूपशक्तीनांतारतम्यरूपाविशेषाभवेतितेरेकरूपस्यात्मानः उत्तरोत्तरमनुष्मादिद्विराहणगभीतेषुविभीषताता
रतम्यश्रूयतेतस्यात्मन आत्मानेस्वरूपमावित्तरोप्रकटतरंगोवेदउपास्तेषांश्रुततेदितितरप्राप्त्यादित्यर्थः तथाच

निरुद्धोपाधिस्मृतेषां सत्कं उद्गीथादिध्यानस्यैकरूपस्यैकत्वमिति भावः

36

३८

इतानुवादेनोत्तरसूत्रसंदर्भमातिपति जन्मादीति प्रथमसूत्रस्य शास्त्रोपाधौ ह्यतन्नाज्जन्मादिसूत्रमारभ्येतत्सर्ववेदान्तोना
कार्यप्रधानाद्यचेतनेचसमन्वयनिरासेनसूत्रपरत्वंवाच्यातमतः प्रथमाध्यायार्थस्यसमाप्तत्वाद्गुणरथंयारंभेकिंकारण
मित्यर्थः वेदान्तेषुसंगुणनिर्माणस्यवाक्यानांवाहलमुपलब्धोः तत्रकस्यवाक्यस्यसंगणेषासनाविधिद्वारा निर्माणसम
न्वयः कस्यवाक्यविबला विनासात्तदेवसमन्वयस्याकोदौवकारणमित्याह उच्यते इति संक्षिप्तसंगुणनिर्माणवा
क्यार्थमाहिरूपंहीति नामरूपात्मकोविकारसर्वजगतद्देशोदिराण्यस्यप्रत्यादिविशेष इतिवाक्यार्थः वाक्यानुदाहरति
यत्रदीप्यादिना यस्यात्त्वत्तानावस्याप्यदेतमिवकल्पितंभवतिततदातरः सत्रितरेषण्यतीतिइष्यायाधिकं वस्तुभाति
यत्रज्ञानकालेचिदुषः सर्वजगदात्ममात्रमभूत् ततदानुकेनकेषरेपदित्याक्षेपात्रिरूपाधिकं तत्त्वभाति यत्रभूमिनिधि

जन्माद्यस्ययतरत्वारभ्यक्तत्वाच्चेत्येवमंतैः सूत्रैर्यानुदाहृतानिवेदान्तवाक्यानि तेषां सर्वज्ञः सर्वशक्तिरीश्वरो जग
तो जन्मस्थितिलयकारणमित्येतस्यार्थस्यप्रतिपादकत्वंन्यायसर्वकप्रतिपादितंरानि सामान्योपन्यासेनचसर्व
वेदान्ताद्येतन्नकारणादिन इतिवाच्यातमतः परस्यग्रंथस्यकिंमन्यामितीत्युच्यते हिरूपंदिब्रह्मावराभ्यतेना
मरूपविकारभेदोपाधिविशिष्टेनद्विपरीतेचसर्वोपाधिविवर्जितं यत्रदिदेतमिवभवति तदितरतररेषण्यतिपत्रत्वस्य
सर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकेषरेयत्रनान्यत्प्रतिनान्यच्छाणितिनान्यदिजानातिसमभ्या यत्रान्यत्प्रत्यक्षं
णोत्पत्तिजानातितदत्वेयोवैभस्यातदस्मत्तमययदत्तत्तन्मत्सर्वोपाधिरूपाणि विचिंत्यपीतोनामानिकृत्वाभिव
दन्मदासौनिष्कले निश्चिंत्यंतातेनिरवद्यंतिरेजनेप्रसृतस्यपरमेतेदग्धंयजमिवाजले नेतिनेत्यस्यूलमनए
नेचिद्वान्तितीयेकिमपिनवेति साहितीयोभूमापरमात्मानिर्गुणः अथानिर्गुणोत्पन्नंतरंसंगुणामुच्यतेयत्रसंगुणोस्थि
तेदितीयेवेतितदत्वेपरिचिंत्यस्तुभूमातदस्मत्तन्मत्सर्वोपाधिरूपाणि विचिंत्यपीतोनामानिकृत्वाभिव
दन्मदासौनिष्कले निश्चिंत्यंतातेनिरवद्यंतिरेजनेप्रसृतस्यपरमेतेदग्धंयजमिवाजले नेतिनेत्यस्यूलमनए
नेचिद्वान्तितीयेकिमपिनवेति साहितीयोभूमापरमात्मानिर्गुणः अथानिर्गुणोत्पन्नंतरंसंगुणामुच्यतेयत्रसंगुणोस्थि
तेदितीयेवेतितदत्वेपरिचिंत्यस्तुभूमातदस्मत्तन्मत्सर्वोपाधिरूपाणि विचिंत्यपीतोनामानिकृत्वाभिव
दन्मदासौनिष्कले निश्चिंत्यंतातेनिरवद्यंतिरेजनेप्रसृतस्यपरमेतेदग्धंयजमिवाजले नेतिनेत्यस्यूलमनए

इति सूत्रार्थः

प्रा.
भा.
३९

तिर

परिहरति न स्यादिति संग्रहीतं विद्यालो मुत्तरति परमात्मैतद्यः शरीरत्वे जीवत्वं किं तस्यादत्तत्वाद न चेति जीवत्वं इति रमित्यर्थः नन्वानेदं दशाभासेषां नंदमयस्य ब्रह्मत्वं कथमित्याशङ्क्योतिष्ठामाधिकारे ज्योतिः यदस्य ज्योतिश्चामयस्त्वत्त आनंदमयप्रकरणस्थानेन दशानंदमयपरत्वात् तदभासस्तस्य ब्रह्मत्वसाधकत्वाभिधेयाद् आनंदमयं पल्लवेति रससारः आनंदमयर्थः अयं लोकः यद्येष आकाशः पूर्णः आनंदः साक्षी प्रत्येकानस्यात् तदा को वा न्याचले को वा विषयमाणा जीवेत न स्यात्पि पाद्यवयवयोगाच्छरीरत्वं अवलम्ब्य मुत्तरति चेदात्मा स्यात्प्रियादिसंस्पर्शः स्यादिदं तत्तस्य प्रियमेव शिरस्तादिग्रहणे शरीरत्वं च ग्रह्यते तस्यैष एव शरीर आत्मायः प्रत्येक्येति तस्य पूर्वस्य विज्ञानमयस्यैष एव शरीर आत्मा य एष आनंदमय इत्यर्थः न च शरीरस्य सतः प्रियाप्रियसंस्पर्शो वा रयितुं शक्यः तस्यात्स साधेवानेदमय आत्मैव प्राप्त इदमुच्यते ॥ आनंदमयो भासात् ॥ परवात्मानं नंदमयो भवितुमर्हति कुतो भासात् परस्मिन्नेव व्यात्मन्यनंदं शब्दो ब्रह्म कुतो भास्यते आनंदमयं प्रस्तुत्य रसो वै सरति तस्यैव रसत्वं मुक्तोच्यते रसं येषां लब्धवानेदो भवति को येषां न्यात्कः प्राणायामेन आकाश आनंदो न स्यादेव येषां नंदयति सैषानंदस्य मीमांसा भवति एतमानंदमयमात्मा नमुय संक्रमति आनंदं ब्रह्मणे विद्वान्निमित्तं कुतश्च न आनंदो ब्रह्म इति विज्ञानादिति च अतएव तरे च विज्ञानमानंदं ब्रह्मेति ब्रह्मण्येवानंदं शब्दो दृष्ट एव मानंदमयस्याप्यसुखत्वं नासौ दोष आनंदमयस्य सर्वोत्तरत्वात् सुखमेव व्यात्मानमुपदिदितुं शास्त्रे लोकबुद्धिमनुसरदत्रमयं शरीरमनात्मानमत्यंतमहानामात्मत्वेन प्रसिद्धमनद्यमूयानिषक्त इतनामादिप्रतिमावततो तरेततोत्तरमित्येवं ॥

37

३९

तस्मादेष एवानंदयतीत्यर्थः साधुवास्यादित्यादिनावक्ष्यमाणमनुष्यपुवानंदमारभ्य ब्रह्मानंदं वमाना एषा सन्निहिता आनंदस्य तारतम्यमीमांसा भवति उपसंक्रमति विद्वान्नाप्रोत्येकदेशिनेत्यर्थः सुखसिद्धांते तपसंक्रमणे विदुषको शांतो प्रत्यक्षान्तेन विलापनमिति ज्ञेयं शिष्टमुक्तार्थं आनंदं शब्दो ह्यस्या वगतिः सर्वत्र समानेति गतिसामान्यार्थमारु अतएव तरे चेति लिंगादसुखात्मसन्निधेर्वाधरिति मत्वाह नासाविति सर्वोत्तरत्वं न कृतमित्याशङ्क्यततो न स्यान्नक्तैः तस्य सर्वोत्तरत्वं मिति विद्यालोति सुखमिति लोकबुद्धिमिति तस्याः स्मृत्यादितामनुसरदित्यर्थः ॥

शब्दस्य बहुकृत्योऽनुसंधानमया सादानंदमय आत्मा ब्रह्मेति गम्यते पक्षकमनमया धर्मसुखात्मप्रवाहे पतितत्वादानंदमयः ॥ ३९ ॥

अर्थभागवद्गीतासुदादरति स्तुतविति अत्रसूर्यादेशिनजीवनेनोपासना किंतीचरत्वेनेत्युक्तंभवति तत्र सूत्रकारसंमति
 मार एवमिति उदयग्रसंबंधः एवंयस्मिन्वाकोउपाधिर्विवक्षितस्तदाकमपासनापरमिति वक्तुमनरसूत्रसदभसारंभर
 तुत्कायत्रनविवक्षितस्तदाकांतेयचसपरमिति निर्णयार्थमारंभरत्याद एवंसद्युति अत्रमयादिकोशाउपाधिविशेषाः
 यावगतिस्तत्पर्यं आरंभसमर्धनमुपसंहरति एवमेकमपीति सिद्धवदुक्तगतिमात्रान्यस्पष्टाधनार्थमप्युत्तरारंभरत्याद
 यचेति अत्रप्रसिद्धं प्राणमनोबुद्धयोदिराण्यगर्भरूपाः चिंतयैतन्नमोचर आनेदस्तेषांपंचानां विकाराः आध्यात्मिकादेदपा

स्तुतवपियद्यदिभूतिमत्सत्वे श्रीमर्शितमेव वा तत्तदेवावगच्छत्वं समते नोपासंभवंमिति यत्रयत्रकिमर्थाद्यतिशयः ॥
 ससंरच्यरत्नपापतपाचोयते एवमिदं व्यादित्यमं उलेदिराण्यमयः पुरुषः सर्वपापे दयुस्तिगात्परवेति वक्ष्यते ॥
 वमाकाशस्तत्त्रिंशदित्यादिषु दृष्टं एवंसद्यो मुक्तिकाराणामप्यात्मज्ञानमुपाधिविशेषद्वारेण पदिरूपमानमप्यवि ॥
 वदितोपाधिसंबंधविशेषपरपरविषयत्वेन संदिष्टमानं कदागतिपथात् च नयानिर्णीतं भवति यथेदेवता ॥
 वदानंदमयोभासादिति एवमेकमपि ब्रह्मणोदितोपाधिसंबंधं निरस्तेपाधिसंबंधं चोपासत्वेन ज्ञेयत्वेन च वेदो ॥
 तेषूपदिष्टतरतिप्रदर्शयितं परोक्षेय आरभते यच्चरातिसामान्यादित्यचेतनकारणमुक्तं तदपि वाक्यांतराणि ब्रह्म ॥
 विषयाणि वाच्यतां न ब्रह्मविषयीतकारण निषेधेन प्रपंचते आनंदमयोभासात् तैत्तिरीयके त्रमयं प्राणमयं ॥
 मनोमयं विज्ञानमयं चान क्रम्याभ्यायते तस्माद्वा एतस्मादिज्ञानमया दन्तं तत्र आत्मानं दमयति तत्र संप्रायः कि ॥
 सिद्धानंदमयश्चेन्न परमेव ब्रह्मोच्यते यत्तु कृतं सत्यज्ञानमनंतं ब्रह्मेति किंचात्रमयादिवद्वस्त्राण्यतीतरमिति किंता ॥
 वत्प्राग्ब्रह्मण्यतीतरमस्या आत्मानं दमयः स्यात्कस्मादत्रमयाद्यमुखात्सप्रवादपतिनत्वादयापि स्यात्सर्वतीतरता ॥

निराकरता ५

णमनोबुद्धितीवा अत्रमयादयः पंचकोशरुतिश्रुतेः परमार्थः ईदं अधिकरतो गौणमुखात् ताण योरनत्यत्वेन संशयाभावा
 गौणप्राप्यपाठेन निश्चायकरत्वं तदिमयदेविकारेणात्रुयै चमुखात्वात्संशयविकारप्राप्यपाठोदानेदविकारो जीवः आनेद
 मयरेति निश्चयोस्तीति प्रत्युदादृशसंगत्या पूर्वपदमारकस्मादित्याकोशाप्रवक्तुं अत्रमयादीति श्रुत्यादिसंगतयः सु
 दापव पूर्वपदोक्तकर्ममतेनोपासनाधियादिसिः कर्त्तव्यं तेन ब्रह्मोपास्यतिभेदः शकते अचपीति ५

पुनः
भा.
४

आनेदमयस्य ब्रह्मत्वे लिङ्गमुक्ताप्रकरणमाह मां त्रेति यस्यादेवं प्रकृतं तस्या तन्मात्रवर्णिकमेव ब्रह्मानेदमय इति वाकोमीयत इति योजन
ननु मंत्रोक्तमेवात्रापि मितिको निर्वैधर्मात् तदमेति त्रयास्यास्य मंत्रया व्याख्यानत्वादाय न मस्ति मंत्रस्य पेयः तदिदमुक्तमविरो
धादिति तयो रूपायोपेयभावादित्यर्थः तर्हि त्रयमपादीनामपि मां त्रवर्णिकब्रह्मत्वे स्यादित्यत्र आह नयेति किंच भगवत्प्रोक्तावरु
णो नोपदिष्टा भगवत्पंचमर्ष्या यस्यानेदमय इति हिता तत्र स्यात्तन्मात्रेण तदेवार्थवत्त्वस्यानेदमये निष्ठेत्याह एतन्निष्ठेवेति स
इत्युक्तं तपः सस्यालोचनमतस्य तत्कृतवानित्यर्थः अभिधाने कामना वदस्यामित्यतिरेकः अधिकारे प्रकरणे समुपाने

मां त्रवर्णिकमेव च गीयते ॥ इतश्चानेदमयः परमवात्मा एषा इष्टविदा प्रोति परमिष्य पक्रमसंस्तानमनते त्रस्य
स्मिन्नेत्रे यद्ब्रह्म सत्यज्ञानानेन विप्रोर्षे निर्द्वारितं यस्यादाकाशतदिकमेवास्या चरजंगमानि भूतान्यजायंत यच्च भूतानि
संस्तानान्यनुप्रविश्य गृहायामवस्थितं सर्वान्मयस्य विज्ञानाया ज्ञातव्या इति प्रजातं तन्मात्रवर्णिकमेव ब्रह्मेदमी
यनेत्योतर आत्मानेदमय इति मंत्रास्या यो धैका र्थत्वं पुक्तमविरोधादप्युक्तं तदानीं प्रकृतं प्रकृत्ये स्यात्तान च
त्रमयादिभ्य इवानेदमयादयो तत्र आत्माभिधीयते एतन्निष्ठे वचसेषा भार्गवी वारुणी विद्या आनेदमय इति व्याजाना त
स्यादानेदमयः परमवात्मा नेतरोनुपपत्तेः ॥ इतश्चानेदमयः परमवात्माने तरे इत्युक्तं तपः समासी जीव इत्यर्थः न
जीव आनेदमय शब्देनाभिधीयते कस्मादनुपपत्तेरानेदमयेदि प्रकृत्युच्यते सो कामयत ब्रह्म प्रजायेयेति सतपो
तपः सतपस्तत्त्वारं सर्वमसृजत यदिदं किंचेति तत्राप्रकृशरीराद्युत्पत्तेरभिधाने सत्यमानानां च विकाराणां सप्त
रव्यतिरेकः सर्वविकारसंक्षिप्तपरात्मात्मनो न्यत्रोपपद्यते भेदव्यपदेशाच्च ॥ इतश्चानेदमयः समासी यस्याद
नेदमयाधिकारे रसो वैसः रसेष्टवायं लब्धुर्नदी भवतीति जीवानेदमयो भेदनव्यपदिशति न हिलब्धौ वलब्धयो
भवति कथं तद्वात्मानेष्टव्यात्मात्माभात्रपरं विद्यते इति चक्रमिस्तीयावतानलव्यै वलब्धयो भवतीत्युक्तं वा
तथाप्यात्मनो यद्युतात्मभावस्यैव सतत्त्वानववाधनिमित्तो देहादिष्वनात्मस्वात्मत्वं निश्चयो लोकोक्तिरुच्यते न
देहादिभूतस्यात्मनोप्यात्मन निष्ठान्वेषु यो लब्धो लब्धव्यो अतः श्रौतव्यो मतो मतव्यो विज्ञातो विज्ञातव्य इति
यमपारसः ननु लब्धौ लब्धव्यभावेऽप्यभेदः किं न स्यादित्यत्र आह न हिलब्धौ वेति ननु लब्धौ लब्धव्ययोर्भेदस्यावश्यकत्वे
तिस्मत्प्रोवाधः स्यादित्याशंकते कथमिति यावता वस्तुयेत्युक्तमतः अतिस्मृती कथमिति त्वयः उक्तं शंका मंगी करोति
वाचमिति तर्हि तान्मन एवात्मना लभ्यत्वेति वाच्यः अभेद इति शंका कल्पितमेव तत्राध्यात्माह तथापीति अभेदपीत्यु
क्तोक्तिः भ्रमश्चात्मनः स्वात्मानं जभमण देहाद्यभिन्नस्य भेदभात्मा परमात्मनो ज्ञेयत्वाद्युक्तिरित्यर्थः अन्वेष्टव्यो देहादिविवि

भेदव्यपदेशपद्यते

ननु मंत्रोक्तमेवात्रापि मितिको निर्वैधर्मात् तदमेति त्रयास्यास्य मंत्रया व्याख्यानत्वादाय न मस्ति मंत्रस्य पेयः तदिदमुक्तमविरो
धादिति तयो रूपायोपेयभावादित्यर्थः तर्हि त्रयमपादीनामपि मां त्रवर्णिकब्रह्मत्वे स्यादित्यत्र आह नयेति किंच भगवत्प्रोक्तावरु
णो नोपदिष्टा भगवत्पंचमर्ष्या यस्यानेदमय इति हिता तत्र स्यात्तन्मात्रेण तदेवार्थवत्त्वस्यानेदमये निष्ठेत्याह एतन्निष्ठेवेति स
इत्युक्तं तपः सस्यालोचनमतस्य तत्कृतवानित्यर्थः अभिधाने कामना वदस्यामित्यतिरेकः अधिकारे प्रकरणे समुपाने

अथैवमगवहीतामुदाहरति स्मृत्यविति अत्र सूर्यदेवयिनीवत्तेजोपासना किंतीचरत्तेनेत्युक्तंभवति तत्र सूत्रकारसंमति
माह एवमिति उदयग्रसंबंधः एवंयस्मिन्वाकोउपाधिर्विचक्षितस्तदाकममपासनापरमिति वक्तुमत्रसूत्रसदर्थं सारंभर
त्युक्तयत्रनविचक्षितस्तदाकंतेयचमपरमिति निर्गुणार्थमारंभरत्याह एवंसुपुंति अत्रमयादिकोशाउपाधिविशेषाः
वाक्यगतिस्तात्पर्यं आरंभसमर्थनमुपसंहरति एवमेकमपीति सिद्धवदुक्तगतिमात्रान्यस्याधनार्थमप्युत्तरारंभरत्याह
यचेति अत्रप्रसिद्धं प्राणामनोबुद्धयोदिराण्यगर्भस्थाः विंचैतनमीश्वरान्नेदस्तेषां वंचाने विकाराः आध्यात्मिकादेदपा

स्मृतावपि यद्यदिभूतिमत्सत्ते श्रीमद्वैतमेववा तत्तदेवावगतत्वं समतेजोप्राप्तं भवंमिति यत्रयत्रविभर्त्ता घटितयः ८
सर्गश्चरत्तपापतपाचोपते एवमिदं आदित्यमंडलेदिराण्यमयः पुरुषः सर्वेषां प्रदयुल्लिख्यत्वरणं चेति वक्ष्यते ९
वमाकाशस्तस्मिन्नादित्यादिषु दृष्टं एवंसद्यो मुक्तिकारणमप्यात्मतानमुपाधिविशेषद्वारेण परिश्रमानमप्यवि १०
वक्षितोपाधिसंबंधविशेषपरापरविषयत्वेन संदिग्धमानं वाक्यगतिपरीलोचनयानिर्णीतं भवति यथेदेवता ११
वदानंदमयोभ्यासादिति एवमेकमपि ब्रह्मणोपाधिसंबंधं निरस्तोपाधिसंबंधं बोधयति न तेन तेन च वेदा १२
तेषु परिश्रमतरति प्रदर्शयितुं परोक्षेण आरभ्यते यच्च गतिसामान्यादित्यचेतनकारणमुक्तं तदपि वाक्यांतरातिवृत्त १३
विषयाणि व्याचक्षाणेन अस्मिन् विषयीतकारण निषेधेन जपयेयते आनंदमयोभ्यासात् तैत्तिरीयकेन मयं प्राणमय १४
मनोमयं चित्तमयं चानु कृष्णायनेतस्माद्वा एतस्मादिज्ञानमया दमोत्तमप्राणान्दमय इति तत्रमंशयः कि १५
मिद्वानंदमयश्च हेनपरमेव ब्रह्मलोच्यते यत्कृतं सत्यवानमन्तं तत्रैतद्विवाचनमयादिवद्ब्रह्मण्यीतरमिति किंता १६
वत्प्राप्तं ब्रह्मण्यीतरमसुखं आत्मानंदमयः स्वात्कसा दत्रमया एवमव्यात्मप्रवादपतिनत्वादयापि स्यात्सर्वज्ञत्वा १७

निराकराय

णामनोबुद्धिजीवा अत्रमयादयः ये च कोशरुतिप्रकृतेः परमांशः एतौधिकुराणो गौणामुखे तेषां योरनृत्यत्वेन संशयाभावा
द्गौणप्रापपाठेन निश्चायकत्वं तत्तद्विमयदेविकारेणात्रैवं चमूखत्वात्साधये विकारप्रापपाठोदानेदविकारो जीवः आनंद
मय इति निश्चये स्तीति प्रत्युदाहरणसंगत्या प्रवृत्तमाह वत्सादित्याकोशाप्रवृत्ते अत्रमयादिति प्रत्यादिसंगतयः सु
दापव सर्वपदोद्घातकमतेजीवोपाख्याधियादयामिः कर्त्तृसिद्धातेन तत्रमोपास्यतिभेदः एकते अयापीति ॥

प्रा.
भा.
४

आनेदमयस्य ब्रह्मते लिंगमुक्ताप्रकरणमाह मांवेति यस्यादेवं प्रकृतं तत्तत्तन्मात्रवर्तिकमेव ब्रह्मानेदमय इति वाकोपीयत इति योजन
ननु मंत्रोक्तमेवात्र प्राप्तिमिति को निर्वैयर्थ्यत्राह मेवेति ब्रह्माण्डस्य मंत्रात्मानं तत्तत्तन्मात्रवर्तिकमेव ब्रह्मानेदमय इति वाकोपीयत इति योजन
यादित्येव योरुपायोपेयभावादित्यर्थः तर्ह्यत्र मणदीनामपि मांत्रवर्तिकब्रह्मत्वेणादित्यत्राह नयेति किंच भगवत्प्राक्तावरु
णो नोपदिष्टाभ्युपगच्छेत्तत्र मणदीनामपि मांत्रवर्तिकब्रह्मत्वेणादित्यत्राह नयेति किंच भगवत्प्राक्तावरु
णो नोपदिष्टाभ्युपगच्छेत्तत्र मणदीनामपि मांत्रवर्तिकब्रह्मत्वेणादित्यत्राह नयेति किंच भगवत्प्राक्तावरु

मांत्रवर्तिकमेव ब्रह्मीयते १५ इत आनेदमयः परणवात्मा यस्य ब्रह्मविदा प्रातिपरमित्युपक्रमसंज्ञानमनतंत्रस्य
स्मिन्मंत्रेयद्ब्रह्मसत्यज्ञानानंतविशेषे निर्द्वारितं यस्यादाकाशगदिक्रमोणाद्यावरजंगमानि भूतान्यजायत यच्च भूतानि
सृष्टान्तान्यनुप्रविश्य गृहायामबस्थितं सर्वगतस्य स्य विज्ञानाया न्यातस्य आत्मेति प्रजातं तन्मात्रवर्तिकमेव ब्रह्म इति
यत्नेनोत्तर आत्मानेदमय इति मंत्रब्रह्माण्डोपेयकार्यत्वपुनः कर्मविरुद्धादित्यत्राह नयेति किंच भगवत्प्राक्तावरु
णो नोपदिष्टाभ्युपगच्छेत्तत्र मणदीनामपि मांत्रवर्तिकब्रह्मत्वेणादित्यत्राह नयेति किंच भगवत्प्राक्तावरु

स्मादनेदमयः परणवात्मा केनोपपत्तेः १६ इत आनेदमयः परणवात्मानेतरैश्चर्यादयः संसारी जीव इत्यर्थः न
जीव आनेदमयशब्देनाभिधीयते कस्मादनुपपत्तेरनेदमय इति प्रकृत्युच्यते सोऽकामयत ब्रह्मा प्रजायेयेतिसतपो
तप्य सतपस्तत्पारंदसर्वमसृजत यदिदं किंचेति तत्र प्राकशरीराद्युत्पत्तेरभिधाने सत्यमानानाच विकाराणां सृष्ट
रवतिरेकः सर्वविकारसृष्टिश्च न परस्मादात्मनोऽप्युपपत्ते भेदव्यपदेशाच्च १७ इत आनेदमयः संसारी यस्यादा
नेदमयाधिकारे रसावैसः रसेण वायुलब्धानेदीभवतीति जीवानेदमयोर्भेदेन व्युत्पत्तिरिति न हिलब्धौ लब्धयो
भवति कथं तर्ह्यत्मानेष्टव्यात्मत्वाभावात्परं विद्यते इति च प्रतिस्मृतीयावतानलब्धौ लब्धयो भवतीत्युक्तं वाचं
तस्याप्यात्मनोऽप्युत्पत्त्यात्मभावस्य सतस्तत्त्वानववाधनिमित्तो देहादिष्वनात्मत्वात्मात्मनिश्चयो लोकि को दृष्टस्त
देहादिभूतस्यात्मनोऽप्यात्मनिष्ठात्मानेष्टव्यात्मत्वाभावात्परं विद्यते इति च प्रतिस्मृतीयावतानलब्धौ लब्धयो भवतीत्युक्तं वाचं

दमयोरसः ननु लब्धौ लब्धव्यभावेऽप्यभेदः किं न स्यादित्यत्राह न हिलब्धौ वेति ननु लब्धौ लब्धव्ययोर्भेदस्यावश्यकत्वे
तिस्मृत्योर्वाधः स्यादित्याशंकते कथमिति यावता च त्वयेत्युक्तमनः प्रतिस्मृती कथमिति त्वयः उक्तेशां कामगी करोति
वाचमिति तर्ह्यत्मानेष्टव्यात्मत्वाभावात्परं विद्यते इति च प्रतिस्मृतीयावतानलब्धौ लब्धयो भवतीत्युक्तं वाचं
लोकि कः भ्रम आत्मनः स्वात्मानं जभमाणं देहाद्यभिन्नस्य भेदभावात्परमात्मनोऽप्युत्पत्तिरित्यर्थः अन्वेष्टव्यो देहादिविवि

भेदव्यपदेशाच्च

ननु मंत्रोक्तमेवात्र प्राप्तिमिति को निर्वैयर्थ्यत्राह मेवेति ब्रह्माण्डस्य मंत्रात्मानं तत्तत्तन्मात्रवर्तिकमेव ब्रह्मानेदमय इति वाकोपीयत इति योजन
यादित्येव योरुपायोपेयभावादित्यर्थः तर्ह्यत्र मणदीनामपि मांत्रवर्तिकब्रह्मत्वेणादित्यत्राह नयेति किंच भगवत्प्राक्तावरु
णो नोपदिष्टाभ्युपगच्छेत्तत्र मणदीनामपि मांत्रवर्तिकब्रह्मत्वेणादित्यत्राह नयेति किंच भगवत्प्राक्तावरु

३४

पञ्चमा

तामस्यमहाकारत्वव्याप्यदेहाकारत्वेदेहेनसामान्यतयामनः प्राणाकारेनेनसममिगार पूर्वोति अतीतोयोनंतर
उपाधिविज्ञानमपकोशस्तन्कृतामावयवत्वकल्पनाशरीरेणातेयत्वाच्छरीरत्वमितिलिङ्गद्वयेद्वैतमतः सदायाभावमप्या
समवांतरत्वाभाविभक्तिसन्निधेवाथरतिभावः विकाराद्यकमयदप्रतिः सदायत्वाशक्यमयदः प्राचुर्येपविधानात्मे
वमित्याद विकारेत्यादिना तत्कृतवचनेमयदितितदितिप्रथमासमाधानं क्वहात्प्राचुर्यविशिष्टस्यप्रस्तनस्यवच

परश्वात्मा

पूर्वोपाधिविज्ञानमपकोशस्तन्कृतामावयवत्वकल्पनाशरीरेणातेयत्वाच्छरीरत्वमितिलिङ्गद्वयेद्वैतमतः सदायाभावमप्या
समवांतरत्वाभाविभक्तिसन्निधेवाथरतिभावः विकाराद्यकमयदप्रतिः सदायत्वाशक्यमयदः प्राचुर्येपविधानात्मे
वमित्याद विकारेत्यादिना तत्कृतवचनेमयदितितदितिप्रथमासमाधानं क्वहात्प्राचुर्यविशिष्टस्यप्रस्तनस्यवच
प्रवेणप्रवेणसमानमुत्तरोत्तरमनात्मानमात्मेतिप्रादयत्यतिपतिषो कथौसंवातरंमुख्यमानेदमयमात्मानमुप
दिदेशोतिप्रवेणप्रवेणकथौनिदधौनेवहीष्यपितारासम्बन्धस्वरूपतीमुदधितासयांत्याप्रदृश्यतेसामुख्येवादेप
तीभवत्येवमिहाप्यानंदमयसमवांतरत्वात्मुखापान्तत्वे यनप्रवेणियादीनांभिभक्तादिकल्पनाचपत्रासुखस्या
त्मनश्चतीता नंतरोपाधिविज्ञानात्मानत्वाभावि कीलक्षणेः सशरीरत्वमुप्यानेदमयस्यात्र मयादिशरीरपरपर
यापदृश्यमानत्वात्रयुनः साक्षादेवसशरीरत्वसमाविद्यतस्यादानंदमयः विकाराद्यकमयदप्रतिः सदायत्वाशक्यमयदः प्राचुर्येपविधानात्मे
अत्रादजानंदमयः परमात्माभ वित्तमदेति कस्यादिकारयात्तात्कृतवचनमयदमयः प्राचुर्यविकारवचनः सम
धिगत आनंदमय इतिमयदाविकाराद्येतात्कृतमयादिशब्दादिकारवचनमयदमयः प्राचुर्यविकारवचनः सम
चुर्यार्थेपिमयदः स्मरणतत्कृतवचनेमयदितिदिप्रचुरतायामपिमयदस्यनेयथात्रमयोयतत्पुत्रप्रचुरउच
नेवमानंदप्रचुरमयानंदमयमुच्यतेप्रा नंदप्रचुरत्वचप्रमाणमनुष्यत्वादारभातरमिपुनरमिप्यावेशन
गणान्मानंदइत्येकात्रमानंदस्यनिरतिशयत्वाचधारणतस्याप्राचुर्यार्थमयद ७ तदेतच्चपदेशाच ४ इत
अप्राचुर्यार्थमयदस्यादानंदहेतुत्वेनस्मरणव्यपदिशतिप्रतिरेष्येवानेदयातीत्यानेदयतीत्यर्थः योऽन्या
नानंदयतिसप्रचुरानंदइतिप्रसिद्धमवति यथात्मेकेयोमेवाथविकल्पमापादयति सप्रचुरेयनरतिगम्यतेतह
नेभिधानेमयदप्रत्ययोभवतीतिसाधयेः अत्रवचनप्रदणत प्रकृतस्याप्राचुर्यवेशि सुसिद्धिः तास्यास्यलोकेमयदाभि
यानाद्ययात्रमयोयतइति अत्रयत्रप्रचुरमसिप्रिपत्राद्यः प्रथमाविभक्ति यत्तत्समस्यान्यदयत्तस्य प्रकृत्येवात्र प्रा
चुर्यवाचीरूपतेनमुदप्रकृतवचनरतिप्रये सप्रचुर्यवशेवानुत्तममुच्यार्थेतिमत्वावच्छेदइत्येति तद्यानतीच

दानंदमयस्य विरतिरायत्वावधारणं प्रवेणमुक्तं

वृत्तिकारमतेरुच्यति इदंतिरिति इदं परव्याख्यायां विकाराद्यैके मय रिवृद्धि स्थे मन्कस्यात्कारां विनैक प्रकराण्यस्य मयदः पूर्व
विकाराद्यैकत्वमतेनाच्यार्थकत्वमित्यर्थं जरतीयेक यमिव केन दृष्टेतेन आशीयत इति इदं वक्तव्यमित्यन्वयः प्रश्नप्रत्याशकते
मात्रेति स्फुटमन्तरं किमांतर इति नम्यते किंवा वस्तुतोप्यांतरं ज्ञानप्रयत्न इति विकल्प आश्रय मंगीकरोति अत्रोच्यते यद्यपी
ति विकल्पप्रयणावात्परदीतमयदः अनेः सावयवलिङ्गात्माद तथापीति रक्षा रक्षा रक्षा ज्ञाते सुखे प्रियं स्वरूपमादः सचाभा

इदंतिरवक्तव्यं सवाप्यपरुषोत्तरसमयः तस्माद्वाप्यनस्यादत्र समयादयोतर आत्मा प्राण मयस्तस्मादयोतर आत्मा म
नो मयस्तस्मादयोतर आत्मा वित्तानमय इति च विकाराद्यैकत्वमयदः प्रवादे सत्यानेदमय एवाकस्मादर्थं जरतीयेक यमिव न क
यमिव मयदः प्राचुर्यार्थत्वं त्रस्य विषयत्वं चाशीयत इति मात्रवर्तिकत्रस्याधिकारादिति चेत् अत्र मयादीनामपि
तद्विज्ञानत्वप्रसंगाः अत्राद्युक्तमत्र मयादीनामत्र सत्त्वं तस्मात्तस्मादेतरस्यातस्मान्स्यात्मानत्वात् आनेद
मयातन कश्चिदयोतर आत्मा चते तेनानेदमयस्यात्र सत्त्वं मयथा प्रकृतद्वाना प्रकृतप्रक्रियाप्रसंगादिति अत्रोच्यते
यद्यप्यत्र मयादिभ्यस्त्वेनेदमयादयोतर आत्मेति न श्रूयते तथापि नानेदमयस्यात्र सत्त्वं यत आनेदमयं प्रकृत्य अ
यते तस्य प्रियमेव शिरः मोक्षोदत्ताण्यतः प्रमोदउत्तरः पक्षः आनेद आत्मा त्रस्य पुच्छं प्रतिष्ठेति तत्र यद्वस्य मत्रव
र्गप्रकृतसत्त्वं न मनंते त्रस्येति तदिह त्रस्य पुच्छं प्रतिष्ठेत्सु चते तद्विज्ञानाप्यिषये वा त्रमयादय आनेदमयातः पक्ष
कोशः कल्पते तत्र कुतः प्रकृतद्वाना प्रकृतप्रक्रियाप्रसंगाः नन्वानेदमयस्यावयवत्वेन त्रस्य पुच्छं प्रतिष्ठेत्सु चते
अत्र मयादीनामिवेदं पुच्छं प्रतिष्ठेत्त्यादितत्र कथं त्रसणाः स्वप्रधानत्वं शो विज्ञाते प्रकृतत्वादिति त्रसः "

39

सात्त्विकः प्रमोदः आनेदस्त्वाकारां विज्ञातेन तस्मात्सात्त्विकः पुच्छयेर्मध्यकाया त्रस्य अहमिति अत्यर्थः द्वितीये प्रत्याद तत्रय
दितियन्मत्रे प्रकृतं गृह्यते तेन सर्वोत्तरं त्रस्य तदिह पुच्छवाको त्रस्य शब्दात् सत्त्वमित्यापते तस्यैव विज्ञापने स्वयापेचको श्रू
पागस्य प्रपंचेता तत्र तात्पर्यं नास्तीति वक्तव्यं कल्पतरुसूक्ते एवं पुच्छवाको प्रकृतस्वप्रधानत्वं त्रस्य परे सति न प्रकृतद्वानादिदो
ष इत्यर्थः त्रसणाः प्रधानत्वं पुच्छप्रतिविरुद्धमिति शकते नन्विति अत्र त्रस्य शब्दात् प्रकृतस्वप्रधानत्वं त्रस्य परे सति न
सति पुच्छशब्दविरोधप्रामावेकस्मिन्वाको प्रथमचरमप्रकृतशब्दयोराद्यस्यावयवसंज्ञातविरोधिनो वलीयस्वात् पुच्छत्वेन त्र
मगणत्वस्य बाध इति मत्वाद् प्रकृतत्वादिति " "

सत्यमण्यंतरं भेदयैवैष्वतरः य एतद्य तदा तस्मिन् भयमिति
येनना

[illegible]

प्रा
भा
४२

अस्वकोशेषसत्राद नद्याचेति प्रक्रम्यथाभावेन्येदोषोनास्तिप्रचुरप्रकाशः सवितेत्यत्र तमसोत्पत्त्याप्यभावात्परंत्वा
नंदमयपदस्यप्रचुरानंदे लक्षणदोषः स्यादिति संतप्य किंच भिन्नत्वात्तदवतनवस्यतेत्याह प्रतिशरीरमिति नन्वप्य
समानानंदपदं लक्षणयानंदमयपरमिति स्यात्समिद्धिरित्यत्राह यदि चेति आनंदमयस्य ब्रह्मत्वे निमित्तसमानंदय
दस्य तत्परत्वं नानादभ्याससिद्धिरिति चेत् तत्रिण्यशतिपरस्य राश्रयशतिभावः अथ मभ्यासः पुन्यब्रह्मण इत्याह तस्या

तथावसति यत्र नामात्परमिति नान्यच्छाणेति नान्यदि जानाति स भूमेति भूमिब्रह्मणि तद्यतिरिक्ताभाव इति रूप
रूपे तत्प्रतिशरीरचक्षियादिभेदात् नंदमयस्यापि भिन्नत्वं ब्रह्म तन्न प्रतिशरीरे भिद्यते सत्यतानमनंत ब्रह्म तानेन
अतरेको देवः सर्वभूतेषु गतः सर्व व्यापी सर्वभूतान्तरात्मा इति श्रुत्यंत्यात्र चानंदमया भ्यासः श्रुतेः प्रतिपदि
कार्यमात्रमेव हि सर्वत्राभ्यस्यते यदेव आकाश आनंदो न स्यात्तेषां नंदस्य मोक्षाभावत्वा नंदं ब्रह्मणो विहात्र वि
भेति कृतश्च नानंदो ब्रह्मेति याज्ञानादिति च यद्विज्ञाने दमयशब्दस्य ब्रह्मविषयत्वं निश्चितं भवेत्तत्तत्तरेषां नंद
मात्रप्रयोगो घणानंदमया भ्यासः कल्पेन नत्वा नंदमयस्य ब्रह्मत्वमस्ति प्रियशिरस्तदिभिरैतं भिदित्यवोचाम
तस्या चक्षुःसतरे वितानमानंदं ब्रह्मेत्या नंदप्रतिपदिकस्य ब्रह्मप्रयोगादृशाना यदेव आकाश आनंदो न स्यादित्य
दिवस्य विषयः प्रयोगो नत्वा नंदमया भ्यास इत्यवगतव्ययस्य मय इत्येव नंदशब्दस्याभ्यास एतमानंदमयमा
त्मानमुपसंक्रामतीति न तस्य ब्रह्मविषयत्वं मल्लिविकारात्मना मेवात्र मया दीनो मनात्मना मुपसंक्रमितव्या
नां प्रवाहपठितत्वात् नन्वा नंदमयस्यापक्रमयितव्यस्यात्र मया दिवदवस्यत्वं सति नैव विदुषो ब्रह्मप्राप्तिः फलं
निर्दिष्टं भवेत् नैष दोषः आनंदमयोपसंक्रमणानिर्देशे नैव पुन्यप्रतिष्ठाभूतवस्यप्राप्तेर्निर्दिष्टत्वात् तदप्य
ना २ षः श्लाको भवतियतो वाचो निवर्तते तस्यादिप्रयच्छमानत्वाद्या त्वा नंदमयस्य निधाने सो कामयत बहस्यो प्रज्ञाये
येतीये अतिरुदाहता सा ब्रह्मपुन्यं प्रतिष्ठेत्यनेन संनिहिततरेण ब्रह्मण संवद्यमानाननंदमयस्य ब्रह्मत्वप्र

मि ७

40

दिति उपसंक्रमणो वाधः नन्वस्य एवं विदिति ब्रह्मविदं प्रक्रम्योपसंक्रमणवाक्येन फले निर्दिश्यते तत्तस्या ब्रह्मत्वेन सिध्य
तीति शंकते नन्विति उपसंक्रमणप्राप्तिरित्येगीकृत्य विशिष्टप्राप्त्या विप्रवृत्त्या प्राप्तिफलमुक्तमित्याह नैष इति ज्ञाने
नकोशानां वाधस्तदिति सिद्धेते वाधवधिप्रत्यगानंदलाभायां दुक्तउत्तरश्लाकेन सूटीकृतश्लायाह तदपीति ॥

४२

प्रकरणस्यान्यथासिद्धिमाह नन्निति एकस्यैवमणत्वं प्रधानत्वं च विरुद्धमित्याह अत्रोच्यतेति तत्र विरोधनिरासधान्यतरस्मिन्नात्र
 सस्वीकारे पुच्छवाक्ये असस्वीकार्यमित्याह अत्रनरेति वाक्येषां चैवमित्याह अत्रिचेति तत्र अस्मिन्नेकोपीत्यर्थः पुच्छवाक्य
 र्नातिपुच्छति कथं पुनरिति त्वयापि पुच्छवाक्यस्य भाषार्थोक्तमशक्यः अस्मिन्नेकमयत्नो गलत्वाभावात् पुच्छरहितत्वात्
 यथा रत्नत्वात्ताप्रतिष्ठापदयोगात् अस्मिन्नेकमयत्नो गलत्वाभावाच्च त्वत्वे अस्मिन्नेकमयत्नो गलत्वाभावाच्च त्वत्वे अस्मिन्नेकमयत्नो गलत्वाभावाच्च
 पुच्छमित्याधारत्वात्मात्रमुक्तं प्रतिष्ठेत्कनी इत्थं एकं मात्वं नीडं अतिष्ठानं सोपादानस्य जगतः इत्यर्थः ननु वृत्तिकारेरपि तैतिरी
 पुच्छमित्याधारत्वात्मात्रमुक्तं प्रतिष्ठेत्कनी इत्थं एकं मात्वं नीडं अतिष्ठानं सोपादानस्य जगतः इत्यर्थः ननु वृत्तिकारेरपि तैतिरी

नन्वानेदमपाचयवत्वेनापि ब्रह्मणि विज्ञातमात्रेण प्रकृतत्वं हीयते आनेदमयस्य ब्रह्मत्वादिति अत्रोच्यते तथा सति तदे
व ब्रह्मानेदमयस्यात्मा च वीतदेव च ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठापययव इत्यसामजसम्यात् अत्र तत्रपरिग्रहे न युक्तं ब्रह्म पुच्छं प्रति
हेत्यत्रैव ब्रह्म निर्देशात् अत्रापि ते ब्रह्म शब्दसंयोगात् ब्रह्मानेदमयवाक्ये ब्रह्म शब्दसंयोगाभावादि च ब्रह्म पुच्छं प्रतिहेत्युक्तेदम
चातेतदपोषः शोके भवति असन्नैव समवति असन्न इत्येति वेदचेत अस्ति ब्रह्म इति चेदेदमन्तमेनेततो विडरिति अस्मिन्
शोके ननु कृष्णानेदमयं ब्रह्म एव भावाभावयेदनयोग्यं दोषाभिधानादप्यने ब्रह्म पुच्छं प्रतिहेत्यत्र ब्रह्म एव स्वप्र
धानत्वमिति न चानेदमयस्यात्मनो भावाभावयोका युक्तपि यथादादिविषयस्य सर्वलोकप्रसिद्धत्वात्कथं पुनः स्वप्र
धानं सद्ब्रह्मानेदमयस्य पुच्छत्वेन निर्दिष्टत्वे ब्रह्म पुच्छं प्रतिहेतिनेष दोषः पुच्छवत्पुच्छं प्रतिष्ठापयययामेकं नीडं लौकि
कृष्णानेदमयस्य ब्रह्मानेदमयस्य तदनेन विवक्ष्यते नावयवत्वमेतस्यैवानेदस्यान्यानि भूतानि प्राजा मप जीवन्तीति श्रुत्यंत
यादपि चानेदमयस्य ब्रह्मत्वप्रिया एव यवत्वेन सत्त्वियं ब्रह्म श्रुत्यंतं निविशेत्तत्र ब्रह्म वाक्योपेयते वा ब्रह्म न स
योरगोचरत्वाभिधानाद्यतो वाचो निवर्तते श्रुत्या मजसासद्ब्रह्मानेदं ब्रह्म एव विदुः न विभेति कुतश्चेति तत्रापि चानेदमय
दशसुक्तेः इत्यात्पत्वमपि याम्येत शत्रु र्यस्य लोके प्रतियोग्यत्वात्पत्वात्

यकवाक्यं ब्रह्मणि समन्वितमिष्टं तत्र किमुदाहरणभेदेनेत्याशङ्क्यद अपि चेति यत्र सविशेषत्वे तत्र वा अनेने चरत्त्वमिति वा
 ७३ प्रेरकवाक्यभावात्प्रातिविशेषो मुच्यते इत्याह निविशेषमिति निवर्तते अत्राकारत्वं यः सविशेषस्य स्यात्तदभयं चायुक्तं अतो
 निविशेषस्य नार्थं युक्तवाक्यमेवादाहरणमिति भावः प्राचुर्यार्थकस्य दासविशेषप्रतिवाध उक्तः दोषांतरमाह अपि चेति
 प्रत्ययार्थत्वेन प्रधानस्य प्राचुर्यस्य प्राकृत्यर्थविशेषणस्य यः प्रतियोगी विरोधी तस्यात्पत्तमेवाप्यदन्ते यथाविप्रमयोयामर्थतम
 इत्यन्त ॥

भा
भा
४३

तदेतद्यप्येवमपि तस्य त्रस्यः सर्वकार्येदेतत्त्वयपदेशात्प्रियादिविशिष्टत्वाकारेण नंदमयस्य कार्यत्वात्प्रतिषेधत्वे त्रस्येन
युक्तमित्यर्थः सात्रवर्तिकमेवचर्मायते अस्यविद्योतिपरमिति यस्यात्तान्त्रिकिरुक्तयत्नान्तरानामिति मंत्रोक्ते त्रस्यतदेव
पुत्रवाकोगीयते त्रस्यपदसंयोगात्तानंदमयवाकोरस्यर्थः नैतरोनप्यनेः इतरत्रानंदमयोजीवोत्रप्रतिपाद्यः सर्वसृष्ट्या
यन्पपनेरित्यर्थः भेदव्यपदेशाच्च अयमानंदमयोत्रसरसंलब्धानंदोभवतीति भेदोक्ते अतस्मात्प्रतिपाद्यनेत्यर्थः आ
नंदमयोत्रस्यैतिरीयकपंचमस्यानस्यत्वादानंदवदित्याशङ्काद् कामाचनानुमानापेक्षानकार्याविकाराद्येक मयपुरोधादित्यर्थः भे
स्यभगवत्कथंचमस्यत्रस्यत्वे हेतुनंदमयस्यापि त्रस्यत्वात्तानुमानापेक्षानकार्याविकाराद्येक मयपुरोधादित्यर्थः भे
दव्यपदेशाच्च त्रस्यत्वात्तानुमानापेक्षानकार्याविकाराद्येक मयपुरोधादित्यर्थः भे
तदेतद्यप्येवमपि तस्य त्रस्यः सर्वकार्येदेतत्त्वयपदेशात्प्रियादिविशिष्टत्वाकारेण नंदमयस्य कार्यत्वात्प्रतिषेधत्वे त्रस्येन
तिनचकाराणामनुस्यत्वात्तानंदमयस्यकार्यात्तत्रस्यव्यपदिशत इदं सर्वमस्तत्तत्परिदेके च
व्यवाकानिर्दिष्टमेव त्रस्यत्वात्तानुमानापेक्षानकार्याविकाराद्येक मयपुरोधादित्यर्थः भे
दिरणमयः पुरुषादृश्यते दिरणमयश्चादिरणमयकेशाद्याणां त्वत्त्वं वसवोऽपि तस्य यथा कथा सुपुत्रीकमेव
मत्तिणीति तेषां दितिनामस्य पदसर्वभ्यः पाशमभ्युदित उदेति इव सर्वभ्यः पाशमभ्योपपद्ये वेदेत्यपि देवतमपि यत्न
यत्न मयपद्योतरसि लि पुरुषादृश्यते रत्यर्धित त्रस्यशयः किंविद्याकर्मातिशयवशात्प्राक्त्वः कश्चित्संसारि
यमेव ते च त्वयि चोपास्यत्वेन श्रूयते किंवा नित्यसिद्धः परमेश्वर इति किंवा वत्साम् ॥
एते पुत्रवाको त्रस्यपदमेव परं त्रस्येति प्रबोधवत्तानंदमयस्य यदादीति शास्त्रं त्रस्यभावं शास्त्रिभ्यो निर्गमात् त्रस्यैक्य
नार्थो जीवभेदान्वादस्यभिप्रेत्याह अपराण्यपीति अंतस्तदमीपदेशात् त्रस्योपावाक्यमुदाहरति अथपरेति अथेत्य
पातिप्रारंभार्थः दिरणमयो जीति विकारः पुरुषः शरीरमिति मत्तिमात्रं यथासकौ दृश्यते मत्तिमाह दिरणोपति प्र णावान
त्वात्तत्रेन सह तस्य विधावाः नेत्रयोर्विशेषमाह तस्याति केषमर्कटस्यासः पुत्रभागात् तत्रेन स्वीत त्वत्त्वं सुपुत्री
कयथादीमिमदेवं तस्य पुरुषस्यातिगोमृद्यो विकसितरक्तभोजनयन इत्यर्थः उपासनायमादित्यम इत्युक्त्या नरु
पेचोक्तानामकाराति तस्यादिति उत्रामनिर्विकि स इति उदित उद्भूतः सर्वपापासृष्ट इत्यर्थः उपासनाय नार्थनामजा
नफलमाह उदेति देवतास्यानमादित्यमधिकृत्या स्य तत्तत्तरेमात्मानंदमयि कृत्यापित उक्तिरित्याह अथ

41

४३

४३

तदपेक्षयादिनि काप्रतिपक्षप्रत्ययव्यतिरिक्तः यदन्तेष्वस्य तान्दमेवस्य वहीसमासादयत्तुवदितितत्राह
यत्तिनि यात्तिर्यथः मयदृष्टत्वासावयवत्वादितिगेनचस्थानेचाप्रमितिभावः सोचरातिप्रमोमेचरत्वाभावः सर्वमीक्षतः
संशयाभावादितिपुत्ता प्रायणादेननिश्चायकरितं तद्यत्रपुस्तपदस्याधारवयवयोर्लक्षणसाध्यान्तशयोक्तोत्पद्यव
प्रायणादेनिश्चायकरति सर्वाधिकारणसिद्धांतपुत्ताभावेनश्वेयदयति पुस्तपददिति तथाचप्रत्युदाहरणसंगतिः सर्व

तदपेक्षया चोत्तरस्य ग्रंथस्य रसो वै सरस्वत्यादेर्नानंदमयविषयता ननु सोक्तं मयनेति वक्ष्यमाणं पुनरिति नानंदस्योपपद्य
तेनापेक्षया स्तस्यादापेक्षया तस्मिन्नाकांक्षः संभूत इत्यत्र पुल्लिङ्गो नाप्यात्मशब्देन वक्ष्यमाणः प्रकृतत्वात् अर्थात् वीवारु
एविविद्यानंदो वक्ष्येति विज्ञानादिति तस्मात्तत्र मय उच्यते अत्रापि च विषयि शिरस्ताद्यप्रवणत्वेन पुनरिति नानंदस्य तत्त्वतः स्मदापमात्र
मयि विशेषमनाश्रित्य न स्वतन्त्रविषयि शिरस्तादि वक्ष्यमाणत्वेन न चेदस्य विशेषः तस्य विशेषादिति चिन्तित्वात् तस्मात्
नोच्यते इति क्रमश्चेत्तः तस्मादत्र मयादि विज्ञानेन नानंदमयविकाराद्येव मय इति ज्ञेयं न प्राचुर्यार्थः सूत्राणि त्वेव व्याख्ये
यानि वक्ष्यं प्रकृतं प्रतिष्ठेत् अकिमानंदमयस्यावयवत्वेन वक्ष्यं विवक्ष्यत इत्यत्र प्रधानत्वेनेति पुनरुच्यते इति वक्ष्यं त्वेनेति
प्राप्त उच्यते आनंदमयाभावात् आनंदमयस्यान्त्यत्र वक्ष्यं प्रकृतं प्रतिष्ठेति त्वप्रधानमेव वक्ष्यं परिश्रुते अथासात व
सत्वेव संभवतीत्यस्मिन्निगमश्लोके वक्ष्यं एव केवलस्याभ्युपगमनात् विकारश्चात्रात्रेति च प्राचुर्यार्थः विकार
शब्देन वक्ष्यं शब्दोभिप्रेतः प्रकृतमित्यवयवशब्दात् त्वप्रधानत्वे वक्ष्यं इति वक्ष्यं त्वप्रधानमेव वक्ष्यं परिश्रुते अथासात व
क्ष्यं प्राचुर्यदवयववक्ष्यं यत्तः प्राचुर्यं प्राचुर्यं त्वप्रधानमेव वक्ष्यं प्राचुर्यं च नमित्यर्थः तस्मादोनादि शिरस्तादिषु प्र
धाने वक्ष्यं वक्ष्यं त्वप्रधानमेव वक्ष्यं प्राचुर्यं प्राचुर्यं त्वप्रधानमेव वक्ष्यं प्राचुर्यं च नमित्यर्थः तस्मादोनादि शिरस्तादिषु प्र
धाने वक्ष्यं वक्ष्यं त्वप्रधानमेव वक्ष्यं प्राचुर्यं प्राचुर्यं त्वप्रधानमेव वक्ष्यं प्राचुर्यं च नमित्यर्थः तस्मादोनादि शिरस्तादिषु प्र

यवत्तविवक्षया यत्कथं यथासंभवं स्यादिति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न
यत्तदसंगतं स्यात्तदिति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न
देन तद्वत्तदसंगतं स्यात्तदिति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न
प्रकृतस्य प्रमाणमस्ति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न
त्यज्येव तद्वत्तदसंगतं स्यात्तदिति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न प्रमाणमस्ति चेन्न

शा.
भा.
४४

अनेरधुनाकर्मानशिकादिनां देवानां क्रियमाणपापासंशये तत्कलास्यार्थे वा तात्पर्यातेषां संचितपापाभावे दीतोपप्रेम
मिलोके चिंशतीत्ययोगादित्यभिप्रेत्याह सर्वपापायगमश्च परमात्मन एवेति सर्वोत्पत्त्याह तथेति अत्र तत्र हेतुत्वात्
पुरुष उच्यते अग्राद्यपेक्षया लिङ्गव्याप्यः उच्यते अस्तीति विशेषः तस्मादचर्यात्मा मत्तोऽत्र उच्यते अत्र च तत्त्वमस्य च ते पञ्च
देवतः अस्मत्तयो वेदा इत्यर्थः पृथिव्या आत्मा केरति अग्निदेवतस्य कथि च तद्विद्युत्तत्त्वमस्य च तत्त्वमस्य च ते पञ्च
च विधा अस्तु ता साम च अग्निवाद्यादित्य च इदित्यगताति कुरुषु मत्तं पंचविधं अथात्मत्वात् अकृतः आजातिः

सर्वपापायगमश्च परमात्मन एव अयतेय आत्मा यदतपापोत्यादौ तथाचाक्षेपे पुरुषे सेवके त्वा म त इत्यतः
ननु तदुक्तं तत्त्वमाया त्वा त्वा निरुभयति सा च परमेश्वरस्याप्ययते सर्वकारणात्वात् सर्वोत्पत्त्या पपत्तेः पृथि
व्या आत्मा के चाग्निदेवतस्य कथि च तद्विद्युत्तत्त्वमस्य च तत्त्वमस्य च ते पञ्च
तथा आत्मा मपि पावमुष्मा गे सौ तो गे स्वाविति तच्च सर्वोत्पत्त्या मत्ते वा पपद्यते ननु इमे वीणा वा गायते ते व
ते गायंति तस्मात्ते धनमनय इति च त्वा किं केष्वापि गतेषु स्पेव गीयमानत्वं दर्शयति तच्च परमेश्वरपदियद्देवतत्वे
यद्यदि भूतिमत्त्वं श्रीमद्भूतिमेव वा तत्तदेवावगच्छत्वं मत्ते नो शासं भवमिति भगवत्प्राज्ञा दर्शनात् लोक
कामे शित्तममपि निरंकुशं अयमाणा परमेश्वरं गमयति यत्तत्तद्विराट्पञ्चमश्रुत्वादि रूपं अवां परमेश्वरे नो
पपद्यते तत्त्वमस्य स्यात्परमेश्वरस्यापीत्यावशमाया मयं रूपं माधका नुग्रहार्थं माया द्रोषा मया स्थापयन्ता
यशसि नारदसंभतगणैर्युक्तं नैवेत्तुं इष्टमर्हसीति स्मरणं दधि च यत्र निरस्तं सर्वविशेषं पारमेश्वररूपमुप
दिश्यते भवति तत्र शास्त्रमश्वमस्पर्शं न रूपमवयमित्यादि ॥

42

स्य शुक्लभारुपा च त्रिविधा साम च प्राणा ज्ञाया त्वा प्रनोति गताति नीलरूपं च त्रिविधमुक्ते एवं क्रमेण अकृतमेव नुक्रमा
ह अतिस्त्येति यो सर्वोत्पत्तिकरः स्यात्मा त्वा को गेष्वावमुष्मादित्यस्य तावेवाति स्य स्यो गेष्वावमुष्मादित्यस्य तावेवाति स्य
ति अकृतमग्रे सत्यमित्यर्थः सर्वगन्तयेत्यन्ते लिङ्गतरमाह तथेति तत्तत्रोक्तं यनस्य सनिर्लोभो येषां ते धनस
नयो विभूतिमेत इत्यर्थः ननु लोके राजानो गीयते ते सुरा इत्यत आह यद्यदिति पशुविनादि विभूतिः अस्ति ततिः
उन्नितत्वे वले तद्युक्तं मत्ते राजादिकं मदशपवेति तद्गानमीश्वरस्यैवेत्यर्थः निरंकुशमननायी न एषा विचित्ररूपा

सर्वपापायगमश्च परमात्मन एव अयतेय आत्मा यदतपापोत्यादौ तथाचाक्षेपे पुरुषे सेवके त्वा म त इत्यतः
ननु तदुक्तं तत्त्वमाया त्वा त्वा निरुभयति सा च परमेश्वरस्याप्ययते सर्वकारणात्वात् सर्वोत्पत्त्या पपत्तेः पृथि
व्या आत्मा के चाग्निदेवतस्य कथि च तद्विद्युत्तत्त्वमस्य च तत्त्वमस्य च ते पञ्च
तथा आत्मा मपि पावमुष्मा गे सौ तो गे स्वाविति तच्च सर्वोत्पत्त्या मत्ते वा पपद्यते ननु इमे वीणा वा गायते ते व
ते गायंति तस्मात्ते धनमनय इति च त्वा किं केष्वापि गतेषु स्पेव गीयमानत्वं दर्शयति तच्च परमेश्वरपदियद्देवतत्वे
यद्यदि भूतिमत्त्वं श्रीमद्भूतिमेव वा तत्तदेवावगच्छत्वं मत्ते नो शासं भवमिति भगवत्प्राज्ञा दर्शनात् लोक
कामे शित्तममपि निरंकुशं अयमाणा परमेश्वरं गमयति यत्तत्तद्विराट्पञ्चमश्रुत्वादि रूपं अवां परमेश्वरे नो
पपद्यते तत्त्वमस्य स्यात्परमेश्वरस्यापीत्यावशमाया मयं रूपं माधका नुग्रहार्थं माया द्रोषा मया स्थापयन्ता
यशसि नारदसंभतगणैर्युक्तं नैवेत्तुं इष्टमर्हसीति स्मरणं दधि च यत्र निरस्तं सर्वविशेषं पारमेश्वररूपमुप
दिश्यते भवति तत्र शास्त्रमश्वमस्पर्शं न रूपमवयमित्यादि ॥

४४

स्तत्र सपदमानेदमपदमानेदपदाभासयेति मुत्वात्रितयादिबहुप्रमाणवशमिति गणितं यवद्वयत्वादिवहुप्रमाणव
 याजीवोदिरणमय इति पूर्वसिद्धेन तद्वत्तत्संगत्या पूर्वमुत्तरांतः सिद्धिर्निर्गता समन्वयस्यावधारणं पूर्ववत्तयति संसारीति
 अत्र सर्वान्तरपक्षयोर्जीवस्य लोकास्तिः एतन्मूलिणित्याधारव्याख्यानं संसारीति संबन्धः अस्मिन् स एव इति आदित्यस्यः पु
 रुषः अमुष्मादादित्यादर्थगायके च न लोकास्तेषां मीश्वरो देवभोगान्तेत्यर्थः स एव इति पु रुषः एतस्मादलोकां यस्त
 नाये लोकाः ये च मन्यन्ते कामाभोगास्तेषां मीश्वर इति मर्यादा अयं अतः अतश्च संसारीत्यर्थः एव सर्वे चुरश्च विशेष अतः

संसारीति कुतः रूपवत्प्रवणदादित्यपुरुषेतावद्विरणयम अन्त्यादिरूपमदाहृतमस्ति पुरुषे पितदेवतिदेशेन
 प्राप्यते तस्यैतत्पतदेव रूपेण दमुष्मरूपमिति न च परमेश्वरस्य रूपवत्त्वं युक्तमप्यत्र मस्य मीश्वरस्य मय्यमिति
 अतः आधारव्याख्यानं यवद्वयौ तरादित्येव यवद्वयौ तरादित्येव त्रिणीतिन घनाधारस्य समद्विंशति घना सर्वव्यापिनः पर
 मेश्वरस्याधार उपदिष्टे स भगवः कस्मिन्मिति श्रुतिरिति स्मृतिरिति यावत्तत्संबन्धेन श्रुतिरिति च अतीभ
 वतः ऐश्वर्यमर्यादा अतश्च मय्येव चामुष्मात्तराचो लोकास्तेषां च देवकामान्तेत्यदित्यपुरुषस्यैश्वर्यं म
 र्यादा मय्येव चैतस्माद्वीचो लोकास्तेषां च मनुष्याकामान्तेत्यदित्यपुरुषस्यैश्वर्यं मय्येव चैतस्माद्वीचो लोकास्तेषां च
 युक्तमेव सर्वेश्वरपक्षभूता धियन्तिरेष भूतपाल एष सर्वविधा रण यवद्वयौ लोका नाम संभेदायेत्यविशेष अतः तस्मा
 त्राद्यादित्येव तः परमेश्वर इत्येव प्रामाण्यः अतस्तस्मादप्येव इति यवद्वयौ तरादित्येव यवद्वयौ तरादित्येव त्रिणीति च अयमा
 राः पुरुषः परमेश्वर एव संसारी कुतस्तद्वीचो देवतस्यैव परमेश्वरस्य मीश्वरोपदिष्टत्वात् तस्मादित्येव
 मिति आद्यित्यादित्यपुरुषस्य नाम स एव सर्वभूतः पाप्मण्युदित इति सर्वेषां प्राप्यमेव तित्वेति तदेव च क
 तनिर्वचनं नामादि पुरुषस्याप्यतिदिशति यत्रा म तत्रा मिति ॥

रितिसंबन्धः भूता धियतिः यमः भूतपाल इति येषां किंचित्तत्त्वानां मसं कदायलोके विधावको यथा सत्तरेव भेषा
 लोकानां वर्णमादीनां मर्यादा देवतास्ते तरेषां एव तत्त्वैव चुरश्च तर्हः सृज्य चैव चुरश्च इति यद्यप्येकस्मिन्नात्त
 प्रथमकृतानुसारेण चरमेने यतयाप्य प्रथमकृतं रूपवत्त्वं निष्कलं यान्ता मीश्वरेने तं शक्तं च सर्वेषां प्राप्यमेव तित्वेति
 तेषां तत्त्वैव जीवैनेतु मशक्तं चेति प्रवृत्तं च न देवदेवता पंगुत्वात्तीति अतरेदि सतीव साधिषा मास्य शित्व मिति वाच्यं

तद्विरूपं कृतं तत्राह सर्वेति यत्र तत्प्राप्तेनोच्यते तत्रैव व्याहृत्य सर्वकारणत्वात् तन्मूलं पवत् सर्वकर्मसिद्धिस्तानि दिशत इति यो
 जना मर्षादावदेव प्रथमी सुरस्य नेतृत्वं शक्येति यच्चैति अध्यात्मो देवतत्वात् तत्रैव विभागः पृथक् पृथक् तदप्येवमेव न त्वेव
 स्पष्टमित्येदं दार्ष्टन्यः ननु प्राप्तेन उपपत्तिरित्येव क्रियाकर्मणो जीवादिबुद्धयः सिद्धिर्वाच्येत्याशङ्क्य भेदेति आदिस
 जीवादी सुरस्य भेदात्तः प्राप्तेन तदेवोदन्त्येव सुरः सिद्धिरिति सूत्रार्थमाह अस्तीति आदिश्यात्तरस्मिन् निरासार्थमादित्वा देव
 रश्मिजीवो निरस्पतिरिति यस्मिन् अश्वार्थक्यनियतत्वे तत्राह एवेति अतर्कमिषदार्ष्टमाह वरति तस्यात्मात्मत्वं निरासार्थ
 द्वाविति तेन तत्स्वरूपमित्यर्थः । दिश्यात्तरं प्रकृतैः समानत्वादित्यर्थः तस्यात्मात्मादित्वात्कड्डीये उपास्य इति
 सर्वकारणत्वात् विचारार्थमेषां सिद्धिर्दिष्टाः परमेश्वर उपास्यत्वेन निर्दिश्यात्ते सर्वकर्मसर्वकृष्णः सर्वगंधः सर्वरसः स
 रित्ना नद्यादि रत्नप्रमत्तादि दिशोऽपि भविष्यति यदप्यापारप्रवणं त्रयमेव रश्मिजीवो चानेव स भदिमपि तिष्ठत्यापा
 रविषयो यदेव उपासनाधी भविषति सर्वगतत्वाद्भूतलोकैः समवत्त्वं वा न रत्नोपपत्तेः
 पृथक् पृथक् तत्रैव विभागः पृथक् पृथक् तदप्येवमेव न त्वेव स्पष्टमित्येदं दार्ष्टन्यः ननु प्राप्तेन उपपत्तिरित्येव क्रियाकर्मणो जीवादिबुद्धयः सिद्धिर्वाच्येत्याशङ्क्य भेदेति आदिस
 जीवादी सुरस्य भेदात्तः प्राप्तेन तदेवोदन्त्येव सुरः सिद्धिरिति सूत्रार्थमाह अस्तीति आदिश्यात्तरस्मिन् निरासार्थमादित्वा देव
 रश्मिजीवो निरस्पतिरिति यस्मिन् अश्वार्थक्यनियतत्वे तत्राह एवेति अतर्कमिषदार्ष्टमाह वरति तस्यात्मात्मत्वं निरासार्थ
 द्वाविति तेन तत्स्वरूपमित्यर्थः । दिश्यात्तरं प्रकृतैः समानत्वादित्यर्थः तस्यात्मात्मादित्वात्कड्डीये उपास्य इति
 सर्वकारणत्वात् विचारार्थमेषां सिद्धिर्दिष्टाः परमेश्वर उपास्यत्वेन निर्दिश्यात्ते सर्वकर्मसर्वकृष्णः सर्वगंधः सर्वरसः स
 रित्ना नद्यादि रत्नप्रमत्तादि दिशोऽपि भविष्यति यदप्यापारप्रवणं त्रयमेव रश्मिजीवो चानेव स भदिमपि तिष्ठत्यापा
 रविषयो यदेव उपासनाधी भविषति सर्वगतत्वाद्भूतलोकैः समवत्त्वं वा न रत्नोपपत्तेः
 पृथक् पृथक् तत्रैव विभागः पृथक् पृथक् तदप्येवमेव न त्वेव स्पष्टमित्येदं दार्ष्टन्यः ननु प्राप्तेन उपपत्तिरित्येव क्रियाकर्मणो जीवादिबुद्धयः सिद्धिर्वाच्येत्याशङ्क्य भेदेति आदिस
 जीवादी सुरस्य भेदात्तः प्राप्तेन तदेवोदन्त्येव सुरः सिद्धिरिति सूत्रार्थमाह अस्तीति आदिश्यात्तरस्मिन् निरासार्थमादित्वा देव
 रश्मिजीवो निरस्पतिरिति यस्मिन् अश्वार्थक्यनियतत्वे तत्राह एवेति अतर्कमिषदार्ष्टमाह वरति तस्यात्मात्मत्वं निरासार्थ
 द्वाविति तेन तत्स्वरूपमित्यर्थः । दिश्यात्तरं प्रकृतैः समानत्वादित्यर्थः तस्यात्मात्मादित्वात्कड्डीये उपास्य इति

कश्चिद्विज्ञायाः प्रस्तावनादेवताप्रस्तावनाप्रसङ्गमभिसन्ध्यायाः प्रस्तावनाप्रसङ्गमभिसन्ध्यायाः प्रस्तावनाप्रसङ्गमभिसन्ध्यायाः
तीतिततोभीतः सन्प्रसङ्गतमासादेवतेत्युतै प्राणरति प्राणमभिलक्ष्यसम्पत्तिशोति लीयेतेतमभिलक्ष्यउत्तिहृतउत्पयेतइत्यर्थः
अतिदेशत्वात्पूर्ववत्संशयादिदृष्टव्यमित्युक्तविद्युत्तुणाति प्राणरति मनउपाधिकोजीवः प्राणान्नस्य प्राणवधनेसुषुमावेकोभवति
प्राणस्पवायोः प्राणप्रेरकं तस्य सतास्फूर्तिप्रदमात्मानं ये विदुस्तैश्च विदुस्तैश्च सर्वे प्राणान्नस्य प्राणवधनेसुषुमावेकोभवति
ननु पूर्ववदिति अधिकांशकानि रासाद्यमतिदेशसूत्रमिति मन्वाशं कामाह नमुत्प्रेषीति तदितदाचक्षुरप्यतीतिसंवत्सरेवैधः
नन्वेदियाणां प्राणोत्पत्त्यादयो श्रुयेतनावतामदाभूतत्वादिप्रतिपादकवाक्यशेषोपपत्तिः कथमित्यत आह इदियसारत्वादि

प्राणरतिदेवाचसकेणिवारमानिभूतानि प्राणमेवाधिसंविशति प्राणमभ्युत्तिहृतेसैवादेवताप्रस्तावमन्वायते तितत्र
संशयनिर्णयोपदेवदेवदृष्टव्योप्राणान्नस्य प्राणमभिलक्ष्यसम्पत्तिशोति लीयेतेतमभिलक्ष्यउत्तिहृतउत्पयेतइत्यर्थः
तेवाधुविकारेतु प्रसिद्धतरोलोकवेदयोरतरदृष्टव्योप्राणान्नस्य प्राणमभिलक्ष्यसम्पत्तिशोति लीयेतेतमभिलक्ष्यउत्तिहृतउत्पयेतइत्यर्थः
त्रयुक्तवाधुविकारस्य पंचवृत्तेः प्राणस्योपादानं युक्तं तत्रदिप्रसिद्धतरः प्राणान्नस्य प्राणमभिलक्ष्यसम्पत्तिशोति लीयेतेतमभिलक्ष्यउत्तिहृतउत्पयेतइत्यर्थः
तल्लिगाद्रस्त्राणवप्रदणं युक्तमिहापि वाक्यशेषेभूतानां संवेशनाहमन्वायतेतमभिलक्ष्यसम्पत्तिशोति लीयेतेतमभिलक्ष्यउत्तिहृतउत्पयेतइत्यर्थः
संवेशनोहमन्वायतेतमभिलक्ष्यसम्पत्तिशोति लीयेतेतमभिलक्ष्यउत्तिहृतउत्पयेतइत्यर्थः
सयदाप्रवृत्तते प्राणदेवाधिपुनर्जायेतइतिप्रत्यक्षं चैतत्त्विकाले प्राणान्नस्य प्राणमभिलक्ष्यसम्पत्तिशोति लीयेतेतमभिलक्ष्यउत्तिहृतउत्पयेतइत्यर्थः
यः परित्यज्यते प्रबोधकाले च प्राडुर्भवंतीति इदियसारत्वाच्च भूतानामविरुद्धा मुत्प्रेषि प्राणभूतसंवेशनोहमन्वायतेतमभिलक्ष्यसम्पत्तिशोति लीयेतेतमभिलक्ष्यउत्तिहृतउत्पयेतइत्यर्थः
नवादीवाक्यशेषः अपि चादितोत्रोच्चादीयप्रतिहारयोर्देवतेप्रस्तावदेवतायाः प्राणस्यानेतरेतिदिश्यतेनचत
योत्रस्मत्तमलितत्सामान्याच्च प्राणस्यापि न्नस्मत्त्वमित्येव प्राप्तेस्तत्रकारआह

ति इत्यस्योपरमइति श्रुतेः इदियागिलिगात्मरूपाणां पंचीकृतभूतानां सारणिते संलयाद्युक्ताभूतानामपि प्रा
णोत्पत्त्यासिद्धेः वाक्यशेषोपपत्तिरित्यर्थः अत्रस्यसहपादाद्यप्राणान्नस्य प्राणमभिलक्ष्यसम्पत्तिशोति लीयेतेतमभिलक्ष्यउत्तिहृतउत्पयेतइत्यर्थः
हारेचकादेवतेतिदृष्टेनचाक्रयणोनादित्योत्रंच निदिश्यते आदित्य इतिदेवाचात्रमितिदेवोचेतिअस्यावित्यर्थः सामान्यं
सत्रिधानेसत्रिधानुग्रहीतप्रथमश्च तप्राणाश्रया मुख्यप्राणानिर्णयेततदस्याप्रस्तावोपात्तिमिति पूर्वपक्षफलं सिद्धान्ते

प्रस्तावनाप्रसङ्गमभिसन्ध्यायाः प्रस्तावनाप्रसङ्गमभिसन्ध्यायाः प्रस्तावनाप्रसङ्गमभिसन्ध्यायाः

नन्वाकाशो नंतरतिनशुतमितायां काद तंचेति उहीय आकाशवेतिसंपादना उहीयस्यावेतत्वादिकं नस्ततरतिभावः स उहीया
वपवः आकाशेष आकाशात्मकः परः रसतमत्वादियोगोक्तः अतोत्तरांतरेषो वरीयाने अहं सत्यः पश्यति अवापसकारेते
चापरः कृष्णमिति प्रयोगात्परश्चासौ चरे भानि प्रायेन वरः परे वरीयानि सत्यः प्राथम्यं कुतित्वा आकाशशब्देन जीयानित्युक्तं स्या
रयति यत्नरिति एवकारसर्वशब्दानुगृहीतानंत्वादितु दूत्विगानामनुग्रहापत्यनेदेककुलस्यार्थं प्रतिन्यायेनैकस्याः अने वीथो
युक्तस्याह युज्यमरिति आकाशपदोक्तत्वे वषयमप्रतीतिनिधमो नास्तीत्यविशद्वेन धारिते तत्र युक्तिमाह दर्शितयेति
आकाशपदोक्तत्वे वषयमप्रतीतिनिधमो नास्तीत्यविशद्वेन धारिते तत्र युक्तिमाह दर्शितयेति

तन्वाकाशमुहीये संपाद्योपसंहरतिसपषण्णे वरीयानुहीयः सपषण्णे नंतरतिनशुतं संपादयितुं यत्नरुक्तं भूता का
शंप्रसिद्धत्वेन प्रथमतरे प्रतीयते इत्यवग्रहः प्रथमतरे प्रतीतमपि सदा कथं पुरातनं संपादयितुं यत्नरुक्तं भूता का
ते दर्शितयुज्यमरिति आकाशपदोक्तत्वे नामनामरूपेण निवेदितं स्यात्तथा काशपदोक्तत्वे वाचिनामपि
वस्तीति प्रयोगे दृश्यते अत्र चोत्तरपरमेवो मन्मसि नैवापि विद्येति उक्तं सैषा भार्गवी वारुणी विद्या परमेवो मन्मसि
ति धितोके वस्तीति वस्तीति पुराणमिति चैवमादौ काशोपक्रमेण वनेमान्माकाशशब्दस्य वाच्योपपत्त्या युक्त
अस्ति विषयत्वात्वायण आग्रिपीते च वाक्यमिति दिवा कोकमगतोऽपि शब्दो माणावके विषयो दृश्यते तस्मात्
काशशब्दो वस्तीति सिद्धं अतएव प्राणः २३ उहीय प्रस्तेतर्था देवता प्रस्तावमन्वायनेत्युपक्रमायते कतमासादे
वतेति॥

मित्रचो वेदाः संप्रति माणात्वे एस्मिन्नतरे विधेदेवा अविहितारस्यः आकाशः कंत्वा वस्तीति वस्तीति वस्तीति वस्तीति वस्तीति वस्तीति
तेतरप्रयोगमाह तं पुराणमिति व्याप्यनादिज्ञेयस्यः कंत्वा वस्तीति वस्तीति वस्तीति वस्तीति वस्तीति वस्तीति
रणकमिति भेदः किंच तत्रैव प्रथमानुसारेण प्रथमेनेयमित्यार वाकोति तस्मात्प्राप्य वस्तीति वाक्यमन्वितमित्युपमे
दरति तस्मादिति आकाशवाचोक्तन्यायेन इतरवाकोतिदिशति अतएव प्राणः उहीय प्रकरणादिभिन्नानां च स
हीयति भाष्यपदं उहीय प्रकरणं अतएव प्राणः २३

तरनेधं यत्र तनेतुं शक्यं पत्रत्वशक्यं तत्रो न शानुसारं ३

प्रा
भा
४

शब्दभेदमुक्ताप्रकरणाप्रयच्छति यस्य चेति ज्योतिरिति ज्ञादोषमेवोदाहरति इदमिति गणयुपाधिकज्ञेयोपास्यानेन
यार्थोयशब्दः अतोदिवोक्तोक्तत्वरः परस्ताद्यजोतिर्दीप्यतेतद्यदिदमिति ज्ञादोषमेवोदाहरति इदमिति गणयुपाधिकज्ञेयोपास्यानेन
तर्हि विषयस्यात्याल्लिख्यगुणरिसर्वस्याद्रादिलोकादुपरियेत्लोकास्तेष्वनविद्यतेउत्तमाः येभ्यश्मनुजमेधुमव
संसारमंजलातीतेपरंज्योतिरिदमेवयदेदस्यमित्यर्थः अस्यापूर्ववर्णागतायत्वंवदन्त्यमुदाहरणसंगतिमार अर्थोत्तरति

यस्याचप्रकरणोपोनिर्दिश्यतेनामोत्तराण्यपि स एव तत्प्रकरणे निर्दिष्ट इति गम्यते यथा ज्योतिषो मभिव्यजरे वसे
ते वसन्ते ज्योतिषाय जने तस्य त्रयोतिः शब्दो ज्योतिषो मविषयो भवति तथाप्यस्य त्रयोतिः प्रकरणो प्राप्ताव
न हि सोम्यमन इति अतः प्राणशब्दो वा यु विकारमात्रं कथमवगमयेदतः संशयाविषयत्वात् तत्रोदाहरणोप
रूपेणावदेव तस्यातप्राणो संशयपूर्वपक्षनिर्णय इत्युपादिताः ज्योतिष्युराण्यभिधानात् ॥ इदमामनेत्य
द्युदतः परादिवो ज्योतिर्दीप्यते विद्यतः प्रष्टुमर्हतः प्रष्टुमर्हतमेधुममेधुलोकेष्विदं वावतद्यदिदम
स्मिन्नतः युक्त्ये ज्योतिर्मिति तत्र संशयः किमिदं ज्योतिः शब्देनादितादिज्योतिरभिधीयते किं वा परमात्मैति
अधीतरविषयस्यापिशब्दस्य तल्लिङ्गादस्य विषयत्वमुक्तमिदं तल्लिङ्गमेवास्ति वास्तीति विचार्यते किं तावत्प्राम
मादिसादिकमेव ज्योतिः शब्देन परिगृह्यत इति कुतः प्रोक्तं तस्माज्ज्योतिरिति दीप्तो ज्योतिरपरस्पर प्रतिद्वि विषयो
प्रसिद्धो च त्वृतेनैरोपकंशवरादिकं तमेव उच्यते तस्याप्युक्तान्शब्दकमादिसादिकं ज्योतिस्तथा दीप्यते तृतीयम
पि अतिमादिसादिविषयाप्रसिद्धानदिरूपादिदीनेत्रसदीप्यते इति मुखांश्रुतिमर्दतीति युमयादत्तत्वात् अत
दिवराचरवौ जस्य त्रयोतिः सर्वात्मकस्य धोमयादायुक्तकायस्य त्वज्योतिषः परस्मिन्नस्य धोमयादस्यात् ॥

45

अत्र तत्राके सप्तद्वयलिंगाभावेपि पादो ज्योतिर्पूर्ववाको भूतपादत्वं लिंगमस्तीति पादसंगतिः पूर्वोत्तरपक्षयोर्ज्ञेयत्वं त्रयो
तिषोरुपास्तिः फलमिति भेदः न च ज्ञानतमो विराधित्वा दुस्साधित्योतिपदशक्त्या प्रसिद्धमस्ति नेत्यद च त्वमिति शब्द
योरात्रोभवेणावरेनीलमिति पादत अनेनावरकलातरूपवत्त्वाच्च कुचवत्प्रावरूपं तमश्मयी इतमभवति ज्योतिः अत
रनुशास्त्रकलिंगान्याह तथेनादिना भास्वरूपात्मिकादीमिस्तेजस एव लिंगमित्याह नहीति ॥

४०

भवेत्तीति भूतान्तीति च मत्स्यायनिके चिद्वनपर्मकं कार्यमात्रं तस्यैकोदयौ वायुविकारे प्राणेन युक्तवित्तुक्ता भूतशब्दस्य कदाचिद्यदेति
लघोदेत्रस्य निर्णयकत्वमित्याह यदापीति भौतिकप्राणस्य भूतकान्तिनाप्राणद्वित्यर्थः तस्य तयोर्नित्यं प्राणाशक्ते नन्विति अ
थ तदास्य प्रमोक्तौवः प्राणो ज्ञेयः एकी भवति तदा एव प्राणस्य विषयात् प्राणद्वयं विद्येत्येतेषां अत्र जीवाभिन्नत्वसर्वत्रयाधारत्वं लि
गात्तमत्वं प्राणस्याह तदापीति वाचांतरसन्निधये दोषात्तवाकागनेति गोचरीयत्वाद् तदयुक्तमिति एकवाक्यत्वे वाक्य

प्रत्यक्षप्राणानि तल्लिङ्गादिति पूर्वसूत्रे निर्दिष्टं सतत्त्वतल्लिङ्गात्प्राणशब्दमपि परं च स्वभूतमदं त्रिप्राणस्यापि द्वित्रय
 लिङ्गसंबन्धः अयमेव सर्वपि देवास्मानिभूतानि प्राणमेवाभिसेविशन्ति प्राणमभ्युज्जिह्वत इति प्राणानिमित्तौ सर्वेषां भूता
 नामुत्पत्तिप्रत्ययावच्छिन्नानौ प्राणस्य च सत्तां गमयतः ननु केन प्राणप्राणपरिग्रहेण संबन्धेनोद्गमनदर्शनमविरुद्धं
 स्वापप्रबोधयोर्देशनादित्यत्रोच्यते स्वापप्रबोधयोर्निर्दिष्टप्राणमेव केवलानां प्राणस्य संबन्धेनोद्गमनदर्शनेन सर्व
 षां भूतानामिदं तस्यैव निर्दिष्टप्राणस्य शरीराणां च जीवाविद्यानां भूतानां सर्वाणि देवास्मानिभूतानि त्रिप्राणैः यदापि भू
 तस्य तिमिराभूतविषयापरिग्रहेण तदापि त्रयल्लिङ्गात् तन्मविरुद्धं ननु सदापि विषये निर्दिष्टप्राणस्वापप्रबोधयोः प्रा
 णोपपत्त्येव प्राणश्च प्रभवश्च एवमः यदा स्वप्नः स्वप्नेन किंचन पश्यत्यथास्मिन् प्राणस्यैवैकधा भवति तदेनेवाक्यत्वेना
 मभिः सदैव्येतीति तत्रापि तल्लिङ्गात्प्राणशब्दं त्रयसंबन्धेन यत्पुनरत्रादित्यसन्निधानात्प्राणस्यावस्थानमिति तदयुक्तं
 वाक्यशेषबलेन प्राणशब्दस्य त्रयविषयतायां प्रतीयमानायां संनिधानस्या किंचिन्करत्वात् पुनः प्राणशब्दस्य
 पंचवृत्तौ प्रसिद्धतरत्वेन तदाकाशशब्दस्यैव प्रतिविधेयत्वात् त्रिदेवप्रस्तावदेव तायाः प्राणस्य त्रयत्वं त्रयैकचिदुदा
 हरंति प्राणस्य प्राणप्राणसंबन्धेनैव त्रिसोम्यमन इति तदयुक्तं शब्दमेवात्यक्त्वा त्रयसंशयानुपपत्त्येव चापि त्रिप्राण
 मेव्यः पिता यद्येति निर्दिष्टं त्रयसंशयानि निर्दिष्टः पिता येति त्रिसोम्यतत्त्वत्वात् प्राणस्य प्राणमिति शब्दमे
 वात्यसिद्धत्वात् तदा त्रयः प्राणस्य प्राण इति त्रिप्राणैः तद्वत्तत्त्वेति भेदनिर्देशादौ भवति

शेषः तस्य बलं तद्गते लिङ्गं तेनेत्यर्थः प्राणमिवैव यथा रणेन सर्वभूतप्रकृतिवर्तिनो न च प्राणपदेन तत्कारणं तस्य तस्य
मित्यादौ तदाकाशश्चाहमेवेति च त्रिकृतोन्मुदाहरणं संशयाभावेनापुक्तमित्यादौ च प्रत्यादिना ॥

प्रा
भा
४८

46

तिभावः ततः किं तत्राह साहचर्येति यथा एकत्वमाप्तादूरिति यादौ प्रजापतेः शिरो दुष्टिः प्रजातया ज्ञादरा प्रावचस्य
 त्वं होषादिश्रुत्या प्रसिद्धमिति तत्र ज्योतिषं मासं वा चापि मित्यर्थः यदेदं दर्शयति ने नो स तान प्रसिद्धं सैषा तस्या त्वरा ग्रेहं हिः
 यत्कर्णपिधानेन होषप्रवणं सैषा तस्या प्रसिद्धमिति मित्यर्थः ज्योतिषो ज्ञाद्वेत्ति गतं तस्माद् तदेतदिति ज्योतिरित्यर्थः चतुष्य
 शुद्धिर्हितः सुन्दरः प्रतो विद्यातः न चान्यदपीति अस्य लिंगमपि किंचिद्व्यञ्ज्यास्तीत्यर्थः ननु त्रिपादस्यास्ते दिव्योति
 सर्ववाक्योक्तं त्रयात्र ज्योतिः पदेन गद्यातामित्याशङ्काह न चेति ननु मवीत्यक्तत्वात् तत्वाभ्यां त्रयोक्तमित्यत आह अ
 तस्तद्देवचक्रं त्वं चतुष्यसीतेति चक्रं त्वं चतुष्यः प्रतो भवतीति एवं वेदेति चाल्पकलप्रवणद्वयसत्त्वं महते दिव्यत्वा
 यत्र सोपासनमिष्यते न चान्यदपि किंचित्स्ववाक्ये प्राणकाशवज्ज्योतिषोक्तिरस्य लिंगं न च पूर्वस्मिन् त्रिवाक्ये च
 सनिर्दिष्टमस्ति गायत्रीवाक्ये सर्वभूतमिति छन्दो निर्देशात् अथान्ये च चित्तसर्वस्मिन् वाक्ये त्रयनिर्दिष्टं स्यादेवमपि
 न तस्यैव प्रत्यभिज्ञानमस्ति तत्र हि त्रिपादस्यास्ते दिव्योति योरधिकरणत्वेन अयत्ने त्रयपुनः पुरो दिव्यो ज्योतिरिति यो
 मीर्यादात्वेन तस्या साहचर्यं ज्योतिरिह शास्त्रमित्येव शास्त्रे वृत्तः ज्योतिरिह त्रयशब्दोक्तश्चरणभिधानायादाभि
 धानादित्यर्थः पूर्वस्मिन् दिवाक्ये चतुष्यस्य निर्दिष्टं तावानस्य मदिमानो ज्ञायां च पुरुषः पादोऽस्य सर्वाभूता
 त्रिर्निर्दिष्टं त्रिपादस्यास्ते दिव्योत्पत्ते नमो जगत्त्रयचतुष्यदो व्रज्याः त्रिपादस्य तेषु संवेधिरूपं निर्दिष्टं तदेवेदं युसंवेधा
 त्रिर्निर्दिष्टमिति प्रत्यभिज्ञायते तत्परित्यक्त्य शास्त्रं ज्योतिः कल्पयतः प्रकृतं ह्यनाप्रकृतप्रक्रिये प्रसमेयातो

ज्योतिश्चरणाभि
धानात् ४

शायीति कथंचिद्ब्रह्मरूपार्थः दिवि दिव्यं त्विति विभक्तिभेदात् त्रयप्रत्यभिज्ञेत्यर्थः प्रकृतेर्ज्ञाते प्राकृतं कार्यमित्यर्थः आचारं निरस्य
 ति पादेति गायत्रीवाक्ये सर्वभूतं वा त्वेगा यत्रीयेयं श्रुतिवीथिदिदेशरीरेयदस्मिन् पुरुषे हृदयमिमे प्राणरतिभूतवाक् श्रु
 धिवीशरीरहृदयप्राणान्तिकुषरिधाषट्पि रक्षेत्तुष्यदागयत्रीति यदुक्तं तावान्न त्वरिमाणाः सर्वे प्रपंचोऽस्य गाय
 अनुगतस्य त्रयस्य मदिमाविभूतिः पुरुषस्तु प्राणवत्सूरूपोऽतः प्रपंचस्यापानधिकः प्राधिकमेवाद पादरति सर्वज
 गदेकः पादोऽशः विष्टभाहं मिदेकात्ममेकांशेन स्थितो जगदिति स्मरतेः अस्यापुरुषस्यादिविस्तृप्तकृत्स्नरूपे त्रिपादस्य
 ते रूपमस्ति दिविसर्गमंडले च पानार्थमस्ति कल्पिता जगतो व्रज्यस्य रूपमनंतमस्तीत्यर्थः यथा लोके पादात्पादत्रय

४८

शुभा
भा
४६

आरोप्यस्य यो यस्यालंबनस्य सादृश्यनियमो नास्तीत्याह परस्मादीति भविष्यति ब्रह्मज्ञोतिश्च इति शेषः तं यथा यथापासते तथा
तथायत्नं भवतीतीति श्रुतेरित्याह नदीयतरति तान् फलवदुपास्तिफलमेककुर्ये किं न सादत आह यत्र दीति तेषां कल्पदित्यर्थः
यो यतना न त्याह यत्र निति शिरोजीवकूपेण यत्र नतीत्यत्राह अत्र स्यात्समतादाता वा वसुहिराण्यदेतातीति वसुदान
इति गुणविशेषसंबंधयोर्वेदसंयनं विदते दीमांश्च भवति नास्तीत्यागतमासनोवा प्रतीकं वाचोभय इति प्रतीकं वि

परस्मादिब्रह्मज्ञो न मां दि प्रतीकं त्वत्कैदेयस्योतिः प्रतीकत्वेन पपते ईं च अतं चेत्सपासीतेति तत्प्रतीकं हारकं इह
तं अतं च भविष्यति वसुहिराण्यदेतातीति तदनुपपन्नं नदीयते फलाय अस्या अयणीयमियतेनेति नि
यमेदेतरति यत्रादिनिरस्तसर्वविशेषसंबंधं ब्रह्मात्मत्वेनोपदिश्यते तत्रैककुर्येमेव फलमोत्तमवगम्यते यत्र व
सुदानो विदते वसुहिराण्यदेतातीति यत्रादिप्रतिषेधेन स्वार्थे किंचिज्ज्ञोतिषो ब्रह्मज्ञोतिः सति तथापि पूर्वस्मिन्वाक्ये
दृश्यमानं प्रदीतं यत्नं भवति तदुक्तं सूत्रकारेण न्यातिश्चरणमिधानादिति कथं पुनर्वाक्यं तर्हि न ब्रह्मसंनिधाने न न्या
तिः श्रुतिः स्वविषयात् कथा वाचनं धितुं नैव दोषः यदतः परादिवा न्यातिरिति प्रथमतः पठते न यत्नं न सर्वनाम्ना
द्यसंबंधात्पत्यभिज्ञायमाने पूर्ववाक्यानिर्दिष्टे ब्रह्मणि स्वसामर्थ्येन परास्मिन् सत्यं न्यातिः शब्दस्यापि तद्विषयत्वे
पपत्तस्तस्मादिदं न्यातिरिति ब्रह्मप्रतिपत्तयं छंदोभिधानाच्चेति चेन्न तथा चेत्तौ पर्यायानि गदातयादिदर्शनं २५ अथ
यदुक्तं पूर्वस्मिन् अपि वाक्ये न ब्रह्माभिहितमस्ति गायत्रीवा इदं सर्वं भूतं यदिदं किंचेति गायत्र्यात्मस्यैव दसोभिहित
त्वादिति तत्परिदत्तं कथं पुनः छंदोभिधानाच्च ब्रह्माभिहितमिति शक्यते वक्तव्यं वा न समदिशेते तस्या ता २
मृचिचतुष्पादस्य दर्शितं ॥

अथ ५

47

प्रति
पत्ति
४६

शेषध्यानं श्रुति संग्रहाद्ये माद्यपदे सत्रियेः श्रुतिर्बलीयसीति शक्यते कथं पुनरिति प्रथमं श्रुत्यनसारेण चरमं श्रु
तिर्नीयतरत्याह नैष इति सर्वनाम्ना स्वसामर्थ्येन स्वस्य सर्वनाम्नः सामर्थ्यं सन्निहितं वाचित्वं न ह लेन परास्मिन् सती
तियोजना अर्थाद्युत्पत्तिसामानाधिकरण्यदित्यर्थः छंदोभिधानादिति ब्रह्मश्रुतेनास्तीति शक्यमेकदेशो ह्ययं

४६

[illegible]

48.

माद इगकेति सत्रस्यादिपदार्थे दर्शयति भूतएषिवीति

ह सर्वमित्युच्यते यथा सर्वस्वत्विदं ब्रह्मेति कार्यं चकारणां अतिरिक्तमिति प्रत्यामः तदनन्यत्वं मारं मारा शब्दादिभिः इत्यत्र

शंकां साधयति नैतदिति नादिना चतुष्पादत्वादिकं सर्वमेव व्याख्यातं यथा सर्वमिति वेदसदस्यभूतां सधुविद्यामेव मत्तरीत्यायः कश्चि
 हेतुस्योदयास्तमयरीदतत्र प्रशामिभयतोत्तर्यः तथा च वेदुत्तमयश्रुतिभाषः तामयरीश्वरे नतदुपादानत्वेन न
 गतवत्सलत्वापाकोतमनुपपत्तिमह नयत्तरेति अस्यामधिक्यं सर्वोक्तकत्वेन तत्राद कार्यं चेति न च गणयमाधानाद्यं सर्वोक्त
 त्वागपरतिवाच्यं स्वतः सर्वोक्तकोपाने संभवेनासदोपायोगादिति भावः तथा हि देवीनमिति सत्रशेषं वाच्यं तथान्वेति
 दृश्यते इति दर्शनं रघुमित्यर्थः एते परमात्मनो ब्रह्मज्ञाने दिना मदसुखे प्रसूतदन्तु फलमेव यत्तमेव गिरदस्य तमेतमगिरित ॥ ५१ ॥

नैतदिति गणयतीत्यादि सर्वमिति गणयतीत्युक्तं तामेव भूतवृत्तिं वीर्यरीरदृष्टका कणाग्रभेदे व्याख्यायसे वाचतुष्पाद
 विधागणयतीत्यादि नैतद्व्यापनकताया नयमदिमिति तस्यामेव व्याख्या नरूपाया गणयतीत्युक्तं तामेव कथमकस्माद्रस
 चतुष्पादभिदध्यापोषितत्रयं न कुर्वन्ति त्रयं यः सोषितं दध्याः प्रकृतत्वात् त्रैविध्यं यत्तमेव त्रयोपनिषदं वे
 देतत्र दिव्येदोपनिषदमिति वाच्यं तस्या च्छेदो भिधानां त्रयस्याः प्रकृतत्वं मिति चेत्तदेव तस्या च्छेदो भिधानि गत
 तस्यागणयतीत्यादि दोहारेणातदनुगते च्छेदो भिधानि च्छेदो भिधानि तसमाधाने मनेन त्रयस्यागणयतीत्यादि नैतद्व्यापनकताया
 देसर्वमिति नयत्तरेति निवेष्टमात्रागणयतीत्यादि सर्वोक्तत्वं संभवति तस्यागणयतीत्यादि व्याख्या विकारे न गतं तत्रागणयतीत्यादि त्रय
 तदित्रयस्यागणयतीत्यादि व्याख्या उपपन्नं दृश्यते एते एव ब्रह्मचामदत्तकथं सोमासतपतमप्रावधयं वदते स
 दाक्षते च्छेदो गणयतीत्यादि तस्यागणयतीत्यादि च्छेदो भिधानि च्छेदो भिधानि तसमाधाने मनेन त्रयस्यागणयतीत्यादि नैतद्व्यापनकताया
 रविधानाया पर्यादसात्वादवगणयतीत्यादि नयत्तरेति निवेष्टमात्रागणयतीत्यादि सर्वोक्तत्वं संभवति तस्यागणयतीत्यादि व्याख्या विकारे न गतं तत्रागणयतीत्यादि त्रय

गतमु५

५२

धर्मवउपासत इति श्रुतेर्यत्तु वैदिनोऽप्युपासत एतमेव च्छेदो गणयतीत्यादि नैतद्व्यापनकताया देसर्वमिति नयत्तरेति निवेष्टमात्रागणयतीत्यादि सर्वोक्तत्वं संभवति तस्यागणयतीत्यादि व्याख्या विकारे न गतं तत्रागणयतीत्यादि त्रय
 तरीयके रघुमित्यर्थः गायत्री शब्देन सल्लक्ष्णेति व्याख्याय गोपारत्याद अवरति साक्षादेव वाचा र्थं यदा विनैवेति याव
 त्वेव तस्यागणयतीत्यादि नयत्तरेति निवेष्टमात्रागणयतीत्यादि सर्वोक्तत्वं संभवति तस्यागणयतीत्यादि व्याख्या विकारे न गतं तत्रागणयतीत्यादि त्रय
 पातिपदार्थं कदेशे यत्तौ रूपान्वयं तमागणयतीत्यादि कदेशे गायत्री अनु गते अस्यागणयतीत्यादि सर्वोक्तत्वं संभवति तस्यागणयतीत्यादि व्याख्या विकारे न गतं तत्रागणयतीत्यादि त्रय

५१

वेः ॥

अत्र सत्रभाष्यकारयोर्मतान्तरिभिः चतुष्टयागायत्रीति संमतं परद्वारैश्च नृणां त्वत्कारोक्तं कमप्रसिद्धं चकार सचितं पुनंतरमाह
अपि चेति त्रस्य पुरुषसंज्ञायां त्रस्य स्यात्तत्परत्वे मित्याह पुरुषेति त्रस्य पदस्य छंदोवाचित्वमुक्ते निरस्यति यद्वैतद्रोमेति एवं
स्यात्तच्चित्रं योक्तवित्यर्थः हृदयस्य चतुर्दिक्ष्वेव च सप्तपथः सन्ति ते युञ्जन्मस्थानं हृत्तमरस्य प्राणादिद्वारेषु क्रमैराप्राणायाना
पानसमानोदनाः पंचद्वारपाला इति ध्यानायैकस्याकल्पितं तत्र हृदयज्जिह्वायाः प्राणेषु त्रस्य पुरुषत्वप्रतिहृदि गायत्र्या त्रस्य
गायत्र्या सना संक्षिप्तायां त्रस्य पालं हृत्तमरस्य पुरुषारति संभवतीत्याह पंचत्रयेति द्विदिदिशति विभक्तिभेदात्कृत
प्रत्यभिज्ञानास्तीत्युक्तेनोपलक्षणमिति त्वाह तत्परिहृतं च मिति परिहारप्रतिज्ञा नीते अत्रेति सत्रेन जयं वदन्यरिहारमाह न।
अपि च त्रस्य प्राणापयोगो नेमस्य संज्ञायां त्रस्य पुरुषस्य प्रतिहृदि

[illegible][illegible]

पांविदित्तायां४

पृ. ५२

इंद्रेण शब्दोपपत्तिमाह प्राणत्वे चेति पठेति लौकिकाश्रयीत्यर्थः बलवाचिना प्राणाशब्देन बलदेवता लक्षणभावः इंद्रेण प्रदात्वा दित्तमः कर्मानधिकभादणपरत्वे व्याख्यानीत्याह निश्चिते चेति किमिदं पदेन विप्रशेषलक्षिते चिन्मात्रमुच्यते उत्तविप्रदः आद्ये वाकास्यमपरत्वे सिद्धं न हि तौ यस्याह आध्यात्म्येति आत्मनि देहे धिगतस्य आत्मप्रसंगात्मासंबन्धनेयः शरीरस्यत्वादिति इतनावसंभाविते धर्मस्ते आध्यात्मसंबन्धास्तेषां भूमेत्यर्थः आधुरजदेष्टाणां वायुसंचारः अतित्वे प्राणस्थितौ प्राणानां मिदियाणो स्थितिरित्यर्थः अतिसाह अतित्वेति अथातो निश्चयसादानमित्याद्या अतिः इंदियस्यापकत्व

प्राणत्वे चंद्रस्य बलवत्त्वा उपपद्यते प्राणो वै बलमिति विज्ञाप्यते बलस्य चंद्रो देवता प्रसिद्धा यच्च कश्चिदलक्ष्मिर्देवता सैव तदिति दिव्यपदेति प्रस्तात्मत्वमप्यतिदत्तत्वात् तदेवतात्मनः संभवत्यतिदत्तत्वात् देवता इति दिवदेति निश्चिते चेदेवतात्मा पदेशादित्तमत्वादिवचना नियथासंभवे तद्विषयात्पेव योजयितव्या नितस्मादत्तु रिंदिया लोपदेशात् प्राणो ज्ञेयस्यातिप्रतिस्माधीयते अध्यात्मसंबन्धमाद्यस्मिन्निति अध्यात्मसंबन्धः प्रत्यात्मसं बन्धः सत्यभूमावाहस्यमस्मिन्नध्याय उपलभ्यते यावद्यस्मिन् शरीरे प्राणो वसति तावदापुरेति प्राणस्यैव प्रतात्मनः प्रसंगभूतस्यायुषः प्रदानोपसंहारयोः स्वातेन्द्रो दर्शयति न देवतविशेषस्य पराचीनस्य तया तित्वे च प्राणो नानिश्चयसमित्यात्ममेवैदिया अप्रप्राणो दर्शयति तथा प्राण एव प्रजात्वे देशरीरपरिग्रहोभ्यापयतीति न वाचे चिन्तासीत वक्तुं विद्यादिति चोपक्रमतयथारथस्यारेषु नेमिरपितो लभावरार्थपिता एवमेवेताभू तमात्राः प्रतामात्रास्वर्णिताः प्रतामात्रा प्राणोपिताः स एष प्राण एव प्रजात्माने दोनरो मतरति विषये दिव्यव

५२

30

वदेहोत्पापकत्वमाह तथेति बलत्वमुक्तासर्वाधिष्ठानत्वेदं किं

तमित्याह इति चोपक्रमेति तत्तत्र नानाप्रपंचस्यात्मनिकल्पनायां यथा रक्षातः लोके प्रसिद्धस्य स्यारेषु नेमिनाम्नो मध्यस्थशक्त्या सचक्रोपांतरूपेनेमिरपितानां भोचक्रपिंडिकायामरा अपिता एवं भूतानि पंचशुचिद्यादिति मीमं तस्मिन्मात्राः भोगप्राप्तदयः पंचेति दशभूतमात्राः प्रतामात्रास्तदशस्वर्णिता इंदियज्ञाः पंचशुद्धादिविषयप्रताः मीये तेषामिति मात्राः पंचधोदियाणि नेमिबद्धा यथा देवेषु कल्पितमिष्युक्तानां भिष्यानीये प्राणा सर्वे कल्पितमि

प्राणोपिताः

५१

सम ४

सपाणममस रूपमिनाद समरति तदिप्रत्यगात्मनिसमन्वयेन तत्र स्पष्टातत्राद प्रथमिति ग्रहंकारवादसमतिप्रकृति
कथमिति सत्रमुनरंतवाया निरुदतिजन्मात्ररुनप्रचणादिनास्मिन्नन्तिसतः सिद्धं दर्शनमाधेवितेयंदस्तुत्यधपत्त
समप्राप्तेतिविद्यादितिचोपसंहारः प्रत्यगात्मपरिग्रहे साधुनेपराचीनं परिग्रहे अवमात्मात्रससर्वोचभरितिचप्रत्नं
नरंतस्मादधात्मसंबंधं वादस्याहस्यापदेशाएवायनदेवतात्मापदेशः कथंनदिवक्तृतात्मापदेशः एवमुदहृतमत्र
देशाचामदेवचन १ देवतामादेवतात्मास्वमात्मानं परमात्म तेनादमेव परं चेत्याधेयादशनेन यथाशास्त्रं यथा
नुपदिशति समामेव विज्ञानी हेति यथा तदेतमप्यत्र सिर्वा मदेवः प्रतिपेदेहं मन रभवे सूर्येति तदहं त्रयो यो दे
वानां प्रत्ययुपातसपच तदभचदिति प्रतेयत्नककं सामेव विज्ञानी दीत्युक्ता विग्रह्यमेति द्यात्मानंत ह्यावताह
वधादिभिर्मितितपरिहृतैयम जो चतेन त्याह्वथादीनां विज्ञेयं दस्तुयं त्येनोपन्यासाय स्मादेव कर्माहं तस्मात्मा
विज्ञानी हेति कथंनदिविज्ञानस्तुयं चेत्युक्तायां त्वाह्वथादीनि सादसां च न्यस्य परेण विज्ञानं सति मनु
मेदधातित एमेतत्र त्वे मचनमीयते सुयोमां वेदनं देवतस्य केन च न कर्मण लोको मीयतरसादिना एतदं क
भवति यस्मादीह्यात्वापि कुराणि कर्माणि कृतवतो मम च स भूतस्य लो मापिनो दिं स्यात् स पो न्यापि मो वेदनत
स्या केन चिदपि कर्मण लो को हि स्यात् इति विज्ञेयं तत्र ये वपाणं सिप्रज्ञात्मेति च सा मायन स्याद्वा का मेतत
जीवमात्राणां लिङ्गमेति चेज्जोनायात्रे विद्यादाधितत्वादि तत्रोपगत १ यथाप्यथा मसंबंधममदर्शनान्न परा
चीनस्य देवतात्मन उपदेशस्तथापि न त्रस्य वाको भवितुमर्हति कृतः जीवलिङ्गान्मात्राणां लिङ्गाच्च जीवस्य तावद
स्मिन्ना को विष हं लिङ्गमुपलभ्यते नवाच विज्ञितो पीतवकारे विद्या दिव्या यत्र दिव्यादिभिः कर्तृहोका एतस्य क
र्तृकारणाय दसा जीवस्य विज्ञेयं तमभिधीयते तेषां मावपाणं लिङ्गमे प्यत्वं त्रपाणा एव प्रज्ञात्मदशा रीरपरि
मानचेक्यं न हि सति एवमिति कथमिति असत्त्वानस्तुत्यः विज्ञानेति नियामकं इति यदिति परेण तस्य मे इत्यादिना च
कोनेनान्वयः स्तुतिमाह एतदं क मिति तस्माद्ज्ञाने अहमिति शेषः स्तुतिज्ञानविषय इंदरस्य त आह विज्ञेय इति

शा
भा
५४

जीवधर्मानाह अयेति बुद्धिप्रमाणयोः सदस्यित्वान्तरमित्यर्थः अत्र प्रस्तापदेन साभासाजीवाद्याबुद्धिरुच्यते तस्याः
संबंधीतिरूपानि सर्वाणि भूतानि यथैकं भवेत्तथिष्टानि चिदात्मना तया व्याख्यासा मरुत्पक्षमोक्तं वमो वेत्यादि च त
रेवास्या एकमेव महद्दृष्टित्वादिपयाणां सत्तिमाश्रित्य मुच्यते उच्यते चाप्यप्रसक्तत्वापाः साभासबुद्धेर्नाम प्रपञ्चविषयि
त्वमर्थः शरीरमथात्मकं रूपं प्रपञ्चविषयित्वमर्थः शरीरमिति मिलित्वा विषयित्वात्वं प्राणिशरीरमिदं साध्यते
अक्रमेदियेषु वागवास्याः प्रस्तापकं मं गेदे दार्ढमहद्दृष्ट्यामा सवाणिदियद्द्वारा नाम प्रपञ्चविषयित्वं बुद्धिर्ल
भत इत्यर्थः चतुर्थी घट्टातीतस्या पुनो म किल चतुरादिना प्रतिविदिता तापिता भूतमात्रा रूपा यथैव रूपा यव
स्तादपरार्थकारणं भवति तानकरणाद्वारा प्रपञ्चविषयित्वं बुद्धिः प्रामोतीत्यर्थः एवं बुद्धेः सर्वार्थं द्रष्टुं त्वमप्य

अथ यथास्य प्रस्तापैर्सर्वाणि भूतान्येकी भवन्ति तद्वा व्याख्यासा मरुत्पक्षमवागवास्या एकमेव महद्दृष्टतस्यैना
मप्यप्रस्ताप्यति विदिता भूतमात्रा प्रतया वाचसमा रूपा वाचा सर्वाणि नामानि प्रामोतीत्यादि प्रस्तापमस्ता
वायतादशैव भूतमात्रा अधिप्रतंदश प्रस्तापमात्रा अधिभूतयद्भिभूतमात्रा नस्यः न प्रस्तापमात्रास्यः यद्वा यत्रा
मात्रा नस्यः न भूतमात्रास्यः न यन्मतरतो रूपं किंचित् न सिद्येत्तत्राना तद्यथा रथस्य रेखेनेमिरपि
तानाभावे रात्रिपिताय वमं वेता भूतमात्राः प्रस्तापमात्रा स्वपिताः प्रस्तापमात्राः प्राणिपिताः स येष प्राण एव प्रस्ता
पमादिर्ब्रह्मधर्मः तस्माद्ब्रह्मण एवेतदुपाधिदयधर्मैरास्वधर्मैराचैकमुपासनं विविधं विवक्षितं ॥

52

पायतत्रिष्टयित्विति विं बहारासात्तिणिद्रष्टृत्वाप्यासमाह प्रत्ययेति बुद्धिद्वारा चिदात्मा वाचुमिदिये समारुह्य तस्याः
प्ररको भूत्वा वाचा करणेन सर्वाणि नामानि वक्तव्यत्वेनाप्रोति चत्तुषां सर्वाणि पश्यतीत्यवदृष्टा भवतीत्यर्थः
तथा च सर्वं द्रष्टुं चिदात्मनि द्रष्टृत्वाप्यासनिमित्तत्वं बुद्धेर्धर्म इत्युक्तं भवति सर्वा पारत्वा न दत्तादिः ब्रह्मधर्म
इत्येदं तावदिति दशान्वेद्यात्वात् प्रस्तापेन्द्रियताना अधिभूतमात्रा भूतमात्रा वनेते प्रस्तापमात्रा इन्द्रियाणि ग्राह्य
भूतमात्रा मपि कृतमवर्तनेति ग्राह्यग्राहकयोर्मिथः सापेक्षमुक्तं साधयति यदिति तदेव सुट्यति न हीति ग्राह्य
ग्राह्यस्वरूपेन सिध्यति किंतु ग्राहकेण एव ग्राहकमपि ग्राह्यमनपेक्ष्य न सिध्यति तस्मात्सापेक्षत्वादेतद्ग्राह्य
ग्राहकद्वयवस्तुनो न भिन्नं किंतु चिदात्मनोरेपितमित्यादौ न तद्यथादि कृतव्याख्यानसूत्राद्यमुपसेदरति ते

५४

ने

सत्रशेषं वाच्ये आश्रितत्वाच्चेति अत्रात्रातएव प्रसारणादौ हतेराश्रितत्वादिह पितस्य त्रसलिंगस्य योगादस्य परपदमा
 तायाश्च श्रुत्यः आत्मादित्तिगगनिसर्वोत्सवे अस्मत्प्रजापतेन तेन शाकान्तीत्यादयस्मिमादिना यस्मिन्नेनौपेयत्वेन स्थितौ ते
 नेनरेण अस्मात्सर्वपापदिवापारं कुर्वन्तीत्यर्थः विशेषपरितोदाभिमानमिदं चत्तारं विद्यादितिनवक्तृत्वेयत्वं
 चातेन सत्त्वाकमिदत्वात्किंतु तस्य अस्त्वत्वात्तेन होपाभिमात्यायस्मिन्नादयस्य अस्त्वत्वरमादयद्वाचेति येन चैतमेन
 आश्रितत्वाच्चाप्यत्रापि अस्मलिंगवशात्तायाश्च अस्मलिंगत्वेति दापि च दिततमोपन्यासादि अस्मलिंगयोगाद्वा सोपदे
 प्रापवा यस्मि लिंगात्पते यत्तुमाया प्राणलिंगो दर्शितमिदं शाखेपरिभ्रमोत्तमापयतीति त्रसत्ताया वापारस्यापि सत्ताया
 यत्तत्ताया रमात्मन्यु यत्तरेते शाकान्ताया प्राणान्ननापाननप्रवर्तनीति कश्चन नरेण तनीवति एस्मिन्नेता बुपाश्रितानि
 निश्रुतेः यदपि नयाच विनितासीत वक्तारं विद्यादिति जीवलिगं दर्शिते तदप्येन अस्त्वत्वेनि वायपतिनहिनी केनामात्य
 तभिन्नो अस्मत्प्रण सत्त्वमस्य हं अस्मात्प्रणमिदं अस्मिन्नेता बुपाश्रितानि कृतं तद्वि शेषमाश्रित्य अस्मत्प्रणमिदं वक्तारं
 म्यत्ततेन सत्ताया कृतविशेषपरितोदाभिमानमिदं चत्तारं विद्यादितिनवक्तृत्वेयत्वं चातेन सत्त्वाकमिदत्वात्किंतु तस्य अस्त्वत्वात्तेन होपाभिमात्यायस्मिन्नादयस्य अस्त्वत्वरमादयद्वाचेति येन चैतमेन
 भिमुरी करणार्थं पदे देन विरुद्धा तेन पञ्चानभ्युदिते येन वागभ्युदिते तदेव अस्त्वत्वे विहितं दयदिदमपासतस्यादि
 च अस्त्वत्वरवचनादि क्रियायाश्च तस्यैवात्मनो अस्त्वत्वे दर्शयति यत्तु नरेन इत्तस्य दशेता वस्मिन्नेता बुपाश्रितानि कृतं तद्वि शेषमाश्रित्य अस्मत्प्रणमिदं वक्तारं
 इति प्राणाप्रज्ञात्मनोर्भेद दर्शनेन अस्त्वत्वेनाप्यप्यत इति नैष दोषाज्ञानक्रियाशक्तिदया अथवा बुद्धिप्रधानयोः अत्याग
 लोपाधिभूतयोर्भेद निदर्शनं पयतेः उपाधिद्वयोर्भादनस्थान प्राणात्मनः स्वरूपेण भेदरत्नातः प्राणा एव प्रज्ञात्मनो की
 करणमविरुद्धमथवा नोपाशात्रे विद्यादाश्रितत्वादिह तयोमादित्यस्यायमन्वयः न अस्त्वत्वाकोपिनी च मुखाप्राणान्ति
 गविरुद्धते कथमुपाशात्रे विद्यादिविधिभिद अस्मत्प्रण उपासने विवक्षिते प्राणाधर्मप्राणप्रसाधर्मप्राणस्थधर्मप्राणचतस्र
 रश्च तस्मिन् प्राणायाः प्राणरती देवाही वं परिग्रहो मापयति तस्मादेन देवो न्यमुपासीतेति च प्राणाधर्मः ॥
 वागभ्युदिते सुकार्या भिमुरी नोपेयते तदेव वागदेव गम्यते मर्थः तत्त्वपदवाच्येः स्वरूपेता भेदरत्नाभा मया लस्यात्म
 स्वरूपभेदादेकत्वे निदिष्टतस्याह नैष दोष इति स्मृतेन सत्त्वोपाया यद्वि कृन्मतेन वा च छ अथवति उपासना
 चित्तप्रसंगादिति सर्वमतमत्र विप्रकार कथं कत्र सविशेष कथं कस्याप्यस नस्य विवक्षितत्वादित्यर्थः अनेन वाका
 भेद इति भावः देदे च प्रात्मकजीवन देवत्वप्राणाया बुद्धिदेहापदप्राणान्ता म्युक्तेरेवस्याना दस्यत्वे उपाय यतीत्यस्य

तस्मिन्निप्राणधर्मः ५

शा
भा
५५

छादोपमदाहरति रदमिति तस्माज्जायते इति तज्जन्तस्मिन्तीयते इति तत्तत्तस्मिन्निवेष्टत इति तदनेतज्जन्तज्जन्त
नेचेति तज्जन्तान्कर्मिथारेपि ज्ञातव्यं च न्यायेन मध्यमपदस्य तज्जन्तलोपः तज्जन्तानामिति वाच्यं छादोपम
बलोपः इति शब्दोद्देशेन सर्वमिदं जगद्भूतं द्विवर्तित्वादिपक्षः त्रयमिति मित्रमित्रभेदाभावात् छादोपमदिरिति भवे
दिति गुणविधिः सकृत्तुमपासनं कुर्वीतेति विदितोपासनस्योपासीतेत्यनुवादात् फलमाह अथेति सकलविक
रस्यार्थः पुरुषस्य ध्यानविकारत्वे स्फुरति यथेति रदयथायति सत्त्वाध्यानमद्विज्ञानेन यत्तु रूपेण जायत इत्यर्थः क

सर्वत्रपसिद्धेयदेशात् १ इदं मास्मापते सर्वं वल्लिदेव सतज्जन्तानि ति शांतउपासीताद्यव लकृतमयः पुरुषो
यथा कतरस्मिन्लोके पुरुषो भवति तथैतः प्रत्यभवति सकलं कुर्वीतमनो मयः प्राणाशरीरोभा रूपरसादि
तत्रमशयः किमिदमनामयत्वादियमैः शरीर आत्मापास्यत्वेनापदिष्टते आहो सिद्धेति किं तावत्प्राप्ते
शरीर इति कुतः तस्यैव कार्यकारणविषयः पसिद्धो मन आदिभिः संवृत्तोननुपरस्य त्रस्योपासनाद्युक्तमना
पुभूत्यादिप्रतिभाः ननु सर्वं वल्लिदेव सति स शब्देनैव त्रस्योपासने कथमिदं शरीर आत्मापास्य आश
कतेनैव देवो ने देवाको त्रस्योपासनविधिपरं किं तदिदं सविधिपरं यत्कारणं सर्वं वल्लिदेव सतज्जन्तानि ति
शांतउपासीतेत्यादौ तदुक्तं भवति यस्मात्सर्वमिदं विकारभूतं त्रस्येव तज्जन्तानां तत्त्वानां तदनन्तं च न च सर्वं
सैकान्तकत्वेनाप्यदयः स भवति तस्मात्तत्त्वानां उपासीतानां च तत्रैव सविधिपरत्वे सत्येनैव वा केन त्रस्योपास
नेनियंते शक्यत उपासनेन सकलं कुर्वीतेत्यनेन विधीयते कतः सकलध्यानमित्यर्थः तस्यैव विषयते
न अथ तेन नो मयः प्राणाशरीर इति जी वल्लिगमनो ब्रह्मो जीव विषयमेतदुपासनमिति

नो विषयमाह मन इति त्रस्यैव कमान्मनोमये प्राणाशरीरेभा रूपे सतसैकत्वमेतद्विद्येयमित्यर्थः सर्वत्र वल्लि
नैव वल्लिगवापुक्तः न तथैवैकमेव त्रस्योपासनासिद्धिं तत्रकरणं न च शांतिगुणविधानार्थं मनसा सिद्धम
नो जीवल्लिगवलीय इति प्रत्यदाहरणेन सर्वं पश्यति शरीररसादिना प्रतिभाशोकान्यासिद्धापरिहरति नैव दे
व इति शमविधिपरत्वे देवमाह यत्कारणमिति यत एवमाह तस्माच्च सविधिपरमित्यर्थः न च शम इति शम

५५
५५

अन्यधर्मोपासनायास न कथमित्याशङ्क्याश्रितत्वादित्याह अन्यत्रापीति उपाधिजीवस्तद्व्यधर्मोपासनमिष्टमसंगत
यात्यानयादित्यन्तवदरुणस्यनेकगुणविशिष्टाग्रामकृपावत् उपासा उपाधिविशिष्टाग्रामोविधिः संभवति सिद्धस्य
विधानदेवान् नाथिग्रहानुवादेनोपासाग्रहविधिः संभवति वाक्यभेदाच्चनार्थमिति सिद्धमेकगुणसंनविधीयते इति
वाच्यं नाहयाविधिवाक्यस्यत्राश्रयणत्वं न च नेमायाधुरस्तमित्यापादेमत्रमाभितिजीवेनाश्रयित्वाप्राणनास्तमित
निग्रहणस्वस्वधर्मवत्ताविधिोपासनाविधिरिति वाच्यं सर्वेषाधर्माणामश्रयणत्वं अस्याश्रयेश्चप्राणोवाश्रयत
त्वश्रयः अतः उपासनाविधिल्लोचनवत्तारेविद्यादेतदेवोक्तमुपासीतस्मभ्यन्तेति विधादित्तिजीवप्राणग्रहोपासन

अथ जपिमनोमयः प्राणशरीररूपाद्युपाधिपर्यन्तवर्तमानसमस्तमाश्रितमिहापित्तुपनेवाकाशोपक्रमेण
संदाराभ्यामेकार्थत्वाभावाप्रस्तावसंलिंगवगमाच्चतस्याद्वयवाक्यमेतदिति सिद्धं इति श्रीमच्छरीरकमी
मासामाषेष्टाकरभगवत्पादकृतौ प्रथमस्याध्यायस्याप्रथमः पादः १ प्रथमे पादे जन्माद्यस्य यत्तत्त्वाकाशा
देः समस्तस्य जगतो जन्मादिकारणो ज्ञेयस्तत्कर्मसमस्तजगत्कारणस्य ज्ञेयत्वात्वापित्तुनिमित्तत्वं तत्त्वं
सर्वान्मन्त्रमित्येव ज्ञातीयकाधर्मा उक्तान्वधवेति अथोत्तरप्रसिद्धानोचकेषां चित्त्वाज्ञानोत्तरविषयत्वेदेव
प्रतिपादनेन कानिचिद्वाक्यानि संहितामन्त्रातिशयपरतया निमित्तानि प्रत्यक्षानि वाक्यान्मन्त्राद्यत्र संलिंगानि
संहितांते किंपरे ज्ञस्य प्रतिपादयत्यादिद्वयोत्तरे किंचिदितितत्त्वज्ञानायायज्ञीयतत्त्वोपपादकारभ्येत

विषयः अन्ये गणविषय इति स्वीकृत्यैकवाक्यत्वे स्यात् तत्राद्युक्तमुपक्रमदिने कथावाक्यानिर्गता तस्या त्तेयं प्रत्ययस्य
परमिदेवाक्यमित्युपसंहरति तस्मादिति ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्रजकाल्याणीशो गौडिदानंदभगवत्पादहृतौ श्रीमत्सा
रीरकसोमसाखाख्याभाष्यरत्नप्रभाषोपश्रयमस्याध्यायस्य प्रथमः पादः । श्रीरामे सिद्धमंतोरे गृहाचार्यिनमेतरे अंत
रामिणामन्तेयं वैधानरमरभजे । पुर्वपादेनोत्तरपादयोः संगतिं बभूवुतमनवदिति प्रथम इति ज्ञाप्यकारागत्योत्पाद्या
पित्वादेकमर्थान्तिहेतुदुपजीव्योत्तरपादद्वयप्रवर्तने इति हेतुमद्वाच्यः संगतिः कथं पादभेद इत्याचार्यपादा नोपमयभे
दमाह अर्थांतरेति आकाशगदिद्याहो नोपपृच्छस्वस्तिवोर्जस्यणिममन्ययोर्द्वितः अस्वप्नप्रवृत्तिगोवाक्यसमन्वयः पादद्व

३३

येवद्वाने प्रायेण पास्यन्ते यच्च स्थितिगभेदात्मादयो रवीत
रभेदरतिभावः

भा.
५८

वस्तुनो विवक्षायाः फलमुपादानं स्वीकारः स च प्रकृतेश्च गणेश्वरीति विवक्षोपचारत्वाद् तथा मुपादानेनेति नन्विदं
प्राप्तमिदं तात्पर्यमिति धीविवक्षाधीना वेदेकतः स्यादित्यत आह उपादानानुपादानेनिति तात्पर्यं नाम फलवदर्थप्रती
त्यनुकूलं तं शास्त्रार्थमप्यक्रमादिना तस्य तात्पर्यं रवगमरत्तयः तदेवेति तत्तस्यान्तात्पर्यवत्वादिसर्थः सवीक्षन्ते

तथा मुपादानेन फलेनोपचर्यते लोहिके यच्छाभिहितमुपादेयं भवति तद्विवक्षितमित्युच्यते यदनुपादेयं त
द्विवक्षितमिति तदेवेदेष्टुपादेयत्वेनाभिहिते विवक्षितं भवति रत्नरदिविवक्षितं उपादानानुपादानेन वेदवाक्येना
मार्गानामर्थानामवगम्येन तदिदं विवक्षितं गणेश्वरीति उपासनाया मुपादेयत्वेनोपदिष्टाः समस्तकल्पप्रभृतयः
तेष्वस्मिन्स्वस्वपदघते समस्तकल्पवदिसृष्टिस्थितिसेदारेष्वप्रतिदत्तशक्तित्वात् स्वरमात्मनो वक्तव्यं ते परमा
त्मगुणत्वेन च यथात्मा पदतपाशरत्नसमस्तकल्पः सत्संकल्प इति श्रुते आकाशात्मका काशवदात्मास्य
त्यर्थः सर्वगतत्वादिभिर्धर्मैः संभवत्वाकाशेन साम्ये ब्रह्मण्यथा तद्विद्यारत्नादिना च तदेव दर्शयति यदा
प्राकाशात्मा स्यात्तिकात्मा यत्नेन दक्षिणं संभवति सर्वजगत्कारणस्य सर्वात्मनो ब्रह्मण्यथा काशात्मत्वमत एव स
र्वकर्मादिष्वभिदोषास्य तेषां विवक्षितं गणेश्वरीति उपासनाया मुपादेयत्वेनोपदिष्टाः समस्तकल्पप्रभृतयः
न तद्गुणपदघते इत्युक्तम् सवीक्षन्तादिब्रह्मणो जीवसंबंधी निमनो मयत्वादीनि ब्रह्मसंबंधीति भव
ति तथा च ब्रह्मविषये प्रतिस्फूर्ती भवतः त्वंसीत्तं प्रमानसित्वं कुमार उत वा कुमारी त्वं जीर्णं देदेन वचसित्वेना
नो भवसि विद्युतो मावसि सवेतः पाणिपादतत्सर्वतोऽक्षिणि भो मुखं सर्वतः श्रुतिमलोके सर्वमावस्यति स्फूर्ती
ति च अत्राणोऽस्य नाः शुभरतिश्रुतिः शुद्धब्रह्मविषया इदं तन्मनो मयत्वादीनि ब्रह्मसंबंधीति विशेषो
नो विवक्षितं गणेश्वरीति उपासनाया मुपादेयत्वेनोपदिष्टाः समस्तकल्पप्रभृतयः सवीक्षन्तादिब्रह्मणो जीवसंबंधी निमनो मयत्वादीनि ब्रह्मसंबंधीति भव
ति तथा च ब्रह्मविषये प्रतिस्फूर्ती भवतः त्वंसीत्तं प्रमानसित्वं कुमार उत वा कुमारी त्वं जीर्णं देदेन वचसित्वेना
नो भवसि विद्युतो मावसि सवेतः पाणिपादतत्सर्वतोऽक्षिणि भो मुखं सर्वतः श्रुतिमलोके सर्वमावस्यति स्फूर्ती
ति च अत्राणोऽस्य नाः शुभरतिश्रुतिः शुद्धब्रह्मविषया इदं तन्मनो मयत्वादीनि ब्रह्मसंबंधीति विशेषो

इति

प्रमाणमाह तथा चेति जीर्णः स्थविरोऽपदेन च चरति गच्छति सोऽपि त्वमेव यो जानाते बालः स त्वमेव सर्वतः सर्वास्तदि
त्तु श्रुतयः आजाप्येति सर्वतः श्रुतिमत्सर्वजन्तूनां प्रसिद्धाः पाणिपादयस्तस्यैति सर्वात्मनोक्तिः ननु जीवधर्माश्च
स्वर्णिगोऽनेन तर्हि ब्रह्मधर्मा एव जीवैकमिति तयोऽनेन तत्राह अनुपपत्तेरिति

५८

शा
भा
५३

अत्र सञ्ज्ञकतासत्यभेद इति भ्रान्तिनिरासायेदत्तपिकशो निरस्तमपि कोशमुद्राय निरूप्यति अत्रादेत्यादिना त्वउक्त
रीत्या वस्तुन एकत्वमेव भेदस्तु कल्पितसञ्ज्ञेन घट इत्याद सत्यमिति अर्थकमात्रेण सार्धकोकानस्य भावस्तत्वेन
स्यादाधिक्यसत्यत्वप्रमाणानि सत्यत्ववाचकशब्देनापि प्रकृतमित्याह स्वशब्देनेति नायदोष इत्युक्तविज्ञेयमिति न तावदि
ति

अत्रादकः पुनरयं शरीरो नाम परमात्मनो यः प्रतिपिभ्यते च एतेन न शरीर इत्यादिना प्रतिदिनान्मेतोस्ति
इष्टानामेतोस्ति श्रोतोत्वेवे जातीयका परमात्मनो न्यमात्मानं चारयति तथा स्मृतिरपि ते अत्रापि माविदुसर्वत्वे
त्रेषु भारते तेवे जातीयके न्यत्रोच्यते सत्यमेवमेवेतत्पर्यवात्मादेहदियमनो बुभुषाधिभिः परिस्त्रिष्टमानो चालैः
शरीर इत्युपचर्यते यथा घटकरकाद्युपाधिवशादपरिस्त्रिष्टमपि न भः परिस्त्रिष्टवदवभासते तदहनदपेक्षया चक
मेकत्वेनादिभेदव्यवहारो न विकृतातेनाक्तत्वमस्तीत्यात्मैकत्वापदेशग्रहण इहो तेत्यात्मैकत्वेवंप्रमादादि सर्वव्य
वहारपरिसमाप्तिरेव स्यात् अर्थकोकस्तान् दृष्टादेशान् चनेति चेन्न निचायत्वादेव बोधवच्च - अर्थकमत्यकमात्रे
नीरमेवम आत्मा तदेव इति परिस्त्रिष्टाय तन्त्यात्मा शब्देन चाणिर्यन्त्रोदेवाय वा हेतुणीयस्त्वपदेशात् शरीर एव
रायमात्रो जीव इहो पदिश्यते न सर्वगतः परमात्मेति यत्तन्त्यपरिदत्तैवमत्रोच्यते नायदोषो न तन्त्यपरिस्त्रिष्टदेशात् स
वर्गतं च पदेशः कथमप्युपपद्यते सर्वगतस्य तत्सर्वदेशेषु विद्यमानत्वात् परिस्त्रिष्टदेशात् पदेशाधिक्यादिपक्षे तया स
भवति यथा समस्तवस्तुषु विपतिरपि सत्रयोपपत्तिरिति यपदिश्यते कथा पुनरपेक्षया सर्वगतः सत्रीश्वरोर्भ
कोकाश्रणिषोऽप्यपदिश्यते इति निचायत्वादेव मिति बुभुषवमणीयस्त्वादिगुणगणोपेतैश्चरः

55 ल३

कथमपि तस्मात्तयापीत्यर्थः परिस्त्रिष्टत्वादेविनाशस्तत्वासेभावात्सगोचरस्यापेक्षा सत्यमायातीति भा
वः विभोः परिस्त्रिष्टोक्तो दृष्टान्तमाह यथा समस्तेति सर्वेष्वप्युपाध्यायस्थितपक्षे तया परिस्त्रिष्टोक्तिवदत्तादित्ये
यत्नेन तथोक्तिरित्यर्थः ॥

५३

४ भोक्तृत्वा

[illegible]

कंजसायणस्य समन्वितमिति सिद्धं अत्राचराचरद्वयं यत्प्रत्यक्षं तत्रादिजगदोदनः प्रत्यक्षं सर्वपाणिप्रारकोपिय
सायणस्य च नञादनसंस्कारकं च तत्राचराचरद्वयं यत्प्रत्यक्षं तत्रादिजगदोदनः प्रत्यक्षं सर्वपाणिप्रारकोपिय
यथाहानभूतकोवेदचित्तं यथाहानभूतकोवेदचित्तं यथाहानभूतकोवेदचित्तं यथाहानभूतकोवेदचित्तं यथाहानभूतकोवेदचित्तं

नचमिथ्याज्ञा

ननु किमिति हृदयमेव प्रायेण कान्तेतत्राह तत्रेति हृदयेपरमात्मनो बुद्धिबुद्धिर्गदिका भवत्यत इत्युक्तमिति स्थानतमड
तिरित्यर्थः यो मरुतो तासिनाशका चतुष्पिका चिह्नितेनाह तत्र यदाशक्तो तदा दिका भिन्नायतनत्वापेक्षा सत्यमेव ह्य
भावोदिति भावः यस्मिन् हृदये निष्ठसंभोगपतेनोपपद्यते उपाय इति शंका वाच्ये यो मरुदिति यस्मिन् हृदये निष्ठसंभोगपतेनोपपद्यते
सति चेन्न नत्वातीचा भिन्नत्वाच्च नोच्यदित्युक्तं निरस्यति नयेत्येवमिति धर्मधर्मवत्त्वमुपाधिसिद्ध्यर्थः अयमेव विशेषो
तत्र हृदयस्य उरी के निचापोरुह्य उपदिश्यते यथा शास्त्राग्रे हरिस्तत्रास्य बुद्धिबुद्धिर्गदिका भवत्यत इत्युक्तमिति स्थानतमड
समानः प्रसीदति यो मरुचैतत्तद्व्यवसायसंवेगलमपि समामस्य चोपायाद्युपेक्षार्थको को लभियश्च वापदिश्यते
एवं तस्मात्पितृदेव निचापत्वापेक्षेयस्य एवमर्थको कस्त्वमपि यत्नं चन पारमार्थिकं तत्र यदाशक्तो तदा हृदयाय तनत्वा
इत्युक्तं हृदया नोच्यति शरीरे भिन्नत्वादि ज्ञायतनानोच्युक्तं दीनामनेकत्वं सावयवता नित्यत्वादि दृष्टं दर्शनात्
इत्युक्तं पितृदेवस्य इति मरुदपि परिहृते भवति संभोगप्राप्तिरिति चेन्न वैशेषिक - यो मरुत्सर्वगतस्यैव सूर्यास्य सर्वथा
ति हृदयमेवेत्येवमिति हृदयस्य शरीरेण विधिपूर्वत्वात्सर्वदः तदा हि संभोगेण विधिपूर्वत्वं न कृत्यं चेन्न हृदयस्य
न नोच्यः कश्चिदात्मसंसारो विद्यते नान्यतोऽस्ति विद्यमानेनादिशक्तिभक्तत्वात्तद्वत्त्वमसंसारसंभोगाया भिरिति चेन्न
वैशेषिका च तान्त्वत्वेनाति हृदयसंवेगार्करीरव इत्युक्तः संवेगवैशेषिकादिशेषो हि भवति शरीरपरमेष्ठयो रेकः कर्ता
भोक्तृधर्मधर्मसाधनसत्त्वरः तद्विदमाश्रय कस्तुतिरूपो नोपपद्यते यथा ज्वादिगुणयत्नस्यादत्तयोर्विज्ञेयादेकस्य भोगेनेतर
स्य दित्त्वं निधानमात्रेण वल्लुगुणिसनाश्रित्युक्तार्थसंवेगोपपत्तौ आकाशगदीनामपि द्वादशप्रसंगः त्व
गतानेकात्मत्वादिनामपि समावेतो चाद्यपरिदोषो यद्व्यक्तत्वा इत्युक्तं आत्मनराभावात् शरीरसंभोगेन तत्रास्य भो
गप्रसंग इति अत्र वदामरदेता वदेवा नोपपद्यः प्रष्टव्यः कथमयं त्वयात्मा तया भावो धवसित इति तत्त्वमस्य दत्तं ज्ञाप्य
वैशेषिकं सार्वभौमस्यः विशेषमातिशयोक्त्यर्थमादेः स्वाश्रये फलहेतुत्वमतिशयः तस्मादिति मन्त्रार्थः किंच विभ
वो वदवशात्मान इति वादिनामेकस्मिन् देहे सर्वान्त्मानां भोक्तृत्वप्रसंगत्वं कर्माजित एव देहे भोग इति पक्षे दावश्च तत्त्व
निवचनं पर्यनुयोक्तव्यं इत्याह सर्वगत इति वक्तुं तत्त्वमेव भोगसंकार्यमित्यत्रेव ह्यते ॥

हृदयस्य उरी के निचापोरुह्य उपदिश्यते यथा शास्त्राग्रे हरिस्तत्रास्य बुद्धिबुद्धिर्गदिका भवत्यत इत्युक्तमिति स्थानतमड

भो ५

तदि

पृ
भा
५२

बुधवच्चिन्नजीवस्य परमात्मनश्च प्रकृतत्वात्संशयः तत्रेति पूर्वोक्तप्रमाणयोः फले सयमेवाद यदीमादिना तदपि जी
 वस्य बुद्धिवैलक्षण्यमपीत्यर्थः मनोऽप्येते मते मतिर्येव विचिकित्सा संशयः परस्मैकमोक्तस्तीत्येकेनास्तीत्यनेतत्त्वये
 पदिसो दमेतदात्म तत्त्वज्ञानोपमित्यर्थः तदपीति परमात्मस्वरूपमपीत्यर्थः उभयोर्भीकृत्वा योगेन संशयमातिव्रति
 श्रुतेरिति अत्रिपदेन गंतारश्च विवक्ष्यते नानदत्तत्वात् प्राप्तिव्यावृत्त्येते इत्यहं श्रुतेरिति शानकं वाचकपदेन
 तत्र संशयः किमिह बुद्धिर्जीवो निर्दिष्टा तु तजीव परमात्मनाविति यदि बुद्धिर्जीवो ततो बुद्धिप्रधाना कार्यकारणासे
 चातादिलक्षणजीवः प्रतिपादितो भवति तदपीह प्रतिपादयितव्यं यद्येते विचिकित्सा मनोऽप्यस्तीत्येकेनाप्ये
 स्तीति चेके पतद्विद्यामनुशिष्टत्वात् देवराणां मेखवरस्तीत्येति श्रुत्या दयजीव परमात्मनो ततो जीवादिल
 क्षणः परमात्म प्रतिपादितो भवति तदपीह प्रतिपादयितव्यं यद्येते विचिकित्सा मनोऽप्यस्तीत्येकेनाप्ये
 वाच्यतमस्य मितद्वेति श्रुत्या श्रुतेरभावात् तेषां न संभवतः कस्मादतपानं कर्म फलं यमोगः सह
 नस्य लोक इति लिङ्गात् तच्चैतनस्य सत्त्वमेव भवति नाचैतनाया बुद्धेः पितृत्वमिति चिद्वचने नद्वयोः पान
 दशयति श्रुतिः अतो बुद्धिदेव तत्त्वत्वात् संभवति अतएव देवतपरमात्मपदोपिन संभवति चेतनेपि
 परमात्मनि उत्तरतपाना संभवादत्र श्रुत्यो भिदा कर्मातीति संभवति तद्विद्योऽपि चेतनेषु दोषः अत्रिपदे गच्छेती
 त्येकेनापि अत्रिपदे बहूनां अत्रिपदे चारदर्शनादेव मेकेनापि विवक्ष्यता द्वैपिवेता बुद्धेयातां पहाजी वस्तवमि
 व निर्देशस्तथाप्यतिपाद्यत्र पिपिवतीत्युच्यते पाचयितव्यं पिपिवत्तु प्रसिद्धिदृशनात् बुद्धितत्त्वपरिग्रहे
 संभवति करणकं तेषां चारदर्शनादेव मिपचेतीति प्रयोगदर्शनात् तत्राद्यात्माधिकारेणैकोचित्वा दृतेपिवेतां
 पानानुक्तौ पादपाययितारौ कालक्षयिमाह यदेति नियतं सर्वभावि कृतिमत्वरूपमनुकूलत्वे कर्तृकमपि त्रैसा
 धारणायः कार्यतिसकरोत्येवेति मायादिति भावः अत्र प्रकृतिमुखायां प्रस्ये लक्षणमिष्टा स्वरूपः प्रस्यार्थः मुखः
 प्रहृमात्वनरलक्षणया पायने लक्ष्यमिति श्रुतः पूर्वपक्षेपिवेता विविकर्तृवाचिशतप्रस्येन बुद्धिजीवसाधारणका
 रकत्वं लक्ष्यमिमाह बुद्धीति एषां सिकाशानिपचेतीत्यात्मानेन कारकत्वं लक्ष्यं प्रकृतिस्वरूपेति भावः मुख्यं

किं तत्र संशयः किमिह बुद्धिर्जीवो निर्दिष्टा तु तजीव परमात्मनाविति यदि बुद्धिर्जीवो ततो बुद्धिप्रधाना कार्यकारणासे
 चातादिलक्षणजीवः प्रतिपादितो भवति तदपीह प्रतिपादयितव्यं यद्येते विचिकित्सा मनोऽप्यस्तीत्येकेनाप्ये
 स्तीति चेके पतद्विद्यामनुशिष्टत्वात् देवराणां मेखवरस्तीत्येति श्रुत्या दयजीव परमात्मनो ततो जीवादिल
 क्षणः परमात्म प्रतिपादितो भवति तदपीह प्रतिपादयितव्यं यद्येते विचिकित्सा मनोऽप्यस्तीत्येकेनाप्ये
 वाच्यतमस्य मितद्वेति श्रुत्या श्रुतेरभावात् तेषां न संभवतः कस्मादतपानं कर्म फलं यमोगः सह
 नस्य लोक इति लिङ्गात् तच्चैतनस्य सत्त्वमेव भवति नाचैतनाया बुद्धेः पितृत्वमिति चिद्वचने नद्वयोः पान
 दशयति श्रुतिः अतो बुद्धिदेव तत्त्वत्वात् संभवति अतएव देवतपरमात्मपदोपिन संभवति चेतनेपि
 परमात्मनि उत्तरतपाना संभवादत्र श्रुत्यो भिदा कर्मातीति संभवति तद्विद्योऽपि चेतनेषु दोषः अत्रिपदे गच्छेती
 त्येकेनापि अत्रिपदे बहूनां अत्रिपदे चारदर्शनादेव मेकेनापि विवक्ष्यता द्वैपिवेता बुद्धेयातां पहाजी वस्तवमि
 व निर्देशस्तथाप्यतिपाद्यत्र पिपिवतीत्युच्यते पाचयितव्यं पिपिवत्तु प्रसिद्धिदृशनात् बुद्धितत्त्वपरिग्रहे
 संभवति करणकं तेषां चारदर्शनादेव मिपचेतीति प्रयोगदर्शनात् तत्राद्यात्माधिकारेणैकोचित्वा दृतेपिवेतां

किं तत्र संशयः किमिह बुद्धिर्जीवो निर्दिष्टा तु तजीव परमात्मनाविति यदि बुद्धिर्जीवो ततो बुद्धिप्रधाना कार्यकारणासे
 चातादिलक्षणजीवः प्रतिपादितो भवति तदपीह प्रतिपादयितव्यं यद्येते विचिकित्सा मनोऽप्यस्तीत्येकेनाप्ये
 स्तीति चेके पतद्विद्यामनुशिष्टत्वात् देवराणां मेखवरस्तीत्येति श्रुत्या दयजीव परमात्मनो ततो जीवादिल
 क्षणः परमात्म प्रतिपादितो भवति तदपीह प्रतिपादयितव्यं यद्येते विचिकित्सा मनोऽप्यस्तीत्येकेनाप्ये
 वाच्यतमस्य मितद्वेति श्रुत्या श्रुतेरभावात् तेषां न संभवतः कस्मादतपानं कर्म फलं यमोगः सह
 नस्य लोक इति लिङ्गात् तच्चैतनस्य सत्त्वमेव भवति नाचैतनाया बुद्धेः पितृत्वमिति चिद्वचने नद्वयोः पान
 दशयति श्रुतिः अतो बुद्धिदेव तत्त्वत्वात् संभवति अतएव देवतपरमात्मपदोपिन संभवति चेतनेपि
 परमात्मनि उत्तरतपाना संभवादत्र श्रुत्यो भिदा कर्मातीति संभवति तद्विद्योऽपि चेतनेषु दोषः अत्रिपदे गच्छेती
 त्येकेनापि अत्रिपदे बहूनां अत्रिपदे चारदर्शनादेव मेकेनापि विवक्ष्यता द्वैपिवेता बुद्धेयातां पहाजी वस्तवमि
 व निर्देशस्तथाप्यतिपाद्यत्र पिपिवतीत्युच्यते पाचयितव्यं पिपिवत्तु प्रसिद्धिदृशनात् बुद्धितत्त्वपरिग्रहे
 संभवति करणकं तेषां चारदर्शनादेव मिपचेतीति प्रयोगदर्शनात् तत्राद्यात्माधिकारेणैकोचित्वा दृतेपिवेतां

57

पदेन ३

पूर्वत्र यस्यापि भोक्तृत्वेनास्तीत्युक्तं तदुपनोद्य पूर्वपक्षयति किं तावदिति अग्रिप्रकरणमतीतमिदं रुचेराह जीवोवेति
पूर्वपक्षे जीवोपासितः सिद्धोनेति विवेचयन्नस्मान्मिति फलभेदो दनवाहाभावाच्चीति पूर्वपक्षः सिद्धातस्तत्र स्मृतत्रय
वैरूपस्थापितकार्यमात्रेणोपासनादनुपपन्नः गुणश्चात्र स्मृत्यपेक्षे च नैव त्रिधापितं प्रमिदो दनगतं विनाप्यत्वं दृष्टे गोगा
शब्दस्य संनिहितगुणग्राह्यत्वात्तावत्तत्त्वस्य विनाप्यत्वेन भवनात्किं तावदिति नैव दोष इति तस्य संनिहितत्वादिति

किं तावत्ताम्रमशिरनेति कुतोऽग्रिप्रकाश इति प्रतिप्रसिद्धिर्भावी वा तावत्ताम्रा तयो रन्यः पिप्यत्वे स्वाहनीति दर्शनात्
परमात्मानं च तन्मोक्षिका कशीतीति दर्शनादित्येव प्रामाण्यं यथा तत्र परमात्मा भवितुमर्हति कुतश्चराचरप्रदण्डराच
रेदिष्टावरं नैव गमंस्त्वपेक्षे च न पिदाद्यनेन प्रतीयते तादृशस्य चाश्रय न परमात्मनो न्यः का त्स्यान्तात्ताम्रं भवति प
रमात्मानुविकारज्ञानमदरन्सर्वमतीत्यप्यप्यते न निरुचराचरप्रदण्डो नोपलभ्यते कथं सिद्धुचराचरप्रदण्डेन
त्वे चोपादीयते नैव दोषोऽस्त्यपेक्षे च न त्वेन सर्वं स्पष्टातिनिकायस्य प्रतीयमानत्वाद्दृष्टत्वात्तयोऽग्रिप्रकाशत्वात् दर्श
नाद्यन्तोपपत्तेः यत्परमात्मनोऽपि नास्तीति संभवत्तन प्रतीयमानाभिचाकशीतीति दर्शनादित्येव तावत् कर्मफलमो
गाद्यप्रतिषेधकमेतदर्थं न तस्य संनिहितत्वात् न विकारमस्य प्रतीयेषकं सर्वे वदंते पृ सद्यि स्थिति संसारकार
णत्वेन न संसारः प्रसिद्धत्वात् तस्मात्परमात्मैव दोषं भवितुमर्हति प्रकरणम् १ इत्युपरमात्मैव दाना भवितुमर्हति
यत्कारणं प्रकरणमिदं परमात्मनो न तावत् न सिद्धते वा विपश्चिदित्यादि प्रकृतप्रदण्डाच्चरार्थक इत्यादि दृष्टव्यं
निचयत्वात् न त्वेपरमात्मत्वात् गुणोपविष्टत्वात्ताम्रा नोदित इति जान ॥ कदवत्तुं ये वयस्य ते अतं विवतो स कृत
स्य लोके गतां प्रविष्टोऽपरमेषरा द्वे ब्रह्म्यान्तपोऽस्य विदो वदेति पंचाग्रयोऽप्ये च त्रिणाचिके ता इति ॥

ता

ति पिप्यत्वे स्वाहनीति भोगस्य पूर्वोक्तत्वादित्यर्थः अत्र तावत्ताम्रा तयो रन्यः पिप्यत्वे स्वाहनीति दर्शनात्
अतमवश्यं भाविकर्मफलं पित्तो भुजानोऽस्य कृतस्य कर्मणा लोके कार्यं देहे यस्य तस्य तेषां ध्या नमर्हतीति परार्थ
रुदयं परमं प्रेष्टुं तस्मिन्नागहनभोरूपायुदिरूपावातोऽग्रिप्रकाशितोऽप्येतानि विरुद्धो तो च त्रिणाचिके ता इति
चाग्रयः कर्मणाश्च वदेति त्रिणाचिके तोऽग्रिप्रकाशितोऽप्येतानि विरुद्धो तो च त्रिणाचिके ता इति वदेतीत्यर्थः नातिकेतवावाताम्रं ध्याय

किं तावत्ताम्रमशिरनेति कुतोऽग्रिप्रकाश इति प्रतिप्रसिद्धिर्भावी वा तावत्ताम्रा तयो रन्यः पिप्यत्वे स्वाहनीति दर्शनात्

शा
भा
६।

भोक्तृत्वमाविष्टकं न वस्तु तस्य उपायमाह तथा चेति यत्र विद्या काले चैतन्यं भिन्नमिव भवति तददृष्टत्वादिकं न वस्तु
ज्ञाते स्वरूपः तस्याहंतेष्वेतादिति वाक्यमेव गृह्यधिकरणविषय इति स्थितं अंतर उपपत्तेः उपकारसलविद्यावाक्यमुदाहर
ति य इति तदतिस्थानमसंति तेन त्रसणेन रूपयतोऽस्मिन्नतिमवर्त्तनीयत्वात् एव गच्छतीत्यर्थः दर्शनमूलोक्तित्वं
स्त्रीपक्षाभ्यां संशयमाह तत्रेति पूर्वत्रापि वेनादिति प्रथमं अतश्चैतन्यत्वात् नुसारेणाचरमश्रुतगदाप्रवेशादयो नोतास्तद्विद्वा
तथाचक्रुतिः यत्र चाश्रुतदिव्यत्वात् तत्रान्यत्राप्येति दित्वा तत्प्रदृष्टस्यादिव्यवहारवदविद्याविषये एव कर्त्तव्यादि
व्यवहारं दर्शयति यत्र न्यस्य सर्वमात्मैवाभूतत्वेन केषु दिव्यादिना च विवेकिनः कर्त्तव्यादिव्यवहारं वारयति अंतर उप
पत्तेः ॥ यथोक्तिरिति पुरुषो दृश्य तथैवास्मिन्नतिदो वाच्यत इत्यतः समभयमेतद्व्यतिरिक्तं यद्यप्यस्मिन्सर्वोदकं वा
सिंचितवर्त्तनीयवगच्छतीत्यादिश्रुते तत्र संशयः किमयं प्रतिविवात्मात्माधिकरणे निदिश्यते अथवा विज्ञानात्मो
तदेव तात्मेदिव्यत्वादिष्टा तावदेव शरीरितिके तावत्यामेक्षायां पुरुषप्रतिरूपशक्तिकुतः तस्य दृश्यमानत्वप्रसिद्धेय एवेति
रिति पुरुषो दृश्यत इति प्रसिद्धयुपदेशादित्यानात्मनो वाये निर्देशाशक्तियुक्तं सहित्तु सारूपं परं पञ्चसु विसेनिहितो भ
वत्यात्मशास्त्रास्मिन्नेन कुलो भवत्यादिन्यपुरुषो वाच्यतुष्टो नु ग्राहकः प्रतीयते रश्मिभिरेवोमिन्नानिष्ठितर
तिश्रुतेः अस्मत्त्वादीनां च देवतात्मन्यपि कथंचित्संभवात्तेश्वरः स्थानविशेषनिर्देशादित्येव ग्रामे इमं परमेश्वर
वाक्षिण्यंतरः पुरुष इहोपदिष्ट इति कस्या उपपत्तेरुपपद्यते हि परमेश्वरे गुणानां तमिहोपदिष्टमानमात्मत्वं तावन्म
त्यावाह्यापरमेश्वर उपपद्यते स आत्मा तत्त्वमसीति श्रुते रस्मत्त्वा भवत्वे च तस्मिन्नसकृत् श्रुतोऽप्युपपद्यते तथा परमेश
रानुरूपमेतदतिस्थानं यथा हि परमेश्वरः सर्वदोषैरस्ति प्रोपदतपा आदिश्रवणतथातिस्थानं सर्वेत्वे परहितमुपदिष्टं
तद्यद्यप्यस्मिन्सर्वोदकं वा सिंचितवर्त्तनीयवगच्छतीति श्रुतेः

पिरूपताति वाच्यत्वात् नुसारेणास्मत्त्वाद्यो ध्यानाय कल्पितत्वेन नेया इति दृष्टो तत्तेन सर्वं यत्तु यति ज्ञायात्मेति पूर्वपक्षे
प्रतिबिंबोपात्तिः सिद्धांते त्रसोपात्तिरिति फलं प्रसिद्धवदिति च तत्त्वत्वेनेत्यर्थः संभावनामात्राण्यपत्तोतरमाह विज्ञाना
त्मन इत्यादिना मनोव्रत्येति वदेत इत्येतीति वाक्येति पदधिरस्कृतात् न त्वार्थपरत्वमिति पूर्वपक्षः मनोज्ञे त्वयासी
तेमज इति पदस्य प्रत्ययपरत्वादिह च त्रसं त्ववाचेत्यन्वयेनेति पदस्योक्तिं संवेपिनो र्थपरत्वाद्द्वयमिति सिद्धांतयति पर

मेश्वर एवेति

६।

हास्यवर्णनं विवाकांतीवैश्वर्यपरं कृत्वा चिन्तितं अथुना कृत्वा चिन्तामुद्घाटयति अथुति अथुकावुद्धिविलक्षणं पद
 लक्ष्यते नेत्यर्थः सत्त्वं बुद्धिः का कृते सत्त्वशब्दश्चैव बुद्धिजीवो चेत्तुल्यं पदार्थः सादिस्यत आद नानिति पूर्वपक्षार्थस्तदा
 स्याद्युक्तबुद्धिभिन्नः संसारोपनिषद्येतन्नष्टसंसारो विवक्ष्यते किं तु ज्ञेयमित्यस्योपनिषदस्यार्थः अतिशयनिभश्चापम
 र्थायुक्त इति शेषः तावतामंत्रकात्वा मात्रेण एव प्रयोज्यस्य त्रसत्त्वात्तावेव नदिजीवबुद्धिभिन्न इति विवेकमात्रेण
 पसंहारो युक्तः भेदज्ञानस्य भावित्वा हेतुत्वा चेति भावः अविद्याविदुषिकि मपि स कार्य नाधे सतेन संपादयति

३१५

अथर आदहामुपोर्न निनेयस्यासाधिकरणस्य सिद्धौ ते भजने पं गीरद स्यात्सा सौ नान्यथा कात्वा तन्वा तपो
 रस्यः पिण्डत्वे सादृतीति सत्त्वमनश्च त्रयो भिवा कर्षी मनश्च त्रयो भि पृथगिति सत्त्वाद्ये तो मन्वत्ते त्रजा विनि स
 त्वशब्दो जीवः हेतुताशब्दः परमात्मनि यद्यु चे तत्तत्र मन्वत्ते त्रजाद्यु चो रतः कुराणशरी विषयतया पसिद्ध
 त्वा तत्रैव च कात्वा तन्वा तदेतत्सत्त्वेन स्य प्रयप्य तद्यु चो रतः शरीर उपद्रुहा सत्ते त्रसत्त्वात्ते सत्त्वत्ते त्रजा वि
 ति नाप्यस्याधिकरण्य पूर्वपक्षे भजने न स्यात्तत्र शरीरी हेतुतः कर्तृत्वाभात्तत्वादिना संसारोपनिषदोपनिष
 वक्ष्यते कथं तर्हि सर्वसंसारोपनिषदो नो तात्र सत्त्वभावेन तन्मात्रेण न स्यात्तत्र त्रयो भिवा कर्षी तो मनश्च त्रयो
 भिपृथगिति सत्त्वाद्ये च ना तन्मपि हेतुत्वादिमा विहीत्यादि अतिशयनिभश्चापमवतन्व विद्यो यमहा रदश
 नमेवमेवाकल्पते तावे तो सत्त्वत्ते त्रजा नदवा एव विदिकि च न रत आधे सत्त्वमर्तदकथं पुनरस्मिन्वा हेत
 यो रस्यः पिण्डत्वे सादृतिरिति सत्त्वमित्येव तन्मन्वत्ते भोक्तृत्वव च नमिष्यते तन्मन्वत्ते स्या सत्त्वस्य भाक्त
 त्ववस्था मीति प्रष्टव्यं किं तर्हि चे तन्मन्वत्ते त्रजा स्यात्तन्मन्वत्ते स्या सत्त्वभावात्ता च वक्ष्यामीति प्रष्टव्यं तातदर्थं सत्त्वा
 दिविजिघासनि सत्त्वभाक्तत्वाभावाद्योपपत्तिरिति हेतुत्वं भोक्तृत्वं सत्त्वत्ते त्रजा यो रित रत रस्य भावा विवे क
 कृते कल्पते परमाथ तत्त्वान्नान्न रणनि सभवनं चे तन् त्वात्त्वत्वे स्या विक्रियत्वाद्ये त्रजा विद्या प्रत्यय
 लानागिना सत्त्वा एव दपत्वादि तर्हः अविद्यानागकृतीति तर्हः जीवस्य त्रसत्त्वपरनिर्वा क्यमिति सत्ते त्रजा कृते कथ
 मिति बुद्धेर्भाक्तत्वात्तावता न्यात्रा त्रयुक्ति चित्तयामनः विदुनीयमित्याद उच्यते इति तदर्थं त्रसत्त्ववो धना च भो
 क्तृत्वमुपाधिमलकेन दिष्टं तो तर्हः वस्तुतो जीवस्याभाक्त्वे भोक्तृत्वधीः कथमित्यनेन आद रद्वीति चित्तादा न्य नक

स्थितवुद्धिः सत्त्वादि रूपेण विरल मन्वत्ते त्रजा विवेक मन्वत्ते त्रजा
 त्वमः सुखीदिरूपवृत्ति यत्किं न मन्वत्ते त्रजा

ॐ
आ
ॐ

किंचाद्यवधानात्प्राप्तिरप्यप्यः न च तेन स्वचतुष्पादशब्देन भवतीत्याह यथैव इति अस्तु तर्हि परेण दृश्यमानस्य
प्राप्तिमित्यत्राह न च इति कल्पनागौरवादित्यर्थः पुनरिष्टं न वक्ष्यते चेन्निति आह अस्मिन् दृष्ट्या करस्य विवक्ष्य
नायामदेशनमनुसृत्यैषा दृष्ट्या न्याय्यपत्तीत्यर्थः नो चेन्निरस्यति न चेति ज्ञातां धर्माणां दमित्यत्र विशेषणवत्त्वा
मित्यक्तेन च तरेव स्थानमित्युक्तमित्यर्थः दृष्ट इति अत्राविति शेषः ननु चक्षोः सूर्येणाप्यने सूर्योक्तमेतौति

यथोक्तिरिति प्रकृत्यति संनिधानात्तच्चक्षुषिदृश्यमानं प्रकृत्यमुपास्यते नोपदिशति नच स उपा
सना काले व्यापकं कंचित्प्रकृत्यं चक्षुः समीपे संनिधानात्पाका इति प्रकृत्यपित्तमस्य वशी वसना
शमन्येन नश्यतीति चक्रतिः व्याप्यमानो न वक्ष्यतत्वं दर्शयत्यसंभवा च तस्मिन् मृतत्वादीनां गुणानां
व्याप्यमाननिप्रतीतिः तथा विज्ञानात्मनोपि माध्यावणे कृत्वा शरीरेन्द्रियसंबंधं सति न च लक्षणावस्थि
तत्वं वक्तुं शक्यं न स्यात्तथापि नोपि दृष्टुं पक्षे व्याप्यमानादिदेशविशेषसंबंधं समानश्च विज्ञाना

यद्

नमः पश्यन् तत्त्वादीनां यत्नात्मा मसंभवाय ध्यायित्वा नात्मा परमात्मनो नन्य एव तत्त्वाण्यविव्याकर्मक
मकृतं तस्मिन् न तत्त्वमप्यारोपितं भयं चेत्पश्यन् तत्त्वाभित्वेनोपपद्येत संयतः सत्त्वाद्यश्चैतस्मिन्नने स्यात् ५
नृपपञ्चायवदेव तत्त्वमस्तु रश्मिभिरेषास्मिन्नातिष्ठित इति श्रुतेः यद्यपि चक्षुष्यवस्थानं स्यात्तथाप्यात्मसं
तावन्नसंभवति यथाग्रपत्वाद्देवतत्त्वाद्योपिन संभवंत्यतिप्रलयश्च वणादभरत्वमपि देवानां चिरकाला
वस्थानापेक्षमैश्वर्यमपि परमेश्वराय तजस्वाभाविक् भोषास्मादातः यवते भोषादेति सत्यं भोषास्मादपि १०
अदृश्यमस्तु हावति पंचम इति संज्ञात्वात् तजस्वात्परमेश्वर एवायमस्ति स्थाने प्रत्येतयः अस्मिन्नुपलक्षणात् १५
इति प्रसिद्धवदुपादानं शास्त्राद्यपेक्षं विहृदिष्यं प्ररोचनाद्यमिति व्याख्येयं अतर्थाभापि देवादिभिरुत्तमं
वाक्यं अमरादेवा इति प्रसिद्धिवाचितमित्याशङ्काद् अमरत्वमपीति भोषाभयेनास्मादीश्वराहायश्चलति अग्नि
अदृश्यत्वसंकार्यकुरुतः उक्तापेक्षया यंचमास्तुः समाग्रायुषानिकटेधावतीत्यर्थः ईश्वर एते दृश्यत इत्यु
क्तं तत्राह अस्मिन्निति दर्शनमनुभवः तस्य शास्त्रे अतस्मात्प्राप्तुमेव करणकल्पे निधानात्तथाचरेमस्मि
करणकविहृदनुभव उपासनात्तत्त्वयं उच्यते इत्यर्थः तस्मादुपकोशलविधौ वाक्यस्योपासनात्तत्त्वयं समन्व

तस्मिन्निशिहं श्रुतया मयिदेवादिषु तदुर्मन्त्राय देवनाग

देवतानि रासे हेतु नरमाद ये एधि कीति ईश्वरो न नियता अशरीरत्वाद्दृष्टवदित्युक्तं निरस्यति नैव दोषमिति नियम्या निरिक्त
शरीरशून्यत्वे वादेतः शरीरासे वेधित्वं वा आद्ये सदेरनियतरि नीवेकमिचारः द्वितीयस्तसिद्ध ईश्वरस्य स्वाविद्योपाजितस
वैतन्वेधित्वादित्याद यन्त्रियत्वेनैति सशरीरो निपते तिलोक्त इति मनुस्मृतौ तदुक्तं वस्तुतस्तु चेत्तज्ज्ञानिषा ज्ञान इत्य
यापारो नियमनेन व्यक्तिसत्त्वं तन्त्रियं तत्त्वतश्चाचित्यमायाशक्तेश्चिदात्मनः शरीरविनेवापपन्नं ननु देह नियत
जीवस्यान्यो नियता चेत्तस्याप्यन्यत्वनवस्थत्वात् आद तस्यापीति निरंकुशं सर्वं नियतत्वमीश्वरस्य श्रुतं तस्य निय
यं एधि वीनवेदेति च एधि वीदेव ताया अचित्तेयमंतर्गमिणां बुद्धदेवतात्मनो न्यमंतर्गमिणां दधीयति एधि वीदेव ताया इदम
स्मि एधि वीत्तात्मानं विज्ञानीया तथार हो अत इत्यादिष्वपदेशो रूपादिविहीनत्वात्परमात्मन उपपद्यते यत्त्वकार्य
करणात्परमात्मनो यमपि तत्त्वं नोपपद्यत इति नैव दोषः यात्रियत्वेन तत्त्वरागेव तस्य कार्यकरणात्तोपपत्तेः
तस्याप्यन्यो नियतेत्यनवस्था दोषश्च न संभवति भेदाभावाद्देहे हि सत्त्वनवस्था दोषोपपत्तिः तस्यात्परमात्मेवांतर्गो
मी नच स्यात्तं मत इमा भिलापात् २९ स्यादेतददृष्टत्वादयो धर्माः सात्त्विकस्त्विति कल्पितस्य प्रधानस्याप्युपपद्यते रूपादि
हीनतया तस्यैव भुयगा मादप्रतर्क्यमविज्ञेय प्रसुप्तमिव सर्वत इति हि स्मरंति तस्यापि नियतत्वं सर्वविकारकारणात्
इयपद्यते तस्याप्यथानमंतर्गमिणां ह्येसादी दिते नीशश्चेमित्यत्र निराकृतमपि सत्त्वाधानमिह दृष्टत्वादिव्यपदेशा संभवेन
पुनराशो वातेतत उत्तरमुच्यते नच स्यात्तं प्रधानमंतर्गमिणां ह्येभविमर्हति कस्मादत इमा भिलापात्तपद्यत्पदृष्टत्वा
दिव्यपदेशः प्रधानस्य संभवति तथापि न दृष्टत्वादिव्यपदेशः संभवति प्रधानस्याचेतनत्वेन तैरभुयगा माददृष्टो र
ष्टाश्रुतः अन्तामतो मंता विज्ञातो विज्ञाता इति हि काकशेष इह भवत्यात्मत्वमपि न प्रधानस्योपपद्यते यदि प्रधान
नमात्मत्व दृष्टत्वाद्यसंभवात्तर्था म्यभुयगा म्यंत शरीरस्य तर्था मी भवतु शरीरो हि चेत्तनत्वात्तदष्टाश्रुतामं
ता विज्ञाता च भवत्यात्मत्वं प्रत्यक्ता च संभवत्यस्तत्त्वं च धर्मा धर्मिण्येव भोगो ययतेः अदृष्टत्वादयश्च धर्माः शा
त्रेतरा नृमाने अतिवाध इति वा नवस्थेत्यर्थः यदा ईश्वराद्देहकत्वनया जीवस्य नियमत्वोक्तेः सत्यभेदाभावात्तानवस्थेत्यर्थः
प्रधाने मद्वादिक्रमेणा कथं प्रवर्तते इति तर्कस्याविषय इत्याह अप्रतर्क्यमिति रूपादिहीनत्वादविद्ये सर्वतो दित्त्वं प्रसुप्तमि
वतिष्ठति तदत्वादित्यर्थः अतदप्रधानं चेत्तनंतस्य धर्माणां मभिधानादिति हेत्वर्थः उत्तरसूत्रं निरसोपाशकामाह यदि यथा

शरीरस्य प्रसिद्धाः दृष्टत्वादिव्यपदेशाः
निरस्यति नैव दोषमिति नियम्या निरिक्त
तस्मिन् विनाशिते दोहो नरभोगानुपपन्न
तत्त्वः

हृदयारण्यकमुदाहरति यतिः अन्तर्यामिन्नास्योपनीयमानार्थमाह अत्रेति यः पृथिव्यामित्यादिना देवताः पृथिव्याद्या अपि
कृत्यसमपि नाश्रयतेतद्ययः सर्वेषु लोकेष्वित्यपि लोकैः सर्वेषु वेदेष्वित्यपि वेदैः सर्वेषु यज्ञेष्वित्यपि यज्ञैः सर्वेषु मूर्तेष्वित्यपि
भूतैः प्राणैः तिष्ठतित्यादियथात्मनीत्येतमप्यात्मचेद्विविधाः अक्षरीदस्य नियन्त्रित्वसंभवासंभवाभ्यां संशयः पूर्वत्र चरणा
दिस्यानन्वसिद्धये पृथिव्यादिस्थाननिर्देशो दृष्टान्तकस्तस्य दृष्टान्तवाक्यस्य अथ परत्वं मन्त्रादित्यसमाधीयते इत्याक्षेपसंगतिः

रूप

एतन्मन्त्रं च लोकं परं च लोकं सर्वं च भूतानि यो नरो यमयतीत्युच्यते अथ तेनः पृथिव्यां निष्ठं नृथिव्यां अंतरोयं पृथि
वी न वेदयस्य पृथिवी धारी वयः पृथिवी मंतरो यमयत्येव तज्ज्ञानं तर्था मयस्तरत्या यथा पि देवतमपिलोकमपिवेद
मधियत्तमपि भूतमप्यात्मचक्रं हि देवतं वक्ष्यते यमयति तां तर्था मीति अथ ते सकिमपि देवा यमिमान्नी देवतात्मा
वा कश्चित्किं वा प्राप्तिमायेत्यर्थः कश्चिद्योगी किं वा परमात्मा किं वा र्था तं किं चिदित्यपूर्वसेतादरीना त्मशाय
किं तावत् प्रतिभानि संज्ञाया अथ मिदं त्वात्संज्ञिना यमिदेवता र्था तं एव केनचिद्भूतव्यभिचि अथवाना निरु
पितं मर्त्यं तं शक्यमस्तीत्यभ्युपगंतुं मंतर्णमिदं ज्ञातुं तर्था मयस्तरत्या यथा पि देवतमपिलोकमपिवेद
मानी कश्चिदेवो तर्था मीत्यानया च अथ ते पृथिवी वयस्य यतनमपिलोको मनेतांति रित्यादि सच कार्यं करणवत्ता
नृथिव्या दीनं तस्मिन् यमयतीति युक्तं देवतात्मनो यमयित्वं यो गिनो वा कश्चित्किं वा सवी नृपवेषेन यमयि
तत्संज्ञाया अथ परमात्मा प्रतीयेत अकार्यं करणवत्तादित्येव यो मरुदस्य तर्था मयस्तरत्या यथा पि देवादि धु अथ ते परमात्मेव
स्यान्नमरुदस्य तत्संज्ञाया अथ तस्य दिव्यमात्मनो धर्मा र्दुर्निहिता मयाना हयंते पृथिव्यादि तावदपि देवादि
मेदभिर्ज्ञेयमस्तु चिकप्यजाते अंतर्लिख्यमयतीति परमात्मनो यमयित्वं यमं उपपद्यते सर्वविकार करणत्वे
सतिसर्वशक्त्यपपत्तेः एतत्तज्ज्ञानं तर्था मयस्तरत्या यथा पि देवादि धु अथ ते परमात्मेव

आतः पूर्व फलेनाम फलवत्त्वमवांतवफलं नृपलपलेनो अरोपादिः सिद्धाते प्रत्याख्यता नमिति मंतव्यमेवार्ह
चिद्वदन्यतोतरमाह आपवेति अनिश्चिताय फलाभावे नापत्त्यसंबेदाद्यन्वायेषादिनिभाषः तद्यच्च अयमेव देवः यमदेव
स्यायतने शरीरलोकात्तेनेति लोकाद्वयः जातिः सतीत्येव प्रकाशकमनस्यैवः उपक्रमदिनोतयांमेवमिच्छया दमेक
देवपत्तो न युक्त इत्युक्तेराह योगिनोवेति आरातक सिद्धस्यांतयामिते सिद्धसाधनकल्पनात्तेस्वात्रित्यसिद्धयवोत

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

आ
भा
६५

भेदः सत्यः किं न स्यादत आद एको हीति मोरवेण दुष्यो रदं पीयो चरत्वा सो भवादेक एव तद्गोचरः तद्गोचरस्य तु ददनात्मत्वात् आत्म
भेदः सत्यस्यार्थः ततश्चेति कल्पितभेदांगिकाय इदं ऐदा सर्वं पुन्यतरुत्पद्यः तस्यादेतं यामि ज्ञास्यता ते यत्र स्थातु समन्वितमिति सि
द्धे अदृश्यत्वादिगुणकोपयोगेः संज्ञकत्वात्पुनरादरति अथानि कर्मविद्याया अपरविद्योक्त्यनेतरं यथा निर्गुणं ताद्यते परासाद्यते
तामेव विषयोऽस्मानिदिशति यत इति अदृश्यं अदृश्यत्वात्नेद्विधेः अथाद्य कर्मद्विधेः गोत्रं वंशः वर्णं ब्राह्मणत्वादिनातिः चत्तु

एकोदिप्रत्यगात्मा भवति न द्वौ प्रत्यगात्मानौ संभवतः एकस्यैव तमे दद्यवहारउपाधिकृतो यथा चटाकाशो मसकाशरति
ततश्चात्तात्तेयादिभेदस्तयः प्रत्यक्षादीनि च प्रमाणानि सोऽप्यत्र न भवो विधिप्रतिषेधस्यासत्त्वेति सर्वमेतदुपपद्यते तथा
च अतिः एतदिहेतुमिव भवति तदितर इतरं पश्यतीत्यविद्यानिषेधे सर्वव्यवहारं दद्यादिति यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत् तत्केन के
पशेदिति विद्याविषये सर्वव्यवहारं वारयति अदृश्यत्वादिगुणकोपयोगेः १ अद्य परायणतदन्तरमधिगम्यते यतददृश्य
मशायमगोत्रवागमचत्तुः आत्र तदपाणिपादेति ते विभु सर्वगतं सुसूक्ष्मं तद्व्ययं यद्भूतयोनिपरिपश्यति पीरति प्रयतेतत्र सं
शयः किमप्यमदृश्यत्वादिगुणकोपयोगेः प्रधाने स्यादु तशरीर आदौ स्ति त्वरमेश्वर इति तत्र प्रधानमचेतनं भूतयोनिमिति
युक्तमचेतनानामेव तस्य दृष्टान्तेनोपादानाद्यर्थोऽप्यत्राभिः सज्जते रद्वृत्ते च यथा एधिबा मोषधयः संभवन्ति यथा सतः पुरुषा
केशलोमानितया त्तरात्मभवती ह मिश्रमिति तन्नागिनाभिः पुरुषश्च चेतना विदू दृष्टान्तेनोपात्तौ तेति च मोनरि केवल
स्य चेतनस्य तत्र सत्रयोनित्वं केशलोमयोनि त्वेवास्ति चेतनापि हितं यचेतनमूर्तान्ना भिशरीरे सत्रस्य योनिः पुरुषश्च मीर च
केशलोममिति प्रसिद्धमपि च सर्वत्रादृष्टत्वाद्यभिलाषसंभवेपि दृष्टत्वाद्यभिलाषा संभवात् प्रधानमभ्युपगतमिदं तददृश्यत्वा
दयोपमाः प्रधाने संभवन्ति न चात्र विरुपमानोपमः कश्चिदभिलषते

63

आत्रं पाणिपादेनान कर्मद्विधविकल्पितार्थः विभुं प्रभुं सुसूक्ष्मं इतैवत्वात् निष्ठाव्ययदाभ्यानाशपक्षयो निरासः भूता
नायोनिप्रकृतियत्पश्यति पीयः पदितस्तदन्तरं तद्विद्यापरेत्यन्तयः अदृश्यत्वादिगुणानो ब्रह्म प्रधानमोरणात्वात्संशयः सर्व
बुद्धत्वादीनां चेतनपर्माणमत्राकृतेरस्तु प्रधानमिति प्रत्युदाहरणान्न सर्वपक्षयति तत्रेति पूर्वपक्षे प्रधानाद्युपास्ति सि
द्धान्ते निर्गुणापीरतिफलं रुगिनाभिलिप्ता कीटः ततः त्वदेहात्सजत्युपसंहरति चेत्तर्धः सतो जीवतः ननु सर्वे निरस्ते प्र
धाने कथमन्यायते तत्राह अथिचेति

धा३

६५

शा.
भा.
६६

नायमन्तरशास्त्रोभूतयोनिपरामर्शानिपरविद्याधिराग्यतेनेनात्स्यात्तरस्यभूतयोनेरन्तरं पुरुषं वेदेत्यन्तरकल्पवेद्यत्वं तिरविगत्याश्रयं
मेवचस्त्वन्तपरामर्शदित्याह येनेति येनज्ञानेनात्तरंभूतयोनिमवर्तते पुरुषं वेदतो ब्रह्मविद्यायेमपायशिष्यायप्रवृत्तदित्युप
क्रमप्रमाणेहिमनः शुभोत्तरात्परतः परस्मै च मानः परोभूतयोनिरितिगम्यत इत्यर्थः तद्विषयं च नोत्तरशास्त्रार्थः कस्याश
मात्तानमिति वक्ष्यते इत्याह कथमिति परविद्येति समाख्यायितद्विषयस्य ब्रह्मत्वमित्याह अपिचेति ननु प्रधानविद्यापि
कारणविषयितास्येत्यत आह परापरविभागोहीति अनित्यफलत्वेनापराविद्यानिदित्वा मुक्त्यर्थेन ब्रह्मविद्याप्रोवाचेति वा
येनात्तरं पुरुषं वेदसमंशोवाचतां तत्त्वतो अस्मिन् विद्यामिति प्रकृतस्येवात्तरस्यभूतयोनेरदृश्यत्वादिगुणाकस्यवर्तमानत्वेन
प्रतिज्ञातत्वात्कथं तर्ह्युत्तरात्परतः परस्मै च विद्येति वक्ष्यते इत्युत्तरं सूत्रे तद्व्यासं पित्रात्रहोविद्येवेदितव्येते परापराचेति त
त्रास्माद्विदित्वत्वात्तद्विद्यामत्ताववीम्यपरप्राप्तदत्तरमधिगम्यत इत्यादितत्परस्याविद्यायाविषयत्वेनात्तरंभूत
परिपुनः परमेष्ठरादस्यदृश्यत्वादिगुणाकसत्तरं परिकल्प्येतनेयेपराविद्यास्यात्तरापरविभागोद्यये विद्ययोरभ्युद
यनिश्रेयसफलतयापरिकल्प्यते तच्च प्रधानविद्यानिश्रेयसफलाकेनचिदभ्युपगम्यतेतिसिद्धविद्याः प्रतिज्ञायेर
स्त्वत्तत्तरादुत्तयोनेः परस्य परमात्मनः प्रतिपाद्यमानत्वात् हेतुवत्तुविद्येवेदितव्येदनिर्दिष्टेकस्मिन्भूतवावृत्ति
तेसर्वोपदेवितातेभवतीतिचेकवित्तानेन सर्वज्ञानापेक्षासंवात्मके ब्रह्मणि विवक्ष्यमाणेन कल्पते तांच तन्मात्रेका
यने प्रधानेभोग्यतिमित्तेवाभोक्तरे अपिच स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्यां प्रतिष्ठापयन्वायं यज्येष्टुत्राय प्रादिति ब्रह्मविद्यां
प्राप्येनोपक्रमपरापरविभागोत्तराविद्यामन्तराधिगमनो दर्शयन्तस्या ब्रह्मविद्यात्वं दर्शयति सा च ब्रह्मविद्या समा
तरस्याः स्वातदधिगम्यस्या ब्रह्मत्वेवाधिताम्नात्

अ२

64

कशेषोक्तेरित्यर्थः अस्त्यप्रधानविद्यापिमुक्तिफलत्वेनपरेमत आह तचेति ननुयः सर्वज्ञस्येपरविषयउच्येतेरेषवा
केनतप्रधानविद्योच्यत इत्यत आह तिस्रश्चेति इतश्चभूतयोने ब्रह्मत्वमित्याह कथमिति अत्रैतन्मात्रस्यैकायनमुपादा
नन्तद्ज्ञानात्कार्यज्ञानेपितदकार्योणमात्मनानभवति एवजीवेतातेतदकार्यस्यभोग्यस्यज्ञानेनभवतीत्यर्थः ब्रह्मविद्या
शास्त्राच्चभूतयोनिर्ब्रह्मत्वाह अपिचेति सत्रस्याविद्यासर्वविद्यातां प्रतिष्ठासमाप्तिभूमिब्रह्मविद्यामुवाचे ब्रह्मणिसर्व
विद्यानाविद्याफलानां चोत्तर्भावाद्ब्रह्मविद्यासर्वविद्याप्रतिष्ठा ॥

६६

अत्र प्रधाने विरुध्यमानो संभावितो वाक्यशेषः प्रकृतश्रित्योक्ते ननु यरति पंचमं तात्पर्यं अत्राभूतप्रकृतेः प्रत्यभिज्ञानात्पु
 मातय रशः स्यात्कस्य न गतिमिने शूरस्य सर्वतत्वादिकमिमांसा अत्रोच्यते इति सैदिधेनुवाक्यशेषादिति न्यायेन सिद्धं तयति
 एवं प्रामांति चेत्तन्नाचेन नत्वेन सैदिधेनुवाक्यशेषः सर्वत इति वाक्यशेषादी शूरस्य निर्णय इत्युक्तं वाक्यशेषे भूतयोनेः प्र
 त्यभिज्ञानात्काभावादिति शक्यते नन्निति नन्निकर्तः प्रकृतिरिति सत्रेण प्रकृतेरपदान सत्तायापचमी स्मरणं दक्षिणाद

ननु यः सर्वतः सर्वविदितस्य वाक्यशेषो चेत्तन्ने प्रधानेन संभवति कथं प्रधानं भूतयोनिः प्रतित्तायते इत्यत्रोच्यते य
 पातदत्तरमभिगम्यते यत्तद्वेषमिदं दारशः स्यात्तद्वेषादियुक्तं भूतयोनिः प्रावयित्वा पुनरंते प्रावयिष्यत्य
 त्तरात्परतः पर इति तत्र यः परोक्षरात् प्रकृतः संसर्वतः सर्वविद्युत्प्रधानं प्रधानमेव त्वत्तरशः इति दिष्टं भूतयो
 निः यदा न यो निशब्देति भित्तवाची तदा या रीरोपि भूतयोनिः स्याद्गुणधर्मिणा भूतज्ञानस्यापार्जनं दित्येवं प्राप्ते
 भिद्योयते योयमदृश्यत्वादिगुणको भूतयोनिः स्यादस्य च रपवस्याज्ञा नरुनिकथमेतदवगम्यते धर्मोक्तेः परमेशु
 रस्य धर्मादोच्यमाना रपतेयः सर्वतः सर्वविदित इति नहि प्रधानस्याचेतनस्यागतीरस्य बोधाधिपतिश्चिरहः सर्व
 त्वे सर्ववित्त्वं वा संभवति न च दारशः इति दिष्टं दूतयोनेः परस्य वेत्तत्सर्वत्वे सर्ववित्त्वं च न भूतयोनि विषयमित्युक्तं म
 त्रोच्यते नैवं संभवति यत्कारणमत्तरात्संभवतीति विषयमिति प्रकृते भूतयोनिं जायमान प्रकृतित्वेन निदिश्यानेतरम
 पि जायमान प्रकृतित्वेनैव सर्वतं निदिश्याति यः सर्वतः सर्वविद्युत्प्रधानमयं तपः तस्मादेतद्दृश्यनी मत्रमत्रं च जाय
 त इति तस्मात्त्रिंशत्साम्येन प्रत्यभिज्ञानात्प्रकृतस्यैवात्तरस्य भूतयोनेः सर्वतत्त्वं सर्ववित्त्वं च धर्म उच्यते इ
 ति गम्यते अत्रात्तरतः परस्य जापिन प्रकृतादूतयोनेरत्तरात्तरः कश्चिदभिधीयते कथमेतदवगम्यते ॥

त्तरात्संभवतीति प्रकृतित्वेनोक्तात्तरस्य भूतयोनेर्वाक्यशेषेन स्यादिति प्रकृतित्वं लिङ्गेन प्रत्यभिज्ञानमस्तीति समाधत्ते
 अत्रोच्यते इति एतत्कारणं ब्रह्मसत्त्वात्मकं नाम रूपं स्थूलं तन्मंत्रं जीवादीत्यर्थः यदुक्ते पंचमं तात्पर्यं अत्राभूतप्रकृतेः प्रत्य
 भिज्ञानादचेतनत्वमितितज्ज्ञाद अत्रात्तरत इति ॥

शा.
भा.
६५

66

यति श्रवणमादिना

ननु तस्याभूतो तदात्मत्वे कथं तद्विचारेति शब्दकथे प्रकृष्टोपासनात्कर्मसमुच्चयानुष्ठानादस्मिन्काले सर्वशरीराद्यहितिगानोपायकं स
 वैश्राण्यनर्गते ज्ञानकर्मैदृशश्राण्यन्मकं समहित्तिगशरीरज्ञायेत न दृष्टव्यं सत्त्वान्नः सर्वभूतानां तदात्मत्वं युक्तमित्यर्थः स्वपत्न
 सत्त्वार्थमादृशस्मिन्मतेति कर्मसफलत्वेन तस्यातीदिकं तपश्चपुरुषव्यभिचसर्वोत्तरत्वरूपाय न्यासाच्चभूतयो नोत्तरेण वाको
 कुः को न श्रान्ता किञ्चयेति श्रान्तेवचयेति तापनाथं पदद्वयेनैव चापि निश्चयार्थं मुदालकमानामुः सोपि सम्यक् न वे
 दितेनेनोदात्तकेन स दृष्टव्यं च पति कैकेयं ज्ञानमागतोचुः श्रान्तान्मिति अथ शिखरतितमेव नोद्दीति राजा त
 तेष्वाधोतिनरासायैतान्यन्येकमप्युक्तं तस्मान्मानमुपास्यति कत्वमात्मानमुपास्यति तेन च प्राचीनशालादयः क्रमेण
 प्रमेकमवुः दिवमेवादेवैशानरं वेद्यि श्रादित्यमेवादेवेद्यि वायुमेवाकाशमेवाप एव द्यिवीमेवादेवेद्यीति तनो राजा युस
 विक्रमपुरुषस्यापि सर्वभूतानां तदात्मत्वं संभवति प्राणान्मना सर्वभूतानां सध्यात्ममवस्थानात् अस्मिन्मते पुरुष एव देवि
 तेवैश्वकर्मैवादि सर्वरूपेण न्यासः परमेश्वरप्रतिपत्तिदेत रिति व्याख्येयं वैशानरः साधारणशब्दविशेषात् २४ को न श्रान्ता
 किञ्चयेति श्रान्तानमेवमेवैशानरं संप्रत्यक्षितमेव नोद्दीति चोपक्रम्य युसूर्यवाद्याकाशवारिद्वितीयो नोत्त
 जस्तदिग्गणयोगमेकैकोपासननिदया सद्दीति भावमुपदिश्य श्रान्तायते यत्नेन मेवेष्टादेशमात्रमभिविमानमा
 त्मानं वैशानरमुपास्ते स सर्वे षलोकेषु सर्वेषु भूतेषु सर्वेषु आत्मस्वप्नमज्ञितस्य दवाप तस्यात्मनो वैशानरस्य मदेव स
 तेजाश्च त्रिविधरूपः प्राणा एव गत्मी त्मासेदो वद्ग्लोचनिरेवरधिः द्यिवेव पादावुर एव वेदितो मानिवर्हिर्द
 यगाई पताम नो न्वादाय च न श्राप्यमादवनी य इत्यदि तत्र संशयः किं वैशानरशब्देन ज्ञातरोयिरूपदिश्यत इतम
 तोमिरयत नदभिमानिनी देवता अथवा शरीरश्राद्धे स्तिरमेश्वर इति किं पुनरत्र संशयकारणं वैशानर इति ज्ञात रभू
 ताधिदेवतानां साधारणशब्दयोगादात्मेति च शरीरपरमेश्वरयोस्तत्र कस्यापादानं न्यायकस्य वादानमिति भवति
 ण्दीनां घण्टाया क्रमेण स्वनेन स्वविश्वरूपत्वदृष्टवत्मी त्मत्ववद्ग्लोचनरधित्वप्रतिष्ठात्वात् एतन्निधाय भवने यदि मामप्यु
 यस्यादिषु भगवतो वैशानरस्यागधेव प्रत्येकं वैशानरत्वरूपेण वैपुल्यदा क्रमेण मर्पयानोपत्तप्राणोक्तम्यादेव विरिगा
 त्ववस्तिमेदपादशेषाभूतानां सुरिति प्रत्येकापासवतिटिवातेन तत्त्वगुणको गुलोको स्यात्मानो वैशान्मस्य मद्दीविश्वरूपत्वम
 णाकः स्योयस्य च त्वमितेव गुण्यादीनां मर्थादिभावमुपदिश्य समस्तवैशानरान्निधिराम्यायते यत्नेन मिति अभिमुखे
 नापरात्तनयाविश्वमिमीनेनाज्ञातोत्वमभिविमानः ते सवैतैमने उपासकः सवेत्रभोरंभुंके रमृयः लोकाभरादयो भूतानि शरी
 राणां तनो नोत्तारतिभेदः सद्गतेनः कांतिधस्युलोकसमसनेनाः विद्यानिरुपाणिचस्य सवस्ययमशुक्लपेषनीले ति क्तः

सर्वभूतानां तदात्मत्वं युक्तमित्यर्थः स्वपत्न
 सत्त्वार्थमादृशस्मिन्मतेति कर्मसफलत्वेन तस्यातीदिकं तपश्चपुरुषव्यभिचसर्वोत्तरत्वरूपाय न्यासाच्चभूतयो नोत्तरेण वाको
 कुः को न श्रान्ता किञ्चयेति श्रान्तेवचयेति तापनाथं पदद्वयेनैव चापि निश्चयार्थं मुदालकमानामुः सोपि सम्यक् न वे
 दितेनेनोदात्तकेन स दृष्टव्यं च पति कैकेयं ज्ञानमागतोचुः श्रान्तान्मिति अथ शिखरतितमेव नोद्दीति राजा त
 तेष्वाधोतिनरासायैतान्यन्येकमप्युक्तं तस्मान्मानमुपास्यति कत्वमात्मानमुपास्यति तेन च प्राचीनशालादयः क्रमेण
 प्रमेकमवुः दिवमेवादेवैशानरं वेद्यि श्रादित्यमेवादेवेद्यि वायुमेवाकाशमेवाप एव द्यिवीमेवादेवेद्यीति तनो राजा युस
 विक्रमपुरुषस्यापि सर्वभूतानां तदात्मत्वं संभवति प्राणान्मना सर्वभूतानां सध्यात्ममवस्थानात् अस्मिन्मते पुरुष एव देवि
 तेवैश्वकर्मैवादि सर्वरूपेण न्यासः परमेश्वरप्रतिपत्तिदेत रिति व्याख्येयं वैशानरः साधारणशब्दविशेषात् २४ को न श्रान्ता
 किञ्चयेति श्रान्तानमेवमेवैशानरं संप्रत्यक्षितमेव नोद्दीति चोपक्रम्य युसूर्यवाद्याकाशवारिद्वितीयो नोत्त
 जस्तदिग्गणयोगमेकैकोपासननिदया सद्दीति भावमुपदिश्य श्रान्तायते यत्नेन मेवेष्टादेशमात्रमभिविमानमा
 त्मानं वैशानरमुपास्ते स सर्वे षलोकेषु सर्वेषु भूतेषु सर्वेषु आत्मस्वप्नमज्ञितस्य दवाप तस्यात्मनो वैशानरस्य मदेव स
 तेजाश्च त्रिविधरूपः प्राणा एव गत्मी त्मासेदो वद्ग्लोचनिरेवरधिः द्यिवेव पादावुर एव वेदितो मानिवर्हिर्द
 यगाई पताम नो न्वादाय च न श्राप्यमादवनी य इत्यदि तत्र संशयः किं वैशानरशब्देन ज्ञातरोयिरूपदिश्यत इतम
 तोमिरयत नदभिमानिनी देवता अथवा शरीरश्राद्धे स्तिरमेश्वर इति किं पुनरत्र संशयकारणं वैशानर इति ज्ञात रभू
 ताधिदेवतानां साधारणशब्दयोगादात्मेति च शरीरपरमेश्वरयोस्तत्र कस्यापादानं न्यायकस्य वादानमिति भवति
 ण्दीनां घण्टाया क्रमेण स्वनेन स्वविश्वरूपत्वदृष्टवत्मी त्मत्ववद्ग्लोचनरधित्वप्रतिष्ठात्वात् एतन्निधाय भवने यदि मामप्यु
 यस्यादिषु भगवतो वैशानरस्यागधेव प्रत्येकं वैशानरत्वरूपेण वैपुल्यदा क्रमेण मर्पयानोपत्तप्राणोक्तम्यादेव विरिगा
 त्ववस्तिमेदपादशेषाभूतानां सुरिति प्रत्येकापासवतिटिवातेन तत्त्वगुणको गुलोको स्यात्मानो वैशान्मस्य मद्दीविश्वरूपत्वम
 णाकः स्योयस्य च त्वमितेव गुण्यादीनां मर्थादिभावमुपदिश्य समस्तवैशानरान्निधिराम्यायते यत्नेन मिति अभिमुखे
 नापरात्तनयाविश्वमिमीनेनाज्ञातोत्वमभिविमानः ते सवैतैमने उपासकः सवेत्रभोरंभुंके रमृयः लोकाभरादयो भूतानि शरी
 राणां तनो नोत्तारतिभेदः सद्गतेनः कांतिधस्युलोकसमसनेनाः विद्यानिरुपाणिचस्य सवस्ययमशुक्लपेषनीले ति क्तः

ततमरिस्वरति अत्यशक्तेरित्यर्थः यथा कश्चिद्व्यवस्थितस्य सर्वोत्तमप्रकटनार्थं सदस्यमिति सामान्यतितत्त्वत्रनादिकमात्मने
 विवर्तति अपत्यत्वात्तथेदापीत्याद अदमत्रमिति वृत्तिकृत्वात्तादृशयति अन्ये पुनरिति एव सर्वभूतान्तरात्मासूत्रात्मापनस्यादूत
 योनेर्नायते इति प्रत्ययत्वे नदिराग्यगर्भस्यात्र नायमानत्वेनोपन्यासादित्यर्थः निरदि तद्वोचदित्यर्थः अग्निपुंलोकः यस्य स
 मिद्वयः सूर्यः सोऽपि पुंलोकः अस्ति स्यादन्तायतेरित्यर्थः तस्यादित्येव समिदित्वात् अतोऽपि सृष्टिरेव वाच्यं न रूपमि

तन्मदिरिस्त्रा नापि प्रधानस्याप्येकूपमासः संपवतिसर्वभूतान्तरात्मान्वासे भवति तस्यात्परमेश्वर एव भूतयोनिः नेतरा
 विनिगम्यते कथं न भूतयोनेर्यथैकूपमासः सति गम्यते प्रकरणादेशेति च प्रकृतानुक्रमेण दूतयोनिदिप्रकृत्यैतस्या
 जापने प्राणापसर्वभूतान्तरात्मातिवचने भूतयोनिविषयमेव भवति यथा प्राणापसर्वभूतान्तरात्मापि स एव ददेदागा
 यारगतिवचनमुपाध्यायविषयं भवति तद्वत्कथं पुनरहणत्वादिरागकस्य भूतयोनेर्विषयवत्त्वं संप्रति सर्वात्मा
 न्विविदयेदमृचते नतद्विषयवत्त्वविवदयेत्तदोषः प्रहसत्रमदमनादेशादिवत् अन्ये पुनर्मन्यते नायं भूत
 योनेरूपोपमासः नायमानत्वेनोपन्यासात् एतस्मान्नायते प्राणापसः सर्वे विपश्चिन्तवायुर्मातिगर्भा इष्टिवीवि
 श्वस्य धारिणीति हि प्रवृत्तशरणदिष्टिचिन्तितत्त्वज्ञानं ज्ञापमानं निरदि तदन्तराधिचनत्वादग्निः समिधो यश्च सूर्य इत्येव
 मादि अतश्च सर्वोऽप्यो रसज्जोतवमन्ते जापमानत्वेनैव निर्दिश्यन्ती देवकथमकस्मादेतन्नाले भूतयोनेरुपमुपन्य
 सेत सर्वात्मन्मयि सर्वादिपरिस्माप्योपदेस्यति प्रकृष्येवेदं विष्णुकर्ममार्गदत्ता अनिष्टत्वेऽप्यत्रैतन्नाशरीरमापना
 यतेर्जन्मनिर्दिष्टमानमुपलभामहेदिराग्यगर्भः समवर्तताये भूतस्य जातः एतिरेकप्राप्तिर सदाधार इष्टिवीयामु
 तेमां कस्मैदेवायदविषाचिथै समवर्तते तज्जायत इत्यर्थः तथामुच्यते शरीरी प्रथमः सवै प्रकृष्ये चते आदिकर्तृसम्भ

मेति१

तिभावः यदकमयि सहेतुत्रभूतयोनेः सर्वात्मन्विवर्तितमिति तत्रेकमद सर्वा तानात्रस्याये समवर्तते इति ॥
 तन्मपीति ननुदिराग्यगर्भस्य जन्मात्रानुक्ते कथमत्रवक्तव्यं तत्राद अतीति अथ समवर्तते तज्जातः सन्भूतप्राप्तस्यैकः
 यतिरीश्वरप्रसादादभवत्प्रसूतात्मा यामिमा इष्टिवीच स्यात्सर्वमप्ययत्कृषा ह्यस्य प्रजापति संज्ञाति सर्वनामत्वभावेन स्या
 इत्ययोगादेकारलोपनेकलो देवाय प्राणत्मानेद विषाचिथै मपरिचरेमिति चारण्यकतमपकोदेव इति प्राप्तिरिति कृतः यदे

सर्वं सृष्टिरेव वाच्यं न रूपमि
 तस्य दयं ज्ञानं स एव कस्मैदेवाय तथैव पक्वैरेव सर्वं सृष्टिरेव वाच्यं न रूपमि
 तस्य दयं ज्ञानं स एव कस्मैदेवाय तथैव पक्वैरेव सर्वं सृष्टिरेव वाच्यं न रूपमि

पृ.
आ.
६६

जादरसापिधानार्थविशेषकत्वेनेति चेन्न अस्तत्त्वनापत्तेः ईश्वरस्यानन्तादाजत्वाद्विशेषः सत्त्वेव ध्यानार्थमुच्यतामित्याह कार
णान्वयिदिति लिंगमनराण्यार स सर्वेश्विन्यादिनापद्याप्रोविदित्प्रामिणीकान्तत्वेदृष्टते एवेहास्पदिदृष्टमर्थः न न्वसदयोपेयमपि
स्तुतिर्भावाच्च मूल अन्वपदेत्याशङ्काह यद्यपिस्तुतिरिति नद्यापीति षट्संयतः पठति स्तुतित्वमपीति पुनर्इत्यादिरु

अग्रास्यं घुमेदिति ई
दशत्रै नो व्यात्मकं
रूपं स्मर्यते यस्याप्य

कारणत्वात्कारणस्यदिसर्वाभिः कार्यगताभिरवस्थाभिरवस्थावत्वात्तद्युलोकाद्यवयववत्त्वमप्यप्युते समवेष्टलोकेषु
सर्वेषुभूतेषुसर्वेष्वान्मस्वन्नमतीतिचसर्वलोकाद्याद्येफलेभ्यमागोपरमकरणापरिग्रहेसंभवति एवंहास्य
सर्वेषामानःप्रहयंतरिति तद्विदःसर्वेषांप्रदादश्रवणाकांक्षान्नात्माकिंज्ज्ञेतिचात्मब्रह्मशब्दाभ्यामुपक्रमइत्येवमतानि
ब्रह्मलिंगानिपरमेश्वरमेवगमयंति तस्मात्परमेश्वरएववैश्वानरः सपर्यमाणमनुमानेस्पादिति २५ इतश्चपरम
ेश्वरएववैश्वानरः यस्मात्परमेश्वरस्यैवं प्रियासंघोर्महानाभिश्चरहोतिहितिः सपर्यश्चक्षुर्दिशः आत्रेतस्मैलोका
त्मनेनमश्ति तत्सपर्यमाणोरूपमूलभूतांश्रुतिमनुमापयदस्यवैश्वानरशब्दस्यपरमेश्वरपरत्वेननुमानेलिंगा
मकंस्पादित्यर्थः इतिशब्दोदेत्वर्थोयस्पादिदंगमकतस्पादेष्वैश्वानरः परमात्मैवेत्यर्थः यद्यपिस्ततिरियेतस्मै
लोकात्मनेनमश्ति स्तुतित्वमपिनासतिमूलभूतवेदवाक्यैसम्पुगीदृशेनरूपेणसंभवतिघोर्महानेयस्यविश्रावदं
तिवैवैनाभिचक्षुर्द्यौचनेत्रेदिशः आत्रेविद्विषादेतिहितिचुसोर्वित्पात्मासर्वभूतप्रणेतैवेनातीयकाचस्मृतिरि
दोदादतंवा शब्दादिभ्योतः प्रतिष्ठानात्रेतिचत्रतथारक्ष्यपदेशादसंभवात्सुखसुषुप्तिचैत्रमधीयते २६ अत्राह
न परमेश्वरोवैश्वानरोभवितुमर्हति कुतः शब्दादिभ्योतः प्रतिष्ठानाच्चशास्त्रावद्वैश्वानरशब्दानपरमेश्वरसंभवति
अर्थात्तेरुक्तत्वात् तथाप्रियातःसपषोप्रिवैश्वानरइत्यदिशब्दादुदयगादेपत्यस्याद्यत्रिनेताप्रकल्पनं तद्यद्वक्तृप्रय
ममागच्छेत्तदोमीयमित्यादिनाचप्राणहृत्यधिकरणानासंकीर्तनमेतेभ्योदेतभ्योनाठरोवैश्वानरः प्रयेतव्यः

त्ये

येणस्वतिर्नरमात्रेण कर्तुमशक्या विनाश्रुतिमित्यर्थः सतारूपेण स्तुतिर्मेभवात्तासदाशेष इति भावः शब्दादीनां गतिं वक्तुं
 सिद्धांतमाक्षिप्य समाधत्ते शब्दादिभ्य इति स एषाग्रिर्वैद्यानर इत्यग्रिरहस्ये वैद्यानरविद्यायां क्रतो मिश्राह ईश्वरे न सं
 भवतीत्यन्वयः स च स्यादिशब्दाद्येमाह आदिशब्दादिति भक्तमन्त्रे होमसाधने तेन प्राणग्रिहोत्रकार्यमित्यर्थः ॥

प्रवेमुपक्रमस्यादृष्टत्वादिसाधारणार्थमेषवाक्येषामसर्वज्ञादिलिङ्गेन त्रयमिति प्रत्यक्षमुक्तं तदद्वैताप्युपक्रमस्यासाधारणवैशानरशब्दस्य
वाक्यशेषस्यासाधारणत्वलिङ्गेन नादरनिष्ठत्वमिति दृष्टान्तेन सर्वपक्षयति किं तावदित्यादिना पूर्वोत्तरपक्षयोः नादरव्यसामेधोनेन
सं पदयते तदत्रेयेन पक्षेने सोयं पुरुषेशरीरंतरस्तीत्यर्थः पक्षोत्तरमाह अग्रिमात्रेवेति विश्वस्य भवनाय वैशानरमग्रिमद्वेकेनेचि
द्रास्यदेवा अकृतावक्तवतः स्वर्गादेषां नववदभादित्यर्थः स्यादेवानरश्च नखगः हियस्मात्कं सुखशदेभुवनानां राजा वैशानरः
भिमात्वाधीरस्येति भिर्भीरीश्वरः तस्यानस्य वैशानरस्य समतौ च यस्याम तस्यास्मदि यथापुममतिर्भवतित्यर्थः यदत्र पण्यरुचि

किं तावत्प्राप्तेनादरो गिरिति कुतस्तत्र दिविशेषेण क्वचित्तायोगोदृष्टते अयमग्रिवैशानरो यो यमेतः पुरुषेयेनेदमत्र पच
ने र्गददमयतरमादौ अग्रिमात्रेवास्यात सामान्येनापि प्रयोगदर्शनात् विश्वस्य अग्रिभुवनाय देवा वैशानर केन मद्रा
मकृतावत्त्रिमादौ अग्रिशरीरावा देवतास्यात तस्यामपि प्रयोगदर्शनात् वैशानरस्य समतौ एव मराजदिकं भुवनानाम
भिर्भीरित्यवमासायाः स्तुते देवतायामेव यथा युपेतायां संभवाद्यात्मशब्दसामानाधिकरण्यत उपक्रमवकोन आत्मा
किं त्रयेति केवलतात्मशब्दप्रयोगादात्मशब्दवशेन वैशानरशब्दः परिणपरित्यजेत तयापि शरीरआत्मास्यात तस्य
भोक्तृत्वेन वैशानरमनिकर्षात्मादेशमात्रमिति च विशेषणस्य तस्मिन् यथापि परिच्छिन्नं संभवात्तस्मात्त्रेसुरो वैशानरश्चो
वशामे ततश्च मयात वैशानरः परमात्मा भवितुमर्हतीति कुतः साधारणशब्दयोर्विशेषः साधारणशब्दविशेषः
यद्यप्येतावुभाव्यात्मवैशानरशब्दोसाधारणशब्दो वैशानरशब्दस्तु त्रयस्य साधारणः आत्म शब्दश्च ह्यस्य ते यथापि वि
शेषोद्दृष्टते येन परमेश्वरत्वे तयो रभ्युपगम्यते तस्यैवा एतस्यात्मनो वैशानरस्य मूर्दैवसु तेजा इत्यादिः अत्र
दिपरमेश्वर एव शुभं देत्वा दिविशिष्टो दृष्टातयतः प्रत्यगात्मत्वेनाप्यत्यन्त आद्यानायतिगम्यते ॥

वदन्तस्तेतरमाह अथेतादिना आत्मावैशानरश्चिप्रतेरित्यर्थः केवलत्वेवैशानरशब्दशून्यत्वे अत्र नादरो वैशानरश्चि
मात्रं प्रवेपक्षः प्राणाग्निदोत्रेमाधारत्वलिङ्गात् तस्यैव दृष्टाणित्वादात्मत्वं अस्यामुत्तर्यत्वादिकल्पनया दृष्टत्वाद्भूतत्वमिति
धोयंमिहोतयति ततश्च दमिति साधारणश्च अत्रैकं यक्रमस्योविशेषात्पचमक्रतमात्रेनेकाशरीरलिङ्गात्सर्वात्मकेष
रपरत्वेयुक्तं नचरमक्रतकल्पितहोसाधारत्वलिङ्गेन नादरपरत्वमित्यर्थः ननु निर्विशेषस्य कुतो विशेष इत्यत आह अत्र

साधारणशब्दविशेषात् ४

अत्र नादरो वैशानरश्चि
मात्रं प्रवेपक्षः प्राणाग्निदोत्रेमाधारत्वलिङ्गात् तस्यैव दृष्टाणित्वादात्मत्वं अस्यामुत्तर्यत्वादिकल्पनया दृष्टत्वाद्भूतत्वमिति
धोयंमिहोतयति ततश्च दमिति साधारणश्च अत्रैकं यक्रमस्योविशेषात्पचमक्रतमात्रेनेकाशरीरलिङ्गात्सर्वात्मकेष
रपरत्वेयुक्तं नचरमक्रतकल्पितहोसाधारत्वलिङ्गेन नादरपरत्वमित्यर्थः ननु निर्विशेषस्य कुतो विशेष इत्यत आह अत्र

पुरुषमपीत्यादिसूत्रशेषेणाचष्टे यदिचकेवलमिति ईश्वर्यतीकलोपाधित्वभूतश्रुतीविवक्षेततदेतिशेषः यद्यः पुरुषः शक्तिः
सपद्यमि वैश्वानरशक्तितन्नादयोपाधिक इति श्रुत्यर्थः यो वेदसमर्पे च भुंक्त इत्यर्थः पुरुषत्वं शक्तिमत्त्वे तन्नादरस्यानेत्य
त्वापादोत्तरे पुरुषविधत्वं देहाकारत्वे तस्य नेत्याह येनिति ननु जाठरस्यापि देहत्वापित्वात्तद्विधत्वं स्यादित्यत आह पुरु
षविधत्वं च प्रकरणादिति न देहत्वापित्वं पुरुषविधत्वं किं विराट् देहाकारमधिदेव पुरुषविधत्वं मध्यात्मचोपासकम्
हृदि च उक्तं तेन संगे संपन्नत्वमीश्वरस्य पुरुषविधत्वं मित्यर्थः ईश्वरस्यांगे संपत्तिर्वैद्यने एवेनाठरंतिरस्यति अतएवे

यदि च केवलपवनादरोविवक्ष्यत पुरुषे तः प्रतिष्ठितत्वे केवलं तस्य स्यात् न त्वपुरुषत्वं पुरुषमपि चैनमधीयते
 वा न मनोऽपि नः स एषोऽग्निर्वैश्वानरो यज्ञरुषः स यो देतमवमग्निर्वैश्वानरपुरुषविधं पुरुषे तः प्रतिष्ठितं वेदेति पर
 मेश्वरस्य तत्सर्वात्मत्वात् पुरुषत्वं पुरुषे तः प्रतिष्ठितत्वे चोभयमप्युच्यते चेत्तपुरुषविधमपि चैनमधीयत इति
 पुरुषविधत्वमपि सत्त्वात् पुरुषेति तेषामेषोऽर्थः केवलं नादरपरिग्रहे पुरुषे तः प्रतिष्ठितत्वं केवलं स्यात् न पुरुषविधमपि चै
 नमधीयते वा न मनोऽपि नः पुरुषविधं पुरुषे तः प्रतिष्ठितं वेदेति पुरुषविधत्वे च प्रकरणाद्येदधिदेवतेषु
 मूर्हत्वादियथिवी प्रतिष्ठितत्वं भेदं यच्चाद्यात्मं प्रसिद्धं मूर्हत्वादिसिद्धकप्रतिष्ठितत्वात् तत्परिग्रहे अतएव न
 देवताभूतं च २० यत्पुनरुक्तं भूताग्रपिमंत्रवर्ण्युलोकादि संवेद्यदर्शनात् मूर्हत्वात् तस्मात्तज्जाहत्याद्यवयवकल्पनं
 तस्यैवमविद्यातीतितत्त्वरीराया देवताया वाप्येष्वर्थयोगादिति तत्परिग्रहे न च मंत्रोच्यते अतएवोक्तं भूतो देवताभूतदेव
 तावैश्वानरः तथा भूताग्निरपि त्वैश्वानरः न हि भूताग्नौ स्यात्प्रकाशमात्रात्मकस्याग्नौ मूर्हत्वादिकल्पनोपपद्य
 ते विकारस्य विकारांतरात्मत्वं संभवात् तथा देवतायाः सत्यप्येष्वर्थयोगे न च मूर्हत्वादिकल्पना संभवत्प्रकारात्
 तात्परमेश्वराधीनैश्वर्यत्वात् आत्मशब्दसंभवस्य सर्वेषु पुरुषेषु स्थित एव सौत्वादण्यविशेषेनेति निः २६ सर्व
 जादराग्राणाधिको वा परमेश्वर उपासा इत्युक्तं सतः प्रतिष्ठितत्वाद्यनरोपेन रदो नोत्

ति सत्रे व्यासुष्टे यत्पुनरित्यादिना शुभं कृत्वादिः सर्वलोकोपलभ्यमानं सर्वपापदाहः आत्मब्रह्मशास्त्रोपक्रमः उक्तहेतवस्तान्वसारयति नदिभूताग्रित्यादिना योभासुनेति सत्रेनेश्वरदृष्ट्या महिमोक्त इति भावः प्रवेष्टमग्निवैश्या नरशब्दाव्याख्या रत्नकावित्तुक्तमधुना प्रतीकोपाधियदिना गनस्त्रिदशपरुषाकारस्य भगवतो वैश्या नरस्याध्यात्ममूर्हादितुत्तुकोत्ते

ॐ जाट्याग्रिप्रतीकोऽ

संयोगे संपाद्योपास्यत्वांगीकारेऽपि नष्टादिविशेषः प्रादुर्भूतो
रीत्यरेयोगहत्याभ्यात्वादेतस्य नादेनां च तत्र संभवादित्थ
दशात्तादपीति

वातसनेपिनामधिरुपे सप्रपंचं वै शानरविषामुत्कासयोदैतमग्निवैशानरं प्ररुषविधं प्ररुषेतः प्रतिष्ठितं वेदससर्वत्रात्रमती
 मर्कंदेहानस्थत्वेनादरे संभवति प्रसिद्धेति तादृशेति अत्र सत्रे अदिषदेनैवातः प्रतिष्ठानस्य ग्रदे संभवति प्रयुमक्तिः साधार
 णानिगतत्वेनातनायाशाद्यादिवत्तादिदमपि जादरे गमयतीत्यभ्युचयः यद्यपि युमर्हत्वादिविशेष इत्यपक्षपाती हेमाधार
 तादिनादरे पक्षपातीति भोने संमतयोपि पारमेश्वरे विशेषो जादरेण संभवतीति वक्तव्यं तत्राह अथवेति एवमुक्तं

चां तथोक्तः प्रतिष्ठानमपि अयत्ने प्ररुषेतः प्रतिष्ठितं वेदेति तच्च जादरे संभवति यदपुक्तं मर्हत्वेन जादरे विशेष
 षात्कारणीयं रमात्मा वै शानर इत्यत्र मः कुतो द्युष निर्माणाय दुभयपक्षविशेष प्रभिभाने सति परमेश्वरविषय
 वविशेष आश्रयणीयो न जादरे विषय इति अथवा भूताग्रोतं वेदिस्य प्रतिष्ठमानस्य प्रतिदेशो भविष्यति तस्यापि दि
 द्युत्तकादिसंबंधो संजवर्णदवगम्यते यो भानुना दृष्टिवीद्यामुते मामानता नोदसी अंतरितमिमादौ अथवा त
 त्वरीरायादेवतायाप्येययोगात् युत्तकाद्यवपवत्तं भविष्यति तस्या उपरमेश्वरो वै शानर इत्यत्राच्यते न तथा
 दृष्ट्युपदेशादिति नशादिभ्यः करणोभ्यः परमेश्वरस्य प्रत्याख्यानं युक्तं कृतं तथा जादरे पारितो न दृष्ट्युपदेशा
 तरे परमेश्वर इति जादरे वै शानर इत्यपि दृश्यते मनोत्रये स्यात्सीत्यादिवत् अथवा जादरे वै शानरोपाधिः परमेश्वर ते
 ददृष्ट्युत्तेनोपदिश्यते मनोमयः प्राणशरीरोभा रूपरसादिवत् यदि चेदपरमेश्वरो न विवक्ष्यते केवलस्त्वना
 दोग्रि विवक्ष्यते ततो मर्हत्वेन जादरे विशेषणं संभवत्वात् यथा तदेवताभूता प्रियपाप्रयण्ययं विशेष उपपा
 दयितुं न शक्यते तथोक्तं सत्रे वक्ष्यामः ॥

इत्यादिनिर्देश इत्यर्थः इमो दृष्टिवीद्यामपि ते यवद्यावा दृष्टिवीरोदसी तयोर्मध्यमं तस्मिन् च यो भूताग्निर्भानुरूपेण तत्रा
 ६२ न वा मवान् स्यात्तत्र इत्यर्थः जादरे मावस्य न भवति तत्राह अथवेति परमेश्वरदृष्ट्या स्यात्तादराप्रि प्रतीकवा
 चकाभ्यामपि वै शानरशास्त्राभ्यामुमर्हत्वादिसा नीशरोत्तरात्सुत्काकल्यांतरमाद सद्यवाजादुरति अस्मिन्ने प्रा
 धान्येने सरोपासनाश्वेत्तया तेति भेदः उपविवाचिभ्यां पदार्थापुपहितो लस्य इत्यर्थः तद्वत्तावीजमसंभवत्वाच्च
 यदि चेति ॥

प्रा
भा
५

मतांतरमाह अत्र स्यतेरिति प्रादेशो न मनसा मितः प्रादेशमात्र इत्यर्थः यथा कथंचिदिति मनस्ये प्रादेशमात्रत्वे सति हारा स्ये मा
 लोकस्थिते श्रुते गले बने मित्यर्थः सूत्रस्थार्थो नरमाह प्रादेशेति संपत्तिप्रत्युक्तं प्रादेशमात्रश्रुतेरिति माह संपत्तेरिति आसाराप
 देति प्रादेशमात्रमिवेति अपरिच्छिन्नमपीत्यर्थं प्रादेशमात्रत्वेन संपत्त्या कल्पिते सम्पत्तिवदितव्येनोदे वास्ते मेवैश्वरमभिप्रत्यत्वेन संप
 पत्ताः प्राप्तवन्तो देवैश्च कालेन तोर्वेषु सम्पत्तयश्च यथा प्रभृतीन् वयवात्तद्व्याप्तियथा प्रादेशमात्रं प्रादेशपरिमाणमनतिक्रम्य मही
 यथात्मनो गोषु वैश्वानरसं पादयिष्यामीति प्राचीनशास्त्रादौ अतिशयशक्तितायस्त्वकीयमर्हन्तमुपदिशन्करेण दर्शयन्नुवाच यथै
 अनुस्यते वादरिः २५ प्रादेशमात्रहृदयप्रतिष्ठे न वाये मनसा नुस्मर्यते तेन प्रादेशमात्र इत्युच्यते यथा प्रस्थमिता यवाः प्रस्थार्
 तु चानेतदुत यद्यपि चयवे सुत्वरगतमेव परिमाणं प्रस्थसंबंधा यज्यते न चेदपरमेश्वरगतं किंचित्परिमाणं मल्लियदुदय
 संबंधा यज्यते तथापि प्रपुक्ताया प्रादेशमात्रश्रुतेः संभवति यथा कथंचिदनुस्मरणमालेवनमित्युच्यते प्रादेशमात्रत्वेन न वा
 यमप्रादेशमात्रो नुस्मराण्यः प्रादेशमात्रात्प्राप्तव्यं ननु स्यतिरिति वादरिः चाप्येवमन्यते संपत्तेरिति तेमिति स्या
 दिदर्शयति १ संपत्तिनिमित्तावास्यात्प्रादेशमात्रश्रुतिः कुतस्तथापि सप्तमानप्रकरणेनानसंविद्यासाराद्युपभृती न्यधि
 वीयते नानत्रैलोकात्मनो वैश्वानुरस्याचयवानथात्ममहेश्वरतिष्ठुचिबुकपर्यन्तेषु देहावयवेषु संपादयन् प्रादेशमात्रसं
 तिपरमेश्वरस्य दर्शयति प्रादेशमात्रमवाभिसं पादयिष्यामीति स हो वाच स हो नमुदिशन्नुवाचैष वा अतिष्ठे वैश्वानर इति च त
 षुपदिशन्नुवाचैष वैश्वानर इति नापिके उपदिशन्नुवाचैष वैश्वानर इति मुखात्माकाशमुपदिशन्नु
 वाचैष वैश्वानर इति मुखात्माकाशमुपदिशन्नुवाचैष वैश्वानर इति त्रुबुक्मुपदिशन्नुवाचैष प्रतिष्ठा वैश्वानर इति त्रुबु

आ २ कमित्यपरमुत्तफलकमुच्यते

मेमहीभूरादीलोकानतीत्युपरितिष्ठतीत्यतिष्ठासोयुलोको वैश्वानरः तस्य महंति यावत् अथात्ममहीभेदेनादधिदैवमही
 संपाद्यो य इत्यर्थः एवं च तदुपरि दृष्टनीयं त्वकीयं च त्वकीयं दर्शयन् यथैव सतेनाः सत्ये वैश्वानरस्य च त्वुरित्युवाच नासिकाय
 देन तत्रिष्टः प्राणोत्तराते तस्मिन्नाध्यात्मिकप्राणोऽधिदैवप्राणस्य वा योर्हृदि माह नासिके इति अत्र सर्वत्र वैश्वानरशब्देन
 गयरः सत्त्वाद्यं मुखात् तस्मिन्नाधिदैवं बरेलाकाशरश्मिः सत्त्वस्थला लारुपास्त्वस्मिन्नाधिशब्दितेन दीयवस्ति स्यादकरश्मिः त्रुबुक्प्र
 तिष्ठापादरूपाद्यधिवादिष्व्या

मिहैवैवा सुविदिता भिसंपन्ना तथा नुवदन्तानुवदन्त्यास्य
 या प्रादेशमात्र ४

निमित्तापरमेष्ठे प्रादेशमात्रश्रुति

सात्त्विकद्वयार्थमाह निनेवेति जादराशिसंबंधे विनेषरसोपास्पत्तेषि शास्त्राद्यतिरोपेनैमिनिर्मन्यत इत्यर्थः १२मं तत्त्वमुदस्यत्वरूपं
नोच्यते किं तन्वात्वादिति वा तावयवसमूहात्मात्मकपुरुषशरीरे मरुद्दिबुक्तात्मानिहृत्तेशाखावत्यतिष्ठितानि ते पुंसोऽत्र वैशान
रः पुरुषैतः प्रतिष्ठितरत्नानि अतो यथा शाखास्तथा स्पष्टानि तानि हृत्तानस्य त्वंतथा वैशानरस्य पुरुषा तस्य त्वमित्याह नहीदपुरुषवि
धमित्यादिना यथादिशस्तथाप्युपरवाचित्वान्तादराशैरसंशान्ति त्वंश्रुभेषरस्य पुरुषावयवे पुंसोऽदनात्पुरुषविधत्वमंतस्य त्वं
त्यर्थः पंचानरमाह अथ चेति पुरुषविधं पृथक् वदंतस्य त्वंसात्पुरुषात्मा त्वमित्यर्थः एवमंतस्य त्वमोपरव्याख्यायशास्त्रादीनि

विनेवपतीकोपाधिकत्वाभावात्परापरमेष्ठिपरासमनपरिश्रदेनकश्चिद्विशेषोदितैर्मिनिराचोर्ध्वमनते ननुजातराग्र
परिश्रदेनः प्रतिष्ठितत्ववचनेपादादीनिचकाराणानि विरुधोन्नितिप्रजाकाने अतः प्रतिष्ठितत्ववचनेनावत्रविरुधतेनही
दप्ररुधविधेप्ररुधनः प्रतिष्ठितेचेदेतिजातराग्रभिप्रायेणदमचनेतस्यप्रकृतत्वादसंप्रादितत्वाच्चकथनद्वियत्कृतंमहोदिवव
कानेषुप्ररुधावयवेषुप्ररुधविधत्वंकल्पितेतदभिप्रायेणदमचनेप्ररुधविधेप्ररुधनः प्रतिष्ठितेचेदेति यथाहृदेरगत्यप्रतिष्ठितो
पपतीतिनहृदयवयः प्रकृतः परमात्मन्यात्ममधिदेवतचप्ररुधविधत्वाभापिः नस्यपक्षेवत्वेमातिरुसेतदभिप्रायेणदमचने
निष्ठितेचपूर्वागतात्वेचनवदेनपरमात्मपरिश्रदेनद्विषयस्त्वेवचानरक्षः केनचयोगेनचोत्तिष्ठतेविश्वप्रयनरश्चति विश्वबावा
येनरोचिष्वानराग्रस्थितिविज्ञानरः परमात्मसर्वीत्मत्वाद्विज्ञानरपववचामरस्तद्विज्ञानन्यायागदासवाधमारिवतत्रप्रियाग्राप
ग्राहीरादिगोराग्रयानपरमात्मविषयस्त्वविष्णुति मादृशत्वादिकल्पनेयात्तद्विषयिकरणात्वेचपरमात्मनोपि सवीत्मत्वाडेप
पयनेकथेषुनःपरमेष्ठरपरिश्रदेष्टादेशमात्रप्रतिरुपययनेशनंकाद्यानामभूमेने अभिवाक्तेरित्ताश्चरयाः २५ अतिमात्रस्यापि
परमेष्ठरमात्रादेशमात्रत्वमभिव्यक्तिर्नमित्तस्यादभिव्यक्तिकेलादेशमात्रपरिमाणः परमेष्ठरउपासकावाक्येनेप्रदेशोपवाहदया
दिषुउपलब्धिरूपानेषुविशेषेणभिव्यज्यते अतः परमेष्ठरविप्रदेशमात्रप्रतिरभिव्यक्तेरुपययनस्यास्मरयाग्रत्वाधोमनते ॥

याचष्टे निश्चिते चेति विद्युष्वाये नरे नीवश्च सर्वात्मन्यत विद्युष्वायिका राणां वानरः कर्ता विद्युस्सर्वे नरा जीवा अस्यात्मने न निघम्यते
न वासे तीर्ति विद्युन् नरः रक्षयश्च राक्षस इति वत्सार्थे यत्स्थः नरे सत्तायामिति एवैषदस्य दौर्लभ्यः अग्राधानो मीत्यर्थस्य निघम्यते न स्मरुष
मग्निरिति अग्रायति गमयत्यर्थे कर्मफलप्रापयतीत्यग्निरग्रणीरुक्तः अभिते गत इति वाग्निः वैद्यानरोपासकस्यातिविभोजनार्थं यथा
एवमग्निसंज्ञविद्यां गत्वेन विहितेन दध्यमग्निरेतादिकल्पनं प्रधाना विनाथेन तेन व्यभिचाराद् गार्हपत्येति मात्राया विमाराय मतिर्यो नो नि
मात्रे तस्य विभोरित्यर्थः युक्तानां कृतेन यदा यथा देशा मात्रा विद्युत्प्राये देशे युक्तमीयते भिद्युत्प्राये देशे मात्राः ॥

पुरख्येऽतः प्रतिष्ठितं वेदेति च

शु-
भा-
५२

जं श्रीगणेशाय नमः ॐ शुभोत्तममपदमक्षरमोक्षशीघ्रं श्रीयाममस्तु हृदिभोजमधीशितारं इन्द्रिवेद्यमखिलस्य चक्षुषितारं मे
तिर्नमः पदमनिंदमनेभजे १ एवं कृते बाहुल्यं प्रायेण सविशेषवाक्यानां समन्वये द्वितीयपादे दर्शितः अधुना वैयक्तिकपदब
हुल्यं निविशे प्रधानो नावाक्यानां समन्वयवक्तृत्वे तौ यथादशरूप्यते अतोत्राधिकरणनां प्रत्ययाय पादसंगतयस्तत्रैव
मुपक्रमस्य साधारणशब्दस्य वाक्येष्वप्युपर्युक्त्यादिना तत्र परत्वं ज्ञेयं तद्वदत्राप्युपक्रमस्य साधारण्यतन्त्रस्य वाक्येष्वप्य
मेतत्प्रत्यावर्ततः परिच्छिन्ने प्रधानादौ वाच्येति रूपांतलक्षणधिकरणसंगतिः सर्वपक्षे प्रधानाद्युपपत्तिः सिद्धाते निविशे मत्रस
धीरितिकले मंडकवाक्यमुदाहरति इदमिति यस्मिन्नेकत्रयात्मविशेषादुपपत्तौः सर्वैः सदमनः सूत्रात्मकचकारादव्याकृतकार
णमोते कल्पितं तदपवादं न तत्रैव देयं तमेवाधिष्ठानात्मानं प्रत्यगभिन्नजानय प्रवणदिना अस्या अनात्मवाचो विमेषय विशेषे

युभायाय तनं स्वराक्षत १ इदं श्रूयते यस्मिन्नेः पृथिवी चोत्तरित मोते मनः सहप्राणौ शुभैः तमेवैकं जानय आत्मान
मन्यावाचो विमेष अस्तस्यैव सेतुरिति अत्र पदे तत्पुप्रसूतीनामोतत्ववचनादाय तनं किंचिदवगम्यते तत्किंपरं
सस्यादाहो सिद्धांतरमिति सेदियते तत्रार्थांतरं किमप्यायतनं स्यादिति श्रमे कस्मादस्तस्यैव सेतुरिति प्रवणतया
प्रत्यातः ४ स्वादिलोके सेतुः न च परस्य त्रस्याः पारवत्वं कमभ्युपगतमनेतमपारमिति प्रवणत आर्थांतरे चायतने परिरुद्ध
मणोस्सति प्रसिद्धं प्रधानं परिरुद्धीतव्यं तस्य कभ्यात्वादाय तनलोपपत्तेः अतिप्रसिद्धा वायुवांसात् वायुर्वै गौतमतस्त
त्रवायुना चै गौतमसूत्रेण पंचलोकः परश्चलोकः सर्वाणि च भूतानि संरुद्धानि भवन्तीति वायोरपि विधारात् प्रवणत ॥

70

एतिः शेषं तत्र तयस्य वाचिमो क पूर्व कात्मसाक्षात्कारो मस्तस्य मोक्षसासापारुड्वारसे सारवर्षिधेः परपारस्य सेतुरिव सेतुः प्रा
पक इति मातृवत्प्रतिभुमुत्तम्यदिशति तत्रायतनत्वस्य साधारण्यमप्यदर्शनात् तत्रायसाह तत्किमिति अस्तस्य त्रस्याः से
तुरिति वक्ष्यामस्मिन्ने भिन्नत्वे न सेतोः कृतत्वदेष शब्दपारमर्षे युभायाय तनमत्रैव सेतुरित्याह अस्तस्येति भेदप्रवणत्वेन तुरि
ति वक्ष्यामस्मिन्ने प्रवणत्वेन त्रयः तत्र भेदप्रवणत्वात्प्राप्तं सेतुप्रवणत्वं विवृणोति पारवाचित्वात् अनंतं कालतः अपारं देशतः
जलविधारकमुख्यसेतो ग्रहणं संभवात् गौतमसेतुद्वेकं तं येषां सत्त्वविना भूतपारवत्तत्वात्प्राप्तवानेव कश्चिद्वायुः न तस्यैव
स्यानियतविधारणगतावानीश्वर इति भावः यथा लोके मणयः सूत्रेण ग्रथिताः एवं देगौतमसमहितं गल्मकवायुना स्यात्तानि
सर्वाणि संरुद्धानि ग्रथितानि भवन्तीति प्रत्यर्थः ॥ ॥

५२

ननु मातृवैषम्योपाविद्योर्भेदात् अग्निरस्य अन्नसारेण कृद्देशस्य मातृश्रुतिः कथं वा तेषां तांसां साह यद्यपीत्यदिना एता
 वतात्त्वैषम्योपावदन्नरप्रसभिसिद्धिं विधेयं न हीयते मातृभेदे पितृसर्वं शास्त्रात् प्रतीयमानवैशानराद्युपासने एकमिति न्यायस्य वस
 माणात्वाच्च अतिष्ठात्त्वमात्रादोषोपसंदर्भः विश्वरूपत्वमात्राद्युवाजिभिर्वा एतत्तावत् पुंस्येषां स्वतन्त्रसममतिष्ठात्त्वविश्वरू
 पत्वयोर्वैषम्या यद्वाशात्वाभेदेन एतत्तावत्त्वान्नविद्याभेद इति भावः पाटेशात्त्वस्य संघटिः प्रयुक्तत्वेऽन्नतरे संवादयति आमनेती
 ति पण्यो न तोपमिच्छिन्नप्रतोऽयत्तादुर्विज्ञेयं कथं जानीयमि त्यत्रिप्रभेदात्त्वत्वात् एतत्तरे सर्वस्यो विमुक्ते कामादिभिर्वैदेजीवभे
 दकल्पनया प्रतिष्ठित इत्यास्यां पुनरत्रिप्रभः सश्रमन्तरेक्षणायामिति एवं प्रश्नात्तरेयमिच्छेयं तत्र च प्रश्नो रमा मेव भक्तसहितो नासि

ज१ यद्यपि वांसनेधिके पौरनिष्ठात्त्वगुणसमासायने आदित्यश्च सतेजस्वगुणसमासायने आदित्यश्च सतेजस्वगुणसमासायने
 आदित्यश्च विद्यरूपत्वमात्रात्तावता विशेषणानि विधीयते मातृश्रुतिरविशेषात्त्वैशानराप्रत्ययत्वाच्च संघटि
 निमित्तोपादेशमात्रश्रुतिप्रयुक्तत्वेनेति नित्याचार्योऽमन्यते आमनेति चेन्नमस्मिन् २१ आमानेति चेन्न परमेश्वरमस्मिन् नूदं
 चुबुकोत्तराले जायन्ता यद्येवमेतौ अन्तःप्रान्ताविमुक्तप्रतिष्ठित इति संविमुक्तः कस्मिन् प्रतिष्ठित इति वरणाया नास्या च
 मध्ये प्रतिष्ठित इति कतमावरणा कतमानासीति तत्रेमा मेव नासिकावरणा नासीति निरुक्तसंवादे द्वियुक्तानि पा
 पानि चारयति सावरणसर्वानि द्वियुक्तानि पापानि नापायति मानासीति पुनरामनेति कतमज्ञास्य स्थानं भवतीति
 भवेद्वाज्ञासा चयः संधिः सण्णद्युक्तोक्तस्य परस्य च संधिर्भवतीति तस्मादुपपन्नोपरमेश्वरे प्रदेशमात्रश्रुतिः अभिवि
 मानश्रुतिः प्रत्यगात्मताभिप्रायापत्यगात्मतेया सर्वैः प्राणिभिर्विधीयत इत्यभि विमानः अभिरातो वायुप्रत्यगा
 त्मत्वादिमानश्च मानविवोणादित्यविमानो भिविमीते वा सर्वे जगत्कारणात्तादित्य विमानस्तस्मात्परमेश्वरो वै
 श्वानर इति सिद्धं इति श्रीमल्लेकरभाष्ये दहृतोऽशीरकमीमांसाभाष्ये प्रथमाध्यायसहिते चः पादः २

कानिरुचेति भाषा योजनासुर्वानि द्वियुक्तानि पापानि नापायतीति नासीना सिद्धेति निर्वचनं नासा भवेज्जीवद्वारे श्वरस्थान
 त्वध्यानासायाचारकत्वमिति मन्तव्यं तया संधेऽपि विशिष्टजीवस्थानं प्रवृत्ति कतमदिति भवेदित्युत्तरप्राप्तमिति पाठे
 पित्राणां सत्यर्थः सण्णद्युक्तोक्तस्य परस्य च संधिर्भवतीति तस्मादुपपन्नोपरमेश्वरे प्रदेशमात्रश्रुतिः अभिवि
 मानश्रुतिः प्रत्यगात्मताभिप्रायापत्यगात्मतेया सर्वैः प्राणिभिर्विधीयत इत्यभि विमानः अभिरातो वायुप्रत्यगा
 त्मत्वादिमानश्च मानविवोणादित्यविमानो भिविमीते वा सर्वे जगत्कारणात्तादित्य विमानस्तस्मात्परमेश्वरो वै
 श्वानर इति सिद्धं इति श्रीमल्लेकरभाष्ये दहृतोऽशीरकमीमांसाभाष्ये प्रथमाध्यायसहिते चः पादः २

वदन्ताभूतसर्वान् दोषान्नाशयतीति

प्रमाणप्रथमतयायसहिते चः पादः २

प्रा
भा
५१

कथं तद्विद्यामानाधिकरणं तत्राह सर्वत्र येति यथोक्तः सस्याप्युपस्थित्यन्यत्र येति सर्वत्रादेशेन तत्रासत्त्वविधानात्वाधनार्थेन त
यद्वास्तव्यमिति नानासत्त्वार्थतन्निष्पन्नकमाह सयथेति लवणविशेषादेदिशुरसोत्तरभूतः सर्वानवगोकरसायथा एव
मरेमेत्रिचिदेकरसप्राप्त्यर्थः यद्यपि पारवत्वाच्चयवत्वादिकं मात्तमेतत्वाभिचारितयापि सेतो जलादिवधनरूपेण विधा
रागतदेववाभिचारित्वेपि सेतुपदार्थकदेशत्वाद्गुणत्वेन तपदार्थवदिर्भूतं पारवत्वादिकमित्याह अत्रोच्यते इति दृष्टत्वात्तदुदे

सर्वत्र येति सामानाधिकरण्यप्रयोजनं च विलापनार्थं नानेकरसता प्रतिपादानार्थं सयथा सैधवचनेन तरोवायः कस्मै
रसवन एवैवाश्रयमात्मानं तरोवायः कृत्वः प्रकृत्यन एवेति यो करसता प्रवृत्तात् तस्मात्तुभ्यायायतनं त्रस
यत्कं सेतु फले सेतोश्च पारवत्वायतेः त्रस एवार्थातरेण युभ्यायायतनेन भवितव्यमित्यत्रोच्यते विधारात्तमा
त्रमेव सेतु फलविवसते न पारवत्वादि न हि सहाकमयो लोके सेतुर्हृत्स्वत्रापि सहाकमय एव सेतुरभ्युपगम्यते
सेतुशब्दार्थापि विधारात्तमात्रमेव न पारवत्वादिविज्ञातं धनकर्मणाः सेतुशब्दव्युत्पत्तेः अपरश्चाह तमेवैकं जानय
आत्मानमिति यदेतत्संकीर्तितमात्मज्ञाने यच्चैतदस्यावाचोविमुच्येति वाग्विमुचने तदत्रास्तत्त्वसाधनत्वादस्तस्यैव
सेतुरिति सेतु फलसंकीर्तते न त्रयुभ्यायायतनं तत्रयुक्तं सेतु फले त्रस एवार्थातरेण युभ्यायायतनेन भावमिरो
तदयुक्तं मक्तोपस्य वापदेशात् २ इत्युपरमेव युभ्यायायतने यस्यान्मुक्तोपस्यतासा वापदश्यते मुक्तैरुपस
यं मुक्तोपस्य देहादि घनात्मसदमस्तीत्यल्लुद्धिरविद्या ततस्तत्तजनादौ रागस्तमरिभवादे देवः तदुत्तेदद
शानाद्रयं मोदयेतेव मयमनेतभेदो नर्थज्ञातः सेततः सर्वज्ञानः प्रत्यक्षः
ब्रह्म ३

दिश्यमानो २

तिप्रसंगमाह नहीति अत्र फलौपरेणोति शेषः विधाराणां शास्त्रार्थत्वे स्फुटयति विजतिमिनोति वद्वान्तीति सेतुप
दार्थकदेशे विधारा मित्यर्थः तथाचास्तदपदस्य भावप्रधानत्वादस्तत्त्वस्य सेतुविधायकं त्रसस्येवास्तत्त्वेनाय
स्यार्थः यद्वा युभ्यायाधारो त्रसन सेतुशब्दार्थः किं त्वविवक्षितं ज्ञानमित्याह अपर इति फलितमाह तत्रयुक्तमिति
ज्ञाने सेतो गृहीतसतीत्यर्थः मुक्तैरुपस्य प्रत्यक्षेन प्राप्य यद्वास्तत्त्वात्रोक्तेरिति सूत्रार्थः मुक्तिप्रतियोगिनं वेधे दशी

पति देहादिस्थिति

५३

आत्मशब्दस्य ह्यप्ययमप्ययमिति तत्राह शरीरोवेति सदितीयत्वेन सेतुशब्दोपपत्तेरुच्यते नन्वात्मशब्दो जीवे संभवतीत्यत्राह
 आत्मशब्देति उपाधिपरिच्छिन्नस्य जीवस्य सर्वस्य प्रत्यक्षस्य नास्तीत्यर्थः उपक्रमस्य साधारण्यतनस्य गौणसेतुत्वलिङ्गत्वं
 यमश्रुतात्मशब्दात्तन्निश्चयपरिभाषः स्वशब्दादित्यप्यायान्तरमाह कचिचेति प्रजाजन्मस्य नोसदेवमूलस्थिता वायतनस्ये
 प्रतिहेति त्रयस्य चिसत्यदेव ज्योदाये त्रयस्य आगत्य तनत्रयतेरत्रापि तथेत्यर्थः प्रजातरमाह स्वशब्देनेवेति यस्मिन् योरिति वावा
 शरीरोवास्यात तस्यापि मोक्षत्वाद्भेदपक्षे चेत्प्रत्यायतनत्वेनोपपत्तेरित्येवं प्राप्तमरुद्धार युष्माकायतनमिति योऽभ्यर्थ्य यु
 भवावादीयस्य तदिदं युष्मादियदेतस्मिन्वाकोषोऽप्युच्यते तदिदं मनः प्राणरूपेणमात्मकं तदयमेतत्त्वेन निर्दिष्टं तस्याय
 तनपरत्रयस्य भवितुमर्हति कुतः स्वशब्दोत्पत्त्यादित्यर्थः आत्मशब्दोद्गीर्णमवति तमेवेकं जानयन्मात्मानमिति आ
 त्मशब्दश्च परमात्मपरिग्रहे सप्रगचकल्पने नार्थांतरपरिग्रहे कचिच्च स्वशब्देनेव त्रयस्या आगत्य तनत्रयस्येति सन्मूलः
 सोमोमाः सर्वाः प्रजाः सदायतनासत्यतिमाश्रति स्वशब्देनेव चेत्परस्तादृशेण त्रयस्येति प्रकृत्यैवेदं विष्टं
 कर्मतपोत्रयस्य परास्त्वमिति ज्ञेयदेवमस्तं परस्तात्पञ्चादृशदत्तिना तस्यानुरोपति च तत्रत्यायतनायतनवद्वा
 वप्रवृत्तत सर्वत्रस्तेति चामानाधिकरण्यत यथा नेकात्मको बुद्धः शरीरात्कथं मूलचेत्येवं नानारसो विचित्र
 आत्मेशाका भवति तानि वर्तयितुं सावधारणमाह तमेवेकं जानयन्मात्मानमिति एतदुक्तं भवति नकार्यप्रप
 चविशिष्टे विचित्रात्मा विज्ञेयः किं तद्विद्याकृतं कर्मप्रपंचं विद्याया प्रविलापयेत्तस्मै वै कमायतन भूतमात्म
 ने जानयैकरसमिति यथायस्मिन्नास्ति देवदत्तः तदा नयस्य कश्चासनमेवानयति न देवदत्तं तद्वदायतन भूतमेवै
 करसस्यात्मनो विज्ञेयत्वं श्रुतिप्रपत्तेरिति चिकारान्तराभिप्रेत्य चापवादः श्रुते स्मैव समस्तस्य भाष्येति यद्वदनाने
 नृवीतरवाक्योः पुरुषत्रयादिशब्देन त्रयसंस्कीर्तनात्मशब्दोपि त्रयशब्दमिति त्वर्थः पुरुष इति सर्ववाक्यं त्रयैवेत्युत्तर
 वाक्यं सर्वास्तद्विस्तस्थितं सर्वत्रसेवेत्यर्थः उत्तरैकैति तस्यादिशि उदाहृतवाक्यस्य विशेष्यत्रयस्य वत्त्वमात्रावाक्यं वा
 चष्टे तत्रत्यादिना सामानाधिकरण्याद्विचित्रात्मेति संबन्धः यस्मिन् सर्वमात्रे तमेवेकमित्येव कारैकशब्दाभा निवि
 शेषेतेयमित्याकाहेत्यत्रमाह विकारान्तेति विकारेन्ते कल्पितैभिर्भूतैर्भाष्येति तद्वदनाने

दा३

तत्रात्मशब्दस्य सेतुत्वमिति

तद्विपर्ययेति उक्तं च क्लेशात्मकत्वं धनिवृत्त्यात्मना स्थितमित्यर्थः यथानयो गंगाद्याः नामरूपे विहाय समुद्रा
 त्मनानि ह्येति तथा प्रसक्तमविदपि संसारं विहाय परात्कारणत आत्मात्परं शरीरं स्वयं नैतिरानंदं प्रत्यक्षेन प्राप्यतिष्ठ
 तोत्वाद न्याविदिति इदं प्रधानादेः किं न स्यादत आह अस्याशेषेति अस्मिन्मुक्तोः हृदीति पदेनात्मधर्मत्वं कामा
 नां निरस्तयदा कामनिवृत्तिर्यतदा अमृतो भवति अस्याहेत्वभावात् केवलमनर्थनिवृत्तिः किंतु त्रदेहेति ह्यत्रैव ज्ञ
 स्यानेदमश्रुतरत्यर्थः सिंगांतरसाह अपि चेति श्रीशिवे कीर्तमेवात्मानं विहाय विशुद्धलस्य पदार्थं ज्ञात्वा वाका

तद्विपर्ययाणां विचारगद्गेषादिदोषमुक्तैरुपसंख्यानमेतदिति पुन्याद्यायतनं प्रकृत्यपदेणो भवति कथं भिद्यते
 हृदयं धिक्प्रियं धेते सर्वसंशयः लीयंते चास्य कर्माणि तस्मिन् संप्रसारवरेत्तु का चैति तथा विहात्रा मरुपादिमु
 क्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यमिति अस्याश्रमुक्तोपसंख्यते प्रसिद्धं यत्सु यदा सर्वं प्रसृज्यते कामाद्येष्टाद्विज्ञा
 अथमर्त्यामृतो भवत्यत्र अस्यामश्रुतस्यैवमादो प्रधानादीनां नैवे कचिन्मुक्तोपसंख्यते प्रसिद्धमिति अपि च त
 मेवैकं ज्ञानं अज्ञानमज्ञावासाद्यो वमुच्येति वाग्विज्ञाकसर्वविज्ञेयत्वमिदं पुन्याद्यायतनस्यैव तच्च अंतरे तं
 अस्याहेतुं तमेव श्रीशिवे विहाय प्रज्ञां कुर्वीत ज्ञातारः नानुभाषेद्दृष्टं ज्ञानाद्यैर्विज्ञातारं नदितदिति तस्मादपि पुन्या
 दायतनं परं ज्ञानं नानुमानमनलज्जहान् यथा ज्ञातारः प्रतिपादको वैशेषिको हेतुरुक्तो नैव मर्त्यातरस्य वैशेषिको
 हेतुः प्रतिपादको स्तोत्राद् नानुमानिकं सांख्यस्य तिर्यक्येति प्रथानमिदं पुन्याद्यायतनं नैव न प्रतीयतवै क
 सादतज्जहान् तस्यैव तनस्य प्रधानस्य प्रतिपादकः शास्त्रज्ञज्ञानं तज्जहान् तज्जहान् नयत्रा चेतनस्य प्रधानस्य प्रतिपा
 दकः कश्चिज्ज्ञेति येनाचेतनं प्रधानं कारणं नैव ज्ञायतन्नेन वा वगम्यते ॥

यं ज्ञानं कुर्यात् ज्ञानाधिना ज्ञानप्रतिबंधककर्मकांशदेवं मुखमार नेति वरुनित्युक्ता अस्यात्वे दोषा ज्ञानं गी करोति
 अष्टास्याना निर्वर्णनामुरः कवं शिरस्तथा जिह्वामुल्लं च देताश्च नासिकोश्च तासु चेति एतानि वार्ति द्वियस्थान
 त्वाद्वाक्यं नोच्यते तेषां शेषाणामात्रमनात्मशरीराणां फलं तज्ज्ञानात्मनो ह्यानिमात्रमित्यर्थः वैशेषिकयति अ
 साधारण आत्मशरीरादिरित्यर्थः ॥

भूमलक्षणपरिचित्रलक्षणोत्पास्यरति अथेति अत्रसंशयबीजं प्रशस्तं कमाद कुतस्यादिना वदोर्भावयति वि
प्रदृष्टादिभासमिति निति इमन् प्रत्यये कनेव होलोपोभचवहोरिति सत्राणावदोः परस्मिन्निचु त्वयस्मादेरिकारः
स्यलोपः स्याददोः स्यातेभ्रम्यदेशाश्चाद्यादिसुक्तेः भूमित्रिनिशहोनिष्पन्नः तस्याभावाय केमन्यस्योतत्वाद्दुत्वे
वाच्यं तन्किं धर्मिकमिमाकादायांसत्रिदितप्रकरणस्थः प्राणो धर्मो भातिवावेगपक्रमस्य आत्मापि सप्रतिपाद

अथयत्रान्यस्यस्य च्छाणोत्पत्तिजान्नालित इत्यभिप्रायितत्रसंशयः किंप्राणोभूम्यादाहोस्मिन्नरमा
त्येति कुतः संशयः भूमेति तावद्दत्तमभिधीयते वदोर्लोपोभचवहोरिति भूमश्च स्यात्प्रत्ययान्ता
स्मरणात् किमात्मकं पुनस्तद्दत्तमिति विशेषाकादायांप्राणोवाचाशयाभ्यामिति सत्रिधानाया
लोभमेति प्रतिभाति तथा अत्रेवमेव भगवदशेषस्तदिति शोकमात्मवेदितिसोदं भगवः योचामि
तमोभगवान्मो कस्य पादं गभयति प्रकरणेभ्या नान्यरमात्मा भूमेत्यपि प्रतिभाति तत्र कस्योवादा
नेत्यायं कस्य वादानमिति भवति संशयः किं तावत्प्राणोभूमेति कस्यावभयः प्रश्नप्रतिवचनाद
शेनात् यथा अस्ति भगवो नास्ती भूय इति वागवाचनामोभूयसीति तथा अस्ति भगवो वाचो भूय इति मत्रो
वाववाचो भूय इति च नामादिभ्यां प्राणाद्भूयः प्रश्नप्रतिवचनप्रवादः प्रसृतो नैव प्राणत्वरंभयः प्रश्नप्र
तिवचनेदृश्यते अस्ति भगवः प्राणाद्भूय इति अदो वाचप्राणाद्भूय इति ॥

नापेत्तौ धर्मित्वेन भातीति सत्रिदित वावहित प्रकरणभ्यां संशय इत्यर्थः सर्वमात्मशब्दात्तद्युभायायतनेत्र
स्ते सुक्ते तदपुक्ते तरति शोकमात्म विदित्यत्र स्यात्प्राणात्मा शब्द प्रयोगादित्याक्षेपसंगत्या सर्वपक्षयुति प्राणोभू
मेति धर्मधर्मिणोर्भेदात्सामानाधिकरान्णं दृष्ट्वा प्रतीतरयेत्ययोः प्राणोमास्ति वदतानेचपले क्रमोभूमे
तद्ये अत्राधारे भूयः प्रश्नोत्तरभेदादर्थभेदो दृश्यते भूमात् प्राणात्वरंभयः प्रश्नविनैवोक्तिर्लिंगत्वात्प्राणदभि
चरणद कस्यादिप्रादिना प्राणाद्भूय इति न दृश्यत इति पूर्वोक्तसंबंधः ॥

शा.
भा.
७६

सं.

नि३

७४

७५

भूमरूपत्वेनोच्यते सर्वान्तराभां च भवति वेपल्यन्तिकाभमरूपताप्राणास्तस्यात्मा लोभमेवेव प्राप्ततत्तदस्य तेप
दे स्थित्यापुनरावर्ततेति प्रयोगाच्च तत्पदं सप्रतिवाचकमित्याद इदमिति वाच्यार्थसंबंधाकारेण लक्षणादे न्याचेति
अत्र सत्रस्यार्थः भूमाप्राणादित्रयत्राधापेतस्याहर्धसुपदिष्टत्वात्प्राप्तेरुर्ध्वसुपदिष्टत्वादि नदित्यर्थः विपक्षे हेतवे
वादमाह प्राण एव चेदिति स्वस्येव स्वस्याहर्धसुपदिष्टत्वमयुक्तं नामादिष्वहर्धे चेत्यर्थः हेतुसिद्धं शक्यं नन्विहेति प्रकृत्या
सर्वान्तराभां निदिदेशाभां च भवति वेपल्यन्तिकाभमरूपताप्राणास्तस्यात्मा लोभमेवेव प्राप्ततत्तदस्य तेप
रमाने वेदभूमाभिवृत्तमहेति नप्राणाः कस्यात्संप्रसादादप्युपदेशात् संप्रसाद इति सुषुप्तस्थानसुच्यते सम्यक्
सीदत्यस्मिन्निति वचनात् इदं दाराण्येकेच संप्रजागरितस्थानाभ्यामप्युपदेशात् तस्याच संप्रसादावस्थाप्राणाजा
गतीति प्राणासु संप्रसादाभिप्रेयते प्राणाहर्धमूत्र उपदिष्टमानत्वादित्यर्थः प्राण एव चेदमास्यात्स एव तस्याहर्ध
सुपदिष्टेतेत्यस्मिन्नेतस्यात् नदिनामेव नास्मिन्नेत्यहर्धसुपदिष्टं किं नदिना च दद्यात्तरमुपदिष्टं वाग
त्वावागवनाच्चाभ्युपगच्छति तथा वागदिभ्योष्ठाप्राणदर्थं तरमेव तत्र तत्रोर्ध्वसुपदिष्टं न दद्यात्ताहर्धसुपदिष्ट
मानोभूमाप्राणदर्थान्तरभूतो भवितुमहेति नन्विदनास्ति प्रश्नास्ति भावः प्राणा इत्येति नापि प्रतिवचनम
स्ति प्राणाहावभूयोस्मिन्नेति कथं प्राणादपि भूमेपदिष्टतरस्य च ते प्राणविषयमेव चातिवादित्युत्तरत्रानकृष्यमा
णपश्यामः एष तवातिवदतियः समेनातिवदतीति तस्मात्प्राणादप्युपदेश इति अत्रोच्यते न तावत्प्राणावि
षयस्येवातिवादित्वेन तदनुकष्यामिति शक्यं वक्तुं विशेषवादाद्यः समेनातिवदतीति ननु विशेषवादाप्ययं प्राणा
विषय एव भविष्यति कथं यथेष्टाग्रिहोत्रीयः समेवदतीत्युक्तेन सत्यवदनेनाग्रिहोत्रित्वेन केन तदि अग्रिहोत्रेणोवस
त्यवदनेन अग्रिहोत्रेण विशेषः चाते तथैष तवातिवदतियः समेनातिवदतीत्युक्तेन सत्यवदनेनातिवादित्वेन केन तदि
एवित्यममशक्यं एषाद्येन भवति तस्य यच्च ह्यपरतंत्रत्वेन सत्यत्वादित्वाच्चिन्नादतः प्राणाप्रकरणविच्छिन्नमिति हे
तुसिद्धिरित्याह अत्रोच्यते इति समेनातिवादित्वेन विशेषः तदतोय एष इत्युक्तेन पूर्वोक्तं कथं इत्यर्थः येष प्राणाविदति
वदति तस्य ननु संप्रसादेदिति विधानात् प्राणाप्रकरणविच्छेद इति दृष्टोतेन शक्यं नन्विति ॥

वदति

नन्वेव नवाप्रतिवदतीति तत्राद्येन प्रमाणप्रकरणविच्छेदात् प्रमाणभूमेत्यत्र आह प्रमाणमेवेति नामाद्या रंगतानुपासान्तो नवाप्रणे
 प्रेष्टे सदमोत्पत्तिवादी प्रमाणवितं प्रत्यतिवाद्यतीति केनचित्प्रत्येकतस्मीति ज्ञात्वा दमनिकदीपपङ्कवेन पुण्यादिसुक्तं प्रमाणविद
 मेव इति परामर्शसमन्वयेन ध्यानमननं प्रत्यादिधर्मपरंपरा विधाय भूमौ देयान्न प्रकरणविच्छेदः तथा हो नामाद्युपा
 सकस्यातिवादिन्य निरासार्थ इत्यर्थः भूमेत्यालक्षणवचने सावन्मस्य तत्त्वप्रमाणप्रश्नत्वे कथं योजयति कथं पुनरित्यादिना

प्रमाणमेव न नामादिभाषायां तेभ्यो भूयः संशाले वा प्राप्ता भूयानि त्वादिना सप्रपञ्चमुक्त्वा प्रमाणदर्शिनश्चातिवादित्व
 मिति वाच्यं त्वतिवाद्युत्पीतिव्याजपञ्चवीतरन्यभ्यन्तत्वायेव नवाप्रतिवदति यः सत्यमतिवदतीति प्रमाणवतमतिवा
 दित्वमनु कृष्यापरित्यजेत् प्रमाणसत्यादिपदं पर्याभमानमवतारुष्यन्नाप्रमाणमेव भूमानमन्यतरिति गम्यते वा पुनः प्रमाण
 भूमनित्याख्यायमाने यजनात्पक्षपतीत्येतद्भूमेत्यालक्षणपरं वचने वात्यायेनेत्युच्यते सप्रमाणवस्यां प्रमाणप्रक्षेपक
 र्णोपुद्गलादिवावहारनिवृत्तिदर्शनात्संभवति प्राणाप्यापियजनात्पक्षपतीत्येतत्त्वत्वात् तेषां च प्रतिः नश्रुताति
 नपक्षपतीत्यादिना सर्वकरणत्वात् परात्पक्षमय रूपं सप्रमाणवस्यामन्ता प्रमाणप्रयत्नवेतस्मिन्परेनाप्रतीतित्वामेव
 वस्यायेपंचवृत्तेः प्राणास्पजागरां च वृत्तेषां प्राणां सप्रमाणवस्यां दर्शयति यच्चेतद्भूमेत्यालक्षणं अतयोवेभूमा
 तत्त्वत्वमिति तदप्यविरुद्धं यत्रैष देवः स्वप्राज्ञपक्षपक्षे तस्मिन् नृरीरे सात्वभवतीति सप्रमाणवस्यायमेव सात्वप्रवण
 न यच्चयोवेभूमातदस्तमितितदपि प्राणाप्याविरुद्धं प्राणावा अस्तमितित्वात् कथं पुनः प्राणाभूमानमन्यमानस्य
 तरतिशेकमात्मविदित्वात्मविविदिषया प्रकरणस्याज्ञानमुपपद्यते प्राणाप्येव सात्माविवक्षित इति त्रमः तथा हि प्रा
 णोदपिता प्राणोमाता प्राणेभाता प्राणाः सुप्ता प्राणा आचार्यः प्राणा आसुरा इति प्राणा मेव सर्वान्मानं करोति यथा
 वा अराजाभो समर्पिता एवमस्मिन् प्राणा सर्वं समर्पितमिति च

प्राणाप्रक्षेपप्राणोत्पीनेषु न शक्नोति सप्रमाणः शुद्ध इति शेषः गार्हपत्योद्वाणयोपा नोत्पा नोत्पा हार्यपचनः आहवनीयः प्रा
 ण इति श्रूयते प्राणा अग्र्युरदधुरया रीरे जायति स्यापाराणवतिष्ठतीत्यर्थः देवो जीवः अथ तदा स्वप्रादर्शनकाले सात्वप्र
 वणमन्यात्तस्य सावन्मस्यविरुद्धमित्यन्वयः आत्मपदेनोपक्रमद्विषयं परिहरति प्राणाप्येति प्राणास्यात्मत्वं कथमित्या
 ये वा अन्त्यादिनाह तत्वादीति सर्वं समर्पितमिति च सर्वान्मानं प्राणास्वी करोति अतिरिक्त्यपः अत आत्मनो प्राणापिस

स्वमिति प्रावः

त

सत्यशब्दोपवाधिते कृतोऽस्य वाचकस्तदगम्यमित्यान्वात्सत्यवचनेत्यवाधितार्थसंबंधात्तात्परिकरतिनात्र तत्त्वचनविधि
 रिगाद नेति प्रमति किंच सत्येन वस्य एतद्वदतीति तत्त्वोपाश्रयत्वात् तस्य करणकमतिवादित्वं प्रतत्तस्य प्रकरणहापोन युक्त
 रत्पाद प्रत्याक्षेपादिना अत्रेति सत्यवाचकत्वार्थः एवं सत्येनेति प्रत्याप्रकरणवाच्यमित्युक्तान्वाद्येनापि वाच्यमाह प्रक
 तेति चित्तितास्य त्वलिंगाद्यशब्दीकादिप्रमित्याह सत्यत्विति प्रकरणविच्छेदेदृष्टान्तमाह तस्मादिति प्रतिलिङ्गवत्त्वादेत
 त्सत्यप्रकृतत्वात्प्राणतत्त्वात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वादित्वस्य तस्य संबन्धोऽप्यप्राणलिंगत्वं निरस्तं यत्तु प्रकृतविने

नेति च सः प्रत्यर्थपरित्यागप्रसङ्गात् प्रत्याश्रयत्वात् सत्यवदनेनातिवादित्वं प्रतीयते यः सत्येनातिवदति तस्यैव
 तीति नात्र प्राणविज्ञानस्य संकीर्णमस्ति प्रकरणानुप्राणविज्ञानसंबन्धोऽतत्तत्प्रकरणानुरोधेन प्रकृतः प
 रित्यक्तासात्प्रकृतत्वात्प्रत्यर्थान्न सत्यशब्दो न संगच्छेतेत्यनुवाच्यति वदतीति सत्यत्वविवक्षितमित्यमिति च प्रयत्नो
 तत्प्रकरणमर्थोत्तरविवक्षासंबन्धयति तस्याप्येकवदप्रसङ्गात् प्रकृतत्वात् सत्यवत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा
 कवेदेभ्योऽर्थोत्तरभूतत्वं तदेव प्रकृतत्वात् तदर्थोत्तरवदतीति तस्यैव प्रकृतत्वात् सत्यवत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा
 नियमोक्तिः प्रकृतसंबन्धोऽसंभवकारितत्वादर्थोत्तरविवक्षया तत्र प्राणतत्त्वमनुशासनं प्रकृतत्वात् सत्यवत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा
 स्वयमेव सत्यं कृतत्वात् प्रकृतत्वात् यति यत्प्राणविज्ञानेन विकारात् तद्विषयेनातिवादित्वमनतिवादित्वमेव तदे
 एतवाच्यति वदतियः सत्येनातिवदतीति तत्र सत्यमिति परवक्ष्यते यस्माद्येकवदत्वात् सत्यं तत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा
 तिच प्रकृतत्वात्तथा च्युत्पादितार्थान्तराद्यसौ भगवः सत्येनातिवदतीति संबन्धोऽप्यप्राणलिंगादिप्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा
 भूमात्तमुपदिशति तत्र यत्प्राणद्वयस्यैव कर्तृत्वं प्रकृतत्वात् तदेव तदर्थोत्तरवदतीति तस्यैव प्रकृतत्वात् सत्यवत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा

त्यः १ दधिभूत उपदेशात् तः प्राणार्थः परमात्मा भूमा भवितुं देति ॥
 कृतत्वलिङ्गादुपाश्रयत्वात् तत्र तस्याप्रयोजकत्वादित्याह न नेति प्रकृतभेदादर्थभेदरतिन नियमस्य कृतत्वात् सत्येनातिवदतीति वा
 दृष्टाः प्रकृतत्वात् अतिवदतीति तत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा कवेदेभ्योऽर्थोत्तरभूतत्वं तदेव प्रकृतत्वात् तदर्थोत्तरवदतीति तस्यैव प्रकृतत्वात् सत्यवत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा
 भेदव्यभिचायीति सूचयति तत्रेत्यादिना सत्यपदेन प्राणोक्तिरित्युक्तमाह तत्र सत्यमिति विज्ञानेति दिष्टा सत्यमा
 दिष्टात्मा ननञ् हा च्युत्पादितार्थान्तराद्यसौ भगवः सत्येनातिवदतीति संबन्धोऽप्यप्राणलिंगादिप्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा

प्रत्यर्थपरित्यागप्रसङ्गात् प्रत्याश्रयत्वात् सत्यवदनेनातिवादित्वं प्रतीयते यः सत्येनातिवदति तस्यैव तीति नात्र प्राणविज्ञानस्य संकीर्णमस्ति प्रकरणानुप्राणविज्ञानसंबन्धोऽतत्तत्प्रकरणानुरोधेन प्रकृतः प रित्यक्तासात्प्रकृतत्वात्प्रत्यर्थान्न सत्यशब्दो न संगच्छेतेत्यनुवाच्यति वदतीति सत्यत्वविवक्षितमित्यमिति च प्रयत्नो तत्प्रकरणमर्थोत्तरविवक्षासंबन्धयति तस्याप्येकवदप्रसङ्गात् प्रकृतत्वात् सत्यवत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा कवेदेभ्योऽर्थोत्तरभूतत्वं तदेव प्रकृतत्वात् तदर्थोत्तरवदतीति तस्यैव प्रकृतत्वात् सत्यवत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा नियमोक्तिः प्रकृतसंबन्धोऽसंभवकारितत्वादर्थोत्तरविवक्षया तत्र प्राणतत्त्वमनुशासनं प्रकृतत्वात् सत्यवत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा स्वयमेव सत्यं कृतत्वात् प्रकृतत्वात् यति यत्प्राणविज्ञानेन विकारात् तद्विषयेनातिवादित्वमनतिवादित्वमेव तदे एतवाच्यति वदतियः सत्येनातिवदतीति तत्र सत्यमिति परवक्ष्यते यस्माद्येकवदत्वात् सत्यं तत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा तिच प्रकृतत्वात्तथा च्युत्पादितार्थान्तराद्यसौ भगवः सत्येनातिवदतीति संबन्धोऽप्यप्राणलिंगादिप्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा भूमात्तमुपदिशति तत्र यत्प्राणद्वयस्यैव कर्तृत्वं प्रकृतत्वात् तदेव तदर्थोत्तरवदतीति तस्यैव प्रकृतत्वात् सत्यवत्तत्तदात्तात्प्राणतत्त्वमिदं प्रकृतमिति वा

प्र
भा
५८

प्रश्नश्चैकं सत्त्वं वाक्येति किमिदमिति तदुक्त्याद्यावृत्तिरिति श्रुतिरिति पतति अतदिति अंतर्गतस्याधारमत्वरं अतिरचननत्याद्या
वर्तयतीत्यर्थः जीवनिगमपरत्वेनापि सत्त्वं योजयति तथेति अन्यभावोभेदः तद्विषयादिति सत्त्वं यः तद्विषयोपि नो जीव एवात्तरं
नपरमपरमपरम नदीति अतिवृत्तिर्जीवत्वेनास्तीत्यर्थः तस्याहर्नित्राप्रमाणनिर्गुणत्वेन समन्वितमिति सिद्धे इति तत्कर्मव्यपदेशा
त्तः प्रश्नोपनिषदमुदाहरति एतदिति पिप्पलादोगुरुः सम्यक्भावेन प्रश्नोपनिषदमुदाहरति सम्यक्भावेन प्रश्नोपनिषदमुदाहरति सम्यक्भावेन प्रश्नोपनिषदमुदाहरति
योग्यमोकारः सदिशतिमव विज्ञोस्तस्य प्रतीकसंस्थाया एवेव स्यात्तन्ना विद्वानेते नैवाकाशध्यानेनायतनेन प्राप्ति साधनेन यथा
ध्यानपरमपरमपरमवति प्राप्तोतीत्यप्रकृत्यमध्ये एकमात्रं हिमाजोकारयोर्ध्यानमुक्त्यवतीति यः पुनरिति इत्यभावेरतीषात्रस्यो

किमिदमन्यभावव्यावृत्तेरिति अन्यस्याभावो अन्यभावान्नस्याद्यावृत्तिरन्यभावव्यावृत्तिरिति एतदुक्तं भवति यदस्य दुस्य
एतत्तरं शास्त्रवाच्यमिदं शास्त्रेन द्वावादिदमवर्तनविधायकमत्तरं व्यावर्तयति अतिः तदोः तरंगारं परं दृष्टं अतः आनु एतद
मतेमनु विज्ञानेचिदात्रितितत्राह सत्त्वादित्यपदेशः प्रधानस्यापि सत्त्वमिति द्रष्टुं त्वादित्यपदेशस्तु न सत्त्वमप्येव न तत्त्वान् तस्य
यानामदेतोस्ति दृष्टान्तेनोस्तिमेतन्नामदत्तेस्ति चित्तात्रित्यात्मभेदप्रतिषेधात्तत्र शरीरस्याप्युपाधिमतो दूरशब्दवाच्यत्वं
मत्त्वत्तु मयात्रमवागमनस्युपाधिमत्त्वं प्रतिषेधाच्च तद्विदुषाधिकः शरीरानामभवति तस्यापरमवत्त्वस्यात्तरमिति
निश्चयः इति तत्कर्मव्यपदेशात्तः १४ एतदेव सत्त्वकामपरं चापरं च त्रयस्य दौकारस्तस्यादिहानेनेनैवायतनेनैकतरमन्तेती
ति प्रकृत्यप्रयते यः पुनरेतं त्रिमात्रेणोपनिषत्तन्नेवात्तरं एतत्तरं पुरुषमभिधायीति तत्त्वस्मित्यावोपरं त्रयस्याभिधायत
वामुपदिशते श्रीरक्षिदपरमित्येतेनैवायतनेन परमपरं चैकतरमन्तेतीति प्रकृतत्वात्तत्राशयः तत्रापरमिदं त्रयस्यतिश
प्रकस्यात्तेजसि सूर्यसंयत्रः समामभिरु जीयते त्रयस्य लोकमिति च तद्विदो देशपरिच्छिन्नस्य फलस्याचमानत्वात्

कारयोरभेदोपक्रमात् योशकारादिमात्रात्रेयवकस्यामात्राया अकारस्यात्रस्यादिकं जाग्रदादिविभूतिचनानातिनेन सत्त्व
कृताना एकमात्राय स्यात्कारस्य एकमात्र एव मात्रादयस्य सम्यग्बुद्धिभूतिज्ञानेति मात्रास्य मोकारं प्ररुषयोभिधायीतस्यैका
रविभूतिज्ञेनयातेः सामभिः सूर्यहारात्रस्य लोकं गत्वा परमात्मने पुरुष इति तदर्थः सशयतदीत्राह किमिमादिना
अस्मिन् त्रिमात्रवाक्यस्यार्थः प्रवेत्तुं सर्वं ज्ञत्वेनात्मेनैवाकारे बुद्धिस्थानात्तन्निश्चीयते रतिप्रसंगसंगतिः यद्वा पूर्वत्र चोर्गी
रुठस्यात्तरं शास्त्रसंनिमात अस्मिन् हितिरुक्तात्तद्वदत्रापि त्रयस्य लोकं प्राप्तिरिति तत्परं ह्यस्मिन् रणगर्भे हतिमिति दृष्टेतेन
पूर्वपक्षरिति तत्रापरमिति कार्यपरत्रस्योपास्तिकमयफलमउपासकः सूर्यसंयत्रः पतिर्हः ॥

स्तथात्रिमात्रं

५८

[illegible]

विभूतौ विषयत्वं लभ्यते

शा
भा
२९

ससामभिरुचीयते असत्वेकं सप्ततस्याजीवतुनादित्येतत्पदेन संनिहिततरोत्र यल्लोकसमीपेण सप्तत इति प्रश्नप्रवक्तव्या च हे कुरु
होत्यादिना मर्त्यो वनर इति सजातिभिः सैथयस्त्रित्वा लक्षणपिंडः त्रित्वाद्यद्वयोभावः परिज्ञेयस्य सत्त्वित्वाभावः एतत्पदेन
न३ असत्वेकं वा परास्यतश्चकार अपर इति जीवज्ञेयाद्यस्य असत्वेकं तद्व्यापार इति जीवानां दीति व्यष्टिकरणभिमानि
ना जीवाजीवतुनः संज्ञातेष्वस्मिन्सर्वे कर्तव्यभिमानि निमजीवतुनः नत्वा भिन्नत्वात्परं परासंबंधेन लोकोलद्वयस्य
तस्यात्परः सर्वलोकतीतः शुद्ध इत्यर्थः परपुरुषशब्दस्य परमात्मनि स्मृतत्वात् स एव धर्म इत्यर्थः परमिति यस्मात्परं चापरम

कर्तारि जीवतुनरस्य तेनो मर्त्यो जीवलक्षणं नृनो जीवतुनः सैथयस्त्रित्वा लक्षणपिंडः परमात्मनो जीवरूपः त्रित्वाभाव
उपाधिकृतः परश्च विषयेदियेभ्यः सैत्रजीवतुन इति अपरश्चाह ससामभिरुचीयते असत्वेकं मित्यनेनानंतरं वा
कानिदिष्टापो असत्वेकः परस्त्वेकं तरेभ्यः सैत्रजीवतुन इत्युच्यते जीवानां हि सर्वेषां कर्तव्या परिहृतानां सर्वक
राणां त्मनिदिराणां भेदस्य लोकनिवासिनि संज्ञातोपपत्तौ च त्रित्वा असत्वेकं जीवतुनस्तस्मात्परायः परमात्मा
त एव कर्मभूतः स एवाभिधानेपि कर्मभूत इति गम्यते परपुरुषमिति विशेषणं परमात्मपरिग्रह एवावक
र्यते परे हि पुरुषः परमात्मेव भवति यस्यात्परे किंचिदस्य ज्ञास्ति पुरुषात् परं किंचित् साक्षात्सा परागतिरिति
श्रुत्यंतगतं परं चापरं च अस्य संकभरति च विभज्यते नंतरमौकारेण परं पुरुषस्य भिध्यातये बुवत्परमेव अस्य परं पुरु
षं गमयति यथा पादोदरस्तथाविति मुच्यते एवं ह वै स पापना विनिर्मुच्यते तति पापविनिर्मुक्तफलवचनं परमा
त्मानं मिहाभिधातये सूचयति अथ यदुक्तं परमात्माभिधातये न देशपरिच्छिन्नफलं पुनरिति अत्रोच्यते त्रिमात्रे
णोकारेणालेवनेन परमात्मानमभिधातयतः फलं असत्वेकं प्राप्तिः क्रमेण च सम्यग्दर्शनेत्यतिरिक्तं कममुत्तमि

स्ति किंचित्स एव सायः परः न तपि जात्यरः सूत्रात्मेत्यर्थः किंच परशब्देनोपक्रमे
निश्चितं परं चैवात्र वाक्यशेषात्तवमित्याह परं चापरं चेति पापान्नृत्तिलिगाच्चेत्याह यथेति पादोदरः सर्पः उकारे
परवत्सोपासुनयास्यं हारा असत्वेकं गत्वा परवत्सित्वा तदेव शांतमभयं प्राप्नोतीत्यविरोधमाह अत्रोच्यते इति एवमेक
वाक्यता समर्थप्रकाराणां तद्वत्परपुरुषश्रुतिभ्यां परवत्स्यतया भिन्नत्वात् असत्वेकं प्राप्तिं गंधाधित्वा वाक्ये प्राणावयवे
असत्त्वसमन्वितमिति सिद्धं ॥

३५

ननु वसुदानरंशुरिति ध्यानादिदेवस्य तत्त्वमपि फलं वसोपासकस्य अतः मित्यत आह नहीति अयं उत यातेष्वत्र परवित्त
 रमपरविदपरमत्वेतीत्यपक्रमात् परविदाय रपामिरयुक्ता उपक्रमविरोधात् तत्रात्र परपामिरेवेति कतिवाच्यं परस्य सर्वगतत्वाद्
 त्रैवपामिसंभवेन सूर्यहमागतिवैयर्थ्यादप्यक्रमानुगदीतादपरपामिरूपा हि मात परपुरुषमिति परश्रुतिवाप्येत्यर्थः परश्रुतेर्ग
 यत्र तिष्ठत्यति नन्विति विदः स्यात्ते विराट्तरपेक्षया सत्त्वसा परतममिति समाधाय यः सत्त्वसंशयश्चरय रतिप्रतिज्ञात्तेन तेन वाच्ये
 तत् परमेवेति सत्त्वसा कर्षमादिवाप्यगर्भमपरं पुरुषं वसुदानमिति चतुर्थः तन्वीक्षाविषयोऽप्यपेक्षस्तत्राह तत्राभिधाय

नदियरुजस्य विदेशापरिस्त्रिंशं फलमश्रुतीति प्रकृतं सर्वगतत्वात् तस्य जस्यः नन्वपस्य सपरिग्रहे परंपुरुषमिति वि
 शेष्टानोपपद्यते नैषट्पः विंशत्येकाया प्राणासा परलोपयते रित्येव प्राप्तेभिधीयते परमवचने दाभिधायतवमुप
 दिश्यते कस्मात् इति कर्तव्यपदेशात् इति विदः दर्शने दर्शनयाप्यमी रति कर्म इति कर्म तेनासाभिधायतवस्य
 रुषस्य वाक्पशोषवापदेशाभवति सप्ततस्या जीववृत्तात् परात्परे परिशयपुरुषमीक्षत इति तत्राभिधायते रतया भ
 तमपि वस्तु कर्म भवति मनोमयकल्पितस्याप्यभिधायति कर्मत्वात् ईक्षुतया भूतमेव वस्तु लोके कर्म इष्टमि
 ततः परमात्मैवायमस्य कर्तृत्वविषय भूत इति कर्म तेन वापि इति गम्यते स एव चेदं पुरुषशब्दात्प्राप्तमभिधा ५१
 तवः प्रत्यभिज्ञायते नन्वभिधाने परः पुरुष उक्त इति तत्र परात्परः कथमितरतरत्र प्रत्यभिज्ञायत इत्यत्रोच्यते पर
 मपुरुषशब्दात्तावदभयत्र साधारणं न वा त्रजीववृत्तनशब्देन प्रकृतोऽभिधायतः परः पुरुषः परात्पर इत्येतत्तस्मा
 त्परात्परमयमीक्षितवः पुरुषात्प्राप्त

यतेरिति तन्वीक्षायां प्रमात्वादिष्यसम्पत्ता मपेक्षतरति भवतस्यः पर ईक्षणीयः ध्यातव्यस्तस्योपरः किं न सादित्यत आह
 स एवेति श्रुतिभाष्ये तन्वीक्षानात्स एव यमिति होत्रः श्रोत्रात्प्राप्तमत्रैव सत्त्वयोजनात्प्राकारं वाच्यं स पर ईक्षणात्वात्वाकाश
 पे ईक्षणीयत्वेन रत्रच श्रुतिप्रत्यभिज्ञानात्स एवायमिति तच्च शब्दभेदात् प्रत्यभिज्ञेति याकते नन्विति परात्पर इति शब्दभेद
 मगी कृत्य श्रुतिभाष्ये कप्रत्यभिज्ञया श्रुतिरोपपत्तौ अत्रेति तन्वीक्षया जीववृत्तात्परादित्येतत्पदेनोपक्रान्त्या तव्यपयम
 यो दीक्षणीयः परात्प्राप्त्यादय इत्यत आह तत्रात्रेति ध्यातव्यतमत्वे द्वाया चलोके समानविषयत्वात् स एव च क्षणी
 य एवेत्येकमापस्य सारयेरे कवाका ता भवतीति भावः ॥

शा
भा
८

78

अस्तप्रसामीजीकोहृदयस्थाकाशस्तत्रैवस्थितश्चाह तत्रेति प्रसामिन्नएवतदंतस्थत्वसंभवाज्जात्यापेक्षेयः वापिनोतस्थाने
 कथमित्यतश्चाह मनश्चि आकाशपदेनदहरमनुहृषोक्तोपमादिकेप्रसामेदविवक्ष्यामविष्मतीत्याह आकाशेति ननुजी
 वस्थाकाशपदार्थत्वमपुनर्मित्यशेषात्तद्विभूताकाशपदद्वयोस्तस्मिन्तस्मिन्किंचिद्यमित्यपिद्वान्तरमाह नचात्रेति परमं
 तस्यवस्तुनद्विषोषणत्वेनाधारत्वेनदहकाशस्तत्रैवस्थितोपादानादित्यर्थः यद्वाअन्वेषणादिलिगाहहस्पत्रसत्त्वनिष्प
 यादाकाशस्तल्लिगादित्यनेनगतार्थत्वमितिशकाश्चान्निरसनीयाअन्वेषणात्वादेः परविशेषणात्वेनप्रहणादहस्पत्रसत्त्व
 त्वेलिगानास्तीत्यर्थः अपदतणाप्रत्यादिलिगोपेतामश्रयाकेवलाकाशाश्रुतिर्वाप्यति सिद्धांतयति परमेश्वरत्वादिना
 धिर तत्रप्रसामितः प्रैकदेशेवस्थानेदृष्टेययागजः सुननुपाधिकस्यजीवोमनश्चप्रायागदृष्टेप्रतिष्ठितमित्येजी
 वस्येवेदहृदयोतरवस्थानेस्थात् दहरत्वमपितस्योपायापमित्यत्वदवकल्पते आकाशोपमितत्वादित्यत्र
 भेदविवक्ष्यामविष्मति नचात्रदहरः स्थाकाशस्यान्वेषणात्वेविजितामित्यत्वेवच्यते तस्मिन्तदंतरित्यपि
 विशेषणत्वेनापादानादित्यतउत्तरमः परमेश्वरवदहकाशोभवित्रमहेतिनभूताकाशजीवोपाकेसाउत्तर
 भोवाकाशोपगतभोहेतुभः तद्यादि दृष्टयतयाविहितस्यदहरस्याकाशस्तत्रैवस्थितस्यैवप्रत्यक्षमपि कितरत्रविद्य
 तेषदन्वेषणंयद्वाविजितामित्यमित्येवमादिपश्वकंशोतसमसाधनवचनेभवति सत्रयायावात्वाअपमाकाश
 स्तावानेधोतद्वदपकाशउभेश्चिन्नयावाद्यिजीवतरेवसमाहितइत्यादि तत्रउत्तरीकदहरत्वेनपामदहत्वे
 स्थाकाशस्यप्रसिद्धाकाशोपमो नदहरत्वनिवर्तयन भूताकाशत्वेदहरस्याकाशस्यनिवर्तयतीतिगम्यते यद्यपि
 काशप्राज्ञाभूताकाशरूढस्तथापितेनेवतस्यापमानोपपद्यतेइतिभूताकाशशकानिवर्तिताभवति नन्वेक
 स्थाप्याकाशस्यवाद्याभंतरत्वकल्पितेनभेदेनापमानोपमेयभावः संभवतीत्युक्तेनैवसंभवसंगतिर्यत्काल
 काशस्यात्तेपश्वकमितिसंबधः तमाचार्यप्रतियदिद्वयुहंदयमेवतावदन्तत्रसाकाशात्यतरः किंतदजालेविद्यते
 यद्विचार्यतेयमितितदासआचार्यव्यासकाशस्यात्यतानिष्ठितिमित्यर्थः वाक्यस्यात्ययमाह तत्रेति निवर्तयतिआ
 चार्यइतिशेषः नन्वाकाशपदेनरूढाभूताकाशस्याभावात्कथंनविहतिरित्याशङ्काह यद्यपीति ननुगमराव
 णापोयुहेरामरावणयोर्विवसभेदेषुपमाइष्टेतिचेतनाभेदसाहचर्यानन्वयेनयुहस्यनिरूपमत्वेतामयोदनन्व
 यालेकारइतिकाव्यविदः पूर्वात्कमन्यनिरस्यति नन्विमादिनासीताप्रिष्टरवाभातिकोदंडप्रभयायुतस्याह
 प्रभायोगसीताशेषरूपविशेषणभेदाद्देहअपमकस्यैवश्रीरामस्यापमानोपमेयभावसिद्धयमगत्यरूढत्वमित्येव

विक्रमेराशपरा

दहरणं दृष्टं नैव साजाश्रयणं तत्रैवाकस्य तत्त्वविहित
 परत्वेन गतिः प्रचल

गतिकानां क्षीयं

श
मा
८

अनेतफललिंगदण्डदरः परमात्म्याद तययेति अथकर्मफलद्वेषाणानंतरमिहजीवदृश्यामात्मानंदरं तदश्रितो
असत्कामादिगुणनाचाद्यैदेशमनुविद्यमानेनानुभयपरलेकगच्छतिनेषां सर्वलोके सुनंतमेवैवेष्टयासे
चलनादिकं भवतीत्यर्थः ददरे उक्तलिंगान्यथासिद्धान्तिनेषां तदेतस्यागानादिसुक्तं स्मारयित्वा दृषयति यदपीत्यादि
ना उत्तरत्राकाशस्वरूपप्रतिपादनायथानपयत्ना पूर्वतस्यान्वेषत्वादिकमित्यत्रान्यथापयतिशक्ते नन्विति एत

तद्यथेदकर्मचितो लोकः दीयते एवमेवामुत्र पुण्यचितो लोकः दीयत इति चकर्मणामंतवत्फलत्वसत्कायपर
हात्मानमनुविद्यमानेनेतो असत्कामानिनेषां सर्वेषु लोकेषु कामचायभवतीति प्रकृतदहराकाशवित्तान
स्यानेतफलत्ववदन्यरमात्मत्वमस्य सूचयति यदप्येतदुक्तं नददृश्याकाशस्यान्वेषत्वे विजितासितयचोक्तं
च अतएव विशेषणानेनोपादानादित्यत्र अमः यथाकाशेनान्वेषत्वेनोक्तः स्यात् यावान्वाअथमा
काशस्तावानेषांतदयथाकाशस्याकाशस्वरूपप्रदर्शनेनोपपुम्यत नन्वेतदप्यतवेति वस्तुमद्वावदर्श
नापेवप्रदर्शने तैवेदुपुः यदिदमस्मिन्मपुदेददरपुउरी कंबेशमदहसेस्मिन्नंतराकाशः कितत्रविद्यतेयद
न्वेष्ये यहाविजितासितयमित्यादिपपरिहृयवसरेआकाशोयमोयक्रमेणयावापृथिव्यादीनामंतः स
मादितत्वदर्शनात् नैतदेवैष्वंदिसितियदंतः समादितेद्यावापृथिव्यादितदन्वेष्येविजितासितयचोक्तं स्या
तत्रवाकाशेषानोपपद्येतस्मिन्काशः समादिताः एष आत्मा परतयाप्रेतिदिप्रकृतंद्यावापृथिव्यादिसमाधाना
धारमाकाशमाकृष्यायपरहात्मानमनुविद्यमानेनेतो असत्कामानितिसमर्च्येतचशहेनात्मानंचका यात्र
माधारमाश्रितोअुकामान्वितेयानावशेषोदशयति तस्याद्वायोपक्रमेपिदहरशवाकाशादृश्यपुउरीकापि
ष्टानः सहानः समादितैः पृथिव्यादिभिः सतोअुकामैः सिद्धेयउक्तस्तिगम्यतेसचोक्तोभोदेवमः परमेश्वरस्ति

79

टाकाशस्वरूपे आत्मेवजीमाकाशस्यात्यंत्यमुपमया निरस्वानस्यवस्तुकेस्तदंतस्य तेवधेयमित्यर्थः तर्हिज
गदेवधेयेत्यादिनाद नैतदेवमिति अस्तकोटोषस्तत्राद तत्रेति सर्वनामभ्यांदहराकाशमाकृष्यात्मत्वादियगानुक्त
गगोः सदतसोवधेयत्वेवाकाशेषावृतेतद्विरोधस्त्यर्थः तस्मिन्पदेनरितितसदंतव्यवहितमपिहृदयेयाम्यतयाय
हमित्याद तस्मादिति यहाआकाशस्तस्मिन्पदेतस्तदुभयमन्वेष्यमिति योजनोक्तसूचयति सहानस्थरिति

यात्र

८१

किंचुसदीकाशस्यंतरत्वासागोत्पत्तेनवापकवाद्याकाशसाहसंयुक्तमित्याह अतिचेति आंतरत्वासागोत्पत्तेताभेदात्तसा
ह्यभिहितभावः ननुसदीकाशस्यात्पत्तिनिवृत्तेतावत्तत्त्वमप्येकमित्यादिनतश्चाह उभयेति अतोत्पत्तिस्तत्त्ववैवत्तास्य
मितिभावः एवमाकाशोपमितत्वाद्दसाकाशोनभतमित्युक्तं सर्वथायत्नादित्योग्यमप्युतयत्नाह नचेत्यादिना विगताति
तत्त्वानपुमिच्छायस्यसोपविजितत्वं बभूवाम्भूत्तमर्थः प्रथमकृतमस्यशब्देनतत्सापेक्षचरमप्यनघटीविभक्त्यर्थः

अपिचकल्पित्वाभेदमुपमानोपमेयभावेन गीयतः परिलिखितत्वादाभंतरकाशस्यनवाद्याकाशपरिमाणत्व
मुपपद्यतेननुपरमेयस्यापिमाणाकाशार्थेति प्रत्येतरेवाकाशपरिमाणत्वमुपपद्यते नैषदोषः पुं
रीकवेष्टनशामदरत्विनिवृत्तिपरत्वाद्वाकाशनतावत्प्रतिपाद नपरतं उभयप्रतिपादनेहिवाक्यमिद्येत न
चकल्पितभेदपुंरीकवेष्टितेशाकाशेकदेशावाप्यपिमादीनामनः समाधानमुपपद्यते एषआत्मपदतपा
प्राविजरोमत्युविशोकोविजित्तोपिपासः सत्यकासः सत्यसंकल्परतिचान्मत्वापदतपाप्रात्वादयश्चुगणा
नभताकाशसंभवेति यद्यपिआत्मशब्दोजीवेसंभवति तत्वापीतरेभ्यः कारणोभोजीवाशकापिनिवर्तिता
भवति ननुपापिपरिलिखित्वाशायमित्यप्युंरीकवेष्टकृतदरत्विशकनिवर्तपिते अस्माभेदविवक्षया
ननुजीवस्यसर्वगतत्वादिविवक्षतेरतिचेत यदात्मतपानीवस्यसर्वगत्वादिविवक्षतेतमेवचुगणाः साक्षात्सर्वग
तत्वादिविवक्षतामिति युक्तयदयुक्तत्रयपुरमितिजीवेनपुरस्यापलक्षितत्वादातःवजीवस्यवेदपुरस्वामिनः
पुरेकदेशवर्तित्वमस्तित्रयमः परस्यवेदंउत्तराणां पुरेसत्त्वादीरेवत्रयपुरमित्युच्यतेत्रयशब्दस्यतस्मिन्मात्र
त्वात् तस्याप्यस्तिपुराणनेनसंख्यउपलब्धपिष्ठानत्वात् सत्तत्त्वमजीवस्तत्त्वान्तरात्परपुरिषायपुरुषसोह
तेसवाग्रयपुरुषः सर्वोसपूषिपरिषाय इत्यादिश्रुतिभ्यः अथवाजीवपुरयवास्मिन्मसोत्रिदितमुपलस्यतेय
संबंधोनेयः ननुत्रयणां पुरमितिषष्ट्यर्थः सत्त्वमिभावोत्राणः निरपेक्षतातत्सापेक्षेताथमितिनायादित्याह अत्रयम
इति शरीरस्यत्रयणात्तदुपलब्धित्वात्तत्त्वरूपेसंबंधेमानमाह सति उभयशरीरेषुपुमिददयेशयमितिपुरुषात्पन्वयः
ननुत्रयशब्दस्यजीवेपत्रादिनाशरीरवृद्धिदेतामात्रत्वात्त्रयशब्दः कथंचिन्नेयइत्यतश्चाह अथवेति हृदयमिदेह
मितिअस्मजीवः तत्त्वामिकेपुरेहृदयंअस्मवशमभवतरात्तपुरमेवसंभवदित्यर्थः ॥

ननुजीवस्यसर्वगतत्वादिविवक्षतेरतिचेत यदात्मतपानीवस्यसर्वगत्वादिविवक्षतेतमेवचुगणाः साक्षात्सर्वग
तत्वादिविवक्षतामिति युक्तयदयुक्तत्रयपुरमितिजीवेनपुरस्यापलक्षितत्वादातःवजीवस्यवेदपुरस्वामिनः
पुरेकदेशवर्तित्वमस्तित्रयमः परस्यवेदंउत्तराणां पुरेसत्त्वादीरेवत्रयपुरमित्युच्यतेत्रयशब्दस्यतस्मिन्मात्र
त्वात् तस्याप्यस्तिपुराणनेनसंख्यउपलब्धपिष्ठानत्वात् सत्तत्त्वमजीवस्तत्त्वान्तरात्परपुरिषायपुरुषसोह
तेसवाग्रयपुरुषः सर्वोसपूषिपरिषाय इत्यादिश्रुतिभ्यः अथवाजीवपुरयवास्मिन्मसोत्रिदितमुपलस्यतेय

पृ
५
८२

८०

परमेश्वरे प्रसिद्धः ३

यथातेतिप्रकृतार्कवाद्यशब्दोदहरणभूतिगणविधिप्रसंगार्थत्वाद् दूरकोस्मिन्नितादिना अतैविभूतिशब्दः कर्तृवाचित्वात्तत्त
 तः सत्रेतुमदिमशब्दसामानाधिकरण्यत भूतिशब्दः क्लिप्तोतिविधावाण्णतेस्त्रियां क्लिप्तिभावेत्तिलोविधानादिति विभागः
 सेतरसंकरदेतु विभूतिस्त्रिनिहृतरित्येन नरुत्तमाद् यथादकेति सूत्रेण जयति एवमिदंति भूतेषु दहरः प
 रश्च भूतिरूपस्य नियमस्य च मदिस्त्रोस्मिन्परमात्मसेवश्रुतेतरुपलब्धेरिति सूत्रार्थः भूतेषु चकारात्सतयदोक्तनिय
 मकत्वं तिगं प्राप्नोतत्र नियमनेश्वरतरोपलब्धिसमाद् एतत्तुति भूतेनामाद् तथेति आसमेतात्काशतेदोषतश्चेति स्वयमे
 दूरकोस्मिन्तरकाशरितिदिप्रकृतार्कवाद्यशब्दोदहरणभूतिगणविधिप्रसंगार्थत्वाद् दूरकोस्मिन्तरकाशरितिदिप्रकृतार्कवाद्यशब्दोदहरणभूतिगणविधिप्रसंगार्थत्वाद्
 प्रत्वादिगणयोगेचोपदिश्यतेमेवान्तिवृत्तप्रकरणं निर्दिशत्ययथात्मासमेतविभूतिरेषां लोकानामसंभेदाये
 ति तत्रविभूतिरित्यात्मशब्दसामानाधिकरण्यद्विधारयितोच्यते क्लिप्तः कर्तरिस्मरणान्न यथादकसंतानस्य वि
 धारयितालोकेसेतुः सैत्रसंपदामसंभेदायेवमयमात्मावृष्टामध्यात्मादिभेदमिदं ज्ञानं लोकानां वर्णं श्रमादीनां
 चविधारयितासेतरसंभेदाया संकरयेति एवमिदं प्रकृतेददरेविधरणालक्षणे मदिमानेदंशयत्ययंचमदि
 मापरमेष्ठुरवश्रुतेतरगुणलभ्यते एतत्प्रकाशरस्यप्रशंसनेगार्गिसूर्याचंद्रमसौ विभूतौ तिष्ठतस्मादेः तथा
 यत्रापि निश्चितेपरमेष्ठुरवाकेश्रुते एष सर्वेश्वरसंभवाधियतिरेषभतपालेषसेतविधरणेषां लोकानां
 मसंभेदायेत्येवंभूतेषु दहेतुः परमेष्ठुरवायेदहरः प्रसिद्धश्च ॥ इतश्च परमेष्ठुरवददूरकोस्मिन्तरकाशउच्य
 तेयत्कारणमाकाशशब्दः आकाशोवेत्तनामरूपयानिर्वदिता सर्वाणि ह्वास्मानिभूतान्याकाशदेवस
 मयद्यतेरत्नादिप्रयोगदर्शनात् जीवेतन्न क्वचिदाकाशशब्दः प्रयुज्यमानोदश्यते भूतकाशस्तुसत्तामप्याकाशश
 ब्दप्रसिद्धोपमानोयमेवभावाद्यमेवभावगर्ह्यतवाश्रुते इतरपरमशीतारतिचेन्नसंभवात् ॥
 विप्रसङ्गाकाशशब्दस्यविभूतगणतोवाप्रसिद्धिः प्रयोगप्रचुर्ययदियषात्मापरतपाभेदादिवाक्येष्वलेनदहरः प
 रः तर्हिनीवोपीताशोकानिषेधति इति जीवस्यवाक्येषमाद् अथेति दूरकोत्तानंतरमुक्तेयस्येषुद्वेप्रस्ताच्यते
 येषसंप्रसादो जीवोस्मात्कार्यकारणसेह्यतात्सम्यगन्वाय आत्मानंतस्माद्विच्यविविक्तमात्मानंस्वेनप्रसरूपेण
 भिनिष्ठा यमात्मात्कृत्यतदेव प्रत्यकारोतिरूपसंपद्यते प्राप्नोतीतिवाक्येययामुच्येयादायस्वपीतीतिवाक्यसमः
 सुखेयादनेरतिवाक्यायतेनदत्त ॥ यदिकाकषेवलेनददरति परमेष्ठुरः पदिगृहेता स्तीतरापीजीवमाकाशेष परमसिः अथयपवसे प्रसादोस्माच्छरीरस

मुखापरेत्येति रूपसंपद्येष्वेन संसृण भित्तियद्यते

८२

भा.
पृ.
२३

तद्यत्रेति सुषुम्निर्णये च जीवमेव प्रजापतिर्या चष्टेत्यन्यथः यत्र कालेन देतत्त्वप्रयथासातथासुप्तः सम्पगतो निरस्तः
करणप्रामोयस्य समस्तः अतएवोपहन करण ज्ञानत्वनकालाद्या हीनः सप्रसन्नः स्वप्रप्रपंचमत्तानमात्रतेन विलापय
ति अतो ज्ञानमन्तान्मुक्तादित्वाः प्रातएव सचेतमेन कारणशरीरसादीनस्य सादृश्यस्य सत्ता स्फूर्तिप्रदत्तात्मेत्यर्थः
चतुर्थपर्याये ज्ञेयो केः तस्यैवापहतपाशत्वादियाणा इत्याशंका तस्यापि पर्यायस्य जीवपरत्वमाह नादिति आदिति निपातः
स्वदायं विद्यमानो दी २३ वाचनात्त्वस्य सः समानं प्रति सुषुम्न वस्थाया मये देवदत्तो ह्मिमेव मान्मानं जानाति नोएव
नैवेमानि भूतानि जानाति किंतु विनाशमेव प्राप्नोति नादमत्र भोगं पणमि इति दोषमुपलभ्य पुनः प्रजापतिमुप

तद्यत्रैतस्मिन् समस्तः संप्रसन्नः स्वमेन विज्ञानात्पेष्टात्मेति च जीवमेवावस्थांतरगतं व्याचष्टे तस्यैवापहतपाश
त्वादित्येतत्त्वमभयमेतदुक्तेति नादत्वत्वयमेव संप्रसात्मानं जानात्ययमहमस्मीति नोएवमानि भूता
नीति च सुषुम्नावस्थाया दोषमुपलभ्य पुनैव ते भूतानुवावास्यामि नोएवा न्यत्रैतस्मादिति चोपक्रम्य शरीर
संबन्धिदा पूर्वकमेव संप्रसादोऽस्मात् शरीरात्समुत्थाय परं ज्ञेयं निरूप्यते पद्यस्वरूपेणाभिनिवृत्त्यते स उतमः ७
रुष इति जीवमेव शरीरात्समुत्थितमुत्तमयुरुषं दर्शयति तस्मादस्ति संभवापरे जीवे मेधुराणां धर्माणामतोद
दोस्मिन्नतएकाश इति जीवपेवाक इति चेत्कश्चिद्भूयात् तस्यतिज्ञादा विभं न स्वरूपस्थितिनुश्रुः पक्ष्याह्वय
यो नोतरस्यादपि वाकादि र जीवस्याशकासंभवतीत्यर्थः कस्यायतस्तत्राणां विभं न स्वरूपो जीवो विवक्ष्यते अवि
भंतं स्वरूपमस्यैवाविभं न स्वरूपः भूतपूर्वगमा जीववचने एतदुक्ते भवति यएवोत्तिलोत्पत्तिलक्षितदृष्टारंति ॥

81

समादत्ते दोषे अन्ताप्रजापतिरह एतीमिति एतस्यात्कृतादात्मनो न्यत्रान्येन व्याख्यास्यामीत्युपक्रम्य मच्च वन्मर्त्ये वादे
शरीरमिति निदा पूर्वकं जीवमेव दर्शयतीत्यर्थः तस्यात्प्रजापतिवाकादतो संभवामिहेः सिद्धातयति तेषतीति अव
स्थात्रयाच्छोधनेना विभं तं शोधितत्त्वमर्थस्य वाको न्यवृत्तव्यक्तमित्यर्थः तर्हि सत्रे पुद्गलेन जीवोक्तिः कयं ज्ञानेन जी
वत्त्वस्य निवृत्तत्वादित्यत आह भूतपूर्वमिति ज्ञानात्पूर्वमविद्यातत्कार्यप्रतिबिंबतत्त्वमजीव तमभदिति कृताज्ञा
नानंतरं वस्त्वोपि जीवनामोच्यत इत्यर्थः विद्युतेन सप्रज्ञतुरीयमया यच्च तद्व्यात्मकप्रजापतिवाक्यस्य तात्पर्यमा
ह एतदिति ॥

२३

यदिवाक्यशेषवलेनदहुरद्वितीयमन्तरःपरिगृह्यतास्तीतरस्यापिजीवस्यवाक्यशेषपरामर्शोऽव्ययश्वसंप्रसादोस्माद्देरीशतत्त्वमुत्पादयपरंज्योतिरुपसं
पद्यतेनरूपेणाभिनिध्यत्यतः॥
देव्ये२० किंनस्यादितिप्राप्तेनिधामकमाह नैतदित्यादिनादहरेस्तुतधर्माणामसंभवाज्जीवोदहुर

ज्ञानिषो नात्मत्वे निरूपयन्ति पञ्चरति संशयादेरत्याचरित्वेति श्रुतेरप्रवक्ष्यावद्वैद्यानमपि नो वस्यलिंगमित्यहं तथेति तदा हि इत्यर्थः ३६।
 तस्य तस्मात्समुत्थाने ह्येतः यथेति च ननु ह्योपाकाशवाद्यो नीचे न ह्यहं वा शंकोक्ता वस्योत्थानलिंगवत्कल्पत्वात् य
 यथेति निरूपयन्तु भावाच्चीवादेरहं नो ह्येव नरुतिस्तत्राह अतिरेकेति उभयत्रापि शंकोक्तानिरुपार्थमित्यर्थः कातहि जीव
 पराभ्यास्यगतिस्तत्राह परिष्कारेति जीवस्यास्वापस्थानभूतव्यसक्तानार्थार्थपदार्थानां इति च ह्यते असेभवादिमिहेतोरसिद्धिमा

यथा प्राप्तेति हेतुचेति अत्र हि संशयः शङ्कः अतएव संशयप्रमाणं स्यात् यो ह ह्यन्तदवस्थावेतं जीवशक्तेः स्वयस्थापयितेना
योतरेतत्ता शरीरमायाप्रयमेव जीवश्च शरीरान्तरमुत्थानं संभवति यथा काशानुपाशुपाणं वाद्यादीनामाकाशात्सम
नानेतदहं यथा चाह हेतुपित्तो के परमेश्वरविषयश्चाकाशश्च परमेश्वरधर्मसमुत्पादारादकाशो वे नामरूप
योनिविहितेत्येवमाह परमेश्वरविषयश्चाभ्युपगत एव जीवविषयोऽपि भविष्यति तस्मादितरयोरमर्शो ह दूरोस्मि
अतएव काशस्यैव जीवोऽप्युपगत इति चेत् न तदेव स्यात्कस्यादसंभवाच्च हि जीवोऽप्युत्पाद्यपापि परिच्छेदाभिमानोऽस
त्चाकाशोऽप्यसंभवे न चाप्यपि धर्मानभिमानप्रमाणं न स्यात्तदवस्थापत्वाद्योऽर्थः संभवति प्रपञ्चितं चैतत्प्रथमस
त्वे अतिरेकाशोकापविहाराद्यपुनरुपन्यस्त एदित्यपि चोपरिष्ठादव्याध्याप्यमर्श इति उत्तराच्चेदविर्भूतस
त्पत्तुः इतरपराशरीराज्जीवाशंकाजनासा अ संभवति स कृता अथेदानीं मृतस्य वा मृतस्यैकात्म्यनः स
मुत्थानजीवाशंकायाः क्रियते इतरस्यात्मजापत्ताहावारी तद्विद्युत्प्रात्तापदतपाप्रेतपदतपापत्तादिगुराकमात्मा
नमन्वेष्ट्येविनिर्जायितव्यं च प्रतिज्ञायमप्येति शिष्यरुद्धादृष्टतपस्यप्राप्तेति जुवन्नसिद्धिद्वारा जीवमात्मानं नि
र्दिशति एतत्तत्त्वतेभ्यो नुवात्तास्यामीति च तमेव पुनः पुनः परास्मत्प पदस्यैव प्रेमादमानश्रुतेः पञ्चात्मेति य

मि३

शोकपरिहरति उत्तराद्यदितादिसत्रं निराहृतायाः जीवाशंकायाः प्रजापतिवाक्यबलामुनः समुत्थानं क्रियते तत्र जीवस्य
वापदतपाशत्वादियद्गोनासंभवमिद्विपर्ययः कथं तत्र जीवोक्तिस्तत्र तत्रेत्यादिना यद्यप्युपक्रमे जीवशब्देनास्ति
तथाप्युपदतपाशत्वादिगणकमात्मनमुपक्रमतस्तथाग्रदाद्यवस्थानि त्रयोपमासादवस्थानि गोन जीव निश्चया
नस्येव ते गणः संभवतीति समुदाहार्यः इदं प्राजापतिव्रंते यथैव इति प्राजापतिव्रंते सर्वविधे विषयदर्शनरूप
जाग्रदवस्थापत्रमित्याह दृष्टारमिति महीयमानः वासनामयैर्विवर्धैः प्रजमान इति स्वप्नपर्ययः ॥

मलसंगिनोदिक्रियामलनाशाद्व्यक्तिर्नैतत्कृतस्य सासंगिनरस्याह सुवर्णेति इत्यांतरं पार्थिवोमलः अग्निभूतेत्यस्याख्यानमनभि
 वाक्तेति असाधारणभास्वरत्वादिः सौख्यलोकः जीवस्वरूपस्याभिभवेवायकमाह इहेति विज्ञानचनपवेति अत्याचिन्मात्रस्तावदा
 त्मातेचेतन्येचक्षरादिनन्यवृत्तिव्यक्तं दृष्ट्यादिपदवाच्यं सतव्यवहारो गंजीवस्वरूपं भवति तस्याभिभूतत्वे दृष्टो व्यवहारो विरूप्येतदेव
 भावाद्यवदमो न स्यादित्यर्थः अतस्यापि स्वरूपं ह्यनिषु व्याक्तमित्येगीकार्यं व्यवहारदृष्टानादित्याह तच्चेति अन्यथेत्युक्ते स्फुटयति
 सुवर्णदीनां तुद्वयांतरं सेपकीदभिभूतस्वरूपाणामनभिवाक्तासाधारणविशेषाणां क्षारप्रक्षेपादिभिः शोधमानानां स्वरू
 पेणाभिनिष्पत्तिः स्यात् तथानक्षत्रादीनामदमभिभूतप्रकाशानामभिभावकवियोगे रात्रौ स्वरूपेणाभिनिष्पत्तिः स्या
 त न तत्राचेतन्योतिषो नित्यस्य केनचिदभिभवः संभवत्यसंसर्गित्वात् योऽस्त्वदृष्टिरोधाच्च दृष्टिप्रतिमतिवि
 ज्ञातयोर्हि जीवस्य स्वरूपं तच्च शरीरादसंमुत्थितस्यापि जीवस्य सदानिष्ठः उभयवदृश्यते सर्वो हि जीवः पश्यन् प्रापन्नम
 न्वा नो विज्ञानं न व्यवहरत्यन्यथा व्यवहारानुपपत्तेः तच्च शरीरात्संमुत्थितस्य निष्ठयेतपाकुसुमसुत्थानात् दृष्टो व्यवहा
 रो विरूप्येत अतः किमात्मकमिदं शरीरात्संमुत्थानं किमात्मकावास्वरूपेणाभिनिष्पत्तिरित्यत्रोच्यते प्राक् विवेकविज्ञा
 नात्ततः शरीरे हि यमनो बुद्धिर्विषयवेदनोपाधिभिरविविक्तमिव जीवस्य दृष्ट्यादित्योतिः स्वरूपं भवति यथा शुद्धस्य
 स्यादिकस्यास्वात्परोक्तं च स्वरूपं प्राक् विवेकग्रहणं कृतं नीलाद्युपाधिरविविक्तमिव भवति प्रमाणजनितविवेक्य मि३
 ह एतत्पराचीनस्य दिकस्वात्मनो नोक्तं च स्वरूपेणाभिनिष्पद्यत इत्युच्यते प्रागपि तथैव सन्न तथैव दहाद्युपाधिवि
 विक्तस्यैव सतो जीवस्य अतिरुतं विवेकज्ञानं शरीरात्संमुत्थानं विवेकवित्तानयत्स्वरूपेणाभिनिष्पत्तिः

तच्चेदिति स्वरूपं चेत्तज्ज्ञानिनपवद्यमेतत्तानात् सर्वव्यवहारोद्धितिरित्यर्थः अतः सदैव व्यक्तस्वरूपत्वादित्यर्थः सदावृत्तिषु
 व्यक्तस्य वस्तुतो संगस्यात्मन आविद्यकदेहाद्यविवेकरूपस्य मलसंगस्य सत्तात्तद्विवेकापेक्षया समुत्थानादिप्रतिरित्युत
 रमाह अत्रेति चेदनादधशोकादिः अविबिक्तमिवेति तादात्म्यसंगस्य कल्पितत्वमुक्तं तत्र कल्पितसंगो दृष्टो तोययति
 अतिरुतमिति त्वपदार्थं असाधारणं विज्ञानमयः प्राणोऽपि साध्यासिद्धमिति र्थः ॥

[illegible][illegible]

वेकार्यत्वाच्च जीवलिङ्गत्वेन तदस्य तमेतद्व्यतिरिक्तत्वेति लिङ्गोपेक्षकत्विरोधादिति चेत्तत्र ननु जीवत्वञ्च सत्त्विरोधपरमवतोः
कथमभेदस्तत्राह तदेवेति अन्वयव्यतिरेकाभां जीवत्वस्याविवक्षाकल्पितत्वादविरोधप्रतिपत्त्याह तेनान्यमाह
एवमिति व्यतिरेकमाह एवेति अविद्यायां प्रमाणा जीवत्वं वाक्येन प्रतीयात्तद्विज्ञानात्तद्विज्ञानिरित्यादिभिरुक्तं तदित्यर्थः
संसारित्वसाकल्पितत्वे सिद्धनिगमयति तदेव चास्येति समुपधाय स्ववरूपेण अभिनिष्ठाद्यत इति अतिव्याख्या नुमात्तिप
ति कथं पुनरित्यादिना कृत्यानिर्वाहस्य रूपमित्यन्वयः ॥

शा
भा
२५

सप्रमैनिर्विकल्पकानुपपन्नान्नोत्पत्तिरुद्धारणकप्रतिपाद नहीति बुद्धेः सात्त्विकेनाशेनाल्लिनाशिकाभावादिसर्गः
 एवमवस्थाभिरसंगत्वेनोक्तान्मेववरीयेपिअसत्वेनोक्तहत्याह तथेति अन्तेरेकदेशावाद्याहयति केचित्तिनि नोवपर्या
 मेंददितिभावः अतिवाधानैवमित्याह तेषामिति सन्निहितोत्पत्त्यवसर्वनामार्थः उक्तस्य पुनरुक्तेभयस्तिथुमने
 तवतयक्रांतपरमात्मानश्रुतार्थपवोक्तेस्तद्व्याख्याह मयस्ति लोकसिद्धीवानुवादेनत्रसत्त्ववाधतृतिस्वमतमुप
 संदरति तस्यादिति व्याख्यानंतरासंभवादिसर्गः विलयनेशोधनेविद्ययासंभवाकेनेनित्यावत् येनससारंसत्यमित्ते
 नहिविज्ञातविज्ञातेविपरिलोपेविद्यतेनिनाशित्वादितिप्रकृत्यंतरात् नश्चाचतथैपिपर्यायेणनेनेवनेभूयानव्याख्यास्या
 मितोएवानुत्रेनस्यादिसुपक्रममनुवत्सत्येवाहदशरीरमित्यादिनाशयेचनशरीराद्युपाधिसेवधप्रत्याख्याननसप्र
 सादशाद्यदितेजीवस्तेनस्येवाभिनिष्ठयुतशितत्रसत्त्वकापत्रेदर्शयत्रपरसाहुस्त्वमित्येवताभयसत्त्वकादयजीवदशा
 यति केचित्परमात्मविवक्षयाएतनेवनेरतिजीवाकषणमन्यायमन्यमानाएतमेववाकोपक्रमसत्त्वितमपदतपास
 तादिम्याकमात्मानेतेभूयानव्याख्यास्यमैतिकल्पयेति तेषामेनमिति सन्निहितत्वेनिनीसर्वनाम अतिविप्रकृत्य
 मयअतिशयोपहृतपयायोतराभिहितस्यपर्यायोतराणनभिधीयमानज्ञान एतनेवनेरतिचप्रतिज्ञाशकचनशा
 र्गयायादयमनेवाचलागास्यप्रजापतेः प्रतारकत्वेप्रसज्येततस्याहविद्याप्रत्युपस्थापितमपारमार्थिकेदेवरूपक
 र्भोक्तृरमादेषादिदोषकत्वधितमनेकानर्थयोगातद्विलयनेनतद्विपरीतमपदतपासत्वादियुक्तं पारमेश्वरंस्वरूप
 विद्ययाप्रतिपद्यतेसर्पादिविलयनेनेवरत्तादीनपरत्वादिनः पारमार्थिकमेवजैवरूपमितिमन्यते अस्मादीयश्रुके
 चित्तोसर्ववामात्मैकतमपक दर्शनप्रतिपत्तभूतानोप्रतिवोधायेदंशरीरकमारवामेकएवपरमेश्वरः कटस्थानि
 नोविलानथातरविद्ययामाययामायाविवदनेकधाविभाव्यते नानोविलानथातरस्तीति यत्तिदंपरमेश्वरवाको
 जीवमाशोकप्रतिषेधतिसूत्रकारः नासंभवादित्यादिना तत्रायमभिप्रायः तिर्यग्बुद्धसुक्तसंभावेकदस्य नित्यैकस्मि
 त्रसंगपरमात्मनि तद्विपरीतजैवरूपं योस्त्रीवतलमलादियरिकस्यतेतदात्मैकत्वप्रतिपादनपरवाकोन्यायोपेतैह तवा
 कितेषामिदेशरीरकमेवोत्तरमित्याह अपरेतिम्यादिना शरीरकस्यार्थंसेत्तेयेणोपदिशति एकपवेति अविद्यामाययोर्भे
 दनिरसित्वसामानाधिकरण्य आचुरणावित्तेयशक्तिरूपशब्दप्रवृत्तिनिमित्तभेदात्सद्व्ययोगः ज्ञेयवाविद्ययासंभूतितनतो
 न्योजीवश्तिशरीरकार्यः तद्विसूत्रकारः किमितिभेदंज्ञतेतत्राह यत्तिनि परमात्मनोसंसारित्वसिध्दर्थजीवाद्देहद्वय
 ति तस्यासंसारित्वनिश्चयाभावेतदभेदात्तावपिजीवस्य संसारित्वानथायादिसर्गः ॥

नहि विज्ञातविज्ञाते विपरिलोपे विद्यते निनाशित्वादिति प्रकृत्यंतरात् नश्चाचतथैपि पर्यायेण नेनेवने भूयानव्याख्यास्या

83

८५

84

तमेवभातमनुभातिसर्वे तस्यभासा सर्वे मिदं विभातीति समासनेति तत्रयंभातमनुभातिसर्वे यस्यचभासा सर्वे मिदं विभातिस
किं ते ज्ञोधातः कश्चिदुत्प्रातश्चात्मेति विचिकित्सायां ज्ञोधातरिति तन्व्याप्तं कुतः ज्ञोधातनामेव सूर्यादीनां भानप्रतिषे
धात तेजः स्वभावकदि चेन्नारकादितेजः स्वभावक एव सूर्यभासमाने दानि न भासत इति प्रसिद्धं तथा सदसूर्येण सर्वमि
दं चेन्नारकादियस्मिन्नभासते सोऽपि तेजः स्वभावक एव कश्चिदित्यवगम्यते अनुभातमपि तेजः स्वभावक एवापपद्यते स
मानस्वभावकैश्च नकारदृष्टादन्नात् गच्छंतमनुगच्छंतीति वृत्त तस्यां तेजोधातुः कश्चिदित्येवंप्राप्तम् अतएवायमा
न्यामवित्तमइति कस्यादनुकृतेरनुकरणमनुकृतिः यदेतजमेवभातमनुभातिसर्वमित्यनुभातं तस्यान्तरि ग्रहेव कल्पते
भास्यः सत्यसंकल्प इतिदिप्रातमात्मानमासनेति ननु तेजोधातुं केचित्सूर्यादयो नुभातीति प्रसिद्धं समत्वाच्च तेजोधातुनां
सूर्यादीनां तेजोधातुमनं प्रत्ययेऽस्ति यं भातमनुभायुः नदिप्रदीपः प्रदीपांतरमनुभाति यदप्युक्तं समानस्वभावकैश्च नकार
दृष्टपत इति नायमेकोतोभिन्नस्वभावकैश्चपि नुकारादृष्टते सतम्रायुः पिंडोऽग्रनुकृतिरग्निदहतमनुदहति भोमेवा
रजोवायुंवहतममनुवहतीति अनुकृतेरित्यनुभातमसत्सचत् तस्यचेति चतुर्थपादमस्यशोकसत्त्वयति तस्यभासा
सर्वमिदं विभातीति तदेतं केभाते सूर्यादेरुच्यमाने प्रातमात्माने गमयति ॥

नलिमात्सर्वभासकः परमात्मा स्वप्रकाशको वशाद्य इति सिद्धं तमाह जात इति शब्दत्वे स्वप्रकाशत्वे भासकत्वार्थं मुक्तं तत्र श्रुति
माह भारुण इति मानाभावाच्च तेनोपात्तं न ग्राह्यमाह नलिति किंच स्यादयत्नेनोत्तरभानमनुभूतिरिति ज्ञात्वा तदीयवदित्याह
समत्वाच्चैति योऽयमनुकरोति स तस्मात्तीय इति नियमो बालीत्याह नयमेका त इति यौनरुत्तमाशंकोक्तानुवादप्रवक्तृत्वे
देत्वेतरव्याचष्टे अनुकृतेरिति तमेव भातमित्येवकारोक्तं तदज्ञानेनानुसर्वस्पृष्टाभावाभावरूपमनुभूतेरिति तेनोक्तं
मनु

तस्यैवेति सर्वभासिकत्वमुक्तमित्येनानुक्तमित्यर्थः

अधिष्ठानसकलित्वादेदेविकल्पितस्याधिष्ठानात्रयकमित्याह जीवस्यत्विति कल्पितभेदानुवादसकलमाह एवंहीति सत्त्वभेदानोक्तमिति
 मोतिनिरस्यति प्रतिपाद्यमिति आमेतिनपरास्त्वन्तीत्यादिसूत्राणि आदिपदार्थः नन्वेतस्याप्यस्त्यार्थत्वेदेतापेक्षविधिविरोधस्तत्राह वर्णितस्य
 ति अद्वैतमज्ञानतः कल्पितहेताव्याविधयो न विदुष इति सर्वमुपपन्नमित्यर्थः एवं प्रजापतिवासे जीवानुवादेन त्रस्यमाणवापदतपापसा
 पुने जीवेन तदसंभवात्त जीवोदरवश्यत्वे तर्हि जीवपरामर्शस्य कर्गतिरित्यत आह अन्याथैवेति सत्त्ववाच्ये अथवादिना प्रकृतददरेवि

जीवस्य त्वनपरस्यादन्वत्प्रतिपाद्यमिति किं त्वनवदत्ते वा विद्या कल्पितं लोकप्रसिद्धं जीवभेदं एवं हि स्वाभाविक कर्तृत्वभोक्त
 त्वानुवादेन प्रकृताः कर्मविधयो न विरुध्यन्तीति मन्वेते प्रतिपाद्यं त्वस्यास्त्यार्थमात्रे कन्मेव दधीयति यगस्तदृष्ट्या तपदेशा वामदेववदित्यादि
 ना वर्णितस्यास्माभिर्विदुर्द्विदुर्देदेन कर्मविधिविरोधपरिहृतः अन्याथैव उपपन्नमर्थः ॥ अथ योददरवाकाशेषो जीवपरामर्शो दक्षितः
 अथ येष संप्रसाद इत्यादिः सद्दरे परमेश्वरे व्याख्यायमानेन जीवोपासनेनोपदेशेन प्रकृतविशेषोपदेशात्मनश्च कल्प्यामोतीत्य
 तस्याह अन्याथैव जीवपरामर्शः न जीवस्वरूपपर्यवसायी किं तर्हि परमेश्वरस्वरूपपर्यवसायी कथं संप्रसादशब्दोदितो जीवो नाम
 रितव्यवहारे देहे हि यं जराध्वक्षो भूत्वा तदसन्नानिर्मितो अस्मिन् प्राज्ञा जीवरोन्मथं प्रातः शवाग्रे सुकभयकृपादधिपारीरा भिमान् ॥
 तस्मिन् प्रायस्सुप्तावस्थायां परमेश्वरकृपायां हिते परब्रह्मण संप्रविष्टा विज्ञानेन त्वपरित्यज्य स्वेन रूपेण अभिनिष्ठा यते स एव
 पदस्याप संप्रवर्तमानोपदेशातिः येन स्वेन रूपेण अभिनिष्ठा यते स एव आत्मा यदुत्तपापनादियगा इत्यास्य रत्नचमयाय जीवपरामर्शः
 परमेश्वरवादिनोपपद्यते अत्यप्रतीतिवैतन इत्ते ॥ यदप्युक्तदरवाभिनेतराकाशरत्नाकाशास्त्यत्वं त्वं प्रमाणपरमेश्वरेनो
 पपद्यते जीवस्य त्वाराधयमित्यस्यात्यत्वमवकल्पनमिति तस्य परिहारे वाक्यः उक्तं ह्यस्य परिहारः परमेश्वरस्यापेक्षिकमल्पत्व
 मवकल्पनस्यार्थकौकल्यात्तद्यप्येदेशेनेति चेन्न निचायत्वादेवैवामचेत्यत्र मवेदयविदारेणुसंभानावशतिसत्त्वपति अथैव चेद
 मत्पत्वं प्रत्युक्तं प्रसिद्धेनाकाशेनोपमिमानया यावान्नाश्रयमाकाशास्त्यवानेवोतर्हदव आकाश इति अनुकूलमेतत्सच ॥ नत
 त्रसर्पोभातिनच इतारकं नेमावि युतोभाति कुतोपममथः

अथ

शेषो गगनास्तदुपदेशोपि नेत्यर्थः तत्र ददरवाकाशेषरूपं संप्रसादवाक्यमाशंकापूर्वकं ददरत्रसपरत्वेन वाच्ये कथमिमादिना उपास्य
 त्वादित्यत्वमुक्तमिति व्याख्यायकानां निरस्तमित्युक्तं तत्रमाह अथैव चेदमिति एवं ददरवाक्यं च सगुणो निर्गुणो च समन्वितमिति सि
 द्धं अनुकूलमेतत्सच मुक्तवाक्यमुदाहरति नतत्रेति तस्मिन् सति विषयेन भाति तत्र भासयतीति यावत् यदा चेदभास्कारदिनं
 भासयति तदा त्वदीमरयः का कथं मादं कुत इति ॥ ॥ ॥

शास्त्रादेवप्रमितः कठकवाचं पठति श्रंगुहेति पुरुषः पूर्णोष्णात्मनि देहसंयोगे प्रमात्रे हृदयेति हृत्तोत्तमं प्रमात्रं उच्यते तस्मैव परमात्मत्वादिवाक्येन तस्माद् तथेति अध्वसकमिति पठनीयं यं प्रमात्रो जीवः सवस्तुतो निधुमज्योतिर्विर्मिलप्रकाशरूपमिदं यं संशोध्य तस्यैव सत्वमाद् ईशान इति तस्याद्वितीयत्वमाद् सत्येति कालत्रयेऽपि स एवास्ति नाभ्यक्तिचित्रचिकेतसाष्टष्टं स्वतदेतदेवमर्थः परिमाणेन न शास्त्राभासेन शयमाद् तत्रेति यथा न भानादिति गतं तज्ज्याहरेण स र्याद्यगोचरो न त्रस्तुतेतया प्रथमं अतएव परिमाणं लिङ्गं जीव प्रतीता जीवो नोस्मीति ध्यायेदिति विध्यध्याहरेण ध्यानपरे वाक्यमिति पूर्वपक्षयति तत्र

शब्दादेवप्रमितः १५ अंगगुह्यमात्रः पुरुषो मध्यमात्मनिति ह्यतीति श्रूयते तद्योगगुह्यमात्रः पुरुषो ज्योतिरिवाधुमकः ईशानो
भूतभवस्य स एवायमस्य एतदेतदिति च तत्र योगमंगुह्यमात्रः पुरुषः श्रूयते स किं विज्ञानात्मा किं वा परमात्मेति
संशयः तत्र परिमाणोपदेशात्तावद्विज्ञानात्मेति प्राप्तं न ह्यनताया मविस्तारस्य परमात्मनो गगुह्यपरिमाणमपदिशेत्तवि-
ज्ञानात्मनस्तु उपाधिमत्वात्संभवति कयाचित्कल्पनयोगगुह्यमात्रत्वे स्मृतेश्च अथ सत्यवतः कस्यायाशब्देव शङ्कते अ-
गुह्यमात्रपुरुषे निश्चयकषयमोक्षतादिकं न हि परमेश्वरो ब्रह्माद्यमेव नतिष्ठेष्टशब्दः तेन तत्र संसार्यगुह्यमात्रो निश्चितः
स एवेहापीमेव प्राप्तिवृत्तः परमात्मेवायमंगुह्यमात्रपरिमितः पुरुषो भवितुमर्हति कस्माच्च ज्ञात ईशानो भूतस्य
व्यस्येति न ह्यन्यः परमेश्वराद्भूतभवस्य निर्वंकुशमीशिता एतदेतदिति च प्रकृतपृष्टमिहानुसंदधति एतदेतद्यत्तु
हेतुर्थः पृष्टचेद्वृत्त्या न्यत्र धर्मादन्यत्रा धर्मादन्यत्रास्मात्कृतोक्ततादन्यत्र भूते च भव्याच्च यत्तस्य पमितद्वेति शब्दादे-
वेत्यभिधानश्रुतेरेव शङ्कते इति परमेश्वरो योगस्य ते इत्यर्थः कथञ्चनः सर्वगतस्य परमात्मनः परिमाणोपदेश इत्यत्र वृत्तः
ह्यपेक्षया तु मनुष्यादिकारत्वात् १६ सर्वगतस्यापि परमात्मनो हृदये वस्थानमपेक्ष्य गगुह्यमात्रत्वमिदमुच्यते श्री-
काशस्यैव वेशपर्वपेक्षया रतिमात्रत्वेन ह्यनतातिमात्रस्य परमात्मनो हृदये वस्थानमपेक्ष्य गगुह्यमात्रत्वमप्युच्यते

परिमाणोति प्रवृत्तौ ब्रह्मरूपज्ञानी वा पाप्मः सिद्धं तेन प्रत्यक्षैव वाज्ञानेन फलमिति मनो व्युत्पत्त्या मोक्षेन विस्तारो मन्दत्वमिति
भेदः कया चिदिति अंगुष्ठमात्रदृश्यविज्ञानेन शब्दितव्यं भेदादप्यासक्त्यनयेत्यर्थः स्मृतिसंवादादप्यंगुष्ठमात्रो जीव इत्या
ह स्मृतेश्चेति अथ मरणान्तरे यमणादेव देवकर्मवशात् प्राप्तमित्यर्थः तत्रापि चरु किं न स्यादित्यत आह न स्यात् प्रभवति मय
मने ममापि विस्तरितियमस्य चरुतियम्यन्तस्मरणमिति भावः भूतभवस्येत्यप्यपदादायकाभावाच्चेष्टान इतीयात्वं शब्दाच्चिर
कुशमीशिताभातीति श्रुत्या लिङ्गवाच्यमिति सिद्धं नयति परमात्मैवेति प्रकारणञ्च ब्रह्म परमिदं कया मित्याह एतदिति श
ब्दावाक्यालिङ्गाद्वैलमित्याशङ्कार शब्दादिति करः सकलित्वाच्चरतिः " "

सा
भा
२२

86

एकवर्धवाकाशमनुकृत्यति एतदिति अतिरिक्तोवाकर्तृदृष्टः तंजीवेप्रवृत्तेत्युक्त्याहंयथावलवदिदियनिग्रहदिनानेविविक्तमात्म
 नैषकंस्वप्रकाशमस्तनकृदस्यत्रस्तानीयादित्यर्थः तस्मात्कदवाकाशप्रत्यग्रमणिनेयसमन्वितमिति सिद्धं शास्त्रसमन्वयाधिकारत्वे
 देवादीनां ब्रह्मविद्यायामप्यनधिकारः स्यादित्याशङ्क्य तदुपर्युक्तं ननुसमन्वयाध्यायधिकारचित्तानसंरातेत्यत आह अत्रेति
 स्मृतसोपेक्षानर्हत्वं प्रसंगः अत्रमनुष्याधिकारत्वात्मास्तजानोदेवादीनां वेदांतप्रवणदाधिकारोक्तिनवेति संदेहेभोगसक्तानां वैरा
 ग्याद्यसंभवात्नेति प्रामेसिद्धांतमाह वाचमिति एवमधिकारविचारालकाधिकारादयस्य प्राप्तिकीं संगतिः अत्र पूर्वपक्षे देवानोत्ताना
 नधिकारादेवत्वप्रामिद्वाराक्रममुक्तिफलसुदहराद्युपासनासुक्रमसुतार्थिनोमनुष्याणामप्रवृत्तिः फले सिद्धांतप्रवृत्तिरूपास
 एतमेवार्थपरेणास्यदोकरिष्यति अगृह्यमात्रः पुरुषोत्तरात्मासदानजानां हृदये सन्निविष्टः तस्मात्सरोरात्सहदेन्मुनादिवेषी
 काधेयतातेविद्यायुक्तसस्तनमिति तदुपर्युक्त्वादरायणः संभवात् २१ अगृह्यमात्रातिर्मनुष्यहृदयापेक्षयामच
 ष्याधिकारत्वात्मास्त्वस्यते तत्प्रसंगेनेदमुच्यते वाचमनुष्याधिकारोतिशस्तुनत्वमनुष्यानेवेतीदं ब्रह्मस्तानेनिय
 मोस्ति तेषामनुष्याणामुपरिष्ठायेदेवादयस्तानप्यधिकारोतिशस्तुमिति वादरायण आचार्यो मन्यते कस्मात्संभवात्
 संभवतिदितेषामप्यर्थित्वा घधिकारकारणेन तत्रार्थित्वाव नोत्पत्तिर्यदेवादीनामप्यसंभवति विकारविषयविभक्त
 नित्यत्वालोचनादिनिमित्तं तथासामर्थ्यमपितेषां संभवति मत्रार्थवादेतिहासपुराणालोकेभ्योविग्रहवत्त्वाद्यवगमात्
 नचतेषां कश्चित्पतिषेधोक्ति नचोपनयनशास्त्रेणैषामधिकारो निवर्त्येतोपनयनस्य वेदाध्यायनार्थत्वातेषां स्वयंप्रति
 नाभिर्देवत्वं प्राप्तांशप्रवणदिनात्मानान्मुक्तिसंभवादिनिष्फलोपेविचारः ननुभोगसक्तानां तेषामोत्ताथित्वा
 भावाध्याधिकारइत्यत आह अर्थित्वेतावदिति विकारत्वेनान्दतविषयसत्त्वस्य तया सयादिदोषदृष्ट्या निरतिशयसत्त्वमोत्ताथि
 त्वसत्त्वप्रकृतौ नोदेवानां संभवतीत्यर्थः तच्चिद्वयसादेसादेव त्वर्थेन शब्दातिरिक्ता विग्रहवती देवता नास्ति शब्दस्य चासामर्थ्या
 नूधिकाररत्नत आह तथेति अर्थित्ववदित्यर्थः अपर्युदत्तत्वमाह नचतेषामिति प्रोक्षयत्तनवत्त्वमरतिवदेवादीनां विद्याधि
 कारनिषेधो नास्तीत्यर्थः ननुविग्रहवत्त्वेन दृष्टसामर्थ्यसम्यप्युपनयनाभावाच्चास्तीयसामर्थ्यनास्तीत्यत आह नचेति तन्मा
 तराध्यायनवत्त्वात्स्वयमेव प्रतिभाताः स्मृतावेदाधेयानेन तया तद्वादित्यर्थः वत्तादिषु प्रविष्टः पिशाचादीनां वेदाहोषदर्शनात्
 देवयोनीनां जन्मान्तरस्मरणमस्तीति स्मृतवेदान्तानामर्थविचारो युक्तरत्यर्थः २२ " " " "

२२

शा
भा
८९

एकस्यापि देवस्य योगवत्त्वात्नेकदेहाश्रयिः प्रतिस्तरति दर्शनात्संभवति अतो न कर्मविशेषादतिव्याचष्टे कस्यादित्यादिना वैष्णवेव शस्ते
प्राप्तमानदेवाः कर्तृतिशक्तयेन पृथग्यात्तवत्त्वात्तिविदात्रयस्यादिरूपया उत्तरं देहानि विनामशस्यमानदेवसाक्षात्तवकः शब्दं पश्यि
कानित्रीलिशतानिस दस्त्राणीति संवाकैः संवाक्यस्वरूपप्रश्नेमदिमानो विभूतयः सर्वदेवापरात्रयस्ति प्रादेवानामतोष्टावसवः पकादश
रुद्राः द्वादशादित्याः ३३ः प्रजापतिश्चैतित्रयस्ति प्रादेवदेवतेषिषाण्यमश्रिपृथिवीवायंत रित्तादित्यादिवांमदिमानस्तेषिषद्देवेष्वतर्भवति
षट्देवास्त्रिषु लोकेषु त्रयश्च द्यो रत्राणा योर्होत्रे कश्मिन्नाणो दिशस्पगर्भतर्भवत इति दर्शितमित्यर्थः त्रयस्त्रिषातोपि देवतानामिति सं

कस्यादनेकप्रतिपत्तेरेकस्यापि देवतात्मनो युगापदनेकस्वरूपप्रतिपत्तिः संभवति कथमेतदवगम्यते दर्शनात् तथादिकृति
देवा इत्येकस्य त्रयश्च त्रीचशान्मत्रयश्च त्रीचशदस्तेति निरुक्तं कतमेतेरस्य स्यात्पृथग्यां मदिमानपवेषामतेत्रयस्ति प्राते वदेवा
इति च वतीति प्रतिवेकैकस्य देवतात्मनो युगापदनेकरूपतो दर्शयति तथात्रयस्ति प्रातोपि षडाद्यंतर्भावक्रमेण कतमपेकादेव
इति प्राण इति प्राणैकरूपतो देवतानो दर्शयति तस्यैव कस्याप्राणस्य युगापदनेकरूपतो दर्शयति तथास्तरिपि प्राणमनो वे
शरीराणि बहूनि भरतर्भ योगीकुर्यादलं प्राणनेश्च सर्वे मंदी चरेत्प्राणद्विषया नैश्चि कैश्चिदुग्रं तपश्चरेत् सेति पेष्वपुन
वेः स्तानि सूर्यो रस्मि गणानि ते वंजातीयकाशमाणिमा ये श्रयाणां योगिनामपि युगापदनेकशरीरयोरां दर्शयति किमु वक्तव्य
मात्तानमिद्वानां देवानामनेकरूपप्रतिपत्ति संभवति वैकैका देवता बहु भिरूपैरात्मानं प्रविभज्य बहुषु यागेषु युगापदंगभावं
गच्छतीति पश्येन्न दृश्यते तर्धानादिक्रियायोगादित्युपपद्यते अनेकप्रतिपत्तेर्दर्शनादित्यस्यापरायात्वाविप्रदवतामधिक
मोगभावचोदनास्तेकाप्रतिपत्तिर्दृश्यते कचिदेकाविविग्रहवाननेकत्रयुगापदनेगच्छतियथा बहुभिर्भोजयद्भिर्नैको ब्रा
ह्मवि१

इति त्रयस्त्रिषातोपि देवतानामिति सं

बंधः दर्शनं श्रौतेयात्प्रायस्मानं व्याचष्टे तथास्तरिरिति बलं योगसिद्धिं श्रणिमा मदिमा चैवलतिमा प्राप्तिरीशता प्राकाम्यं च व
शित्वं च यत्र कामावसायिते तेषु श्रयाणां तरोना एमिद्वान लघुय रुच्य भवतियोगं गत्या चैदस्पर्शः प्राप्तिः ईशतस्त्रिपत्तिः
प्रकाम्यमिच्छानभिज्ञातः वशित्वं नियमनशक्तिः संकल्पमात्रादिवृत्ताभेस्यत्र कामावसायितेति भेदः अज्ञानमिद्वानेदुन्मना
सिद्धानामित्यर्थः फलितमाह अनेकेषु कर्मस्वकस्य प्रतिपत्तिरेगभावः तस्य लोके दर्शनादिति वक्तव्यतिरेकमाह कचिदेक
इति ॥

८५

देवानां च ऋषीणां च विद्याधिकारे कारणमधित्वादिकमुक्ताश्चैत्रे गरुडकुलवासर्गदल्लिङ्गमाह अपि चेति ननु ब्रह्मविद्यादेवादीनां अधिकारोतिवे
 दार्थत्वात् अपि होत्रवदित्यत्राह यदपीति देवानां कर्मसनाधिकारः देवतातराणां मुद्देशनामभावादिति प्रथमसत्तार्थः ऋषीणां मनषि
 कारः ऋषीणां भावात् ऋषिपुत्रे कर्मसनाधिकारोतिद्वितीयसत्तार्थः अस्माभ्यं मुपाधिरिति परिहरति नतदिति अस्माभ्यं रूपं कारणमि
 त्थं न ह्यस्ति येनास्माभ्यं सादिति शेषः तद्योयो देवानां प्रत्यक्षपतस एव तदभवत् ऋषीणां मिति वाक्योपोष्य नुमानस्य दृष्टव्यं ननु
 देवादीनां गृहमात्रकृतिः कथं तेषां महादेहत्वेन हृदयस्यास्मादेगृहमात्रत्वाभावात् अतः प्रतिष्ठतेषां नाधिकार इत्यत्राह देवाय

अपि चेत्तं विद्याप्रदाणार्थं ब्रह्मचर्यादिदर्शयति एकघातं दवे चर्षाणि मनुवान्यनापतौ ब्रह्मचर्यं मुवात् भृगुं वारुणिः वरुणं पित हवे
 रमुपससार अपीदिभगवो ब्रह्मेत्यादियदपि कर्मस्य नधिकारकारणात्मुक्तं न देवानां देवतातराभावात् न ऋषीणां मा
 र्थं यतराभावादिति नतद्विद्यास्त्विनदीहादीनां विद्यास्वधिक्रियमाणानामिदं द्युद्देशेन किंचित्कृत्यमस्ति न भृगवादीनां भे
 र्वादिसुगोत्रतया तस्माद्देवादीनामपि विद्यास्वधिकारः केन वार्थं देवायधिकारेण गृहमात्रकृतिः स्वांमुद्यायेत्यन
 विरुध्यते विरोधः कर्मणीति चेन्नानेकप्रतिपत्तेर्देशनात् २२ स्यादेतद्यदिविग्रहवत्त्वाद्यभ्युपगमेन देवादीनां विद्यास्वधि
 कारो वर्णितविग्रहवत्त्वादिनिगादिवदिशादीनामपि स्वरूपसंनिधानेनैकमंगभावाद्दृश्यते न च संभवति ब्रह्मपुत्रागेषु पुत्र
 पदे कस्यैदं स्वरूपसंनिधानानुपपत्तेरिति चेत् नायमस्ति विरोधः ॥ यतो कर्ममंगभावाद्भ्युपगमेन तद्विरोधः कर्मसि स्यात् न हि
 अदीनां स्वरूपसंनिधानेन यागे २

धिकारेपीति ननु मंत्रादीनां प्राणीयमानविग्रहवत्त्वात्पर्यं कल्पयित्वा देवादीनामधिकार उक्तः सचायुक्तः अन्यपराणां तेषां प्रत्य
 तादिविरोधेन स्वार्थतात्पर्यकल्पनानुपपत्तेरिमादिष्वसत्तत्त्वेन परिहरति विरोधः कर्मणीत्यादिना वर्णिततद्देशेति शेषः स्व
 रूपं विग्रहः अभ्युपगमे प्रत्यक्षो देवतादृश्यतनचदृश्यते अतो योग्या नपलब्धदेवताया विग्रहवत्त्वाभावात् प्रदानकारका
 भावेन कर्मनिष्पत्तिर्न स्यादित्याह तद्वचेति विग्रहस्यागत्य नपलब्धिविवाधिते पक्षे च न संभवतीत्याह नचेति तस्मादर्थो
 पदिनशाह्वयदेवतातस्या चेतनत्वाच्च विद्याधिकार इति शेषः कार्यः परिहरति नायमिति ॥

शुभा
मा
६

यथागेत्वभयोर्गवादिशब्दाः न क्वावसुत्वाद्याकृतयोवत्वादिशब्दार्थः न च क्तयश्चिपरिरति नैव हि न शब्दानां तदर्थानां ज्ञाती
नानि सत्त्वात्तत्वेन धोनिमित्तमिति प्रतीयते न चोक्त्यादिना यत्कीनामानेसादिति न चोक्त्यावच्छेदेन च क्तियुशक्तिः सुप्रदेति वाचो
सामान्यस्याप्रत्यासत्तिरनेन सर्ववत्तुपस्थितभावाद्देवं शक्त्या तच्च छेदकमिति प्रहारेण लयागोत्रं शक्यमिति लात्वात् निरूप्य न ह
सत्त्वापतजातिज्ञानविषयत्वेन उभयशक्तेश्च वक्ष्यतात् तच्चाच नित्यजातित्वात् तन्मनश्च क्तेरनादित्वात् तत्संबंधोपपत्तादिः
सत्त्वापवादात् अतएव वाक्यसंज्ञा न त्वस्य भेदा के भाग लक्षणान्तरात् केवलसामान्यस्य वाच्यत्वेन तदर्थस्य वाच्यकदेश
त्वाभावात् अतः प्रभवादिति सूत्रस्वरस्याच्च केवलं च किं निरासरति गम्यते केवलं च क्तिवचनात् खलु हि शब्दादिशब्दाश्रयो

शक्तिः ७

88

नमवादिशब्दार्थसंबंधनित्यत्वदर्शनात् तदिगवादिशब्दानीनां उत्पत्तिमत्त्वेन दाकृतीनामप्युत्पत्तिमत्त्वेनात् इव गता
कर्मणो दिव्यक्तय एवोक्त्यंते नाकृतयः आकृतिभिश्च शब्दानां संबंधो न च क्तिभिः यत्कीनामानेसात्संबंधय इह
नृपपतेः यत्किं नृपयमानास्त्वप्याकृतीनां नित्यत्वात्तत्र गवादिशब्देषु कश्चिदिरोधो दृश्यते तथा देवादिशक्तिप्रभवाम्बु
पगमेप्याकृतिनित्यत्वात्तत्र कश्चिद्वत्तादिशब्देषु विरोध इष्टं आकृतिविशेषत्वे देवादीनां संत्रार्थवादादिभ्यो वि
प्रवृत्त्याद्यवगमादवगतये स्थानविशेषसंबंधनिमित्ताद्यं हि शब्दाः सनापत्यादिशब्दवत् ततश्च योपलुतस्या
नमधिरोदति ससंज्ञादिशब्देरभिधीयत इति न देवो भवति न च देवशब्दप्रभवत्वेन प्रभवत्ववदुपादानकारण
भिप्रत्येक्यते कथं न हि स्थिते वाचकात्मनानित्यशब्देनित्यार्थसंबंधनिशब्दवद्वारयोपपत्तिरिति निमित्तमिति रतेः

१८
१९
२०
२१
२२

नेतरभाविनः सो के तिकाः गवादिशब्दास्तु यत्किं प्रभवदेवत्वेन प्रयो वसंतीति न च क्तिमात्रवचनाः सो के तिकाः किं तस्य लक्षण
भावना नृपपतेन वा विना भूतसामान्यवचना इति संतर्धे न च देवादिशब्देरेकत्वेन सामान्यभावादाकाशाशब्दवत् इदं च देवादिशब्दाः
केवलं च क्तिवचनारतिमात्रे प्रतीतानागतयत्किं भेदेन जायते पतेरित्यलं प्रपंचेन दृष्टातमयमहमदाहृतिकमाह यत्किं
धियादिना आकृतिजातिः ननु कमायक्तिः यदनुगते दत्तादिजातिः शब्दार्थः सादित्यत आह आकृतिविशेषस्त्विति वत्त
रक्तः परं देवशब्दादिभ्यः इदं दिष्टप्रवृत्तिनिमित्तमित्युक्त्या धिनिमित्तमाह स्थानेति अक्तिप्रत्यये यिष्या यित्वा छद्मार्थमे
वंधनित्यतेनाह ततश्चेति उक्तेर्पूर्वापरविरोधपरिहरति न चेति ॥

६०

प्राकृतोपपन्नमन्त्रपर्याप्तमाह कश्चित्तेति कर्मण्यविरोधसंगीकृत्य शब्दप्रामाण्यविरोधमाशङ्क्य परिहरति शब्दरतिचेदिति-
 माप्रसन्नप्रसक्तो माभूजामेवार्थः श्रौतान्तिकसूत्रेश्चार्थयो रनायोः संबंधस्यानादिता हेदस्यमानांतरगतये ज्ञानेन प्रामाण्यमुक्तं
 रदानी अनित्यविग्रहवत्तन्मभ्युपगमेतत्संबंधस्याप्यनित्यत्वान्मानांतरगतव्यक्तिज्ञानाशब्दस्य संकेतः प्रसाकतव्यतिमानांतरगत
 सत्त्वात्प्रामाण्यविरोधः स्यादित्याह कथमित्यादिना किंशब्दानामनित्यतया संबंधस्य कार्यत्वमापाद्यते उताया नामनित्यत

कश्चित्तेति कोपि विग्रहवाननेकप्रगपदंगभावं गच्छति यथा बहुभिन्नमस्तु केषौरेको व्याख्यानोपगपत्रमस्ति यत्ने
 न हरेदिति शब्दरित्यागात्मकत्वात्प्रामाण्यविग्रहवती सपेका देवतामुद्दिश्य वदतः स्वसंबंधे प्रगपत्यरित्युक्तं त्वांति
 न विग्रहवत्पि देवानां किंचित्कर्मणि विरुध्यते शब्दरतिचेत्ततः प्रभवान्नात्मज्ञानमानाभां २५ मानामविग्रहव
 तेषु देवाणां नामभ्युपगम्यमानेककर्मणिकश्चिद्विरोधः प्रसन्नप्राप्तविवेकः प्रसन्नत कथमेवत्यतिकेदिराह
 हस्याप्येन संबंधमाश्रित्य नपे सत्तादिति वेदस्य प्रामाण्यस्यापि रदानीत विग्रहवती देवताभ्युपगम्यमाना पपयेषु य
 योगाद्युपगपदनेककर्मसंबंधी निर्दोषिभूती ततयापि विग्रहयोगादस्मदादिव ज्ञानसमस्यावती से निनित्यस्य शब्द
 स्य नित्यत्वाद्येन नित्यसंबंधे प्रतीयमाने यद्देविके शब्दे प्रामाण्यस्थितं तस्य विरोधः स्यादिति चेत्तत्र मध्यस्थिति विरोधः कस्मा
 दतः प्रभवान् अतएव दिवैदिका ज्ञादेवादि केन गत्य भवति न नूनजन्मा यस्य यतरत्यत्र प्रभवत्तन गतो वधारि
 तं कथमिदं शब्दप्रभवत्वमुच्यते अपि च वैदिकानामवैदिका ज्ञादस्य प्रभवो भ्युपगतः कथमेतावता विरोधः शब्देषोरह
 तोयावता वसचारुशब्दादित्यादिषु देवा मरुत इत्येतेषां अनित्यत्वाद्येत्यतिमत्त्वान्न दनित्यत्वे च तद्वचिना वैदिकानां व
 स्वादिशब्दानामनित्यत्वकननिवार्यते प्रसिद्धितो के देवदत्तस्य पुत्रेऽप्यत्र दत्त रतितस्य नाम क्रियतरतितस्मादि

यानाद्यात्माह नायमपीति कर्मण्यविरोधवत् इत्येवार्थः देवादिवाक्तिहेतुत्वेन प्रागेव शब्दानां सत्त्वान्नित्यत्वमिति भावः
 अत्र पूर्वोपरविरोधं शङ्कते नन्विति शब्दस्य निमित्तत्वेन ज्ञानसद्वकारित्वादेविरोधशब्दाशङ्काद्वितीयकल्पस्यापयति अपि चे
 ति अनित्यत्वादित्वे वाक्तिरुपाध्यानामनित्यतया शब्दानां संबंधस्यानित्यत्वेऽप्यंतरस्याप्योरुवेयसंबंधसाधे सत्त्वात्प्रामाण्यवि
 रोध इत्यर्थः न च व्यक्तीनामनित्यत्वेऽपि च दत्तादिना तिसमवायवत्त्वसंबंधादित्यस्य स्यादिति वाच्यं अथाश्रितसंबंध
 स्यात्तत्राभावे स्थित्ययोरनदृष्टानां सिद्धेति भावः

शा.
भा.
२१

सायेगकारनिप्रत्यभिज्ञावर्णनित्यत्वसिद्धेर्नानुपपत्तिरित्यत्राह उत्प्रेति नारत्नमंदनादिविरुद्धमवृत्तेनतारोगकारोसंदेग
कारनिप्रतीयमानाकारस्यभेदानुमानात्प्रत्यभिज्ञावर्णनित्यत्वविषयेत्यर्थः ननुविरुद्धमवृत्तानुपपत्तिरित्यत्राह
नचेति तथाचवर्णनामनित्यत्वाच्चनगदेतत्त्वमितिभावः किंचतेषामर्थवोधकत्वाद्येमात्स्फोटोक्तकार्येभ्यः नचवर्णभ्य
स्यादिना व्यभिचारादेकस्यादुर्लभ्यप्रतीत्यदर्शनात् वर्णनरवेयर्थप्रसंगाच्चेत्यर्थः तर्हि वर्णनासमुदायोवाधकस्याशंस
क्षणाकानासनास्तीत्याह नचेति वर्णनास्त्वतः सादित्याभावेपिसंस्कारत्वदात्मपूर्वद्वारासादित्यमात्रादियमात्राभावेति
शकते प्रवेति किमयं संस्कारोवर्णजनिनो प्रवर्णकः कश्चिद्वर्णानुभवजनितोभावनाद्यः नाद्योमानाभावात् किंचा
यमत्तातोत्तातोवार्थधीदेतः नाद्यस्याह तत्रेति संस्कारसहितः शास्त्रज्ञातवार्थधीदेतः संबधग्रहणमपेक्ष्यवोधकत्वा

उत्प्रेति धर्मिनश्चवर्णः प्रत्युच्चारणमन्यथा न्यथाचप्रतीयमानत्वात् तथाप्यप्रमाणोपिपुरुषविशेषधर्मनध्वनिप्रव
णदेवविशेषतोनिधीयते देवदत्तोयमधीतेयत्तदतोयमधीतेति नचायंवर्णविषयो न्यथात्वप्रसंगे मिथ्याज्ञानेवा
धकप्रत्यभावात् नचवर्णभ्योवार्थवगतिर्युक्तानद्येकेकेवर्णार्थप्रत्याययेत् व्यभिचारात् नचवर्णसमुदायप्रत्य
योस्तिकमवत्वाद्दर्शनोपूर्वपूर्ववर्णानुभवजनितसंस्कारसहितोत्वोवर्णार्थप्रत्याययिष्यतीति यद्युच्यते तत्रसंब
धग्रहणपेक्षोद्दिष्टाह स्वयंप्रतीयमानार्थप्रत्यययेत् प्रमादिवत् नचपूर्वपूर्ववर्णानुभवजनितसंस्कारसहित
स्यात्तवर्णस्यप्रतीतिरस्यप्रत्युत्पत्त्यात्संस्काराण्यकार्यप्रत्यापितैः संस्कारैः सहितोत्ववर्णः प्रत्याययिष्यतीतिचेत् न

संस्कारकार्यस्यापिस्मरणस्यक्रमवर्तित्वात् तस्मात्स्फोटपवशः
इमादिवदिमर्थः द्वितीयेकिंप्रत्यक्षोत्पत्तौतत्कार्यलिगेननाद्यस्याह नचेति द्वितीयेशकतेकार्येति कार्यमर्थधीस्तस्याज्ञाताये
संस्कारप्रत्ययः तस्मिन्नातेनेति परस्परप्रत्येकादुच्यते नेति पदार्थस्मरणस्यापिपदतानानेतत्तभावितातेनसंस्कारसहितोम
वर्णत्वंकपदस्यज्ञानेनयुक्तमित्यत्रार्थः अपिशहः परस्परप्रत्येकादुच्यते यतेनभावनासंस्कारपदोपिनिरस्तः तस्यवर्ण
स्मृतिमात्रदेतत्तनार्थधीदेतत्वायोगात् नचात्यवर्णसादित्यार्थधीदेतत्तत्वेकेवलसंस्कारस्यतवर्णस्मृतिदेतत्त्वमितिवा
चं अर्थधीदेतत्तत्वेभावनायाज्ञानाभावेनार्थधीदेतत्वायोगात् नचवर्णस्मरणेनानुमितामात्रस्यवर्णसहितार्थधीदेतत्ति
वाचं तत्कार्यस्यक्रमिकस्यवर्णस्मरणस्याप्यत्यवर्णानुभवानेतत्तभावितातेनानुमितभावनानामत्यवर्णसादित्याभावादि
तिभावः वर्णनामर्थवोधकत्वासंभवेफलमाह तस्यादिति ॥

89

२१

शब्देनिमित्तमित्यविरोधमत्वास्तत्र शेषमवतमयति कथं पुनरिति स्मृत्या स्वप्राप्तात्प्राप्तं मूलश्रुतिरनुमीयत इत्यनुमानं स्मृतिः
एते अस्मिन्मिदं वस्तिरः पवित्रमाशयः विद्यान्यभि सौ भगवत्तन्मंत्रस्यैः पदैः स्मृत्या ब्रह्मादेवादीनस्तज्ज्ञात् तत्रैतदिति पदैः सर्वनामत्वा
देवानां स्मारकं अस्मिन्मिदं वस्तिरः पवित्रमाशयः विद्यान्यभि सौ भगवत्तन्मंत्रस्यैः पदैः स्मृत्या ब्रह्मादेवादीनस्तज्ज्ञात् तत्रैतदिति पदैः सर्वनामत्वा
प्रदाणंतिरिति वस्तिरः पवित्रमाशयः विद्यान्यभि सौ भगवत्तन्मंत्रस्यैः पदैः स्मृत्या ब्रह्मादेवादीनस्तज्ज्ञात् तत्रैतदिति पदैः सर्वनामत्वा
एवं विद्याशब्दः सर्वत्र सौभाग्यपुत्तानां मभि सौ भगवत्तन्मंत्रस्यैः पदैः स्मृत्या ब्रह्मादेवादीनस्तज्ज्ञात् तत्रैतदिति पदैः सर्वनामत्वा
युने समभवत् मनोवाग्नयं मिथुने संभावितवान् मनसा त्रयी प्रकाशितो सृष्टिमानो चित्तवानित्यर्थः रस्मिरित्येवादिभ्यस्तज्ज्ञात्

कथं पुनरवगम्यते राश्यान्मभवति जगदिति प्रत्यक्षानुमानाभ्यां प्रत्यक्षं श्रुतिः प्राप्तात्प्राप्तं मूलश्रुतिरनुमीयत इत्यनुमानं स्मृतिः
तिः प्राप्तात्प्राप्तं मूलश्रुतिरनुमीयत इत्यनुमानं स्मृतिः प्राप्तात्प्राप्तं मूलश्रुतिरनुमीयत इत्यनुमानं स्मृतिः प्राप्तात्प्राप्तं मूलश्रुतिरनुमीयत इत्यनुमानं स्मृतिः
रतिपितृस्तिरः पवित्रमिति प्रदानाशय इति स्तोत्रं विद्यान्यभि सौ भगवत्तन्मंत्रस्यैः पदैः स्मृत्या ब्रह्मादेवादीनस्तज्ज्ञात् तत्रैतदिति पदैः सर्वनामत्वा
सावाचे मिथुने समभवदिति दत्ता तत्र तत्र च हृष्टिका सृष्टिः आद्यते स्मृतिरपि प्रजादिनिधना नित्या वागुत्तरा स्वयं भ
वा आदेवेदमयी दिवा यतः सर्वाः प्रजुतय इति उत्सर्गोपपद्यते चः संप्रदायप्रवर्तनात्मको दृष्टव्यः अनर्पेति धनाया अस्या
दृष्टास्यान्सर्गाणां संभवान् तथानामरूपं च भूतानां कर्मणां च प्रवर्तनं वेदशास्त्रेभ्यश्चादौ निर्ममे समदेश्य इति सर्वेषां तस्मिन्
सर्जनकर्मणि च प्रथमं दृष्टव्यं वेदशास्त्रेभ्यश्चादौ निर्ममे समदेश्य इति सर्वेषां तस्मिन्
स्मृत्या पशुममयं मनुतिष्ठतीति सर्वेषां नः प्रत्यक्षमेतत् तथा प्रजापतेरपि स्वष्टः सृष्टेः पूर्ववैदिकः शास्त्रमजसि प्रादुर्भव
तुः पश्चात्तदनुगतानां न्यान्संजतिगम्यते तथा च श्रुतिः सभरिति वादरत्न सभमि मस्तज्ज्ञात् तेषां पारिका भगवदिशब्दोपपन्न
मनसि प्रादुर्भूतेभ्यो भगवदिशब्दात्तान् संहृत्य दर्शयति किमात्मकं पुनः शास्त्रमभिप्रेत्येदं शास्त्रप्रभवत्वं मया ते स्फोटमिमां दत्तं
पदैरिति वा मनुच प्रवृत्तिरिति त्रयेभ्यः शास्त्रेभ्यो देवादिभ्यो नो प्रभव इत्यनुपपन्नं स्यात्

तेत्यादिश्रुतिगदिशब्दाद्यः संप्रदायो गुरुशिष्यपरंपरापर्यन्तं संस्थाप्रवस्थाः यापनापतिः सृष्टिः साशब्दपरिविकास इति प्रत्यक्ष
च दारिद्र्यमिति प्रत्यक्षानुमानाभ्यां नित्याणां र्थांतरमात्रं अपि चेति श्रुतः प्रभवत्वं प्रसंगाच्च हृत्स्वरूपेव कुमुतमादिपति कि
मात्मकमिति वर्णारूपतदतिरिक्तस्फोटरूपचेति किं शाब्दाद्यः तच्च वर्णमनामनित्यत्वात् स्फोटस्य चापत्त्यात् न जगदुत्पत्तिरिति सिद्धं यद्दि
तीययत्नं वेणुकरणं गृह्णाति स्फोटमिति स्फुटते वर्णिका जने इति स्फोटो वर्णमभिप्रेत्येव स्यात्तत्रैव तमभिप्रेत्येव

रमुच्यते इति पूर्वोक्तं स एव पक्षे दृश्यति चेति

भेदप्रत्ययस्य कुंभकृष्णकाशभेदप्रत्ययवदौषाधिकभेदविषयत्वादित्यथासिद्धेः अन्यथासिद्धयन्तौ वा प्रत्यभिज्ञानानिरपेक्षसंरूप
लवनपावाधसुतरमाह अत्रेति तात्पर्यादिदेशः कोष्ठस्थवायुसंयोगविभागभ्यां विचित्राभ्यां व्यंज्यत्वाद्गोषु वेचित्रधीरित्यर्थः
कल्पनागोरवाचुर्गोषु स्वतोभेदेनास्तीत्याह अपिचेति अनेताः गकारादिव्यक्तयस्यासु प्रत्यभिज्ञानार्थगत्वादिज्ञानयत्नास
चोदात्तत्वादिभेदस्योपाधिकत्वमिति कल्पनाद्वरेवर्णाव्यक्तिभेदमात्रस्योपाधिकत्वकल्पनमिति व्यक्तमानं तस्य ज्ञानोच्चकल्प
नमप्युक्तमित्यर्थः ननु भेदस्य बाधकाभावाच्चाप्युपाधिकत्वमित्यत आह एष इति अस्मिन् हि प्रत्ययद्वयप्रामाण्यभेदाभेदयोः
समन्वतत्राह कथं हीति उभयोरैकत्र विरोधात् भेदस्योपाधिकत्वेत्यर्थः ननु वायुसंयोगादेरन्तर्द्वयत्वात् तद्वत्तद्वैचित्र्यसोदात्त

अत्राभिधीयते सति वर्णाविषये निश्चिते प्रत्यभिज्ञाने संयोगविभागभिव्यंज्यत्वाद्गोषानामभिव्यंजनकवैचित्र्यनिमित्ताय
वर्णाविषयो विचित्रः प्रत्ययोनसंरूपनिमित्तः अपि च वर्णाव्यक्तिभेदवादिनापि प्रत्यभिज्ञानसिद्धये वर्णाकृतयः कल्प
यितव्याः तासु परोपाधिको भेदप्रत्ययस्य भूषणं तच्च न द्वरेवर्णाव्यक्तिश्चैव यरोपाधिको भेदप्रत्ययः स्वरूपनिमित्तं च प्रत्य
भिज्ञानमिति कल्पनात्ताद्यवेषणवचवर्णाविषयस्य भेदप्रत्ययस्य बाधकः प्रत्ययोयस्य प्रत्यभिज्ञानं कथं येकस्मिन्काले
वह्ननामुच्चारयतामेक एव स न गकारो युगपदने करुषः स्यात् उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च सानुनासिकश्चैति निरवना
सिकश्चेति अथवा ध्वनि कृतोयं प्रत्ययभेदेन वर्णाकृत इत्येकः कः पुनरयं ध्वनिनामयोद्वादाकर्णीयतो वर्णाविवेक
संप्रतिपद्यमानस्य कर्णोपयमवतरति प्रत्यासीदतश्च पट्टसुडत्वादभेदं वर्णोष्ठासेनयति तन्निवेपनाच्चात्मादयो विशेषा
न वर्णास्वरूपनिवेधनाः वर्णानां प्रत्युच्चारणं प्रत्यभिज्ञायमानत्वात् ॥

त्वादेवर्णोषु प्रत्यक्षारोपः संभवतीत्यरुचिं वदिष्यन्त्वमत आह अथवेति ध्वनियर्मा उदात्तत्वादयो ध्वन्यभेदाध्यासाद्गोषु भोती
त्यर्थः प्रश्नश्वकंध्वनिसंरूपमाह करति अथतरति सध्वनिरिति शेषः वर्णातिरिक्तः शब्दो ध्वनिरित्यर्थः समीपगतस्य
संस्कारत्वभेदत्वादपि र्मात्स्यगतात् वर्णोषु स एव आरोपयतीमाह प्रत्यासीदतश्चेति आदिपदे विज्ञोति तदिति ननु व्यक्तव
र्णोपवध्वनितिरिक्तस्य त आह वर्णानामिति प्रत्युच्चारणं वर्णाश्च वृत्तते ध्वनिर्वावर्तत इति भेद इत्यर्थः अन्यथा वाचि
कैर्द्रव्यवर्णोष्यक्तेषु ध्वनिः बुद्धिः स्यात् डेडभादि ध्वनौषावृत्तमात्रेणापट्टमाणा यमवक्तेवर्णादिति धीसादिति मेतव्यं ॥

स्फोटिकं मानमिवाशंकोकं पदमिति प्रत्यक्षं प्रमाणमिवाह सचेति यथाभूततत्त्ववद्भिश्चातृषप्रत्ययैः स्फुटं भासते तथा गवादिपद
 स्फोटो गकारो कोकं कर्वाणं कृतप्रत्ययैः स्फोटविषयैरादिना संस्कारवीजं यस्मिन्चित्तस्मिन्नेत्यर्वाणं कृतप्रत्ययेन जनितः परिष्कारोऽस्य
 संस्कारो यस्मिन् स्मिन्मयि निश्चिते एकं गो रिति पदमिति प्रत्ययः प्रत्यक्षः तद्विषयतया स्पष्टमवभासत इत्यर्थः अनेन वर्णान्व
 ययति रेकयोः स्फोटज्ञानेन यथा सिद्धिः न चैकस्यादूर्वाणं तस्य कस्योपाभिव्यक्तिः येन वर्णान्तरवैयर्थ्यं किं त्वत्त्ववद्भूतप्रत्ययसंस्कृ
 ते चित्ते सम्पत् स्फोटाभिव्यक्तिरित्युक्तं भवति न न्येकपदमेकं वाक्यमिति प्रत्ययः पदवाक्यस्फोटयोर्न प्रमाणान्तस्य वर्णसमस्य
 वनस्पतिनादित्याशंकोकनिषेधयति न चैतस्फोटस्य जगदेतन्तार्थनित्यत्वमाह तस्य चेति ननु तदेवेदं पदमिति प्रत्ययमिज्ञा
 सचैकैकवर्णप्रत्ययादित संस्कारवीजेन वर्णप्रत्ययजनितपरिष्कारे प्रत्ययिन्येकप्रत्ययविषयतया कदिति प्रत्यवभासते
 न चायमेकप्रत्ययो वर्णविषयास्पतिः वर्णानामनेकत्वादेकप्रत्ययविषयत्वानुपपत्तेः तस्य च प्रत्ययचाराणां प्रत्यभिज्ञायमा
 नत्वा चित्तत्वं भेदप्रत्ययस्य वर्णविषयत्वात् तस्या चित्वात्तत्वात् स्फोटरूपादभिधायका क्रिया कारकफललक्षणो जगद
 भिधेयभूतं भवतीति चार्णपवतशार्धं इति भगवानुच्यते ननु तत्र प्रध्वंसित्वं वर्णानामुक्तं तत्र तत्र चेति प्रत्यभि
 ज्ञानात् सादृश्यात् प्रत्यभिज्ञाने केन दिशि वेति चेत् न प्रत्यभिज्ञानस्य प्रमाणान्तराणां बाधानुपपत्तेः प्रत्यभिज्ञानमाह
 तिनिमित्तमिति चेत् न व्यक्तिप्रत्यभिज्ञानात् यदि हि प्रत्ययचाराणां गवादि व्यक्तिवदन्या अस्या वर्णवत्तयाः प्रतीयेरन्तत आ
 कृतिनिमित्तं प्रत्यभिज्ञानं स्यात् न त्वेतदस्ति वर्णवत्तया य एव हि प्रत्ययचाराणां प्रत्यभिज्ञायेते द्विर्गोपादुच्चारित इति हि प्रतिप
 तिर्न तद्गोपादुच्चारित इति ननु वर्णप्रत्ययचाराणां भेदेन भिन्नाः प्रतीयेते देवदत्तयत्तदतयोः प्रत्ययनध्वनिश्च चार्णदेवभेदप्रती
 भमपदात्तादिभेदप्रत्ययादित्यत आह भेदेति आचार्यसंप्रदायोक्तिः एवं के सिद्धांतयति वर्णमवेति वर्णनिरिक्तस्फोटैरित्युक्तं
 दात्मकशब्दस्यानुभवान्नारोहादित्यर्थः सादृश्यदोषादियं भांतिमिति शंकेते सादृश्यादिति च पतनानंतरं त एव मेकेशादिति पीभां
 तिरित्युक्तं भेदपीविरोधात्स एवायं वर्ण इति पीस्त प्रमेव बाधकाभावादित्याह नेति गोत्वादिप्रत्यभिज्ञाचद्वर्णेषु प्रत्यभिज्ञाणां
 विषयेति शंकेते प्रत्यभिज्ञानमिति व्यक्तिभेदे सिद्धे प्रत्यभिज्ञाया जातिविषयत्वं स्याद्युक्तया पीतं न तदेव मया पीतमित्यभेदेन
 तयोदयक्तिभेदः सिद्ध इति परेदरति न व्यक्तीति न त्वेतदिति व्यक्त्यन्तत्वं तानमिति शंकेः उदात्तत्वादिविरुद्धधर्मत्वापत्तिभेदेन मा
 नसिद्ध इत्यनुवदति न चिति ॥

भा.
मा.
९१

अनेकस्याप्येकपिकमेकत्वं युक्तमित्याह संभवतीति ननु तत्रैकदेशादिरूपाधिरस्ति प्रकृते कउपाधिरित्यत्र आह याति ति वकार्य
शक्तमेकपदं यथानाथपकस्मिन्नात्यर्थवदेकं वाच्यमित्येकार्थसंबंधादेकत्वापचायत्यर्थः नचेकपदत्वे जानपकाद्यं जानमस्मिन्ना
तत्तदित्येवमप्युच्यते इति वाच्य उक्तमहोक्तं जानाक्रमेणान्यवर्णाशुचक्षणं नंतरं बालस्यैकस्मत्पारुठानामध्यमसुहृदस्य प्रहृष्टपादित्तिगा
नुमितेकार्थपीदेतत्तन्निश्चयेमत्वेकपदवाक्यत्वेनियुयात् वर्णसाम्येपि पदभेदे ह्येव वर्णान्तिरिक्तं पदस्फोटारब्धमंगीकार्यमिति
शकते अत्रादेति क्रमभेदाहोर्णसंबंधपदभेदरहितिरिति परिहरति अत्रेति ननु नित्यविभूतां वर्णनेक्येकम-कथं वा पदत्वज्ञाने
संभवत्तनेकस्याप्येकबुद्धिविषयत्वं येति चेन्न संनारशशतंसदस्यमित्यादिदर्शनाद्यात्तु गौरित्येकार्थशब्दभित्तु बुद्धिः सावक्षे
वर्णां षण्कार्यावच्छेदनिबन्धनोपचारिकीवनसेनादिबुद्धिवदेव अत्रादयदिवर्णावसामस्तेनैकबुद्धिविषयतामाप
द्यमानाः पदस्युः ततो जायं राजाकपिः पिकरस्यादिषु षट्विशेषप्रतिपत्तिर्न स्यात् तयवदिवर्णा इतरत्रेतरत्र च प्रत्यव
भासंतरश्च त्रवदासः सत्यपि समस्तवर्णाप्रत्यवमर्षायथाक्रमानुरोधेन षण्पिणीलिकाः पंक्तिबुद्धिमारोहते वेकमानो
तत्र ५ पिनपववर्णाः पदबुद्धिमारोहन्ति वर्णानामविशेषपिक्रमविशेषकृतापदविशेषप्रतिपत्तिर्न विरुध्यते इद्व्यवहारे च
मेवार्णः क्रमाद्यनुगृहीतामरदोताथविशेषसंबंधाः संतः स्वव्यवहारेणैकवर्णाग्रहणनंतरं समस्तप्रत्यवमर्षिसंयुक्ता
तादृशाप्यवप्रत्यवभासमानास्तत्तमर्थस्य भिचारोपपत्त्यायपि स्थतीति वर्णावादिना लघीयसीकल्पनास्फोटवादिन
त्यः ३ स्तुरष्टुदातिरष्टुर्क-ना वर्णाश्रमेक्रमेणान्यवर्णास्फोटं च जयति ससोदोर्थं यन्नतीति गरीयसीकल्पना स्यात् अथा
पिनामप्रसुचारणमन्येमेवार्णः स्तुत्यापि प्रत्यभिज्ञालेबनभावेन वर्णासाम्येनाममवस्थाभुप्योतव्यत्वात् सावर्णा
व्यर्थप्रतिपादनप्रक्रियारचितासासामान्येषु संचारयितव्या ततश्च निरर्थकः शब्देभ्यो देवादीनां प्रभव इत्यविरुद्धं अतएव

३१

चनित्यत्वे ३।

नार्थपीदेतत्तत्राह ह्येति व्युत्पत्तिदशायामुच्चारणक्रमेण उपलब्धिक्रमस्य पक्षभमानवर्णाद्यारोपेते वर्णा एतत्कमेतत्ते
ख्यावंतपतदर्थशक्ता इति गृहीताः संतः आतः प्रवृत्तिकाले तथैव स्फुटारुठाः स्वसार्थबोधयेतोत्यर्थः स्थायिवर्णावादस्य
यसंदरति वर्णिति इष्टे वर्णानामर्थबोधकत्वे अदृष्टः स्फोटः संप्रति वर्णानामस्थिरत्वमंगीकृत्य प्रोदिवीदेन स्फोटं विवृणु
यति अथापीति स्थिराणि गानादि सामान्यानि क्रमविशेषवन्ति गृहीतसंगतिकान्यर्थबोधकानि तिल्लमेधुसामान्येषु प्रक्रि
यासंचारयितव्या नत्वत्क्रम-स्फोटकल्पनीय इत्यर्थः वर्णानां स्थायित्ववाचकतयोः सिद्धे फलितमादततश्चेति ॥

९१

एवं धर्मपाधिकत्वे समते गणवदन्वाप्याधिकत्वं पूर्वोक्तमरुचिदर्शयति एवं चेत्पादिना अस्तु को दोषस्तत्राह संयोगेति वापुसंयोगादेरप्रमाणत्वादित्यर्थः तस्माच्छ्रुत्वा धर्माध्वनिरेवोदात्तत्वापारोप्याधिक्येति भावः एवं विरुद्धधर्मकध्वनीनां भेदे धितेषु नृणां चार्णनभिधेतरसक्तं तद्विरुद्धांतेन दृश्यति अपि चेति यथा चरं मुग्धादिविरुद्धानेकव्यक्तिष्वभिन्नगोत्रे तथा ध्वनिषु वर्णप्रभित्रापेक्ष्यार्थः उदात्तादिध्वनिभेदेन देन देतुना वर्णनाम योतिषो जना प्रत्यभिज्ञा विरोधादित्यत्रार्थः यद्वा उदात्तत्वादिभेदविशिष्टतया प्रत्यभिज्ञायमानत्वादर्णनां भेदस्याशंकारहणं तेन निरस्यते अपि चेति वर्णनां स्थापितं प्रसाधनेषां भेदवाचकत्वं वक्तुं स्फोटं विवृणुयति वर्ण एवे च स तिसाले बन्ना उदात्तादित्यस्याभिविद्येति इतरथा दिवर्णनां प्रत्यभिज्ञायमानानां निर्भेदत्वात् संयोगविभागकृता उदात्तादिविशेषाः कल्पेरन् संयोगविभागानां चाप्रत्यक्षत्वात् तत्र तदप्रत्ययविशेषाः वर्णा ध्वनौ वसितुं शक्नुवन्त इत्यतो निरास्तं बन्ना एवेते उदात्तादिप्रत्ययाः स्युः अपि च नैवेतदभिनिवेष्टव्यमुदात्तादिभेदेन वर्णनां प्रत्यभिज्ञायमानानां भेदो भवेदिति न सम्यग्भेदेनान्यस्याभिधमानस्य भेदो भवितुमर्हति न हि व्यक्तिभेदेन जातिभिन्नो मन्वते वर्णभ्यर्थ्य प्रतीतेः संभवात् स्फोटकल्पनानर्थाका न कल्पयाप्यदं स्फोटं प्रत्यक्षमेव तेन मवगच्छामि एकैकवर्णाग्रहणादिन संस्कारायां बुद्धौ सति प्रत्यवभासनादिति चेन्न अस्या अपि बुद्धे वर्णविषयत्वात् एकैकवर्णाग्रहणान्नरकालादीयमक बुद्धिर्गौरितिसमस्तवर्णाविषयानार्थातरविषयाः कथमेतदवगम्यते यतोऽस्यामपि बुद्धौ साकारादयो वर्णप्रवृत्तौ तेन तदकारादयः यदि रूपाः बुद्धेर्गकारादिभ्योर्धातरं स्फोटो विषयः स्यात् ततोऽकारादयश्च वगकारादयोऽप्यस्य बुद्धेर्वावर्तन्त तस्मादिदमेका बुद्धिर्वा विषयैव सतिः नन्वेकत्वाद् वर्णना नैकबुद्धिविषयतोऽप्यप्यनेनैकतत्त्वमिति श्रुतः ॥

अप्येति कल्पनामसदमानः शक्यते नेति चत्तुषादर्पणयुक्तायां बुद्धौ साववच्छेदोच्चेन वर्णा युक्तायां बुद्धौ विनैव देत्वं तं स्फोटः प्रत्यक्षः इत्यादिकृतिर्नेति यस्यां संविदिद्योर्धाभासते सातत्र प्रमाणं एकं पदमिति बुद्धौ वर्णा एव स्फुरति नातिरिक्तस्फोट इति न सा स्फोटे प्रमाणमित्याह नास्या अपीत्यादिना ननु गोपदबुद्धेः स्फोटो विषयो गकमादीनां तत्रानेकत्वाद नृहतिरित्यत आह यदि हीति चे उपवद्विबुद्धौ तं न कथं मस्यानुवृत्तेरदर्शनादित्यर्थः वर्णसमूहत्वेन च ततोऽप्यनेनैकस्फोटः कल्पनीयः पदार्थांतरकल्पना गौरवादित्याह तस्मादिति ॥

प्रा.
भा.
२४

साधप्रबोधधर्मात्समं सिद्धिमाशङ्क्यमाह स्वयेति अथतदासु प्रमाणेषु सात्त्विकजैवएकोभवति वनेपापसजीवस्तदेति शेषः
पुनस्तस्याप्यनमनः आगतनेगोलके आनेतेये च मोक्षोभ्य इत्याद्या इष्ट्यासु प्रवृत्तित्वात्तत्सत्त्वाभावात्तदसिद्धिः अदर्शनं
५३ येति इष्टिरिति पक्षः अत्रभिधेय इति भावः इष्टान्वेषमाशङ्क्यपरिहरति सादित्यादिना अविरोधमनुसंधानादिकमिति शेषः दि
भरणार्थादयः सर्वकल्याणसंयोजनं ननु ससादित्यादस्मादिवदित्याशङ्काह यद्यपीति इति यद्यपितथापिन प्राकृतवदितियोजनना
जानादेनिकर्षवदुत्कर्षायोगीकार्यः बाधाभावादिति न्यायानुगृहीतश्रुत्यादिभिः सात्त्विकतो हृष्टानुमानवाप्यमित्याह यथा
हीत्यादिना ननु तथापि सर्वकल्याणसंयोजनत्वात्तत्त्विकत्वेन संयोजनत्वात्तथाह ततश्चेति ज्ञानाद्युत्कर्षादित्यर्थः मुनेभ्यो

प्रति४

92

परि३

५४ साधप्रबोधधर्मात्समं सिद्धिमाशङ्क्यमाह स्वयेति अथतदासु प्रमाणेषु सात्त्विकजैवएकोभवति तदेनेवास्तवेनामभिः सहा
५५ येति च तत्सर्वकल्याणसहायेति आत्रेसर्वः शब्दः सहायेति मन्त्रः सर्वेयानिः सहायेति सयदापतिवृत्तयेयथायेजलतः स
५६ वादिशेषविस्मृतिगाविप्रतिषेधेनैवमेवैतस्मादन्तः सर्वेप्रमाणयथायतने विप्रतिष्ठते प्राणोभ्योदेवादेवेभ्यो लोका इति सा
५७ दततस्वाप्युरुषातरव्यवहारविच्छेदात्तत्त्वे च सप्तमेषु इत्युक्तं सर्वबोधव्यवहारानुसंधानसंभवादविरोधमहाप्रलयेतसर्वव्यव
५८ हारे ह्येदात जन्मांतरव्यवहारवृत्तकल्याणतरव्यवहारस्यानुसंधानमशङ्कात्वाद्देवमिमिति नैष दोषः सत्यपि सर्वव्यवहारो
५९ छेदिनि महाप्रलये परमेश्वरानुग्रहादीश्वराणां हिरण्यगर्भादीनां कल्याणस्वावहारानुसंधानोपपत्तेः यद्यपि प्राकृताः प्राणि
६० नानजन्मांतरव्यवहारमनुसंधानाः दृश्यन्ते इति तथापिन प्राकृतवदीश्वराणां भवितुं वा यथादिप्रमाणविशेषे षिमनुष्मा
६१ दित्तवर्षयेतेषु ज्ञानैश्वर्यादिप्रतिबन्धः परेणापरेणाभ्यात्मवन्द्यपते तथा मनुष्मादिष्वविरण्यगर्भपर्यन्तेषु ज्ञानैश्वर्याद्य
६२ भिन्नक्तिरपि पराणां भूयसीभवतीत्येतच्च तिस्रस्तिवादेशसंस्कृदनुश्रयमाणनश्वरानासीति वदितुं ततश्चातीतकल्याणवृत्तय
६३ कृष्टान्तकर्मणामीश्वराणां हिरण्यगर्भादीनां च तन्मानकल्याणोपादुर्भवतां परमेश्वरानुगृहीतानां सुमप्रतिबुद्धवत्कल्याणव
६४ यवहारानुसंधानोपपत्तिः तथाच श्रुतिः यात्रस्माद्विदधाति प्रवेयोवेवेदोश्च प्रदितोति तस्मिन् ह देवमात्मवृद्धिप्रकाशे
नेन संयोजनमिति भावः परमेश्वरानुगृहीतानां ज्ञानातिशये पूर्वोक्तस्मृतिवादानाह तथाचेति पूर्वकल्याणैस्सजिततस्मै वरतोपदि
तोति तस्मै पतितस्य बुद्धौ वेदानां विभावयति यः ते देवं स्वात्माकारमहावाक्यं बुद्धौ प्रकाशमानं शरणोपरममभयस्थानं निः
अपस्वरूपमहं प्रपद्यते न केवलमेकमेव ज्ञानातिशयः किं तु बहूनां शास्त्राहृष्टाणामिति विश्वासायमाह स्मरतीति
ऋग्वेदोदशमोऽलावयवोस्तत्र भवाऋचोऽष्टाशतपः वेदान्तरेपिकां उक्तमन्त्राणां इष्टां बोधायनादिभिः स्मृता इत्याह प्र
तीति ५

२४

पूर्वतन्त्रेण च वादपूर्वकं सत्त्वाचष्टे कर्तव्यमिति । पूर्वतन्त्रेण सिद्धमेव वेदस्य नित्यत्वे देवादिकात्किं सृष्टेः तद्वाचकशब्दाणां पितृष्टेः सिद्धिः
रुमिमांशानि नित्याकृतिवाचकाश्च ह्यतिजन्मान्तासाकेतिकत्वेनिरूप्य वेदेवांतरप्रलयावस्थाधीनगद्गत्वादींश्चरवदित्यनुमा
नेन प्रयत्नोत्पत्त्यर्थः यत्नेन पूर्वसुकृतेन वाचोवेदस्य लभयोगपत्ताप्राप्ताः सत्तेषां तिकास्तन्मरिषिषु स्थिता लब्धा वंतरिति मंत्रार्थः अनुवि
त्रामपलयाप्यैवमवांतरकल्पदो ननु मराप्रलये जातेरप्यसत्त्वाद्वा ह्यर्थसंबंधानि नित्यत्वेत्याशंकाद् समानेति सूत्रनिरूपणार्थकमा
द अथापीति वाक्यसंतान्यातीनामवांतरप्रलये सत्त्वात्संबंधलिङ्गनिवाचद्वारा विच्छेदान्तायते चेति वेदस्यानपेक्षत्वेन प्रामाण्येन
कश्चिद्विरोधः स्यादिति लपलये तसंबंधनाशमनः स्थाकेनचित्संसासेकेनः कर्तव्यमिति पुरुषवृत्तिसापेक्षत्वेन वेदस्याप्राप्ताप्यमथा
कर्तव्यमिति सिद्धिः स्थिते वेदस्य नित्यत्वे देवादिकात्किं प्रभवाभ्युपगमनतस्य विरोधमाशङ्कतः प्रभवादिति परिहृते दानीत
देववेदस्य नित्यत्वे स्थिते इत्यप्यत एव च नित्यत्वमिति । अत एव नित्यता कर्तव्ये देवादेर्जगतो वेदशब्दप्रभवत्वाद्देवशब्द नित्यत्वमपि प्र
त्येतत्वात्तथाचमंत्रवर्तिः यत्नेन वाचः पदवी । यमास्तान्मन्त्रविदश्चिषु प्रविष्टा मिति स्थिता मेव वाचमन्त्रवित्रादशयति वेद
रु वास्यैवमेवमिति युगंते तद्विना वेदान्तेति दासान्मदर्थयः । लेभिरेतपसा पूर्वमनन्ताताः स्वयं भूवा इति समाननाम
रूपत्वाच्चावृतावप्यविरोधो दर्शनात्स्यते ॥ अथापि स्यात् यदि पञ्चादिकात्किं वत् देवादिकात्कयापि सत्तैवात्पद्येरन् नि
रूप्यं स्युततोभिधानाभिधेयाभिधानात्वावद्वारा विच्छेदान्ते संबंधनित्यत्वेन विरोधः शब्देपि सिद्धियेत्यदात्तावत्सकलत्रे
लोत्वां परिपक्तनामरूपे निर्लेपे प्रतीयते प्रभवति चाभिन्नवमिति कति सति वादावदंति तदा कथमविरोध इति तत्रेदम
भिधीयते समाननामरूपत्वादिति तथापि संसारस्यानादित्वेनावदभ्युपगंतव्ये प्रतिपादयिष्यति चाचार्यः संसारस्या
नादित्वमुपपद्यते वाच्यपलभ्यते चेति अनादौ च संसारे यथास्वायप्रबोधार्थः प्रलयप्रभवश्चोत्तमपि पूर्वप्रबोधव्यवहार
वदंतरप्रबोधेपि व्यवहारात्त्रकश्चिद्विरोधः एवैकल्येन तत्र प्रभवप्रलययोर्वपीति द्रष्टव्यं

पक्षस्याश्रयस्य नाशदाश्रितस्यानित्यत्वं च प्राप्तमित्यर्थः मराप्रलयेपि निर्लेपलये सिद्धिः सत्कार्येणादात्त तदा च संस्कारात्मनायाश्र
यतत्संबंधानां सत्तामेव पुनः स्थावविद्यते नानित्यत्वं अभिद्यक्तानां पूर्वकत्वायनामरूपसमानत्वात्तसंकेतकेनचित्कार्यैः वि
षमसंज्ञादिसंकेतापेक्षानां तस्य स्थावित्वेति दुरिति तत्रेदमित्यादिना नच्चाप्यस्यासंकेतः कार्यइत्यत आह तर्हि पीति महा
सर्गाप्रलयवृत्तावपीत्यर्थः नन्वस्तनादिसंसारसंबंधस्यानादित्वेन तथापि महाप्रलयव्यवधानादस्मरणे कार्यवेदार्थ व्यवहारस्त
त्राद् अनादौ चेति न कश्चिद्विरोधः शब्दाद्यसंबंधस्मरणदेरिति शेषः ॥ ॥ ॥

विग्रहोद्विष्टाभोगेष्वर्थे च प्रसन्नताफलप्रदानमित्येतत्वे च के विग्रहादिकं मन्त्राभावादेन चास्तीति ह्ययमिति नैसादिना नचात्रे
ति विग्रहादिविग्रहः अर्थवादसंज्ञावामूलो विग्रहादिविग्रहः अर्थवादस्यादिना जीयादिद्वययोगविधिगृहीतामंत्राः प्रयोगसंब
द्धार्थाभिधानार्थाः नान्तातविग्रहादिपरा इति मीमांसका आचार्य इति तस्यार्थः तस्माद्विग्रहाभावादित्यर्थः सत्राभोगां प्रवृत्त
त्वं निरस्यति त्वशास्त्रस्यादिना असंबन्धित्वादेवादीनाधिकारोति विद्यात्वात्मापादिविद्यावदेतत्तदेतत्प्रयोजनकरत्वाद् यद्य
पीति दर्शादिकेन नञासामधिकारोति कर्मत्वात् राजसूयादिबदिति आभाससाम्यविधानादेतेन ग्राह्यं नचति यत्रयस्याधि

नैत्ययने नतावलोको नाम किंचित्स्वतंत्रं प्रमाणमस्ति प्रत्यक्षादिभ्यश्च विचारितविशेषेभ्यः प्रमाणेभ्यः प्रसिद्धत्रयं
लोकात्प्रसिध्यते नचत्रयस्य तादीनामन्यतमप्रमाणमस्ति इति दासपुराणमपि योरुषयत्वात्प्रमाणतरम्
लतामाकांक्षते अर्थवादप्रतिविधिने कवाक्यत्वात्तत्पर्यः संतो नपार्थ गार्थेन देवादीनां विग्रहादिसद्भावेकस्याभावे प्रति
पद्यते मंत्राप्रतिष्ठादिविनिष्कृताः प्रयोगसमवायिनोभिधानार्थानकस्य चिदर्थस्य प्रमाणमित्यानुदत्ते तस्मादभावा
देवादीनामधिकारस्य भावेन वादरायणोक्तिरिह १४ तशाब्दः पक्षे वाच्येति वादरायणात्ताचार्याभावमधिकारस्य
देवादीनामधि मन्वते यद्यपि मन्वादिविद्यास्तदेवतादिद्यामिष्टास्वसंभवेधिकारस्य तथाप्यस्ति हि सद्भावाच्चरविद्या
यां संभवोऽर्थित्वसामर्थ्याप्रतिषेधाद्यपेक्षत्वादधिकारस्य नच कचिदसंभवत्वेनावतायत्र संभवस्तत्रापि कर्मोपोद्यते
मनुष्याणामपि सर्वेषां स्राणादीनां राजसूयादिष्वधिकारः संभवति तत्र येत्यायः सौत्राभिभविष्यति वस्तुवि
द्याचप्रकृत्यभवति दर्शने श्रोते देवाद्यधिकारस्य सत्त्वं तद्योयो देवानां प्रत्युद्धतस एव तदभवत्तय कीलोतयामनुष्ण
णमिति तेहोचुर्हंत तमात्मानमन्विष्यामोयमात्मानमन्विष्यामर्वाश्रुलोकानां प्रोतिसर्वांश्च कामानि तौ देहवैदेवानाम
भिप्रवृत्तान् विरोचनोसुराणामित्यादि च स्मार्तमपि गंधर्वयातवल्कसेवादिष्वदपुक्तं ज्योतिषिभावाच्च सत्रं मन्त्रः

कारः संभवति स तत्राधिकारीति न्यायस्तत्पर्यः यतः सर्वेषां सर्वत्राधिकारो न संभवति ततो नचापोद्यते रमन्त्यः तद्भूयोयो
देवादीनामप्येवमस्तेनानुद्धतस तद्भूता भवति तस्यैतदेवा उच्यते नान्यं ततश्च विरोचनोसुरासुराजानो प्रजापतिवस्तुवि
द्याप्रदं नरमतविति चलिगमस्तीत्यर्थः किमत्र त्रसामृतमिति गोर्ध्वप्रज्ञेयातवल्क उवाच तस्मिन् मोक्षधर्मेषु तदेवादीना
मधिकारलिगमित्याह स्मार्तमिति ॥

वल्लभावगमादयमलोषः ॥
 संतं सर्वकामफलैः प्रभैरेषादीनिहोसिपुगणलिलैकैः पिय
 संतं उदलं लिखेति ॥ इदं वल्लभमिति विग्रहादिपंचकमद्भावा

बलाभिवगमादयमदोषः

त्राधिकारः किंचविग्रहाभावादेवादी नानकाण्यधिकारस्याह न्यातिविभावाचेति आद्यपः सूर्यचंद्रः प्रकोगावकइत्यादि
 शास्त्रान्न्यातिः पिंडे प्रप्रयोगस्य भावात्सत्ताच विग्रहवान्देवः कश्चिदस्तीत्यर्थः सादितः पुरस्तादुदेताद्यप्यसादस्तमेते
 तिमं प्रविष्टावाक्येन न्यातिव्यवहित्यशास्त्रः प्रसिद्धः नदिन्यातिः पिंडानामेवाधिकारोक्ततत्राह नचेति अथादीनाम
 धिकारमाशङ्क्याह एतेनेति अग्निर्वायुर्भूमिरित्यादिशास्त्रानामेव तत्रवाचित्वेनेत्यर्थः सिद्धातीयांकते सादेतदित्या
 दिना वज्ररक्तः प्रवंदर पुतादयामत्राः सादीदीत्यादयार्थवादाश्च न्यातिव्यवहित्योदेवादास्येतेयत्तभाविताः तेन प्राप्त्यर्थे

प्रा
भा
६०

यदैकवाक्यत्ववाक्यैकवाक्यत्ववैषम्यानेवमिहान्न श्रुतौच्यते ननु दमेकैयदासुरोपिवेदिति पदार्थमनेति तदा पदैकवाक्यमेकमेवा
धानुभवेकरोति ननु पदद्वयेष्टयकनुराणान्तर्वापयतितस्यविधौ निषेधानुपपत्तेः वाक्यार्थानुभवप्रत्यक्षत्वादर्थवादस्त्वभावात्संसर्ग
स्त्वतिहारबोधयन्निधित्वाकैकवाक्यतां भजतइत्यस्तिविग्रहस्तु नुभवइत्यर्थः ननु धर्मद्वयपदानामन्तरसंसर्गबोधकत्वविनासा
त्तादेवविधान्ययोस्तु तत्राद यथाहीति साक्षादन्वयायोगदर्शयति नहीति अर्थवादस्तु तत्रार्थप्रदणामाशंकाश्च वादान्विभजते न
यत्रेति तत्रार्थवादेषु यत्राग्रिदिमस्यभेषजमित्यादावित्यर्थः आदित्योपपत्त्यभेदेवाधितरतिनेजस्वित्वादिराणवदः यत्रवन्नरस्तः

अत्रोच्यते विषमग्रयणसोपुक्तं यत्सुराणान्प्रतिषेधेपदान्वयस्यैकत्वादन्तरवाक्यार्थस्य द्वाविधुदेशार्थवादयोस्त्वर्थवा
दस्यानिपदानिष्टयान्वये ननु तत्रादौ तत्रविषयप्रतिपद्यान्तरैकैमस्यवशेनविधेस्तावकत्वेप्रतिपद्यतेयथादिवायवे
सेतमालभेतभूतिकामर्थे अत्रविधुदेशवतिनोवायवादिनोसंबंधो नैव वापुर्वेदेपिष्ठादेवतावायुमेवसेनभावायेतेनोप यदानंविधिः
पावतिसप्तवेनभूतिगमयतीत्यस्यमर्थवादानां पदानां नदिभवतिवायुर्वाग्रात्त्वभेतदेपिष्ठादेवताग्रात्त्वभेतस्यादिवायु
स्वभावसंकीर्तनेन नन्वांतरमन्त्रपं प्रतिपद्येवविशिष्टदेवत्वमिदं कर्मेतिविधिसंबन्धि तद्यत्रसोवांतरवाक्यार्थः प्रमाणं
तरगोचरोभवति तत्रतदनुवादेनार्थवादः प्रवर्ततेयत्रप्रमाणतवविरुद्धस्तत्रगुरावादेनयत्रतुतडभयनास्ति तत्रकिं
प्रमाणंतराभावाद्वावातः स्यादोहोस्वित्यमाणांतराविरोधादिद्यमानवादइतिप्रतीति शरणाविद्यमानवादप्राश्रयणीयो
न्यागावादपतेनमंत्रोवावातः अपिचविधिभिर्वेदोदितैवत्पनिद्वौषिचोदयद्विरपेक्षितमिश्रदोनोस्वरूपं नदिस्व
रूपरहितारंशदयश्चेतस्यारोपयितेशक्यते नचचेतस्यनारूपायैतस्यैवदेवतायैद्विः प्रदातेशक्यतेआवयतिच

94

परंदरस्तायैमानांतरसंवादविसंवादौनस्तः तत्रभूतार्थवादइत्यर्थः इतिविस्तरेयत्प्राहारः विग्रहार्थवादस्वार्थपितास्यवान
न्यपरत्वेसप्तज्ञातावाधितार्थकशब्दात्प्राज्ञादिवाक्यवत् इतिन्यायमेवैवतिदिशति एतेनेति वेदांतानुवादगुणावादानोनिरासा
यदेतौपदानि नचोभयपरत्वेवाक्यभेदोवांतरार्थस्य महावाक्याहारत्वादितिभावः विधान्यपत्त्यापिस्वर्गवदेवताविग्रहोमीका
यइत्याह अपिचेति ननुक्तेरात्मकेकर्मणिविधिः फलेविनानुपपन्नइतिभवतयत्रडः खेनसंभित्रमित्यर्थवादसिद्धः स्व
र्गाविधिप्रमाणकः विग्रहेविनाविधेः कानुपपत्तिस्वामाह नहीति ॥

यथावात्मानो गोलकेषु चक्षुरादिषु दृश्यो गेपि प्रास्व जैर्गोलकानि रिते दिशोऽस्तीति क्रियते तथाप्येति रादौ सूर्यादिषु प्रयोगेपि
 विग्रहवदेव ताः स्त्रीकांशास्तादृशेति रादौति तथा चेन्न तेन व्यवहारादित्यर्थः एकस्य जडत्वे ततो भयरूपत्वं कथं तत्राह अस्ति ही
 ति तथापि विग्रहवत्तया देवव्यवहारः श्रूयते सुत्रस्य एष उद्देशः जराणां स्य जति कृतं संवेधा यो र्थवाद इत्यादिः तत्र मेधाति
 ये मेयेतीरसंवेधनं श्रुतं तथा च मेयेति मुनिमेवोभूता जहावेति तापनाये मेयेतीरसंवेधनमित्यर्थः यदुक्तमादित्यादयो
 मृदादिवदेव तन्ना एवेति तत्र सर्वत्र जडानां शब्दस्य सत्त्वादित्याह मृदिति आदित्यादेको जडभागः क कथं ततो पारितो जड इति
 ज्योतिरादि विषया अष्टादित्यादयो देवतावचनाः शास्त्रेन तानां तैमिर्याद्युपेतं तं देवतात्मानं समर्थयंति मंत्रार्थवादो
 दिपुनया व्यवहारादस्ति ये मृगयो गान् देवता नाना ज्योतिराद्यात्मभिश्च व्यवस्थातुं ये ये सुतं ते विग्रह इति न संमर्थयं तथापि श्रूयते
 सुत्रस्य एष उद्देशः मेधाति ये मेयेति मेधातिथिं रूपाणां यनमिदं मेवोभूता जहावेति स धनेच आदित्यः पुरुषो भूत्वा कुं
 ली मृषजगाम देति मृदादिषु चित्तजभिः कृता रेभ्युपगम्यते मृदु जवोदायो जुवन्ति त्यादिदृशानां ज्योतिरादेस्तभूतधा
 तोरादित्यादिषु चेतनत्वमभ्युपगम्यते चेतनास्तपि कृता रेभ्युपगम्यते देवतात्मानो मंत्रार्थवादादिव्यवहारादित्युक्तं यदप्युक्तं मंत्रा
 र्थवादे योरन्यार्थं तान् देवताविग्रहदिप्रकाशनसामर्थ्यमित्यत्र मः प्रत्ययप्रत्ययोदिसद्वा वासना योः करणानां
 न ४ र्थत्वमन्यार्थत्वं च तथाप्यन्यार्थमपि प्रस्थितः पथि पतितं तराणां गलीते वप्रतिपद्यते अत्राह विषम इत्यस्यासः तत्रादि
 त्वाप्यणदिविषयप्रमत्तं प्रवृत्तमस्ति येन तदस्ति त्वं प्रतिपद्यते अत्र पुनरपि युद्देशे कवाका भावेन स्तमर्थार्थवादेन पार्थ
 र्थान्न च ताने विषया प्रवृत्तिः शक्या अपरि त्वेन हि महावाक्यप्रत्यायके वांतरवाक्यस्य प्रत्ययप्रत्यय कत्वमस्ति यान्न सारो
 पि वेदिति न च त्विवाक्यपदत्रयसंवेधान्तराणां प्रतिषेधपूर्वको र्थो गम्यते न पुनः सुरापि वेदिति प्रदृश्य संवेधान्तराणां वि
 रादेति त्विति मंत्रादिकं यदशास्त्राभासमानं विग्रहादौ स्वार्थेन प्रमाणमन्यपरत्वादिषु भूत्वेति वाक्यवदिताद यदपीति अन्यथ
 रादपि वाक्यादायाभावे स्वार्थोपपत्त्याह अत्र जमरति तापय श्रुतार्थं प्रत्ययमात्रेण कृतं त्वमदादरति तथा हीति त्वाणो
 प्रत्ययोस्ति विग्रहादौ सनास्तीति वैषम्यं शक्यते अत्रादेति विग्रहो विविधा वाक्यतदेव वाक्यतया प्रसक्तो विधिरित्येवा
 र्थवादेषु प्रत्ययः वृत्तांतो भूतार्थो विग्रहादिः तद्विषयः प्रत्ययो नास्तीत्यर्थः जन्ववांतरवाक्येन विग्रहादिप्रत्ययोस्ति तत्प्राह

तदीति सरापनप्रत्ययेपि स्यादिति भावः

पु
भा
२८

चित्रकारादिप्रसिद्धिरपि विप्रदमानिनाह लोकेति अधिकरणार्थमुपसंहरति तस्मादिति चिन्तायाः फलमाह क्रमेति एवमेव देवादीनां त्र
सविद्याधिकारे सत्येव देवत्वप्रामिदायमुक्तिफलानुपासना निपुण्यते देवानामनधिकारे तानाभावात्कममुत्तमिनामुपासनं प्रवृत्ति
नस्यात् अतोपिकारनिर्णयान्नानिर्णयितुमशक्येति भावः शुगस्य सत्यतेदीति पूर्वोक्तस्य ह्युक्तमंगतिमाह यथेति एवं देवादीनामधिकार
सिध्यर्थमेवादीनां भूतार्थविप्रदादौ समन्वयान्तावेदानां नामपि भूतार्थप्रमाणसमन्वयादुदीकृतः अत्रापि शुद्धशब्दस्य भूतस्य त्रियस
मन्वयोक्त्यादुदीकृत्यते इत्यधिकरणद्वयस्य प्रामाणिकस्यासिन्समन्वयाध्यायेतर्भाव इति प्रत्यक्षपूर्वप्रदेष्टुं शक्यमिति नैव देवातश्रवणो प्रवृ
त्तिः सिद्धेतेतदभावश्चेति फले अत्र वेदान्तविचारो विषयः सकिं शुद्धमधिकरेति नयेति संभवाभ्यासदेष्टुं च पक्षमाह तत्र शुद्धस्यापि ता

९९

लोकप्रसिद्धिरपि न सति संभवेति रास्ते बन्नाथवसातेषुक्ता तस्मादप्यत्रोभेजादिभ्यो देवादीनां विप्रदवत्वाद्यवगमः ततश्च
चित्तादिसंभवाडप्यत्रो देवादीनामपि वस्तुविद्यायामधिकारः क्रममुक्तिदर्शनात्पणवमेवोपपद्यते शुगस्य तदनादरश्च
एतद्व्यवहारात्सत्यतेदि १५ यथामनुष्ठाधिकारनियममपोद्य देवादीनामपि विद्यास्वधिकार उक्तस्येव विज्ञातधिकारनि
यमायचादेतशुद्धस्याप्यधिकारः स्यादिति एतामाशोकं निवर्तेति त्वमिदमधिकरणमारभ्यते तत्र शुद्धस्याप्यधिकारः स्यादिति
नितावत्ताप्रमार्थित्वसामर्थ्यायोः संभवात् तस्माच्छब्दोयसेन वस्तुप्रतिवच्छब्दो विद्यायामनवस्तुप्रतिवचनिषेधाद्यवगमत् य
२३ चकर्मस्वनधिकारकोणं शुद्धस्यानशित्वेन तद्विद्यास्वधिकारस्यापवादकं लिङ्गं नद्यादवनीयादिरहितेन विधिवेदितेन शक्य
ते भवति च लिङ्गो शुद्धस्योपोहलकं संसर्गविद्यायोरित्यानश्रुतिपौत्रायाण्युश्रुषु शुद्धशब्देन परामर्शति अदहारत्वाशुद्धत्वे
धिकारवसद्गोभिरस्ति त विदुरप्रभृतयश्च शुद्धयोनिप्रभवाप्रतिविशिष्टवित्तानसंयत्राः सयंते तस्मादधिक्रियते शुद्धविद्यास्विते

सिद्धिः

दिना तस्मादनशित्वादनवत्त्वमोसमर्थः विद्यार्थिनिशुद्धशब्दप्रयोगात् लिङ्गादपि शुद्धस्याधिकारश्माह भवति चेति ज्ञानश्रुतिः
किल शुद्धशतानिगारयचरैकापगुरवे निवेद्यमेषि तथेत्सुवाच ततोरेकोविधुरः कन्याधिसन्निदमुवाच अहेति निपातः
त्वदर्थः दारेणानिष्केणापुत्तरत्वागतमयोदारेत्वा सचरोभिः सरदशुद्धतयैवास्त्वकिमलेनानेन ममगार्हस्थिनुपयोगिनेति
भावः अर्थित्वादिसंभवेत्ययः साधने प्रवृत्तिरुचित्वास्वाभाविकत्वादिति न्यायोपेतालिङ्गादिमाह तस्मादिति ॥

२८

अदृश्यान्पपत्वाचे तस्या रोहोमी कार्यत्वात्प्रतिमप्याद यस्याति अतश्चेतस्या रोहोमि विग्रहपृथक् किंचकर्मप्रकरणायाटादिय
हप्रमितिः प्रयाजवत्कर्मो गतेनामी कार्यतां विनाकर्मपूर्वमिदं किंचसप्रसन्नविग्रहवदेव तं मत्काशहमात्रेदेवतेति भक्तिरपुके
त्याद नचशब्देति नचाकृतिमात्रेण शब्दाकर्मसत् किंचिद्विग्रहेति वाच्येति च त्वाकृत्ययोगादतः शब्दस्याप्याकांक्षायां मंत्रादिप्रमित
विग्रहोमी कार्यत्वात् तत्रेति एवं मंत्रार्थवादसुलभमिति दासादिकमपि विग्रहे मानमित्याद इति दासे ति प्रमाणात्तेन संभवदित्य
र्थः चासादोनायोगिनो देवतादिप्रत्यक्षमपीति दासादेर्मलमित्याद प्रत्यक्षेति चासादयो देवादिप्रत्यक्षश्रुत्याः प्राणित्वादसह
दित्यनुमानमतिप्रसंगेन हूयति यस्मिन्नादिना सर्वे सुताभिजं वस्तुत्वात्तत्तद्वदिति नरादेचित्रेनास्तीत्यसिद्ध्यात्तथा च त्रि

यमेदेवतायेदविग्रहीतस्यानामनसाध्यायेदृषद्विग्रहजिति नचशब्दमात्रमर्थस्वरूपं संभवति शब्दार्थयोर्भेदात्तत्रयादृशं मे
त्रार्थवादयोर्मिदादीनां स्वरूपमवगतं न तत्तादृशं शब्दप्रमाणा केन प्रत्याख्यातं पुके इति दासपुत्राणामपि व्याख्याते नमर्पोणसंभ
वन्मंत्रार्थवादसुलभत्वमवति देवताविग्रहादिसापथितं प्रत्यक्षादिमूलमपि संभवति भवति प्रत्याकर्मप्रत्यक्षमपि चिरेत
नाना प्रत्यक्षे तथा च चासादयो देवादिभिः प्रत्यक्षं वाचदरंतीति स्मर्यते यस्तु ज्ञायादिदानीं तजानां मित्रप्रवेष्टा मपि नास्ति देवा
दिभिर्वचदत्तं सामर्थ्यमिति सत्तगादेचित्रे प्रतिषेधे दिदानीं मित्रवचनात्प्रदायिषावेभ्यः इति योस्तीति ज्ञातं तच्च राजसूया
दिचोदना उपरुपात्त इदानीं मित्रवचकात् तरेण च वक्ष्यत प्राधान्येन प्रामाण्यमप्यन्यतिजानीत ततश्च वक्ष्यामि विधायिशा
स्वमनर्थकं स्यात् तस्माद्देवीनां कर्षवशाच्चिरेतना देवादिभिः प्रत्यक्षं वाचजद्विरिति सिद्ध्यात् अपि च स्मरंति स्वाध्यायादिषु दे
वतासंप्रयोगादित्यादि योगेण प्राणिमाद्ये श्रुत्ये प्राप्तिफलः सार्धं माणो न शक्यत साहसमात्रेण प्रत्याख्यातं प्रतिश्रयोरासा
दात्मं प्रत्यापयति एष्ट्यापतेजो नित्यसंस्थिते पंचात्मके योगगणे प्रवृत्तेन तस्यो गो न जरा न मृत्युः प्राप्तिप्रयोगाग्रिम
ये शरीरमिति त्रयोविधमपि ज्ञासादृशानां सामर्थ्यं नोपमाते पुके तस्मात्समूलमिति दासपुत्राणो

मंत्रे

याभावंवर्णाप्रमाभावंवर्णाप्रमाश्रयवस्थां च श्रुतिरेव कुशवृद्धिनात् तथा च राजसूयादिशास्त्रसकृत्तादिपुण्यधर्मव्यवस्थायां स्वसवा
धर्मार्थः योगासूत्रादिदेवादिप्रत्यक्षमिदिरित्याद अपि चेति मंत्रजपादेव मंत्रिणं तत्संभाषणं चेति सूत्रार्थः योगमाहात्म्यस्य कतिस्त्र
ति सिद्धत्वाद्योगिनामस्ति देवादिप्रत्यक्षमित्याद योगाति कटतत्तादानीनोः जानां जानाभः नाभरायो वप्रीवायाया केशप्रगाद ततश्चा
त्रस्मरं प्रष्टुमिच्छादिपंचकं समुत्थिते पारणायाजिते योगयोगे चाणिमादिके प्रवृत्ते योगाभिव्यक्तं तेजो मयं शरीरं शत्रुस्योति नो नरा

तास्मदीयेन सामर्थ्ये २

विग्रहपृथक्

शुभा
भा.
२५

नोरेपुइसाअतस्यकोशेराफोकरुत्राण्यमाह शकतेचेसादिनाजानअतिनामराजनिदानमयेरात्रोपासादतलेसुषापतदानदीया
त्रदानादिपरागागातोचितात्र योसादिताद्येदमाभत्तामात्तरुणाणतस्यापरिआतम्भुः तेषुय आत्मादेसोयेसुरंदसुमुवाचिभाभाभइत्कि
नपरशसिजानअतेरपुतेनः सर्गोवापस्थितेतत्तत्ताथद्वतिनगाछेतिनमयेपरउवाचकमप्यनवराकेविद्यादीनसतेअरेसपुगवानगाडी
शकदीतयामदस्थितरेकुमिवेनहचनमात्थरेकस्पदित्रसिष्टस्यतेनोउरुतिक्रमनास्यानात्मनस्यत्यथः अस्पहचनातत्रिनेराताश
कटलियोनरेकुत्ताविद्यावानविद्यातोतिदमानामभिप्रायः कंडअरेरतिपदछेदः अत्रोप्यथः तेषोदेमानामनादरवावाअवम
दस्यरातः सुगतत्रासापुइशायेनरेकेरासचातेहीतिसुत्रान्वयः अत्रोप्यथिकाथेत्ताभेमसमनचितरुत्तार्थस्यापरतिन्यायद्योतनाथो
दिशस्तः तदाइवएतयापुचाआइवएतन अरःरेकेप्राप्तवान पुचावाकप्रागजाअभिडुवेप्राप्तः पुचावाकरणेनरेकेगतवानित्य

नोरेपुइसाअतस्यकोशेराफोकरुत्राण्यमाह शकतेचेसादिनाजानअतिनामराजनिदानमयेरात्रोपासादतलेसुषापतदानदीया
त्रदानादिपरागागातोचितात्र योसादिताद्येदमाभत्तामात्तरुणाणतस्यापरिआतम्भुः तेषुय आत्मादेसोयेसुरंदसुमुवाचिभाभाभइत्कि
नपरशसिजानअतेरपुतेनः सर्गोवापस्थितेतत्तत्ताथद्वतिनगाछेतिनमयेपरउवाचकमप्यनवराकेविद्यादीनसतेअरेसपुगवानगाडी
शकदीतयामदस्थितरेकुमिवेनहचनमात्थरेकस्पदित्रसिष्टस्यतेनोउरुतिक्रमनास्यानात्मनस्यत्यथः अस्पहचनातत्रिनेराताश
कटलियोनरेकुत्ताविद्यावानविद्यातोतिदमानामभिप्रायः कंडअरेरतिपदछेदः अत्रोप्यथः तेषोदेमानामनादरवावाअवम
दस्यरातः सुगतत्रासापुइशायेनरेकेरासचातेहीतिसुत्रान्वयः अत्रोप्यथिकाथेत्ताभेमसमनचितरुत्तार्थस्यापरतिन्यायद्योतनाथो
दिशस्तः तदाइवएतयापुचाआइवएतन अरःरेकेप्राप्तवान पुचावाकप्रागजाअभिडुवेप्राप्तः पुचावाकरणेनरेकेगतवानित्य

96

शकतेचायेपुइशायेधिकुतविषयेयेनचित्कथमित्युचते कन्वरणनमेतत्तत्तंमपुगवानमिवरेकमात्थेत्यस्माइसवाका
तुने दस्यनोजारंअतवतोनानअतेःपोत्राणस्य अरुमेदेतामृषीरेकः पुइशायेनेनसुचयोवभवात्मनःपरोत्तानस्याना
न पनायेतिगम्यते नाभिपुइसाधिकारात् कथपुतः पुइशायेनसुगतत्रासाचातरुचतेतदाइवएतव्युचमभिडुवेपु
चावाभिडुवेपुचा वारेकमभिडुवेतिपुइः अवयवार्थसंभवात् रुत्तार्थसचासंभवाइपुतेचायमर्थोसामात्वायिका
यो तत्रिपत्तगतेथोतरत्रचैत्ररथेनलिगात १ इतश्चनजातिपुइशेजानअतिः यकाराणप्रकरणनिरूपणेतत्रिपत्तमसो
चैत्रै तरत्ररथेनाभिप्रतारिणातत्रिपेणसमभिप्राहाराहिमाइसाते उत्तरत्रदिसेवर्गविद्यावाक्यशेषेचैत्ररथिने अभिप्रतायेतत्रिप
मेकीतीत अथहपेनकेचकायेयमभिप्रतारिणाचकात्तमेतिपरिविषयमाणेमेवसचारीविमित्तरति चैत्ररथित्वेचाभिप्रता
रिणाः कायेययोगदवगतकोकायेययोगोहिचैत्ररथस्यावगतः एतेनचैत्ररथकायेयपुपानपत्रितिसमानान्वयानोव
प्रयोगसमानान्वयायानकाभवेति तस्याचैत्ररथिनीमेकः तत्रिपतिरतापतरतिचतत्रपतितावगमाततत्रिपत्तमस्यावो
तयो तेनतत्रिपेणभिप्रतारिणासदसमानाया विद्यायासकीतेजंजानअतेरपितत्रिपत्तसुचयति समानानामेवदिप्रायेण
समभिप्राहाराभवेति तत्पेयणयैयैयोगाचनानअतेः तत्रिपत्तावगतिः अतोनापुइसाधिकारः

यः पुइशास्यपौगिकत्वेलिगमाद तत्रिपत्तेति सेवर्गविद्याविधानंतरमयार्थवाहप्राभते पुनकस्यायमेकपितोअंपुरोदितमभि
प्रतभेनासकेराजानेचकत्तसेनस्यापत्तमेदेनपरिविषयमाणेनोमोक्तुमुपविहोवटुभिहितवानित्यर्थः नन्वस्यचैत्ररथित्वेनअतमि
त्यतआह चैत्ररथित्वेचेति एतेनद्विगोतिहोदोपअत्येवश्वेचैत्ररथस्यकायेययोगउक्त अभिप्रतारितोमितयोगाच्चैत्ररथवेषवत्त्वे
निधीयतेराजवेषानोदिप्रायेणपरादितवेषायाजकाभवेतीत्यर्थः नन्वस्यभिप्रतारिणाः चैत्ररथित्वेतावताकयेतत्रिपत्तंनत्राह तस्या

सूत्राद्विरेवसिंहानयति नभूदस्याधिकारस्यादिना आपाततोविदितोवेदार्थोयेनतस्यस्यः अथयनविधिनासंस्तुतोवेदस्तड
 त्यामापातत्तानंचवेदार्थविचारेषु शास्त्रीयेसामर्थ्यतदभावाच्चइत्यर्थित्वादिसंभवस्याप्यसिद्धेर्नास्ति वेदांतविचाराधिकारस्यः
 यहाथयनसंस्तुतेनवेदेनविदितोनिश्चितोवेदार्थोयेनतस्यवेदार्थोपविधिष्वधिकारोनांन्यस्यानयीतवेदस्यापि वेदार्थानुष्ठानाधि
 कारेथयनविधिवैयर्थ्यापातादतःफलपर्यंतत्रसविद्यासाधनेषुअथवादिविधिषुभूदस्याधिकारस्यः अपीतवेदार्थज्ञान
 वत्तरूपस्याथयनविधिलभ्यस्यसामर्थ्यस्याभावादिति न्यायस्यतत्त्वत्वाद्यतयदेवेदार्थोपलक्षणमित्याह न्यायस्येति तस्याच्च

नभूदस्याधिकारोवेदाथयनाभावादपीतवेदोद्विदिनवेदार्थोवेदार्थेष्वधिक्रियते नचशूरस्यवेदाथयनमस्यप
 नयनश्वेकत्वाद्देदाथयनस्याथयनस्यचर्वात्रयविषयत्वापत्त्यर्थित्वेनैतदसतिसामर्थ्यधिकारकारणंभवति
 सामर्थ्यमपिनलौकिकेकेवलमधिकारकारणंभवति शास्त्रीयेषुशास्त्रीयस्यसामर्थ्यस्यापेक्षितत्वात् शास्त्रीय
 साचसामर्थ्यस्याथयननिराकरणेननिराकृतत्वात् यच्चदेभूदोयत्नेनवक्तुमशक्यत्वायश्वेकत्वादिद्यामप्य
 नवक्तुमत्वेद्योतयति नभ्यस्यासाधारणत्वात्तयसुनःसंसर्गविषयांभूदः शब्दप्रचणलिंगमन्यसेनतस्त्रिगोत्राया
 भावात्रायेत्तेर्द्विलिङ्गादीनामेद्योतकंभवति नचात्रन्यायोक्तिकामंचायंभूदशब्दः संवर्गविषयाभैवैकस्याभूदमधिकु
 र्यातद्विषयत्वात्तसर्वो सविद्यासर्ववादस्यत्वात्तनकचिदप्ययंभूदमधिकर्तुमुत्तरते ॥

इति तज्ज्ञपरास्पृष्टत्वाद्यप्ययत्तत्रयविषयोस्तत्त्वत्वादित्यर्थः श्वीकंलिंगोद्वययति यदिति असामर्थ्यायेनार्थित्वादिसंभ
 वस्याप्यनिरस्तत्वादित्यर्थः ननुनिरादस्यपतिगानयेदित्यत्राथयनाभावेपिनिष्ठादशब्दान्निष्ठादस्योच्चाविवभूदशब्दाच्च
 इत्यविद्यायामधिकारोस्तीत्याशंसंवर्यविद्यायामधिकारमार्गिकेति काममिति तद्विषयत्वात्तत्रकृतत्वादित्यर्थः वस्तुतस्त
 विधिकास्यत्वात्त्रिषादशब्दोपधिकारिसमर्थकः भूदशब्दस्तुविद्याविधिपरायंवादस्यान्तधिकारिणोवाधयति असामर्थ्या
 यविधेर्नान्यपरशब्दस्यस्वाधेयोपित्वासेभवादिति मत्तागोकारंत्यजति अथवादेति

रा.
भा.
१०

स्वराप्रवृत्त्यादिनिषेधाच्चनाधिकारश्चाद युवोति अस्मदस्यद्वितैः यथामानवेदं प्रमादाच्छावतः सीसलादाभ्यां तमाभ्यां चोत्रद्वय
गोप्रायचित्ते कार्यमित्यर्थः यद्युपादयुक्ते संचरिस्वरूपमिति यावत्प्रवृत्तिचरतिरिति शेषः मतिर्देवार्थज्ञानदाने नित्यनिविष्टते अत्र
स्यनेमितिकं तदानमस्येव यदुक्तं विदुषादीनां ज्ञानित्वेन प्रमितिज्ञाद येषामिति सिद्धान्तसिद्धेर्द्वयवत्त्वेपि सापकेः अत्रैः कथं
ज्ञानेन लब्धव्यमित्यत आह आचयेदिति केषुना अस्यापि प्राप्तिकत्वमाशङ्क्याह अवसित इति समाप्त इत्यर्थः काठकं पठति यदि
दमिति सर्वजगत्प्राणत्रिः सन्त उभयत्र प्राणोचिदात्मनि प्रेरके सति राजति चेष्टते तच्च प्राणाद्यकारणं मरुद्गुह्यविभक्त्यस्मादिति

अवगाथाप्यनार्थप्रतिषेधात्सूत्रेण १५ इत्यनश्रुत्याधिकारोक्त्यस्य सूत्रेः अवगाथाप्यनार्थप्रतिषेधो भवति वेदप्रवृत्त्याप
तिषेधो वेदाप्यनप्रतिषेधः नदर्थज्ञानानुष्ठानयोश्च प्रतिषेधः अत्रस्यस्यते अवगाथप्रतिषेधस्तत्रावगाथवेदमुपसृष्टत्वेन
सुप्रनतृभ्यां चोत्रप्रतिपरागमिति पदवाच्यत एव शान्त्यच्छ्रुत्वा स्माच्छ्रुत्वा सीयेनाद्येतव्यमिति च अतएवाप्यनय
तिषेधोपसृष्टिसमीपेपि नाद्येतव्यं भवति सकथमप्रतमपीयीत भवति चोत्तराणेति द्वास्ते दोधारो शरीरभेद इति अतए
व चार्थदर्शनात्तानुष्ठानयोः प्रतिषेधो भवति नश्रुदयमतिर्दद्यादिति द्विजातीनामप्यनमिन्नादानमिति च येषु नः स्वे
मेकभवेन शब्दिरुपमं वाप्यप्रतीनां ज्ञानेन तस्तेषां नशकते फलप्राप्तिः प्रतिषेधेन ज्ञानेनैकंति फलत्वात् आचयेच्चतरो क
वर्णानिति चेति ह्यस्य प्राणाधिगमे चातवर्णप्राधिकारस्मरणत वेदपूर्वैकस्त्वनास्यधिकारः अत्राणमिति स्थिते केषुना

त ४ अवसितः प्रासंगिकोधिकारविचारः प्रकृतामेव दर्शनीयावार्थविचारो भवति यिष्यामः यदिदं किंच जगत्सर्वं प्रा
णपतति नितिः सन्त मरुद्गुह्यं वज्रमुद्यतं यत्तद्विदुषस्तान्ते भवन्तीति एतद्वाक्यं एतद्वैक्यन इति धातुर्थानुगमात्त्वत्तिते अस्मिन्वा हि
कोमवेमिदं जगत्प्राणं यद्यप्यस्ते मरुच्च किंचिद्वयकारणं वज्रमुद्यतं यत्तद्विदुषस्तान्ते भवन्तीति एतद्वाक्यं एतद्वैक्यन इति धातुर्थानुगमात्त्वत्तिते अस्मिन्वा हि
प्राणः किंचिद्वयानके वज्रमित्यप्रतिपत्तेर्विचारे क्रियमाणे प्राप्तावत्यसिद्धेः पंचवृत्तिर्वायुः प्राण इति प्रसिद्धेरेव चानि ७०

भयं तस्मिन्मयदेतत्वेदं ज्ञानमाह वज्रमिति यद्यद्यते वज्रे भयं तथेत्यर्थः यद्यतत्याणं वायुस्य निर्विशेषं विदुस्ते मरुत्वा भवन्तीत्या
ह य इति नन्वस्मिन्सत्रे कथमिदं वाक्यमुदाहृतमित्यत आह एतदिति एतत्स्यैव साकेयनस्य सूचितत्वात् एतत्तिपदपुक्तं वाक्यमुदा
हृतमित्यर्थः प्रासंगिकाधिकारचितयास्य संगतिर्नायेदितेति शब्दादेव प्रमित इत्यनेन च ते तत्राप्युवाके नीवानुवादे अस्मैक
ज्ञानार्थ इत्युक्तेन तथेह प्राणानुवादे एकज्ञानार्थः संभवति प्राणस्य स्वरूपेण कल्पितस्यैवायेमात् अतः प्राणयास्ति परं वा
क्यमिति प्रसदाहुराणान् पूर्ववदयति प्रसिद्धेः पंचवृत्तिरिति ॥ ॥

अत्र रादृशो यौगिक एवेति न प्रदस्याधिकार इति स्थिते तत्र लिङ्गान्तरमाह संस्कारेति उपनयने चेदग्रहणं गोश्रुदस्यास्तीति श्रुत्वं
 मुक्तमिदं विद्याप्रदं गगनोपनयनं संस्कारस्य सर्वत्र परामर्शान्न श्रुदस्य तदभावाच्च विद्याधिकारस्तच्च ते भाष्ये आदिपदेनाथ
 यनगुरुमुखादयोऽद्योते तेषां माचार्य उपनीतवानित्यर्थः नारदोपि विद्याधीमंत्रमुच्चारयन् ननु प्रारमुपगत इत्याह
 अथोति उपदिशेति यावद्भूतपरो चेदपरागः समुपगच्छन् निष्ठाः परे निर्गुणो यस्यान्वेषमाणा येषां पिप्यत्माहः तन्नितामित्तं स
 वै च सतीति निश्चित्य ते भरद्वाजादयः षट्त्रयस्य सुपगतार्थः ननु चैषान्न विद्यायां श्रवो नाना अनुपनीये च विद्यामुच्चा
 चेति अतरेनुपनीतस्याप्यस्ति विद्याधिकार इत्यत आह तान्नेति ते ह समिन्त्याण्यः श्रुत्वा त्रे प्रतिचक्रमिरति सवैवावेवास्माकं
 उपनयनार्थमागता इत्युपनयनप्रतिदर्शयित्वा निश्चित्यते हीनवर्गो नोत्तमवर्गो अनुपनीये वोपदेष्टव्य इत्याचारज्ञानार्थ

संस्कारपरामर्शान्न तदभावाच्च ३० इत्युच्यते प्रदस्याधिकारो यदि याग्रदेवोऽप्यनयनादयः संस्काराः परामर्शेते
 तदोपनिषे अदिभगवति होषसादत्र सपराजसनिष्ठाः परं च स्यान्वेषमाणा येषां वै तत्सवैव स्यतीति ते ह समि
 वेः त्याणयोभगवतं पिप्यत्मादमुपसज्जति च तद्गानुपनीयेत्यपि दर्शिते वोपनयनप्रामिर्भवति श्रुदस्य संस्काराभावेऽपि च ३
 लण्यते श्रुदश्च तर्थावर्ण एकजानि रित्येकजानि त्वस्य श्रुतेन न प्रदेष्टात के किंचिच्च संस्कारमर्हतीत्यादिभिश्च तद्भा
 वनिर्धारणे च प्रवृत्तेः ३० इत्युच्यते प्रदस्याधिकारोऽप्यनयनचनेन श्रुत्वाभावे निर्दिष्टेनावाले गौतम उपनेतमनुया
 वः सिते च प्रवृत्ते नैतदज्ञास्येति विवक्तुमर्हति समिदं सोम्यादयो यत्वा नैष्यन् सत्यादमा इति कतिनिमित्तम् ॥

मित्यर्थ एकजानिः अनुपनीतः फलकमभस्यमत्ताकृतं सत्यकामः किल मृतमिदं कोनवालो मातरमष्टवन्दिगोत्रो
 दमितितं मातो वाचमर्हसे वाचय तया ह मृषितव पितृर्गोत्रं नाना मिजवाला तन्नामा दममि सत्यकामो नाम त्वमसीतेता
 वज्जानामीति ततः सजावालो गौतममागत्य नेन किं गोत्रोमीति प्रष्टुवाचनादं गोत्रं चेति न मातावेति परं तममात्रक
 थित सुपनयनार्थमाचार्यगता सत्यकामो जावालोमीति ब्रूहीति अनेन सत्यवचनेन तस्य श्रुत्वाभावा निर्दिष्टः अत्रा
 स्माणा एतत्सर्वं विविच्य च केनादेतीति निर्धार्य देवोऽप्यस्य सत्यात्वं ज्ञातः सत्यं न सत्यं वा न सि श्रुतत्वा न उपनेष्टा तदर्थं समिधमा
 हरेति गौतमस्य प्रवृत्तेऽप्युल्लिखत न प्रदस्याधिकार इत्याह तदभावेति ॥

शा.
भा.
११

हृदयराण्येवाधुरेववृष्टिस्तत्राणपुनर्मत्सुमितिप्रणस्यजनयूरुप्रापेदिकमस्यतत्वमुच्यते नम्राख्यामृततेनत्रैववाप्रा
तिप्रकराणसंसाध्यायदेनमुपस्तः एषज्येतिहोयात्मानमत्कावाद्यादेनोशित्वान्तेरित्याद एतवाचित्यादिना तस्मात्काठक
वाक्येयेसमन्वितमिति सिद्धं ज्योतिर्देशनात् ज्येदोमप्रज्ञापतिविद्यावाक्यमाद एषरति परं ज्योतिः श्रुतिभ्यामसंशयमा
ह नत्रेति सदादिविषयावरकतमानाशकसौरमित्यर्थः पूर्वत्रब्रह्मप्रकराणस्यानुयाहकः सर्वशस्त्रमकोचापयोगा
स्तीतिप्राणश्रुतिः ब्रह्मणिनीतानतथात्रयश्रुत्यापदतयाभेतिप्रकरणास्यानुयाहकं पश्यामरतिप्रत्येदद्वारा नश्व
पक्षमाह प्रसिद्धमेवेत्यादिना श्वपक्षेसूर्योपासितः सिद्धातेब्रह्मज्ञानान्मुक्तिरितिफले ननज्योतिरधिकरणोज्योतिः शब्दस्य

38

यतवापुविज्ञानात्कुचिदस्यतत्वमभिहितेतदापेक्षिकंतत्रैवप्रकराणंतरकरणानपरमात्मानमभिधायातोपदाने
मितिवाख्यादेरातेत्यभिधानात् प्रकरणदण्यत्रपरमात्मनिश्रुत्यो न्यत्रधर्मादस्यत्रधर्मादस्यत्रास्माकनाकृतादस्यत्रभूतत्वे
भवाच्चयतन्यप्रसितहृदेतिपरमात्मनःश्रुत्वात् ज्योतिर्देशनात् ४ एषसंप्रसादोस्माज्जरीरात्समुत्थायपरं ज्योतिरु
पसंपद्यस्वनरूपेणाभिनिष्पद्यतेतिश्रूयते तत्रसुश्रूयते किं ज्योतिः शब्दचक्षुर्विषयतमोषदे तेजः किंपरं ब्रह्म वा ४
ति किं तावत्याग्रे प्रसिद्धमेवतेजोज्योतिः शब्दमिति कुतः तत्रज्योतिः शब्दस्यकूटत्वात् ज्योतिश्चरणाभिधानादित्यत्रदि
शब्दः प्रकरणज्योतिः स्वार्थपरिसम्यग्ब्रह्मणिवर्तते नचेदतद्वकिंचित्स्वार्थपरित्यक्तोकरादृश्यते तथाचनारीखंडे ब्र
ह्मयत्रैतदस्माज्जरीराडत्कामत्यथैतरेवरश्मिभिरुर्ध्वमात्रकमतश्चित्तमुद्धोरादित्यप्रामिरभिहितानस्मात्प्रसिद्धमेवतेजो

ज्योतिः शब्दमिति

ब्रह्मणिहृतेरुक्तत्वात्कथंश्वपक्षरगत्याह ज्योतिरिति तत्रगायत्रीवाक्येप्रकृतब्रह्मपरामर्शकयज्ञब्रह्मसामानाधिकरण्यज्यो
या २ तिः शब्दस्वार्थत्यागः कृतस्तत्रस्वार्थत्यागोदेवदर्शनात्स्वपक्षइत्यर्थः ज्योतिश्चतेरनुयाहकत्वेनाचिरादिमार्गस्थत्वं लिङ्गमा
ह तथाचेति तावाशतहृदयस्यानाश्रितिकडिकुयानाडीनारश्मीनाचोपश्रः संश्रयमुक्ताश्रयसंज्ञालापानतरेयत्रका
लेपतन्मरणायथास्यातथात्कामतिश्रयतदाएतेनारीसंश्रिष्टरश्मिभिरुर्ध्वसत्रुपरिगजतिगत्वादित्यत्रसत्योक्तद्वारभूतंग
ज्योतीत्यभिहितंतथैवात्रापिशरीरात्समुत्थायस्यत्वापरं ज्योतिरादित्याद्यमुपसंपद्यतद्वाराब्रह्मलोकंगत्वात्स्वरूपेणाभिनि
ष्पद्यतरेतिवक्तव्यंममत्यायेपसंपद्येन्नित्काश्रुतिभ्यांज्योतिषोचिरादिमार्गस्थत्वभानादित्यर्थः ॥

११

नन्वतयवपागागतादौत्रसगल्लिगतायाकतिनीता अत्रापिसर्ववेद्याभयदेवत्वंत्रसल्लिगमस्तीतिनास्तिप्रवृत्तावसरगतार्थत्वादि
 ततश्चाह वायोश्रुति प्रतिष्ठापयितुंलब्धवा प्राणवायोनिमित्तेनगच्छन्तीतिप्रसिद्धे अतः स्पष्टंत्रसल्लिगतास्तीतिभावः वन्त्रल्लिगवृत्ता
 परिणामाह वायुति वायुविशेषः समष्टिः सामान्यं सूत्राहदिरेवमिदं तं प्रतिजानीते ब्रह्मेवेति पूर्वोक्तवाक्यैकवाक्यतानुगृहीतं सर्वत्र

वायोश्रुतंमाहात्म्यं संकीर्णते कथं सर्वमिदं जगत् च वृत्तौ वायो प्राणशक्तिरेति प्रतिष्ठापयति वायुनिमित्तमेव च मद्भूतानकं वज्र
 मद्यमतेवाक्यैरिपर्यन्तभावेन विवर्तमाने विपुलतन्त्रयितुं हृष्टाशानयो विवर्तनं तस्याचक्षते वायुविराजनादेव चेदममृतत्वं
 तयादि प्राणतन्त्रवायुदेव शक्तिर्वायुसमष्टिरप्युत्तरितुं नयति यच्च वेदेति तस्माद्वायुमिदं प्रतिपत्तव्यं त्रैलोक्यं प्राणप्रज्ञमः ब्र
 ह्मेवेदमिति प्रतिपत्तव्यं कुतः पूर्वोक्तगतोच्यतां पूर्वोक्तवायोहिं प्रथमाया त्रैलोक्यं विनिर्दिष्टमानमुपलभामहे इदं च कथम
 कस्मादंतगतत्वावायुनिर्दिष्टमानं प्रतिपद्येमहि पूर्वोक्तवायुदेवश्रुतं तद्भूतदेवामृतमुच्यते तस्मिन्लोकाः श्रिताः सर्वे तद्भूता
 तिकश्चनेति त्रसल्लिगं तदेव वापिसत्रिधा जगत्सर्वं प्राणा एजति रतिचलोकाश्च पत्न्यप्रत्यभिज्ञानादिर्दिष्टमिति गम्यते प्राण
 शब्दोपपत्त्यपरमात्मन्येव प्रयुक्तः प्राणस्य प्राणमिति दर्शनादेः न पितृत्वमप्योदपरमात्मन एवोपपद्यते न वा वायुमात्रस्य त्रैलोक्य
 कं न प्राणो न नापानेन मर्त्या जीवति कश्चन इत्येतावन्तीति स्पष्टं तत्रैतत्तु वायुः स वायुकस्य जगत्प्रभयदेवत्वाभिधानात् तदेव वापिसत्रिधा
 सूर्यः भ्यादिदृश्यवायुश्चामृत्युर्वावति पंचमरुतिश्चैव निर्देष्टव्यं तन्वायुः स वायुकस्य जगत्प्रभयदेवत्वाभिधानात् तदेव वापिसत्रिधा
 नान्मद्भूतं वज्रमुच्यते इति च भयदेवत्वं प्रत्यभिज्ञानादिर्दिष्टमिति गम्यते वज्रशब्दोपपत्त्यपरमात्मन्येवोपपद्यते न वा वायुमात्रस्य त्रैलोक्य
 मुच्यते ममेव शिरसि निपतेत्ययमस्य शंसने न कुर्यादि तन्ने न भोजनं नो नित्यमेन गेजदिशसने प्रवर्तते एवमिदमग्निवायुसूर्यादि
 केन गदस्मादेव ब्रह्मार्णविमृत्रियमेन स्ववापा रे प्रवर्तते इति भयानकं वज्रोपमितं त्रसल्लिगं च त्रसल्लिगं यं कृतं तन्भीषास्महातः
 सा २ पवते भीषादेति सूर्यः योषां दग्निश्चैदृश्यमृत्युर्वावति पंचमरुतिश्चैव निर्देष्टव्यं तन्वायुः स वायुकस्य जगत्प्रभयदेवत्वाभिधानात् तदेव वापिसत्रिधा
 मृतत्वप्राप्तिः तमेव विदित्वा तिसृषु भूतिनाम्नः पञ्चाविद्यते यन्नायेति मेव वर्तते

यत्त्रल्लिगं वाक्यभेदकप्राणश्रुतेर्वायुकमित्याह पूर्वोक्तवादिना शुक्रं स्वप्रकाशात् तदनात्मेति त्रसल्लिगं प्राणः कोपिलोकोनास्तेवेत्यप
 वकारार्थः सौत्रं ल्लिगं वाच्ये एजति त्वमिति स वायुकस्य सर्वस्यैकपत्न्यप्रवृत्त्यदिप्राणाः परमात्मैवेत्यर्थः ब्रह्मणो वत्तवाक्-क
 यमित्याशङ्कानेन इत्याह वज्रशब्द इति ॥

अतोमार्गस्थसर्वोपासकममक्तिपरंवाचमितिप्रामेसिद्धोतयति पचमिति यावेपत्तेनोपक्रान्त्यात्तैवात्रन्योतिः शब्देनचात्वेपरति
 न्योतिर्वक्तोनेकवाचताप्रयेनकप्रकरणानुरदीतोतमपुरुषकत्वावाक्यभेदकन्योतिः कृतिर्वापेतिभावः अशरीरत्वफललिगाच्चवरे
 वक्तोतिर्नसर्वस्याह अशरीरमिति नचसर्वस्यासकमेणाशरीरत्वेत्यादित्वाच्च परतेनविशेषितस्यन्योतिषण्वसउतममितिपरामर्शनाश
 रीरत्वनिष्पृष्टादित्याह परमिति पूर्वोक्तस्तिराहयति यत्ति नारीवेदेदोदेणसकस्यासर्वस्याभिरुक्तासनमोक्षइतिपुक्तसर्वोक्तिः अ
 ततप्रतापतिवाकेनिर्गुहाविषयामन्तिरादिगतिस्थसर्वस्यानन्तपादनयकत्वात्तकृति यस्यामेनसरूपसाक्षात्कृत्यपरंन्योतिस्तदेवोपसं

पवंप्रामेचमः परमेवअस्मत्तोतिः शब्देकस्मादृशानात् तस्यादीरप्रकरणोचकत्वात्तेनानुवृत्तिर्दृश्यते यथात्मापदतपाशेत्यपदत
 पाशत्वदिगताकस्यात्मनः प्रकरणदावन्त्युच्यतेनचिन्तितमित्यत्वेनचप्रतिज्ञानादेतत्वेवतभ्यानुयात्यास्यामीतिचानुसंधा
 नादशरीरंवाचसंतनप्रियापिद्यस्यगत्यतिचशरीरतायेत्योतिः सपतेरस्याभिधानात् असभावाच्चान्यत्राशरीरतानुपपत्तेः य
 वेत्योतिः सउतमः पुरुषइतिचविशेषणान्न यत्तत्तममुक्तोदादित्यपामिर्भिदितेति नचासावांतिकाप्रोदोगम्युक्तान्तिसे
 वंधान नयाम्यंतिकेप्रोदोगम्युक्ता तैल्लशतिवक्ष्यमः आकाशेनधीतस्मादिवापदेशान्न ४१ आकाशेनवेनामरूपयोनिर्व
 दितानेपदेतरानद्रूपतदस्तेसआत्मनिश्रुते तन्किमाकाशशब्दपरंअस्मिन्नेवभूत मितिचे चारे
 भूतपरिग्रहोयुक्तआकाशशब्दस्यतस्मिन्नरुद्धत्व नामरूपनिर्वेदस्यचावकाशदानदादेशात्तस्मिन्योजयितुंशक्यत्वात्
 स्वरूपादेयस्यष्टस्यअस्तिगणाप्रवणदित्येवंप्राप्रदमुच्यते परमेवअस्मिन्नेवभूतआकाशशब्दंभवितमर्हति कस्यादृष्टांतरत्वा
 दित्यपदेशान्तेपदेतरानद्रूपेतिदिनामरूपाभ्यामधीतर्भूतमाकाशव्यपदिशतिनचअस्मात्तान्नामरूपाभ्यामधीतरंसंभव
 ति सर्वेस्पविकारजालस्यानामरूपाभ्यामेवव्याकृतत्वात्तामरूपयोरपिनिरेक्योनच सत्त्वोत्पन्नसंभवति श्रुतेनजीवेना
 त्तनानुप्रविष्यनामरूपेवाकरवाणीत्यादिब्रह्मकर्तृत्वप्रवणान्न ॥ निर्देहसा२

युतइतिचात्वेयमितिभावः आकाशोव्यपदेशप्रोदोगम्युदाहरति आकाशइति यथोपक्रमकत्वात् न्योतिः कृतिर्वापस्तथाका
 शोव्यक्रमोद्देशादिशब्दाभूतिरुद्धातेनप्रवेपत्तयति भवेति कृतेरगोराकाशोपास्तिनिर्गुणवृत्तान्तेनेतुभयत्रफलंआका
 शास्तिगणदित्यनेनफौनकताभाष्यतदुदत्रस्यहृत्तिगाप्रवणदित्यपरिहरति सएतदेवेति वेनामेतिप्रसिद्धलिगस्याकाश
 कृतेअवाक्यशायताभाष्यस्यात्मप्रतिभ्यामनेकलिगोयुतास्योवापोयुक्तः युत्रब्रह्मप्रमातासचारस्तत्रवाक्यस्यतामर्थमितिनि
 र्गणादिसिद्धांतयति परमेवत्यादिना नामरूपेणशब्दाधीतदतः पातिनस्तद्विद्वत्तत्त्वत्वेनैवायुक्तमित्यर्थः ॥

प्रा
भा
१३

200

जीगोपशयनमः अथक्तेषामनेपेचनवाधारेचकारणे वेदितव्यं प्रियं वेदेषु कृतिपुरुषेपरं । अस्मिन्नादेधिकरात्रयमेतस
धिकरणोत्तरसंगतिवक्तुं नमनुवदति अस्मिन्ति तदशब्देन प्रथानस्य वेदिकशास्त्रस्य त्वेनेत्यर्थः । इत्यधिकरात्रो गतिसामान्यम
यत्वेन च प्रतिपादितं तत्र अस्मिन्नेदोत्तनांगतिसामान्यं प्रपञ्चिते अथुना प्रथानस्याशब्देन मसिद्धमित्याशङ्कानिरूप्यते इत्यनेन संगतिः
तेनाशब्देन निरूपणेन अस्मिन्नेदोत्तनांगसमन्वयोरुदीकृतो भवतोत्तमस्य संगतिरप्यधिकरात्रयस्य ज्ञेया अत्राद्यन्तपदविष
यः तन्निप्रथानपरं पूर्वोक्तशरीरपरं वेति स्मृतिप्रकरणध्यासेषाये पूर्वमप्रसिद्धस्य परत्वं यथा यथा ध्यायस्मद्विज्ञेते तद्वद्व्यक्त
अनुमानिकमप्येकेषामिति चेन्न शरीररूपकविन्यस्तारहीनदर्शयति च । अस्मिन्नासां प्रतिपद्यमाना लक्षणानामुक्तं
जन्माद्यस्य यत्नरहितं लक्षणं प्रथानस्य अपि समानमित्याशङ्कतदशब्देन निराकृतमीह तेनाशब्दमिति गतिसामा
मेचवेदात्तवाक्यानां असकभरणवादप्रतिविद्यते न प्रथानकारणावोदेषतो निप्रपञ्चिते गतेन प्रयेन इदं निदानो मवशि
ष्टमाशङ्कते यदुक्तप्रथानस्याशब्देन तदसिद्धकामुचिक्कावासां प्रथानसमर्पणभाषाणां शब्दानां प्रयमाणात्वादतः प्र
थानस्य कारणात्वेदसिद्धमेवमद्विः परमर्षिभिः कसिन्प्रसूतिभिः परिगृहीतमिति प्रसज्यते तेषां च तेषां शब्दा
नामन्यपरत्वं प्रतिपाद्यते तावत्सर्वत्र अस्मत्तगतः कारणाभितिप्रतिपादितमप्याकुली भवेत् अनस्तेषामन्यपरत्वं
दर्शयितुं परः सदर्भः प्रवर्तते अनुमानिकमप्यनुमाननिरूपितमपि प्रथानमेकेषां शास्त्रविनाशवदुपलभ्यते
काठकेरिपठ्यते सद्गतः परमव्यक्तमव्यक्तासुरुषः परश्चि तत्रय एव यत्रामानोपत्यमाश्रमद्वयव्यक्तपुरुषास्म
तिप्रसिद्धास्त एवेह प्रत्यभिज्ञायेते तत्राद्यन्तमिति स्मृतिप्रसिद्धेः शास्त्रादिहीनत्वाच्च नव्यव्यक्तमव्यक्तमिति व्युत्पत्तिर्मा
वात् स्मृतिप्रसिद्धे प्रथानमभिधीयते तस्य शास्त्रवत्त्वं तदशब्देन नुपयत्नदेव च तगतः कारणाभितिस्मृतित्यायप्रसि
द्धिप्राप्तिचेन्नैतदेवं नयेत काठकवाक्ये स्मृतिप्रसिद्धयोर्मद्व्यक्तयोरस्ति त्वपरः ॥

यदमप्रसिद्धप्रथानप्रसिद्धिप्रवयत्यति अनुमानिकमिति अपिशब्दाद्व्याप्तोकारणायमशब्दत्वात्तपेति सूचयति त
था च प्रसू प्रथानयोर्विकल्पेन कारणात्वाद्वा एव वेदात्तानां समन्वय इति नियमासिद्धिः फलसिद्धातेनियमसिद्धिरिति
विवेकः यद्विचारत्वाधिकरणनामैतत्पादसंगतिर्वाप्यास्मात्तक्रमरुद्धिभ्यामव्यक्तशब्दः प्रथानपरः शास्त्रादिषु
न्यत्वेन योगसंभवत्वेनाह शास्त्रादीति प्रथानस्य वेदिकशास्त्रवाच्यत्वेकात्ततिरित्यत्राह तद्वेति अनामैकमिति साधो
प्रतिर्द्वः प्रकृतिरुच्यते इत्याद्योस्येतः यद्व्यक्तं तत्र प्रकृतिकमिति न्यायः ततो ब्रह्मैककस्यामिति मतत्वातिरिति भावः

इति विधिः प्रथानपरः शास्त्रादिषु न्यत्वेन योगसंभवत्वेनाह शास्त्रादीति प्रथानस्य वेदिकशास्त्रवाच्यत्वेकात्ततिरित्यत्राह तद्वेति अनामैकमिति साधो प्रतिर्द्वः प्रकृतिरुच्यते इत्याद्योस्येतः यद्व्यक्तं तत्र प्रकृतिकमिति न्यायः ततो ब्रह्मैककस्यामिति मतत्वातिरिति भावः

१३

शरीरस्य प्रकृतत्वेण च कथं देन प्रधानं गच्छतामित्यत आह तत्रय एवेति एवं प्रकृत्यां योऽप्यित्वा शरीरस्य परिशेषता मानयति तत्रेति
 येनादिना अर्थानां पूर्वमनुक्तिशोकां वारयन्तरत्वमुपपादयति अर्थ इति गच्छेति प्रकृत्यं यं यं प्रतीतिग्रहा ईदृयाणि तेषां ग्रहत्वं विष
 यापी न असति विषये तेषां किंचित्त्वरत्वात्ततोऽग्रदेभ्यः अस्या अतिग्रहा विषया इति हृदहार रूप के अवलोकनरत्वं अस्या भिषायेन त्वात्
 रत्वेनेति भावः सविकल्प कत्ताने मनः निर्विकल्प निश्चयात्मिका बुद्धिरात्मा शास्त्रात्स एव बुद्धेः परः प्रत्यभिज्ञायतर इति शेषः हिरण्य
 गर्भभेदेन ब्रह्मरूपि पदवेद्या समष्टि बुद्धिः महानित्याह अथवेति मननशक्तिर्वापि नीभा विनिश्चयः ब्रह्मा आत्मा भोग्यवर्गो

तत्र य एवं हि यादयः पूर्वस्योरथ कृत्वा कल्पनाया मञ्चादिभावेन प्रकृतान्तेण वेदद्वयगिरिद्वये प्रकृतहाना प्रकृतप्रक्रियापरि
हाराय तत्रेदिय मनेषु द्वयत्वावत्त्वं त्रैलोक्यसमानशास्त्राणव अर्थापेक्षायादयो विषया इदियद्वयगोचरत्वेन निदिष्ट
तेषां चेदियेभ्यः परत्वमिदियेभ्यः परत्वमिदियाणां ग्रहत्वे विषयाणां मतिग्रहत्वमिति अतिप्रसिद्धे विषयेभ्यश्च मनः
परत्वं मनोमूलत्वादिष्वेदियव्यवहारस्य मनसस्तु पराबुद्धिः बुद्धिः पारुष्यभोगोपजाते भोक्ता रसपसपेति बुद्धरात्मा म
हान्परोयः संप्राप्तान्तरधिनं विहीतिरधित्वेनोपक्षिप्त आत्मशास्त्राद्भोक्तृभोगोपकरणपरत्वापपत्तेः मदत्वे च
स्वस्वामित्वा उपपन्नमथवा मनोमदान्मतिर्मेसा प्रवेष्टिः त्वातिरोचरः प्रज्ञासंविच्चित्तैव सस्ति अतिपरिपठतः
तिस्सतेः योत्रस्मादो विधाति प्रवेद्यो वेवेदो अग्रहितेन तिसै इति अतः पापयमनस्य हि रात्मा र्मस्य बुद्धिः सा सर्व बुद्धी
नोपराप्रतिष्ठसेहमहानात्मे सुच्यते सा च प्रवेत्तु बुद्धिग्रहणे नैव गृहीता सती सा अदिकुणोदापदिश्यते तस्मात्प्रप्यस्मदीय
भ्यो बुद्धिभ्यः परत्वापपत्तेः एतस्मिन्नुपक्षे परमात्मविषये तेन उपरेण प्रकृष्टग्रहणान्तरधिन आत्मनोपद्रागोदृष्टत्वं परमा
द्यतः परमात्मविज्ञानात्मनोर्भेदाभावात् तदेव शरीरमवैक्यपरिशिष्यते इतराणीदियादीनि प्रकृतान्येव परमप
ददिदर्शयिषया समच्चर्मन्यरिशिष्यमाणे नैवातेनाव्यक्तपात्रेन परिशिष्यमाणे प्रकृतेशरीरदर्शयतोतिगम्यते ॥

अथः तात्कालिक निश्चयः कौन्तिशक्तिः नियमनशक्तिः त्रैकाल्यनिश्चयः संविदभिद्योतिकाचिदुपास्तातोतसर्वायथादिणी
समष्टिवृद्धिरित्यर्थः दिग्गणगर्भस्येयवृद्धिरस्तीत्यत्र अतिमाह यदिति नन्वप्रकृततासाकथमुच्यते तदुक्तौचप्रधानेन किम
पराहमित्यत आह साचेति दिग्वृत्त्यवपूर्ववृद्धिवृद्धिभेदेनोक्तात्रततोभेदेन परत्वमुच्यते इत्यर्थः नदिरयराधिनोह
परिशिष्टेणातोनेत्याह एतस्मिन्निति अतोराधपवपरिशिष्टइत्याह तदेवमिति तेषुपूर्वोक्तेषुषडपदार्थेष्वित्यर्थः परि
शेषस्यफलमाह इत्युपाणीति वेदोपमेवेतिशेषः दर्शयन्तिचेतिसूत्रभाषणव्याख्यातः ॥

सा
भा
१५

शंकोत्तरमेनसंज्ञयाचष्टे उक्तमेतदित्यादिना कार्यकारणयोरेकत्वस्य प्रकृतिवाचकाद्युक्तशब्देन विकारोत्पत्त्यर्थः गोभिरगो
विकारैः ययोभिः मत्सरमोमं श्रीणीतमिच्छितं कुर्यादिति यावत् श्रीमृषाकेरुति या तोर्लेदिमध्यमपुरुषवत्त्वचनमेतत् अथक्ता
त्मकार्यस्याव्यक्तशब्दयोग्यत्वे मानमाह अतिशयति तर्हि प्रागवस्थायां भिन्नं जगदव्याकृतमासीदुक्तित्वार्थः वीजरूपशक्तिः सत्का
रस्तदवस्थामपसिद्धातशंकोत्तरमेनसंज्ञयाचष्टे अत्रादत्तादिना तर्हि तदेवं सति सूक्ष्मशक्तिप्रागवस्थाभ्युपगमे सति ईश्वरेक

702

परि१ सूक्ष्मत्वतर्हत्वात् उक्तमेतत्प्रकरणां शेषाभांशरीरसंज्ञाशब्देन प्रधानमिति इदमिदानीमाशङ्कानेकथ
मव्यक्तशब्दाद्वत्त्वात् शरीरस्यावतास्थूलत्वात्सृष्टतदभिदेशरीरेव्यक्तशब्दादेमस्य सृष्टवचनस्त्वव्यक्तशब्द इति
तउत्तरमुच्यते सूक्ष्मेति हकारणात्सनाशरीरेविवक्ष्यते सूक्ष्मस्याव्यक्तशब्दाद्वत्त्वात् यद्यपि स्थूलमिदं
शरीरेन स्वयमव्यक्तशब्दमर्हति तथापि तस्य त्वावभक्तं भूतसूक्ष्ममव्यक्तशब्दमर्हति प्रकृतिशब्दश्च विकारे
ष्टः यथा गोभिः श्रीणीतमत्सरमिति श्रुतिश्च तदेतदव्याकृतमासीदिति इदमेव व्याकृतनामरूपवि
भिन्नं जगत्प्रागवस्थायां परित्यक्तव्याकृतनामरूपं वीजशक्त्यवस्थमव्यक्तशब्दयोग्यदर्शयति तदधीन
त्वादर्थवत् १ अत्रादयदि जगदिदमनभिव्यक्तनामरूपं वीजात्मकं प्रागवस्थमव्यक्तशब्दादेमभ्युपग
मेत तदात्मना च शरीरस्याप्यव्यक्तशब्दाद्वत्त्वं प्रतिज्ञायते सप्रवर्तहि प्रधानकारणावादपेवे सत्तापद्ये
त अस्मैव जगतः प्रागवस्थायां प्रधानत्वेनाभ्युपगमादित्यत्रोच्यते यदि च वयं सत्तेजोकांचित्प्रागवस्थाता
त्कारणात्तेनाभ्युपगमेमप्रसेजेम तदा प्रधानकारणावाटपरमेष्ठराधीना त्वियमस्माभिः प्रागवस्थाजग
सा२ ताभ्युपगम्यते न स्वतेजांचावस्थाभ्युपगतव्याअर्थवती हि सानदितया विना परमेष्ठरस्य सृष्टत्वे सिध्य
ति शक्तिरदितस्य प्रवृत्त्यनुपपत्तेः मुक्तानां च पुनरनुत्पत्तिः विद्यया तस्या वीजशक्तेरुद्भाते अविद्यात्मिका
ल्लितानन्निद्यमेतंगीकारात्तापसिद्धोतइत्याह अत्रोच्यतइत्यादिना कृतस्य नम्राः सृष्टत्वे सिध्यर्थमविद्यास्वीकार्येत्तत्त्वे
धमक्तिव्यवस्थार्थमपि स्वास्वीकार्येत्ताह मुक्तानामिति यत्राशान्मुक्तिः सास्वीकार्यतां विनैव सृष्टे मुक्तानां पुनर्व्या
पतिरित्यर्थः तस्याः परकल्पितसत्यसत्तत्रप्रधानाद्वैलक्षण्यमाह अविद्यात्तादिना मायामयी प्रसिद्धमायोयमितात्मके

परि१ सूक्ष्मत्वतर्हत्वात् उक्तमेतत्प्रकरणां शेषाभांशरीरसंज्ञाशब्देन प्रधानमिति इदमिदानीमाशङ्कानेकथ
मव्यक्तशब्दाद्वत्त्वात् शरीरस्यावतास्थूलत्वात्सृष्टतदभिदेशरीरेव्यक्तशब्दादेमस्य सृष्टवचनस्त्वव्यक्तशब्द इति
तउत्तरमुच्यते सूक्ष्मेति हकारणात्सनाशरीरेविवक्ष्यते सूक्ष्मस्याव्यक्तशब्दाद्वत्त्वात् यद्यपि स्थूलमिदं
शरीरेन स्वयमव्यक्तशब्दमर्हति तथापि तस्य त्वावभक्तं भूतसूक्ष्ममव्यक्तशब्दमर्हति प्रकृतिशब्दश्च विकारे
ष्टः यथा गोभिः श्रीणीतमत्सरमिति श्रुतिश्च तदेतदव्याकृतमासीदिति इदमेव व्याकृतनामरूपवि
भिन्नं जगत्प्रागवस्थायां परित्यक्तव्याकृतनामरूपं वीजशक्त्यवस्थमव्यक्तशब्दयोग्यदर्शयति तदधीन
त्वादर्थवत् १ अत्रादयदि जगदिदमनभिव्यक्तनामरूपं वीजात्मकं प्रागवस्थमव्यक्तशब्दादेमभ्युपग
मेत तदात्मना च शरीरस्याप्यव्यक्तशब्दाद्वत्त्वं प्रतिज्ञायते सप्रवर्तहि प्रधानकारणावादपेवे सत्तापद्ये
त अस्मैव जगतः प्रागवस्थायां प्रधानत्वेनाभ्युपगमादित्यत्रोच्यते यदि च वयं सत्तेजोकांचित्प्रागवस्थाता
त्कारणात्तेनाभ्युपगमेमप्रसेजेम तदा प्रधानकारणावाटपरमेष्ठराधीना त्वियमस्माभिः प्रागवस्थाजग
सा२ ताभ्युपगम्यते न स्वतेजांचावस्थाभ्युपगतव्याअर्थवती हि सानदितया विना परमेष्ठरस्य सृष्टत्वे सिध्य
ति शक्तिरदितस्य प्रवृत्त्यनुपपत्तेः मुक्तानां च पुनरनुत्पत्तिः विद्यया तस्या वीजशक्तेरुद्भाते अविद्यात्मिका

मायाविनोमायावत्परतंत्र्यः

१५

किंच ब्रह्मात्मैकत्वपरं ग्रंथे भेदवादिनां प्रथानस्यावकाशो नास्तीत्याह शरीरेत्यादिना भोगो वेदनाकारकं ग्रंथस्यैकतात्पर्यं

शरीरेन्द्रियमनोबुद्धिविषयवेदनासंयुक्तस्याविद्यावतोभोक्तृशरीरादीनां रथादिरूपकत्वनया संसार-
मोक्षगतिनिरूपणो न प्रथमगत्या ब्रह्मावगतिरिदं विवक्षिता तस्याच्चेष्ट सर्वेषु भूतेषु गतिरित्यात्मनः प्रकाशते
प्रत्येतत्त्वस्यावयवसूक्ष्मासूक्ष्मदर्शिनिरिति वैश्वरूपपरमस्य पदस्य डुरवगमत्त्वमुक्तात् तदवगमाद्ययोगा-
दर्शयति यत्ने ह्यस्य न सीमास्तद्यत्ने ज्ञानं तन्निष्ठा न मात्मनि मदति नियत्ने न च ज्ञेयं तत्रा ॥ ४ ॥
स्मर्तुं निषेधकं भवति वाचं मनसि संयत्नेन वागदिव्येन्द्रियवायारसस्पर्शमनोमात्रेण वति
हेतुमनोपि विषयविकल्पाभिमुखि विविक्ष्य देवदर्शनेन ज्ञानशब्देनाया बुद्ध्यावयवसंयुक्तत्वा-
वायां पारयेत् तामपि बुद्धिर्मदत्तात्मनि भोक्तृशरीरादीनां बुद्ध्यावयवसूक्ष्मतायादनेन नित्यत्वेन ह्यस्य चान्ता-
नेन गत आत्मनि प्रकरणवर्तिपरस्मिन् रुचे परस्मात्काव्यां प्रविष्टा पथेदिति तदेवं पूर्वापरालोचना-
यां नास्त्यत्र परपरिकल्पितस्याप्रथानस्यावकाशः ॥

गठत्वहेतुत्वज्ञानहेतुयोगविषयो लिंगनिर्देशो नास्तीत्याह तस्याच्चेष्टेत्यादिना अग्रांशमाश्रित्य परियाकृता वागित्यत्र दि-
तीयांशोपलब्धदसं-मनसीति दैर्घ्यं च ॥

शा.
भा.
१६

अव्यक्तपदवत्त्वात् न तस्यि स्थूलत्वेन्यस्य तस्मिन् शोकात् आस्मात्तस्येति एकार्थबोधकानां शास्त्रानामिद्य आकांक्षायैकस्यावृद्धावाक
 दत्वमेकवाक्यतातवमनेतस्या प्रभावात्कुतोर्थबोध इति समाधत्ते नेति तां विनाप्यर्थपीः किं न स्यादित्यत आह नदीति शरीरस्य
 हेनरूढ्या स्थूलप्रकृतेन स्यात्तत्र प्रकृतस्य भूतस्य स्थानाव्यक्तपदेन प्रदणमनायां स्यादित्यर्थः अस्मैकवाक्यतेत्यत आह न चे
 ति ततः किं तत्राह तत्रेति आकांक्षया वाक्यैकवाक्यत्वे सति प्रकृतेशरीरद्वयमव्यक्तपदेन प्राप्य आकांक्षायास्तत्पत्वादिति
 भावः अनात्मनि श्रुत्यः श्रुतिः तदर्थसूत्रमेवाकांक्षितं शास्त्रस्य सूत्रत्वेनात्माभेदेन गृह्यते तस्य डः शोधत्वात् सूत्रस्य दृष्टौ तेषां

आस्मात्तस्यां प्रतिपत्ते प्रभावात्तस्मात्तस्यैव च योजनं आस्मात्तं चाव्यक्तपदं सूत्रमेव प्रतिपादयितुं शक्नोति नेतरव्यक्तत्वा
 तस्येति चेन्न एकवाक्यतापीनत्वादर्थप्रतिपत्तेः नदीमेषूवात्तरै आस्मात्त एकवाक्यतामनापद्यकंचिदर्थं प्रतिपादय
 तः प्रकृतदानाप्रकृतप्रक्रियाप्रसंगत न च कांक्षामेतरैरेकवाक्यताप्रतिपत्तिरस्ति तत्राविशिष्टायां शरीरद्वयस्य प्राप्य
 ताकांक्षायां यथाकांक्षे संबंधेन भूपागम्यमाने एकवाक्यतेव बाधिता भवति कुत आस्मात्तार्थस्य प्रतीतिः न चैव
 मंतव्यं दुःशोधनत्वात् सूत्रस्यैव शरीरस्य दण्डाण्यलस्य तदृष्टी भूततया सुशोधत्वात् दण्डाण्यतो नैवेदशोधमिति
 नेकस्य चिद्विदस्य तेन दण्डशोधनविधयि किंचिदाख्यातमस्ति अनेतरनिर्दिष्टत्वात् किंतु द्विसोः परमं पदमितीदमि
 दविवक्ष्यते तथा हि इदमस्यात्परमित्युक्ता प्रकृत्यात्र परं किंचिदित्याह सर्वथापित्या नमानिक निराकरणोपपत्तेस्तथा
 नामास्तननः किंचिच्छ्रियते ज्ञेयत्वावचनाच्च ४ ज्ञेयत्वेन च सांख्यैः प्रधानं स्मर्यते गणायुक्त्यांतरत्तानां कैवल्यमि
 ति वदति नदिगणारूपमज्ञात्वागोम्यः पुरुषस्यांतरं शक्यत्वावमिति ॥

दिनालश्रुतादिवदनात्मनो वैराग्ययोः सुलभत्वादिति शक्यते न चेति इष्टावर्धमानात् एषमिस्तस्य भावस्ततयेत्यर्थः ह
 षयति यत इति वैराग्याय श्रुतिरत्र न विवक्षिता विधभावात् किंतु वैस्मवं पदे विवक्षितमिति तदशानार्थं प्रकृतस्थूलमे
 वाव्यक्तपदेन प्राप्यमिति भावः किंच सूत्रस्य लिङ्गातः पाति न श्रियादिप्रदणानेव प्रदणान्न प्रथगाव्यक्तशरीरपदभां य
 हरभूपेय इत्याह संबंधेति स्थूलस्य सूत्रस्य वाग्रहेपीत्यर्थः नथानामेति सूत्रमेवाव्यक्तमस्तित्यर्थः अत्राव्यक्ते प्रथा
 ननेत्यत्र देवैतरार्थं सूत्रं ज्ञेयत्वेति सत्त्वादिगणारूपात्पथानां पुरुषस्यांतरं भेदस्तत्त्वानादित्यर्थः नदिशक्यमिति च वद

दिः प्रधानं ज्ञेयत्वेन सत्यं इति संबन्धः

१६

प्रव्यक्तप्रभवत्वान्महत्तोयदोहेरणगभीवुद्धिर्मलत्रयपदानुजीवोमहांस्तदाप्यवकाधीनत्वाजीवभावस्यमहतःपरमव्यक्तमित्युक्तः

जीवभेदोपाधित्वेनापिसाक्षीकार्यत्वाद महासुषुप्तिरिति कृष्याद्युपाधिभेदाजीववर्तिवर्तित्वविद्यायां प्रतिमपार तदेतदिति
 ति आकाशहेतुत्वादाकाशः तन्नेविनाताभावादत्तरंविचित्रकारित्वान्मायेतिभेदरदानीमविद्यायात्रसाभेदान्माताभ्यामनिवा
 चत्वेनाचक्षुशब्दादन्वमाह अयमेति तस्यमहतः परत्वंकथमित्यत आह तदिदमिति यदबुद्धिर्महान्दानदेनत्वात्परत्वं
 मित्यन्यः प्रतिविंबोपाधिपरतंत्रत्वाङ्गुथेः प्रतिविंबात्परत्वमाह यदात्विति हेतुंस्पृष्टयति अविद्यति अव्यक्तस्यपरत्वे

महासुषुप्तिर्यस्यास्वरूपप्रतिबोधरहिताः शेरतेसंसारिणेनोवाः तदेतदव्यक्तं कचिदाकाशशब्दनिदिष्टं एतस्मिन्
 एतत्त्वसरेणपिकाशश्रोतश्चोतयेतिश्रुतेः कचिदक्षरशब्देतिमत्तरात्परतः परश्चिद्व्युत्पत्तेः कचिन्मायेतिस्त्वितिमा
 यांत्वप्रकृतिविद्यान्मायिनेतुमदेसुरमितिमेतद्वर्णन अव्यक्तदिसामायातत्वा मत्तनिरूपणायां क त्वानदिदमह ३
 तः परमव्यक्तमित्युक्तंमविद्याय वक्तुमविद्यावत्त्वेनेवजीवस्यसर्वः समारब्धवदारः संततोन्ववर्तते तत्वाव्यक्तगतमद
 तः परत्वमभेदोपचारात्तद्विकारे शरीरेपरिकल्पते सत्यपिशरीरवदिद्विधादीनांतद्विकारत्वाविशेषशरीरस्येवा
 भेदोपचारादव्यक्तशब्देनग्रहणमिद्विधादीनांस्वशब्देरेवग्रहीतत्वात्परिणिष्ठत्वाच्चशरीरस्य अन्यतवापीयेतिदि
 विधेदिशरीरंस्थूलसूक्ष्मचक्षुस्त्वयदिदमुपलभ्यतेसूक्ष्मयुतत्रयवत्त्वे तदेतदप्रतिपत्तौरेद्वितिसपरिषक्तः प्रश्नानि
 रूपरणाध्यामिति नचोभयमपिशरीरमविशेषात्तत्रयत्वेनकीर्तितमिदत्तसूक्ष्मव्यक्तशब्देनपरिदद्युते सूक्ष्म
 स्याव्यक्तशब्दादन्वाव तदधीनत्वाच्चतयमोक्षवधारणजीवात्तस्यपरत्वे यथाकीयोनितादिद्विधायापारस्यद्विधेभ्यः
 परत्वमर्थानामिति तैत्वेतदव्यक्तमविशेषेणशरीरद्वयस्यपूर्वत्रयत्वे नसंकीर्तित्वान्माजयोः प्रकृतत्वपरि त
 शिष्टत्वयोः कथंसूक्ष्ममेवशरीरमिदंरयतेनपुनस्तूलमपीति ॥

पिशरीरस्यकिंजातंतदाह तचेति नन्दिद्रियादीनामप्यव्यक्ताभेदादव्यक्तत्वंपरत्वेचकिमिति नोच्यते तत्राह सत्यपी
 ति सूत्रद्वयस्यवृत्तिकृष्याख्यानमुत्थापयति अन्येतिनि पंचौकृतभूतानांसत्त्वावयवाः स्थूलदेहारेभकाः सूक्ष्मशरीरं
 प्रतिजीवलिङ्गास्याप्रयत्नेननियतमस्तीतिवत्त्वाते देहान्तरप्रप्तौतेनपुनोक्तोपपत्तिरुक्तमित्यर्थः कथंतस्यमहतो जी
 वात्परत्वमित्याशयवद्वितीयसूत्रेयाचष्टे तदधीनत्वाचेति आर्थवदितिसूत्रेयाहृष्टांतमाह यथेति तस्याख्यानं हययति

भा
भा
१९

अन्वयाने विद्यमानेति तामेव विद्येति अविवेकेनेत्यर्थः विषययोः भोगः गुणभिजात्मात्परित्यक्तोऽसिद्धोऽतएव एवं प्रस-
ति सायादावपि साधारणान्मत्रादिशेयार्थप्रदानयुक्तः विशेषप्रदत्तोः प्रकरणदेरभावादिदितेनेत्याद्यादृष्टान्त्याचष्टे च
मसवदिति सर्वत्रोतिगिरिगदादावपि उत्तरसत्रावर्त्यशेकासाद तत्रति चतविधस्येति जरायुजोऽजस्येदजोऽजिनरु-

206

तामेव विद्यया तत्तेनोपगम्य सखीदुःखीमुखेदमित्यविवेकतया संसरति अयः पुनः अजः पुरुषः उभयविवेकता
नो विरतो जहाति एनां प्रकृतिभूतभागां कृतभागापवागोपरित्यजति सुखतरत्यर्थः तस्या कृतिमूलैव प्रधानादिक
त्यनाकापिलानामिति एवं प्राप्तममः नानेन मंत्रेण प्राप्तिमन्त्रसंभवात् दृष्टशक्यमाश्रिते नययमत्रः सातत्र
एकेचिदपि वादे समर्थयितुं न स्यादने सर्वत्रापि यथा कथावित्कल्पनयानात् आदिसंपादनोपेयतेः सात्त्व्यादयेव
भिप्रेत इति विशेषावधारणकारणभावात् चमसवत् यथा यवो गविलश्चमस ऊर्ध्वप्रदस्मिन्मंत्रे स्तान्त्रेण य
नामासौ चमसो भियेतरति न शक्यते निरूपयितुं सर्वत्रापि यथा कथंचिद्वीगविलत्वादिकल्पनोपपत्तेः एवमिदानीं विशेष
योजामेका मित्यस्य मंत्रस्य नास्ति मंत्रप्रधानमेवाजा भियेते निशकते नियते तत्रति देतुं किरणयवो गविलश्च
मस ऊर्ध्वप्रद इति वाक्यशेषात् चमसविशेषप्रतिपत्तिर्भवति इदं पुनः केयमजा प्रतिपत्तयेत्यत्र चमः स्यातिरूप
क्रमात्तथाप्यधीयतपके ९ परमेश्वरादुत्पत्त्यातिः प्रसूताते जावत्तलक्षणचतुर्विधस्य भूतग्रामस्य प्रकृति
भूतेयमजा प्रतिपत्तया त्वशेषावधारणार्थः भूतत्रयलक्षणवेयमजा विज्ञेयानमगात्रयलक्षण कस्मात्तथा
ये केणापि न सौजावज्ञानोपरमेश्वरादुत्पत्तिमास्माद्यतेषामेव रोहितादिरूपसामनेति यदग्रे रोहितरूपेते जस
सूदयं यत्कृतदयो यत्कृतदत्रस्यति तामेव देते जावत्तलक्षणप्रसन्नियते एहितादिशब्दसामान्यात् रोहितासे
नाचशब्दानोरूपविशेषप्रसन्नत्वात् भाक्त्या च प्रणविषयत्वात् सदिधेन च सदिधेन निगमते न्यायमगते

पश्येत्यर्थः स्यसत्काकुतो न प्राप्तेति शक्यते कस्यादिति अनेः अनेतरादर्थप्रदोयुक्तः साक्षात्मान्तरापेक्षत्वाच्चेत्या
ह तथाहीति शास्त्रिनस्तेषां किंचलादितादिशब्दैरपि द्रव्यलक्षणान्यायाप्रवधानात् ननु रजनीयत्वादिगु
णव्यवहितासत्तादिगुणलक्षणानां रोहितादीनांचेति ननु शास्त्रांतराणां शास्त्रांतरस्य मंत्रस्य निमित्तः कथमित्त
तत्राह असेदिधेनेति सर्वशास्त्राप्रत्ययन्यायादिति भावः

१५

अत्राजापदं विषयः तत्किं प्रधानं परमाया परवेति रुढार्था संभवा संशये पूर्वत्रा व्यक्तशब्दमात्रेण प्रधानस्याप्रत्यभिज्ञायां म॥ ६॥ टी०

कल्पितभेदात्प्रभेदकल्पनेत्याह नतश्चेति परमात्मनः सकाशात्तथा न स वैषम्यमनात्मत्वेन तदतीतवरांतर्भावायोगादि
तिभावः प्रोक्तो वाक्तव्यो न सोऽप्यासाधारणतत्त्वोचरः वैदिकशब्दत्वात्तद्वद्वद्वदित्याह मदद्वयेति सत्त्वाचष्टे यथात्पादिना
न चोक्तशब्दशब्दे वाभिचारशब्दात्तद्वद्वद्वदित्याह मदद्वयेति सत्त्वाचष्टे यथात्पादिना
मात्रे सत्वप्रधानप्रकृतेराद्यपरिणामेति विद्वत्कृतं कृतं दाविन्यर्थः आत्मा यदा निष्कामप्रयोगान्मत्वा न शोचति तमसः परस्ता
दित्यादिना शोकात्पतमः पारत्वादिभ्यश्च मदद्वद्वद्वदित्याह मदद्वयेति सत्त्वाचष्टे यथात्पादिना
चमसवद्विशेषात् सत्त्वविभक्त्यात्वादिनिर्गुणतादत्तापदात्तमभिज्ञासीति प्रत्युदाहरणेन शब्दे पदाद्यति पुनरपीति पत्ते शब्दे

ततश्च युक्तप्रितीवपरमात्मकत्वात्प्रधानकत्वात्प्रधानत्ववश एवेन प्रज्ञानप्रतिवचनमिति वैषम्यं महदहं
यथामदहं हं सातेः सतामात्रेपि यथामनेशु को नतमेव वैदिकेपि प्रयोगाभिधाने बुद्ध्यात्मा महात्माः महात वि
भूमात्मानं वेदादमेतं पुरुषं महानमिति वसादे आत्मा शब्दप्रयोगादिभ्यो देतभ्यः तच्चाकारशब्दोपिन वैदिके प्रयो
गे प्रधानमभिधानमर्हति अतश्च नास्मान्मात्रिकस्य शब्दवत्त्वं च समवदविशेषात् पुनरपि प्रधानवाच्यशब्दे
प्रधानस्य सिद्धमित्याह कस्यान्त्रवर्णनं अनामकारोदितशुक्लकृष्णशब्दः प्रजाः रजमानासरूपाः अजोऽर्कः
जयमासेन ज्योतिर्जदत्येनो भुक्तभोग्यमजो न्वरति अत्रोदितमंत्रोदितशुक्लकृष्णशब्दः रजः सत्यतमोऽस्यभिधीयते
रोदितं रजः रजनात्मकत्वात् शुक्लं सत्यं प्रकाशनात्मकत्वात् कृष्णतः आर्वणत्मा कत्वात् तेषां प्राप्ता वस्यावयव
मैवैपदिशते रोदितशुक्लकृष्णमिति नजोऽर्कः प्रजास्यान्मूलशक्तित्वित्यभ्युपगमात् नन्वजाशब्दः जगतां रूढः
वाचसातुरुदिरिदनाश्रयितशक्तविद्याप्रकरणत्वाच्च द्वैः प्रजास्तैराण्यन्वितान्नयनितो प्रकृतिमजः एकः

[illegible]

यम
मा
११ सा४

सत्यवचसि दृश्यते अहं भेदस्त्विति कल्पनोपदेशो रक्षोनेत्याचष्टे मयिस्त्विति नचयोगस्य सत्त्वृत्तित्वात्तेन प्रधानग्रहोऽस्य स्यादिति वा
च्य रुदाद्यानपक्षयोगात्तदाश्रितमात्रात्तदाणायावलीयास्तु नृणां हतोदिरुदिराश्रिता भवतितथाचरोदितारिशासु समभिधारा
रानुमदीतयारुह्याश्रितयभावात्तथाश्रितयोमेवाधित्वावातर प्रकृतिरजाशब्देन प्राप्ता यथा मध्यादिशब्देः प्रसिद्धमध्याश्रित
गुणाल्लक्षणा आदित्योपदेशोऽप्येतत्तदुत तस्यादशब्दप्रधानमिति सिद्धं न संख्योपसंग्रहादिति पंचजनशब्दः सांख्यतत्त्वपरस्य
ग्रहो वेति योगारूढे रनिश्चयात्संशयेपयानन्विद्याधिकारे ज्ञायां तात्पर्याभावादजापदे रूढित्वात्तथापंचमनुष्येषु तास
याभावाज्जनशब्देन रूढिमत्कृतत्वा निग्राह्यासीति दृष्टान्तसंगतिसंख्येयं ननु सदाहमश्वं पश्यति

भेदस्त्विति मितः मिथ्यात्वात्तद्वस्तुतो न पारमार्थिकः एको देवः सर्वभूतेश्च गुरुः सर्वव्यापी सर्वभूतो तस्मात्स्यदित्यु
तिभ्यः मध्यादिवत् यथादित्यस्यामधुनो मधुत्वे वाच्येनापि नृत्वे तुल्योकादीनां चानयोनामश्रितत्वमित्येवंजातीय
कंकल्पते एवमिदमनजायाश्रितत्वे कल्प्यतरत्यर्थः तस्यादविशेषस्तेनोवज्जज्ञाशब्दप्रयोगस्य न संख्योपसंग्रहः
विना नाभावादतिरकाच ॥ एवं परिहृतेष्वनामत्रे पुनरन्यस्यान्तर्जात्याः प्रत्यवतिष्ठुमिन्नेचपंचजनायाकाश
अप्रतिष्ठितः तमेव मनश्चात्मानं विद्वान्स्मरन्तोऽस्तमित्यस्मिन्नेचपंचजनाश्रित्येव संख्यविषया अपरापंचसंख्य
श्रूयते पंचशब्दद्वयदर्शनात्तत्पंचपंचकाः पंचविंशतिः संघटते तथापंचविंशतिसंख्यायापावतः संख्यायाकोऽप्ये
तावेत्येव च तत्त्वानि संख्यैः संख्यायैते मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सम्योदशकश्च विकारो न प्र
कृतिर्न विकृतः पुरुषश्चेति तथा अतिमिह्यापंचविंशतिसंख्यायातवास्त्विति प्रसिद्धानां पंचविंशतितत्त्वानामुपसंग्रहः
त्यामपुनः प्रकृतिमत्त्वमेव प्रधानादीनां ततो ब्रह्मः न संख्योपसंग्रहादपि प्रधानादीनां प्रकृतिमत्त्वप्रत्याशङ्कतेत्यास्मात्त्रि

एवमित्यादिना कल्पे सर्वव्यापणवत्त्वः अत्रात्रमनासिवाकाशेषाः पंचजनवाः पंचतत्र चत्वारः सूत्रे विरा
दृतयोः कारणमव्याकृताकाशश्च यस्मिन्नाप्यस्त्वमेवात्मानमस्तेन त्रयस्य तेन स्यान्मननं हि दानं हंमस्तेन स्मृतिमत्र दर्श
वचने नन्वसुपंचत्वविशिष्टेषु पंचजनेषु पुनः पंचत्वान्यथापंचविंशतिसंख्याप्रतीतिस्तत्वावता कथं सांख्यायुधर्म्याकांक्षायां
तत्त्वानि ग्राह्याणीत्याह तथेति जगतो मूलभूता प्रकृतिस्त्रिगुणान्मकप्रधानमनादित्वादविकृतिः कस्यचित्काप्येन भव
तीत्यर्थः मददं देकारपंचतन्मात्राणि प्रकृतयश्च तत्र मद्रूपानां सविकृतिरदंकारस्य प्रकृतिरदंकारस्तु भ्रमः पंचतन्मा
त्राणां शाश्वतीनां प्रकृतिः सात्विकपकादशेदियाणां पंचतन्मात्राण्यपचानां स्थूलभूतानामाकाशादीनां प्रकृतयः प
चस्थानामेकादशेदियाणि चेति वा उपसंख्याको गालो विकारपंचप्रकृतिः तत्त्वानि रोपादनत्वाभावात्सुखस्तदोसीन
तिसंख्यकारिकाद्यैः संख्याया तत्त्वानामुपसंग्रहात्तद्वचनमिति प्राप्तिरिति सिद्धान्तयतिनेति ॥

207

न २६०

208

व्याभिरैकः सिद्ध
कुरुः प्रसन्नयेन

॥ कथं न नष्टं दृष्टये च हिंसा कृतत्वेष्टात्मां न भूतो न वा

दुर्गोपदेश्यमादृश्यात्तरेति

७५

३५

नानानामिष्टमित्यत आह नैवामिति चेत्तु पंचसु साधारण्येन संचकाद्यानस्य पर्मस्याभावे उनानात्वे विवक्षितमित्यर्थः यद्यपि ता
नकर्मैरिष्टेषु दशसु तानकराणां त्वेकमिष्टकरणत्वे च पंचकद्वयेति पंचतन्मात्रास्य च सुस्थूलप्रकृतित्वे च तथापि यस्मिन्नितात्मनश्चाका
शस्य च प्रथमत्वेः सत्त्वरत्नस्य मोसदददकारः पंचकृतेषां मनश्चत्वारिभूतानि पंचास्मिन् च कद्वये मियो नृते नरपञ्चकचास्यतप
मानात्तोमर्थः साक्षिन्मन्त्राद येनेति धर्मोत्तमर्थः तदेव स्मृत्यति नदीति महासंख्यायामचोतरसंख्याः प्रविशति यथा ह्यवस्थितो स
प्रसमर्षयोश्च समवस्थिति समदशोत्तमश्चित्तादिकमादाय दित्वादयः प्रविशति नान्ये त्वयः पंचशब्दद्वयेन स्ववाचान्मन्त्रमात्राद्वारेण
तथाप्यामहासंख्ये चलात्पतर्तसदृशान् शो कते अथेति सात्त्विकस्य वसमाभावात्वाज्ञादाणान्युक्तेति परिहृति तदपि नेति पंचत
नशब्दोपरसमाससंज्ञा कृत्यपचविंशतिसंख्या प्रतीति निरस्ता संप्रति समासनिष्पन्नान्नतत्पत्तीति रित्याद परम्येति समासे हेतुमाह भा
षिकेनेति अयमर्थः अस्मिन्मन्त्रे प्रथमः पंचशब्दश्चाप्युदात्तः द्वितीयः सर्वानुदात्तः तत्र शब्दश्चातिदात्तः तत्र च न द्वितीयपंचशब्दजन
शब्दयोः समासविनां तन्मात्राकारस्योदात्तत्वे पूर्वेषामनुदात्तत्वे च चटते समासस्येति सूत्रेण समासस्यातोदात्तत्वविधानादेव दा

नैवोपचयः पंचशब्दः साधारण्ये पर्मोक्ति येन पंचविंशतरेतत्तत्त्वैर्याः पंचपंचसंख्यानि विवेकनिवेधनसंनरेणानानाभ
नेषु द्वित्वादिकाः सात्त्विकानि विधाने कथं वेत्तुं च विंशतिसंख्ये येषमवयवद्वारेणान्तस्यते यथापंचसप्रचवर्षाणि नववर्षशत
कनुरिति द्वादशवाधिकीमनाहृष्टं कथयेति न हृदिति तदपि नोपपद्यते अयमेव अस्मिन्मन्त्रे दायाय ज्ञानाय धर्मायान्तर पर
आत्रपंचशब्दो जनशब्देन समस्तः पंचतन्मात्रेति भाषिकेण स्वरेणैकपदत्वे निश्चयात्

नेपदमेकवर्गमिति च सूत्रेण यस्मिन्मन्त्रे उदात्तः स्वरितो वा यस्याविधीयते तमेकवर्गमिति च यथापि तद्विधानाच्च
एवंमोत्रिकातोदात्तस्वरेणैकपदत्वे निश्चयः भाषिकात्वेन शतपथब्राह्मणस्य च पाथकांशे स्वरितो न दातो वेति सूत्रेण यो मन्त्रद
शायामनुदात्तः स्वरितो वा सत्राद्याणां दशायामनुदात्तो भवतीति प्रपवादः आश्रितः तथाचात्मादाका रात्वेवामनुदात्तानामनुदा
तत्वे ब्राह्मणवस्यांशो मन्त्रात्तमनुदात्तमनेत्यमिति सूत्रेण मन्त्रदशायामनुदात्तस्य स्वरितस्य तयोचा यमाणा नुदात्तत्वे
विहितं तथाचात्रनकारादपरितत्तयाकारश्चाकारश्चिन्त्यनेन द्विधुतयापह्यमानो नुदात्तत्वमवयवमनुदात्तस्वरः भाषिकः तत्रा
स्यास्वरेणैकपदत्वे निश्चीयत इति प्रकटार्थकारेण स्वरकारकप्रसिद्धे तोदात्तस्वरे भाषिक इति कारणात् कल्पनरुकारैर्हृदितं प्रेता
नुदात्तैरि समास्यानारः पंचजनशब्दमधीयत इति वादकप्रसिद्धिरेति तथाच पंचजनशब्दोऽस्मिन्मन्त्रे कानोदात्तः स्वरः यस्मि
न्पंचपंचजनशब्दो नुदात्तो ब्राह्मणस्वर इति विभागः उभयथाप्येकपदत्वात् समाससिद्धिरिति ॥

शग
मा
॥२

ननतायेतरित्तनाः मददादयः जनकत्वात्जनः प्रधानमिति यो गसंभवे किमिति रुदिमाश्चित्तलदात्मवृत्तप्रयासरत आह समा
मेति यथाशुक्राणि शस्त्राणां समुदायस्य हृदोरुदिरवेषेण जनशब्दस्य रुदिरवनावयवशात्तात्त्विकोपगारत्वर्थः पूर्वकालिकप्रये
गाभावात्तद्विरुद्धातिपत्ति कथमिति स्पः प्रमासः पंचजनशब्दस्य सरकोशादौ प्रयोगोत्पन्नवतदभावमंगीकृत्याप्याह शकोति ज
नसेवेपाचेति पूर्वभाष्येन रेखुपंचजनशब्दस्य रुदिमाश्चित्तप्रमाणदिसुलक्षणोक्ता इह तत्रोदित्वादेन प्राणादिसुखविरुद्धातरतिमे
तद्यमेव हीनं विवृणोति प्रसिद्ध्यादिना उद्दिष्टायेतत्पञ्चकाम इत्यत्रोदित्वादेविधेयगणधर्ककर्मनामपेयवेति मेशयेत्
निजराद्विदित्वात्प्रसिद्ध्यागनामत्वे प्रसिद्धिविरोधाज्ज्ञेति होमे गणविधिरिति प्राप्ते सिद्धं तः यज्ञतयागेनेष्टं भावयदित्यर्थः
ततश्चादिदेवप्रसिद्ध्यात्ततोयमस्यागोनेत्यनेन प्रसिद्ध्यर्थे केन साधनाधिकरणेन तत्रा मत्वे निश्चीयते उद्दिनति पशून्साधयती

समासवत्ताच्च समुदायस्य रूढत्वमविरुद्धकथं स नरसतिप्रथमप्रयेगोरुदिः शकाश्चित्तं शकोद्दिदादिवृदिताह प्रसि
द्वर्थसन्निधानेयप्रसिद्धार्थः शब्दः प्रयुज्यमानः समभिवादात्तद्विषयानियम्यते यद्योद्दिदायनेतपूयन्निर्नातिवेदि
करोतीति तथायमपि पंचजनशब्दः समासान्वाख्यानोदवगतसंज्ञाभावः संज्ञाकांतो वाक्यशेषसमभिवा
दनेषु प्राणादिसुवतिष्ठते कैश्चित् देवाः पितरो गोधवाः असुरा रक्षासि च ये च न नाद्यात्वातः अन्ये च त्वारा
वर्णानिषादपंचमाः परिगृहीताः क्वचिच्च यथांच जन्ययाविशेति प्रजापरः प्रयोगः पंचजनशब्दस्य दृश्यते त
परिग्रहेणोदन कश्चिद्विरोधः आचार्यस्तनपंचविशतेस्तत्त्वानामिदं प्रतीतिरस्तीत्येव परंपरा प्राणादयो वाक्ये

५०७

तिप्रसिद्धे रविरोधादप्रकृत्योति होमे गणविधियोगात्तद्विधौ चोद्दिदात्ममगवतायागेनेति मत्वर्थसंबंधलक्षणप्रमेगा
ति कर्मनामोद्दिष्टं दंतथास्त्रिनतीति प्रसिद्धार्थे दंतयोगार्थकशब्दसमभिवादात्तद्विषयानियम्यते यद्योद्दिदायनेतपूयन्निर्नातिवेदि
तिसमभिवादात्तद्विदित्वात्प्रसिद्धार्थः संस्कारयोगस्योदितविशेष इति गम्यते तथा प्रसिद्धार्थकप्राणादिशब्दसमभिवादात्त
पंचजनशब्दः प्राणाद्यर्थक इति निश्चीयत इत्यर्थः एकदेशिनामतद्वयमार कैश्चिदितादिना शूद्रा ब्राह्मणा ज्ञातो
निषादः अतोपंचजनशब्दस्यार्थांतरमाह क्वचिच्चेति पांचजन्यया प्रजया विशतीति विदतया विशा परुषरूपयद्रुपा
द्वानार्थोपाः सृष्टारति यतद्युक्तोपातिरेकेणोदाहृता यामादिति श्रुत्यन्तमारेण प्रजामात्रप्रदेपि न विरोध इत्यर्थ
सृजविरोधरताशकाह आचार्यस्त्विति अतः सोत्पन्नत्वातिरिक्तयत्किंचिस्मरतयापंचजनशब्दवाक्यायामविरोध
तिभावः

॥२

शा.
भा.
११२

अत्र न गन्ता एव अत्र ये विषयास्तः किं न स्यात् किं न वेति संशये न प्रमाणेति चेत् साक्षाद्विप्रक्रियायां विकल्पे विकारो वस्तुन सदा सदा
कारणमिच्छादिविकल्पासंभवादप्रमाणमिति प्रत्युदाहरणं न प्रवृत्तं यत्तु काले विवक्षितं प्रतिवेदोतमित्यादिना वेदोतानोस
मन्वयासाधनात् अत्राप्यसंगतिः असदादिपदानां सत्कारणसमन्वयोक्तः पादसंगतिः प्रवृत्तसंयुक्त्या सिद्धिः फले सिद्धे
तेन तत्तिष्ठिरिति विवेकः कमाकमाभ्यां सृष्टिविरोधे तावद्दृश्यति तथा हि क्वचित्प्रादिना सपरमात्मालोकानसृजते अप्रयश
रीरप्रचुरस्वर्गलोकोभः अत्रार्थः सपरमिच्छासोत्तरित्तत्वाकोमरीचयः मरोमर्त्यलोकः अत्रुद्धताः पाताललोकः आश्रयतिष्ठ
मर्थः सृष्टिविरोधमुक्ताकारणविरोधमाह तथेति असदनमिच्छातत्तामरुणसत्त्वककारणानेन कारणसदमिच्छात् एतत्तत्त्वा

प्रतिवेदोतं श्रुत्या सृष्टिरुपलभ्यते कमादिवैचित्र्यात् तथा हि क्वचिदात्मन आकाशः संभूतश्चोदिका सृष्टिरास्त्रायते काशा
क्वचित्तेज आदिका तन्तेजा सृजतेति क्वचित्प्राण आदिका सप्राणमसृजत प्राणञ्चुद्धमिति क्वचिदक्रमेव लोकानामुत्पत्ति
राम्नायते सप्राणलोकानसृजतो भोमरी चिर्मरमापरति तथा क्वचिदसत्त्वविकाससृष्टिः पद्यते असदादमग्र आसीत् तत्वे
सदजायतेति असदेवेदमग्र आसीत् तदासीत् तत्समभवदिति च क्वचिदसदादनिष्कारणो न सत्त्वविका प्रक्रियाप्रतिपत्तय
ते तदेक आदरसदेवेदमग्र आसीदित्युपक्रम्य कुतस्तु वस्तुसोपेवं स्यादिति हेवाच कथमसत् सजायतेति सदेव सो
मेदमग्र आसीदिति क्वचित्तत्त्वयुक्तैकैव व्याक्रियानगतोति गद्यते तदेदेतेषां कृतमासीत् तत्रामरूपाभ्यामेव व्या
क्रियतरति एवमनेकपा विप्रतिपत्तेः वस्तुनिच विकल्पस्यानुपपत्तेर्न वेदोतक कानां जगत्कारणवधारणा परता
न्यायास्तित्याय प्रसिद्धिभांतकारणोतरपरिग्रहो न्याय्य इति एवमनेत्रमः सत्यप्रतिवेदोतं सत्यमानेवाकाशमि
षु कमादिहारके विगानेन सप्तमुरि किंचिद्विगानमस्ति कुतः यथावद्विष्टोक्तैः यथाभूतोद्येकस्मिन्वेदोते

ये क्वां दोषवाक्यमाह असदेवेति किं न्यमेवनेत्याह तत्सदिति अवाधितं त्रयेवासीदित्यर्थः तद्वत्सत्त्वनास्थितं जगत्सृष्टि
कालसम्प्राप्तिवक्तुमभवत् प्रक्रियासृष्टिः तत्र त्रकारणैकेवाद्यास्तैषामतं प्रतिरेव दृश्यति कुत इति कुत एवं पदयो
रर्थमाह कुत इति कुत एवं पदयो रर्थमाह कथमिति स्वमत आह सदिति तदिदं जगद्विकलतदिश काले व्याकृतं कार
णत्वाकमासीत् अतीनां विरोधमुपसंहरति एवमिति किमत्र न्याय्यमित्याशंक्यमानोतरमिदं प्रधानलोक्तकत्वेदे
तानां न्याय्यमित्याह सतीति तत्र सृष्टौ विरोधमगीकृत्य सप्तमुरिविरोधपरिहरति सत्यमिति आकाशादिषु त्रसृष्टाः कारणा
न्वेविरोधो नैवास्तीति प्रतिज्ञाया हेतुमाह कुत इति

शा.
भा.
११४

फलवद्भूतवाक्यशेषत्वेन सृष्टिवाक्यानामर्थवत्त्वसंभवात्तत्त्वार्थेऽथवा काले कल्पे वा वाक्ये दापनेति स्यात् न च कल्पयितुमिति न्यायादे
कवाक्यत्वे सिद्धं अतिरिच्यतीत्याह दर्शयति चेति अंगेन कारणातिशयेन कारणवत्त्वानां चत्वे सृष्टिप्रतीनां मुक्ताकाराणां
इयन्त्वाने फलोत्तरमाह सृष्टादिति एवं निष्कल्पायामन्यायायां सृष्टात्तात्पर्याभावादिहेतुना न दोष इत्यत्र सृष्टसंमतिमाह तथा चे
ति अन्यथान्येति वीक्षा इष्ट्या अवताराय यत्र सधीजन्मने अतस्तदमथान्येति त्रयस्य निमित्तभेदः ज्ञेयेन विज्ञानमित्यर्थः ब्रह्मत्वा

न च कल्पयितुं शक्यते उपक्रमोपसंहाराभ्यां तत्र तत्र विषयेर्वाक्यैः साकमेकवाक्यतायागम्यमानत्वात् दर्शयति च सृष्ट्यादिप
पंचस्य वस्तु प्रतिपत्तयेतामत्रेन सोम्य अंगेनायोमूलमन्विच्छाद्विः सोम्य अंगेन तेनोमूलमन्विच्छते सोम्य अंगेन समालम ३२
निच्छेति सृष्टादिदृष्टान्तैश्च कार्यकारणनाभेदं विदितुं सृष्ट्यादिपंचः आद्यतरतिगम्यते तथा च संप्रदायविदो वदन्ति स्
लोदविस्फुल्लिगाद्यैः सृष्टिर्वाच्येति नान्यथाऽप्यायः सावताराय नस्ति भेदः कथंचनेति ब्रह्मप्रतिपत्तिसंबद्धं तु फले श्रूयते ब्रह्म
विद्यप्रोतिपरं तरति शक्यमात्मवित्त तमेव विदित्वा तिस्रस्तु मेतीति प्रत्यक्षावगमं चेदफलं तत्त्वमसीत्यस्य सार्थात्मत्व प्रति
पत्तौ सत्तां सार्थात्मत्वाच्चेतः यत्पुनः कारणाविषयविगने दर्शितमसृष्टा इदमग्र आसीदिति सति तद्विदितं यमत्रोच्यते स
माकर्षात् १५ असृष्टा इदमग्र आसीदिति नात्रासन्निरात्मकं कारणत्वेन आद्यते यतो मत्रेव स भवत्यसृष्टेति वेदचेदति
ब्रह्मेति चेद्देदसंतमेनेततो विदितसृष्टादापवादेनास्ति त्वल्लक्षणं ब्रह्म त्रमयादिकोशपरंपरया प्रत्यगात्मानं विधीय
सो काम पतेति तमेव प्रकृतं समाकृष्य संपंचां सृष्टितस्मात् आवयित्वा तत्सत्यमिमां च हत इति चोपसं हृत्य तदपेक्षया को
भवतीति तस्मिन्नेव प्रकृतार्थे साकमिममसृष्टा इदमग्र आसीदिति यदि त्वमन्निरात्मकमस्मिन्नेकाकेभिः प्रयेतत
तो न्यसमाकर्षणेनान्यस्योदाहरणदसंबद्धं वाक्यमापद्येत ॥

२२१
३२
३३

न स्य सृष्टिशेषत्वमुक्तं तन्निर्वादाय तस्य फलमाह ब्रह्मेति सत्यमत्येतीत्यन्वयः एवं सृष्टिहारकं विरोधस्य तत्र समाधायका
राण्यसदसत्त्वादिना साक्षाद्भूतविरोधनिरासार्थं सत्रमादते यत्पुनरिति यतोस्ति त्वल्लक्षणं ब्रह्म त्रमयादिकोशपरंपरया प्रत्यगात्मानं विधीय
दादरति अतोत्रेकाकेनिरात्मकमसत्र आद्यतेर्नियोजनात् तत्र सदात्मनि श्लोके मत्रो भवति ॥

११४

यथाभूतत्वेमेवाद सर्वज्ञान कारणसर्वज्ञत्वादिकं प्रतिवेदांतदृष्टतस्याह तद्यथेत्यादिना तद्विषयेण उपविषयेण चेतनं सर्वज्ञं
तदात्मनेत्यपमकुरुतेति प्रतीत्यर्थप्रयोगात् न तस्माद्वा एतस्मादात्मन इति प्रत्यागम्यत्वस्य सावद्रूपत्वकामनया स्थितिका लेपादिति
यत्तु यथा तेतिरीचके सर्वज्ञत्वादिकं कारणस्य तथा ह्योपादावधिदृष्टतस्याह तदत्र युक्ततामिति श्रियस्तथाचारमुक्तिरिति
यत्तादविरुद्धकत्वात् कारणान्निविप्रतिपत्तिरिति शेषः तथाधिकार्यविरोधात्कारणविरोधः स्यादित्याशङ्कानिवर्धयति

सर्वतः सर्वेश्वरः सर्वात्मको द्वितीयः कारणत्वेन व्यपदिष्टः तथा भूतवत्वेदांतां तरेषु विद्यपदिश्यते तद्यथा सत्यं ज्ञानं
न तत्र सति अत्र तावत्तान् शब्देन परेण चतुर्विधयोगा का मयि तत्त्ववचनेन चेतने अस्मन् रूपयदपरप्रयोगत्वेन चरे
कभरणमत्रवीत तद्विषयो गो व्यपरेण त्मसा ह्येन चारीरादिको प्रायः परया चांतरन प्रवेशनेन सर्वेषां नः प्रमाणत्वा न
निरपारयत ब्रह्मणो प्रतायेयेति चात्मविषयो तद्व्यवस्था प्रामाण्येन न सममानानां चिकाराणं सुखरभेदमभाषत
तयेदं सर्वमस्मत्तत्तुदिदेकिं चेति समस्तजगत्सहि निईयेन प्राक्सुखे रद्वितीयं सुखारमा चष्ट तत्र यत्तत्तां अ
स्य कारणत्वेन विज्ञातेन ह्युत्तममेतान्त्रा पिवित्तायते सदेव सौम्यदमप्र प्रासीदेकमेव हि तीयेतदेतत् ब्रह्मण
प्रतायेयेति तत्तेजास्तत्तेजित्तपोत्माचारदमेक एवा प्रप्रासीत्तामकिं च न भिन्नसंज्ञातलोका नुसन्ता रतिचेवता
तीयकस्य कारणस्वरूपनिरूपण परस्परवाक्यात्तस्य प्रतिवेदात्तमविगीतायेतात् कार्यविषयत्वं विगानेदृश्यते क्वचि
दाकाशादिसृष्टिः क्वचित्तेन आदिकेणैव जातीयकं न च कार्यविषयो विगानेन कारणमपि ब्रह्म सर्ववेदांतेषु विगी
तम शिगम्यमानमविबलितं भवितामर्दतीति प्राचतेवक्तुं अतिप्रमाणत्वात्मायासति चाचार्यः कार्यविषयमपि विगाने
नेन विद्यदङ्गतेरित्त्वारम्भवेदपि कार्येषु विगीतत्वं मप्रतिपायत्वा त्रयं स्रष्ट्यादिप्रपंचः प्रतिपादयितः नदितम
निबद्धः कश्चित्पदार्थादृश्यते श्रूयते वा

कार्यविषयं त्वित्यादिना स्वप्रसङ्गानां प्रत्यक्षमन्वयान्वयेन मिति प्रत्यभिज्ञायमाने दृष्टेयिना नाने प्रसज्येतेत्याह अति
प्रसंगादिति सधिविरोधमंगीकृत्य सधिविरोधस्तुक्तं अपुनर्गोकारेण मिति समापास्यतीति किमर्थं तद्विग्रहप-
सधिसमस्यावदेतीत्याद्यास्तथावतामर्थसाधनायेत्याह भवेदित्यादिना अत्रात्यर्थीयविरोधो न दोषायेत्यर्थसाधयति नही

श्री ११५
 वि सज्जहरेवसिजेतपति एवमिति

न केवलमादिपाटीनां कर्तृत्वं किंतु सर्वेषां जगत्सर्वम् यथेति एतज्जगत्सर्वकर्मणि एतेरिति च तस्याकार्यमित्यर्थः कर्मनिशब्दस्य योगा
 रुचिभ्योऽंशयमाह तत्रेति पूर्वैकवाक्यास्यसदादिशब्दबलदसंख्येनोक्तः इदं वाक्यमेव दुस्मतेन वाणीति वात्ता किं वाक्यस्य अत्र
 हेन प्राणादिशब्दोच्चस्पर्शेन ननु मशकारिति प्रत्युदाहरणेन पूर्वपक्षमाह किं तावदिति पूर्वपक्षे वाक्यस्य प्राणाद्युपाक्षिपरत्वा
 दुस्मणि समन्वयमिति सिद्धिः सिद्धौ तस्यैव समन्वयमिति सिद्धिरिति फले अथ संप्रसारणेति शेषः अतः पुरुषकर्तृत्वशक्त्यास्यकर्मस्य तत्राह
 येचेनरिति सूत्रात्मकप्राणस्य विकाराः सूर्यादयस्तत्र मानमाह कतमरिति यस्य महिमानः सर्वदेवार्तिपूर्ववाक्येदं कितं अतः
 यस्य चेतनकर्मसर्वे वेदितव्यमिति तत्र किं जीवो वेदितव्यत्वेनोपदिश्यते उत स्यात् प्राण उत परमात्मेति विचारः किं तावत्प्राणं प्रा
 णादिकृतः यस्य चेतनकर्मनिश्चयणात् परिसंपदलक्षणस्य च कर्मणाः प्राणाश्च यत्वात् वाक्यशेषे च प्राणिन्यापार्कपाभव
 नीति प्राणाश्च दर्शनात् प्राणाश्च यत्वात् मुखे प्राणा प्रसिद्धत्वा येचेतेषु यत्वात्वा किं तावदेव पुरुषश्च दमसि पुरुष इत्येवमादयः
 पुरुषानिदिष्टाः तेषामपि भवति प्राणः कर्ता प्राणवस्था विशेषत्वादादितादिदेवतात्मनो कतमप्येको देव इति प्राण इति स
 वस्यस्य दिव्या चेतन इति अतएव तत्र सिद्धेः जीवो वायमिदं वेदितव्यं तयोपदिश्यते तस्यापि धर्मा धर्मलक्षणं कर्मशक्त्येव
 वयिते यस्य चेतनकर्मसि सोपि भोक्तृत्वाद्भोगोपकरणभूतानामेतेषां पुरुषाणां कर्तृत्वपयते वाक्यशेषे च जीवलिङ्गमवग
 म्यते यत्कारणं वेदितव्यं तयोपपत्तस्य पुरुषाणां कर्तृत्वं दत्तयोपेते बाला किं प्रतिबोधयिष्वरजातशत्रुः समे पुरुषमामत्रा
 मेत्राशब्दाश्च वृणात्पाणादीनामभोक्तृत्वे प्रतिबोधयिष्वरजातोत्पापना
 णादिवातिरिक्तं जीवोक्तारे प्रतिबोधयितव्यं परस्मादपि जीवलिङ्गमवगम्यते न यथाशेषोत्वेर्भुंक्ते यथावासाः अहिनेभुंजे
 नैवमेवैष्य तात्मेतैरात्मभिर्भुंक्ते एवमेवैतश्चात्मानं एतमात्मानं भुंजे नीति प्राणाभत्वाच्च जीवस्योपपत्ते प्राणाश्च त्वेतस्या
 जीवमुत्पापणायोरन्यतर इदं प्रहलीयः न परमेश्वरः तल्लिङ्गानवगमादिति एवं प्राप्तेः परमेश्वरवायुमेतेषां पुरुषाणां
 कर्ता स्यात्कस्मान् उपक्रमसामर्थ्यात् इदं बालाकिरजातशत्रुण वसते बुवाणीति सुवेदितमुपचक्रमेसचकतिचिदादि
 त्वायं कर्णान् पुरुषान्मुत्पापवत्सदृष्टिभाज उक्ता तस्मिन् भवतमजातशत्रुर्नृणां वैखिल्यमासि वेदिष्टा वसतव वाणीत्यसु
 सर्वदेवात्मकत्वात् प्राणेषु सत्यसरोत्तेशासु कवेद्यत्वादित्यर्थः पूर्वपक्षान्तरमाह जीवो वेति यत्कारणाय स्यात् प्राणा जीवो वेति
 यतितस्मादस्ति संप्राप्त्यापनं जीवलिङ्गमिति योजनानादपुरुषस्य प्रमाजसत्तः तत्राह देहद्वयांश्च वासः सामाजत्रिणां सत्तं संबोध्य
 संबोधनानभिज्ञतात्प्राणदेवतात्मत्वमुक्त्यष्टा ज्ञानेनोत्पाप्य जीवो वेति तद्वानित्यर्थः अही प्रधानः स्वर्भूतोतीति भिरुपदिशते भुंक्ते
 स्वात्तातयश्च तमुपजीवति एव जीवोप्यादित्यादिभिः प्रकाशदिनाभोगोपकरणैर्भुंक्ते च देविग्रहाण्यदिना जीवमुपजीवतीत्युक्तं

ननु प्राण एवैकपाभवतीति प्रतः प्राण इति
 जीवैकस्य भित्तयतत्राह प्राणमव
 वे २
 ११५

तस्मात्त्रामरूपया कृतचतुर्विधः प्रमाणमकृतः प्रसिद्ध इति न ह्या कवणाभावादेत्याशयः सदेव ब्रह्मासदिवासीदित्यु-
पचयने एषेवासदेवेदमग्र आसीदित्युपपत्तिनाः तत्सदासीदितिसमाकथ्य एषद्वयं ताभावाभ्युपगमेदितत्सदासीदितिकिं-
समाकृष्येत न ह्येक आद्वयसदेवेदमग्र आसीदित्युपपत्तिना अतएव तदभिप्रायेण एवमेकीयमतोपपत्तिः क्रियायां निवृत्तत्वे-
निकल्पस्यासंभवात् तस्या न्युत्पत्तिरपि गृहीतसमस्तदार्ढ्याभावादेव प्रसङ्गपरि कल्पितस्यासत्त्वात् तस्योपपत्त्यस्य निरास इति दृष्टव्यं
न ह्येतदस्या कृतमासीदित्युपपत्तिरपि निवृत्तस्य न गतोयाकारां कथ्यते स एव दृष्टविष्ट आनावायेभ्य इत्यप्यस्य वाक्येन
कार्यानुपवेशितेन समाकथ्यते निवृत्त्येवाकारणभ्युपगम एव न तरेण प्रकृतं बलवन्तिता स इत्यनेन सर्वनाम्ना कः कार्या-
नुपवेशितेन समाकृष्येत चेन्न स चायमात्मनः शरीरेन प्रवेशः श्रूयते प्रविष्टस्य चेतनत्वं प्रवृत्तत्वं परंपश्यत्तुः शास्त्रेण
त्रैमन्वानो मन इति अपि च दृष्टमिदमप्यन्तेनामरूपाभावात् क्रियमाणं जगत्तात्पर्यं आक्रियते एवमादिसर्गपीतिगम्यते
दृष्टविपरीत कल्पनानुपपत्तेः अतएव तदप्यन्तेन जीवेनात्मनानुप्रविष्टपनामरूपेवाकारवासीतिसा धत्तामेव न गतोया-
क्रियां दर्शयति आक्रियत इत्यधिकर्मकर्तारित्वकारः सत्येव परमेश्वरे वा कर्तारिसौ कर्धमयेत्यदृष्टव्यः यथा लयते केय-
रः स्वयमेवेति सत्येव दर्शयितुं लवितरि यदा कर्मण्येष लकारः श्रूयते तर्हि कर्तारमयेत्यदृष्टव्यः यथा गम्यते ग्राम इति न
गदा चित्वात् ॥ कौसीतकि ज्ञास्येवात्मा कृतानुसंवादे श्रूयते यो वेवात्मा कथ्यते वां प्रवृत्त्यां कर्ता ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शा
भा
११६

अलिङ्गान्कर्तुं वेदितुं परमेश्वरस्य किमायान्तिमित्यत आह परमेश्वर इति सिद्धांतमुक्त्वा पूर्वपक्षवीजमन्तरादृश्यति जीवस्य
प्राणलिंगादिति उक्तमेव स्मारयति त्रिविधमिति त्रैलोक्यगणपि केषां पितृत्वं नित्यं तत्त्वज्ञानमनियम्यत्वमिति भेदः संभवत
कवाक्यत्वे वाक्यभेदे दिनेष्वतश्च तत्त्वमनुरुक्तिः स्यादिति शङ्कते नन्वेवमिति कर्मपदस्य कदाचिदप्युक्तं प्राप्नोति त्रैलोक्यमस्या
रंभोयुक्तस्याह तस्यादिना प्राणशब्दजीवलिङ्गयोर्गतिमाह प्राणशब्दोपीति मनोजीवः जीवलिङ्गेन ब्रह्मैव वदन्त इत्युक्तं इदं
जीवलिङ्गेन जीवोक्तिरुभयत्र स्याद्युक्तिमाह अन्वयमिति जीवपरमार्थस्य जीवाधिकरणस्य तन्मायैव प्रथमाह कैव

परमेश्वरः सर्वजगतः कर्ता सर्वदेवदेवो तेष्वधारितः जीवस्य प्राणलिंगादिति चेत्तद्यथा ते १९ अथ यदुक्तं वाक्यशेषा
नान्तीवलिङ्गान्मुखा प्राणलिंगाच्च तेष्वेव वाच्यतरस्य दृष्टान्तोऽप्यनपरमेश्वरस्य तित्तत्परिदत्तं च अत्रोच्यते परमेश्वरस्य
त्रोपासात्रे विधादाश्रितत्वादिदत्तद्योगादिमत्र त्रिविधं त्रयोपासनमेवेति प्रसस्यते जीवोपासने मुखप्राणपासने
ब्रह्मोपासने चेति न चेत् त्रयोपासकमप्यसहस्राभ्यादिब्रह्मविषयत्वमस्या वाक्यावगम्यते तत्रोपासकस्य तावद्ब्रह्मवि
षयत्वेदं शिष्टं उपसंहारस्यापि निरतिशयफलप्रदानादुक्तं विषयत्वं दृश्यते सर्वोपासने उपसंहारस्य सर्वेषां च भूतानां त्रैलोक्य
गणमापि पश्येति पश्येवेति नन्वेवेति प्रतर्क्य वाक्यानिर्णयेन वेदमपि वाक्यानिर्णयितुं निर्णयते यस्यैतत्क
र्मस्य ब्रह्मविषयत्वेन तत्रातिद्वैतत्वात् तस्मादत्र जीवस्य प्राणशब्दो पुनरुक्त्यमाना निवर्त्यते प्राणशब्दोऽपि ब्रह्म
विषय इष्टः प्राणवधने हि सोऽस्मिन् इत्यत्र जीवलिङ्गमप्युपक्रमोपसंहारयोर्ब्रह्मविषयत्वादभेदाभिप्रायेणाप्युच्यते न च अ
न्वयतन्मितिः प्रथमाख्यानाभासमपि चैव मेके २ अपि च नेवात्र विवदितं जीवप्रधानवेदवाक्यादुक्तप्रधाने
वेतियतोऽप्यर्थजीवपरमार्थब्रह्मप्रतिपत्त्यर्थमस्मिन्वाक्येनेमिति शङ्कायामन्यते कस्मात्प्रथमाख्यानाभासप्रस्तावत्स
प्रपुरुषवाचनेन प्राणदिव्यतिमित्ते जीवे प्रतिबोधिते पुनर्जीववातिरेकविषयो दृश्यते कैवर्तद्वलाके प्रपुरुषादपि
कवापत्तदभक्तुत एतदगादिति प्रतिवचनमपि यदासुमः स्वप्नकंचनपश्यन्त्यास्मिन्प्राणैवेकधा भवतीत्यादि य
तस्मादात्मनः प्राणपथाय तन्न विप्रतिष्ठंते प्राणोऽप्योदेवादेव भोलेका इति च

इति हेवात्माकेपतस्तु यन्विशेषभावात्तानरूपं यथा स्यात्तथैव प्रपुरुषः काशपिष्टकस्मिन्नधिकरणाय नैकतवा नित्यर्थः ए
कीभावाग्रयत्तानाद्युच्छति कवा इति एतद्वचनमेकीभावरूपं यथा स्यात्तथा येष प्रपुरुषः काभस्त्वमः केनैकोपाप्नोतीति
यावत् उक्तानापादाने पृच्छति कुत इति एतदागमनमेकाभंशरूपं यथा स्यात्तथा प्रपुरुषः कुत आगत इत्यर्थः प्रथमुक्त्वा
वाख्यानमाह प्रतिवचनमिति शयनमवनयोराधारः उक्तानापादाने च प्राणशब्दोऽपि तत्रैवेत्यर्थः ॥

सचवात्ताकिञ्चैसात्तभोमाव्यष्टिनिगुणानुरुमानुत्तरात्तानिरस्तत्तस्मीस्थितः नडके वस्यस्येसत्काराज्ञोच्यमानेन सैवेतिवक्तव्यमनया
राक्षसिम्पसाचादित्वप्रसंगदिन्याह यदि सोपीति वेदितव्यापीत्यर्थः आस्यपुरुषकतेत्वेन प्रमाणवत्तिगं प्राप्तानीवयोस्तत्रिपपत्तेनासा
नेत्यादिमाह कर्तृत्वेनेति यदुक्तं च तन्नादृष्टोर्वाचकः कर्मशब्दः प्राप्तानीवयोरुपस्थापकश्चिन्नत्रेमाह यस्येति अनेकार्थकत्वाद्वाद्य
नरायणप्रकरणद्वयपराह प्रदण्णानां यत्र प्रकरणेण पदयो रसन्तात्कस्य प्रदण्णमिति सञ्चये पुरुषकर्मपदस्य त्रिषान्तिपत्तेरिति योम
त्तगद्वयमित्यर्थः एतत्कर्मैति प्रकृतपरामर्शानुसूयाः शब्दोक्ताः कर्मशब्देन निर्दिष्टानामित्यत आह नापीति यौनरुत्तापातात्पुरुषा
णां न प्रसक्तैकवचनपरामर्शयोगाच्चैत्यर्थः लज्जपुरुषाणादकस्य कर्तृत्वापारः करोत्यर्थे प्रपादनं तस्य फले पुरुषजननतदन्यतरवाची

[illegible]

कर्मशब्दोक्तिस्तथाह नानापीति कर्तृशब्देनेति क्रियाफलभाविना कर्तृत्वायोगात्कर्तृशब्देनैवत्वोपपत्तिरिति नानापीति
 करणपददत्तत्वात्कर्तृशब्दोक्तिस्तथाह नानापीति कर्तृशब्देनेति क्रियाफलभाविना कर्तृत्वायोगात्कर्तृशब्देनैवत्वोपपत्तिरिति नानापीति
 तत्रसंकोचकालनात्सर्वार्थकेन सर्वनाम्नाबुद्धिस्तथाकार्यमात्रस्य कर्मशब्दोक्तत्वात् नानापीति किंचजगदेकदेशोक्तत्वात्
 गत्युक्तमित्याह सर्वत्रेति जगद्वैपुरुषाणामपिग्रहणमितिर्थात्तत्वात् एतदुक्तमिति सवेदितव्यमिति संबंधः पुरुष मात्र
 निरूपितकर्तृत्वमितिभोतिनिरासार्थोवाशब्दः ज्ञास्यमाणभोजयितवापरिज्ञानकाद्येतत्त्रयथाज्ञास्यमाणशब्दः परिज्ञानकान्यविषयः
 तथात्रकर्मशब्दः पुरुषाद्यजगद्वाचीत्यम् एवमिति ५

शा
भा
११०

११४

यथावस्यते वा लोम्यपकमवलादावास्पृशस्य त्वेन वा ज्ञानी बोधकमादस्पृशस्य जीवपरत्वमिति दृष्टान्तेन श्रुत्येव तदपि किं तावदि
 नि श्रुत्येव त्वेवाकास्पृशजीवोपातिपरत्वमिदं तेनैवेत्यप्रत्यक्षमपि प्रमत्तयति फल इदं प्रमत्तमददृष्टमिति त्रिभूतसममनेनेनिसमपारं
 सवेगतेचिदेकरस एतेभ्यः कार्यकारणत्वमनायायमानेभ्यः भूतेभ्यः सापेक्षोत्पाद्यभूतोपाधिकजन्मानुभूयतामेव भूतानि लो
 पमानान्यनुस्तराचिनश्चपति श्रोताधिकमरणनंतरं विशेषणीनास्तीति चेत्यर्थः विज्ञातारं विज्ञातकर्तारं भोक्तुविज्ञातेभो
 कित्वावत्प्राप्तं विज्ञानात्मेयपदेशादितिकस्मात् उपक्रमसामर्थ्यात् पतिताया प्रवृत्तिनाटिकुंदिभोग्यभूते सर्वे जगदात्माद्यतया
 प्रियभवति प्रियमस्मृचिन्ते भोक्तारमात्मानमुपक्रमानंतरमिदमात्मनो दर्शनाद्युपदिष्टमानं कस्यन्यस्यात्मनः स्यात्
 यो यो देवमदभूतमनेन मपारं विज्ञाततुन एवेतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्पाद्यतामेवानुविनश्चपतिन प्रेत्यमेतास्तीति प्रकृतस्यैव
 ना मरतो भूतस्य दृष्टव्यस्य भूतेभ्यः समुत्पादने विज्ञातमावेन नुवन्नितात्मन एवेदं दृष्टव्यत्वं दृष्टव्यमिति तस्याविज्ञातारमस्वेन्न विज्ञा
 जानीयादितिकर्तृवचनेन श्रुतेनोपसंख्यन्ति तानात्मानमेवोपदिष्टं दर्शयन्ति तस्मादात्मविज्ञानेन सर्वं विज्ञानवचनं भो
 क्तृत्वाद्भोग्यज्ञानस्योपचारिकदृष्टव्यमिति एतद्व्याप्तिं परमात्मोपदेशश्चाप्येकस्मात् वाक्यान्वयात् वाक्योद्दीष्टेवो
 वं सर्वेषां वेद्यमाणा परमात्मानं प्रत्यक्षितवर्णनस्यते कथमिति तदुपपाद्यते अस्मत्तत्त्वस्य तन्नाशमिति अस्मत्तत्त्वमाशासा
 वित्तेनेति यावत् तस्मादुपक्रम्येनाहं नास्मत्तासां किमहं तेन कुर्याद्यदेव भगवान्चेदतदेव मे ब्रूहीति अस्मत्तत्त्वमाशासा
 नापि मे त्रयोपात्तवत्सात्मात्मवित्तनमुपदिशति न चान्यत्र परमात्मविज्ञानादस्मत्तत्त्वमस्तीति श्रुतिस्मृतिवादावदंति
 तथा चात्मविज्ञानेन सर्वं विज्ञानमुपमानं नान्यत्र परमकारणाविज्ञानान्मुक्त्यमकल्पते इत्येतदोपचारिकमात्र
 शक्यं यित् यत्कारणमात्मविज्ञानेन सर्वं विज्ञानं प्रतिज्ञाया नंतराग्राह्येन तदेवोपपादयति अस्मत्तत्त्वमाशासा
 स्रुतेत्यादिना यो हि त्रसदत्रादिके जगदात्मनो त्रसत्त्वात् त्रोगाल्लव्यस्रुते पश्यति तस्मिन्नादर्शने तदेव मिथ्या
 दृष्टं त्रसदत्रादिकं नात्मा करोतीति भेददृष्टिमयोपदेसं सर्वं यदप्यमात्मेति सर्वं स्ववस्तु जातस्यात्मावतिरेकं सवत्ता

गंज्ञानमित्युपचारः मोक्षसाधनज्ञानराग्यत्वादिति गौर्वाकस्यान्वयाद्भूतमेव तात्पर्यात्वात्मादृष्टप्रमाणकत्वमिति सिद्धं तदपि
 एवमिति न वित्तेन तत्साधनेन कर्मणो मर्थः भेदनिर्देशकमभेदसाधनेनैव विज्ञानात् सर्वं विज्ञानस्य समर्थतादोषचरित्वं न
 युक्तमित्याह नचेतदोपचारिकमित्यादिना पराकरोति श्रयोमागाद्भूयति यथा इदं भिन्नं त्वीणां शब्दसामान्यग्रहो
 नैव गृह्यमाणस्तदेवातरे विशेषः श्रुतियद्वाग्यादिरजतवत्सामान्ये कल्पितास्ततो बभूवते एवमात्मभानभास्यं सर्वं

विज्ञातारं विज्ञातकर्तारं भोक्तुविज्ञातेभो
 कित्वावत्प्राप्तं विज्ञानात्मेयपदेशादितिकस्मात्
 उपक्रमसामर्थ्यात् पतिताया प्रवृत्तिनाटिकुंदिभोग्यभूते सर्वे जगदात्माद्यतया
 प्रियभवति प्रियमस्मृचिन्ते भोक्तारमात्मानमुपक्रमानंतरमिदमात्मनो दर्शनाद्युपदिष्टमानं कस्यन्यस्यात्मनः स्यात्
 यो यो देवमदभूतमनेन मपारं विज्ञाततुन एवेतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्पाद्यतामेवानुविनश्चपतिन प्रेत्यमेतास्तीति प्रकृतस्यैव
 ना मरतो भूतस्य दृष्टव्यस्य भूतेभ्यः समुत्पादने विज्ञातमावेन नुवन्नितात्मन एवेदं दृष्टव्यत्वं दृष्टव्यमिति तस्याविज्ञातारमस्वेन्न विज्ञा
 जानीयादितिकर्तृवचनेन श्रुतेनोपसंख्यन्ति तानात्मानमेवोपदिष्टं दर्शयन्ति तस्मादात्मविज्ञानेन सर्वं विज्ञानवचनं भो
 क्तृत्वाद्भोग्यज्ञानस्योपचारिकदृष्टव्यमिति एतद्व्याप्तिं परमात्मोपदेशश्चाप्येकस्मात् वाक्यान्वयात् वाक्योद्दीष्टेवो
 वं सर्वेषां वेद्यमाणा परमात्मानं प्रत्यक्षितवर्णनस्यते कथमिति तदुपपाद्यते अस्मत्तत्त्वस्य तन्नाशमिति अस्मत्तत्त्वमाशासा
 वित्तेनेति यावत् तस्मादुपक्रम्येनाहं नास्मत्तासां किमहं तेन कुर्याद्यदेव भगवान्चेदतदेव मे ब्रूहीति अस्मत्तत्त्वमाशासा
 नापि मे त्रयोपात्तवत्सात्मात्मवित्तनमुपदिशति न चान्यत्र परमात्मविज्ञानादस्मत्तत्त्वमस्तीति श्रुतिस्मृतिवादावदंति
 तथा चात्मविज्ञानेन सर्वं विज्ञानमुपमानं नान्यत्र परमकारणाविज्ञानान्मुक्त्यमकल्पते इत्येतदोपचारिकमात्र
 शक्यं यित् यत्कारणमात्मविज्ञानेन सर्वं विज्ञानं प्रतिज्ञाया नंतराग्राह्येन तदेवोपपादयति अस्मत्तत्त्वमाशासा
 स्रुतेत्यादिना यो हि त्रसदत्रादिके जगदात्मनो त्रसत्त्वात् त्रोगाल्लव्यस्रुते पश्यति तस्मिन्नादर्शने तदेव मिथ्या
 दृष्टं त्रसदत्रादिकं नात्मा करोतीति भेददृष्टिमयोपदेसं सर्वं यदप्यमात्मेति सर्वं स्ववस्तु जातस्यात्मावतिरेकं सवत्ता

ना

२४

११०

उत्तरे प्राणोक्तः प्रश्नोपि प्राणविषय इत्यत आह सपुष्पिका लेवेति जगदेतत्त्वजीवैकाभां प्राणोत्तरे प्राणोक्तः नीचोक्तेरन्यथैव सपुष्पिके
 ति तस्मादिति निःसंदेहोपपत्तिविशेषोऽन्यथा स्वस्वताविशेषमन्यथाभेदभेदित्यन्यथास्वरूपमेवमाह उपाधीति प्रश्नवाक्यात्तयो
 उपाधिविषयत्वेन प्राणान्नसंवादमाह अपि चैवमेकैकानि नृणां ननु नृणां प्राणः सपुष्पिका नुमुक्तेन नृणां प्राणः अकाशेति उपाधिहा
 राप्रमात्रात्मनस्तदेतत्वाद्याकाशोत्तरे प्राणः सर्वेति एवं जीवनिवासार्थं कतेन तत्रैवाकाशप्राणानिरासपरत्वेनापि वाच्ये प्राणोति

सपुष्पिका लेव परेण त्रयस्य जीव एकमेवमिति परस्मादुक्तस्य प्राणदिके जगत्तायनरतिवेदोत्तमपिदा तस्माद्यत्राप्यजी
 वस्य निःसंदेहोपपत्तिविशेषः स्यादुपाधिजनितविशेषविज्ञानरहितं स्वरूपं यत्तद्वैश्वरूपमागमनं सोऽत्र परमात्मावेदित
 यतया आदितरतिगमने अपि चैवमेकैकानि नृणां ननु नृणां प्राणः सपुष्पिका नुमुक्तेन नृणां प्राणः अकाशेति उपाधिहा
 जीवमात्राय तद्यतिपित्ते परमात्मानमात्मनो यद्यपि विज्ञानमयः प्रकृत्यः क्षेत्रज्ञात्तद्वैश्वरूपमागमनं सोऽत्र परमात्मावेदित
 नेपि येषां न देह्य आकाशास्त्वस्मिन्नातर्ति आकाशात्तद्वैश्वरूपमागमनं सोऽत्र परमात्मावेदित
 युचरेतीति चोपाधिसत्तामात्मनामन्यतोऽन्यथाप्युच्यते परमात्मानमेव कारणात्वेनात्मनोऽतीतिगमने प्राणानिराकराण
 मपि सपुष्पिकारूपमागमनेन प्राणदिके जगदेतत्त्वजीवैकाभां प्राणोत्तरे प्राणोक्तः नीचोक्तेरन्यथैव सपुष्पिके
 रपसः कामायेत्युपक्रम्य नवारे सर्वस्य कामायेत्युपक्रम्य नवारे सर्वस्य कामायेत्युपक्रम्य नवारे सर्वस्य कामायेत्युपक्रम्य
 निर्दष्टासित्तो मे त्रेयात्मनो वाचरे दर्शनेन अवलोकनमन्यावित्तनेन देवसर्वविदितमिति तत्रैतद्विचिकित्सते किंवित्तानां
 वाचरे इत्युपाधिरुपेणोपदिष्टवे अहोस्वित्परमात्मेति कुतः पुनरेकविचिकित्स प्रियसंस्चितनात्मनामोक्तोपक्रम्यादि
 तानात्मपदेति प्रतिभाति तत्रैवैतत्त्वजीवैकाभां प्राणोत्तरे प्राणोक्तः नीचोक्तेरन्यथैव सपुष्पिके

अपि न्याये प्राणोपदेशेन सत्ताजार्थं मन्यते नैमितिः अतः प्रश्नवाक्यानाभावात् सपुष्पिकारूपमागमनं सोऽत्र परमात्मावेदित
 मेव प्राणानि किं जीवात्मात्मनः प्राणस्य वाचायैव नृणां प्राणः सपुष्पिका नुमुक्तेन नृणां प्राणः अकाशेति उपाधिहा
 नृणां प्राणः सपुष्पिका नुमुक्तेन नृणां प्राणः अकाशेति उपाधिहा नृणां प्राणः सपुष्पिका नुमुक्तेन नृणां प्राणः अकाशेति उपाधिहा
 नृणां प्राणः सपुष्पिका नुमुक्तेन नृणां प्राणः अकाशेति उपाधिहा नृणां प्राणः सपुष्पिका नुमुक्तेन नृणां प्राणः अकाशेति उपाधिहा
 नृणां प्राणः सपुष्पिका नुमुक्तेन नृणां प्राणः अकाशेति उपाधिहा नृणां प्राणः सपुष्पिका नुमुक्तेन नृणां प्राणः अकाशेति उपाधिहा

किंच पूर्वपर्यालोचनया वाक्यस्य मुक्तात्मपरत्वात्तद्वगमाद्विज्ञानत्वे कस्यितमेवानुपपन्नमिति न तद्विरोधो न जीवपरत्वमित्याह अपि
चेति आर्यस्य दोषकाशकत्वात्तद्वगमादेपत्वे किं वीजेतदाह दर्शितमिति अतश्च प्रतिमत्वाच्च पुनरपि प्रतिस्मृतमन
साह सदेवसादिना हेतुना भेदो न पारमार्थिक इति प्रतियोग्यसंबन्धः भेदाभेदयोर्जीवस्य तन्मादिविकारवत्त्वात्तद्विषयानसा
दिनाह सवाप्यसति भेदस्य सत्यत्वे तत्तत्प्रागावभासद्वयस्येति निर्विघ्नं ज्ञाननसादिनाह अन्यथा चेति अभेदस्यापि सत्त्वात्

अपि च यच्चिद्वैतमिव भवति तद्विज्ञानरूपेण शरीराभ्याविद्याविषये तस्यैव दर्शनादिलक्षणां विशेषवित्तानं प्रपञ्चय
तत्त्वस्य सर्वमात्मैवाभूतत्वेन केषुपदित्यादिना विद्याविषये तस्यैव दर्शनादिलक्षणां विशेषवित्तानं प्रपञ्चय
भिदधाति पुनश्च विषयाभावणात्मानं विज्ञानं यादित्यापाका विज्ञानात्तत्त्वैकेन विज्ञानीयादित्याह ततश्च विशेषवित्ताना
नाभावापणादनपरत्वाद्वाक्यस्य विज्ञानधातुरेव केवलः सम्भूतसर्वगत्वाकत्वेन च तेन तत्त्वानिर्दिष्ट इति गम्यते दर्श
नं तत्पुरस्तात्ताशकत्वात्तद्वगमादेपत्वे अतश्च विज्ञानात्मपरमात्मनो र्विद्याप्रत्युपस्थापिततामरूपपरचि
तदेरागुणानि निर्मितो भेदो न पारमार्थिक इत्येवार्थः सर्ववैदोतवादिभिस्सुपगतव्यः सदेवस्यैव दमग्र्यासीदेक
मेवास्ति तेन आत्मैवेदं सर्वं यदेवैदं सर्वं इदं सर्वं यदयमात्मानो तोक्तिदृष्टानातो तोक्तिप्रोक्तार्येव रूपम् अति
भ्यः सति भ्यश्च वा सदेव सर्वमिति हेतुं चापि सांविदिसर्वज्ञेषु भारत समंसर्वेषु भूतेषु तिष्ठते परमेष्ठुरित्येव
रूपाभ्यः भेददर्शनापवादाद्यानासावन्मोहमस्तीति न सदेवस्योः समस्तुमाप्रोक्तियरदनानेव पश्यतीत्येव ज्ञाती
यकात् सवाप्यसमदानज आत्मा ज्ञोमरोमृताभयोश्चेति चात्मनि सर्वविक्रियाप्रतिषेधात् अन्यथा च सुसुप्त
तां निरपवादवित्तानानुपपत्तेः सुनिश्चिता धानुपपत्तेश्च निरपवादवित्तानं सर्वकांक्षानिवर्तकमात्मविषय
मिष्यते वेदोतवित्तानसुनिश्चिता र्था इति च प्रति तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यत इति च स्थितप्रज्ञत्वं
त्वागम्यते स्थिते च तत्र परमात्मैकत्वविषयसम्पदरीने हेतुतः परमात्मेति नाममात्रभेदात्तद्वैततोय परमात्म
नो भिन्नः परमात्मायं देवता इति तत्रैवे ज्ञातीयक आत्मभेदविषयो निर्बन्धो निरर्थकः

मेत्याशंकाभेदाभेदयोर्विरोधात्तेशास्मादिनाह सुनिश्चितेति मास्तुनिर्वाधत्तानमित्यन आह निरपवादमिति अदेवस्यै
तवापि तन्निश्चयस्यैव शोकादिनिवर्तकत्वमित्यत्र स्मृतमिषाह स्थितेति आत्मेति कैकत्वे हि प्रज्ञाप्रतिष्ठिता भवति न भेदाभे
दयोरिति भावः न न जीवपरमात्मानो स्वतो भिन्नो अपर्यायनामवत्त्वात्तन्मभुं भवदित्यत आह स्थिते चेति ॥

शा
भा
१२

जगद्विचकर्तृपादानकं कार्यं तादृष्टवदित्याह अनेकेति असंख्यपादानमौचरत्वाद्वाजादिवदित्याह ईश्वरेति जगद्विचकर्तृप्राप्तिकृतं
द्वितत्वात्तात् यदिह्यतनयाकुलालविनशाद्यदृष्टवदित्याह कार्येति निष्कलनिरवयवनिष्पन्नमवलक्षणमपराणमिनिर
वर्णनिरस्तममस्तदायतत्रदेतः निरञ्जनमिति अञ्जनतत्पतमः शून्यमित्यर्थः तद्विनशतः सृष्टोपादानकिमित्तत्वाद् वा
रिशेषादिति अस्तीतिषेपे प्रधानेयोरधिष्ठितभ्यभिमानः सिद्धेत्येति प्रकृतिश्चेति चकारात्रिमितत्वग्रहः एवमुभयरूपक

११७

अनेककारकप्रविकाचक्रियाफलसिद्धिर्लोकेरहासचन्यायआदिकर्तृयपियुक्तः संक्रमयितुं ईश्वरत्वप्रसिद्धेष्टेष्टाणां
द्विजवेवस्वतादीनां निमित्तकारणात्त्वमेवकेवलं प्रतीयते तदुत्पन्नमश्रयापिनिमित्तकारणात्त्वमेवयुक्तं प्रतिप
ते कार्येचेदजगत्सावयवमचेतनमश्रुद्वचरषणते कारणाभाषितस्य तादृशेनैवभवितव्यं कार्यकारणयोः सारूप्य
दर्शनाद्भवत्येवंचेदहमवगम्यते निष्कलनेः क्रियेणातेनिरवर्णनिरञ्जनमित्यादिप्रतिभ्यः परिशेषाद्भवत्ये
ननुपादानकारणमश्रुदिगणकेत्येतिप्रसिद्धमभ्युपगतेत्यत्रसकारणत्वप्रतेनिमित्तत्वमात्रेयवसानादिति
एवंप्राप्तेऽसं प्रकृतिश्चापादानकारणं चवस्याभ्युपगतेत्येतिमित्तकारणं चनकेवलं निमित्तकारणमेवकस्मात् अ
तितादृष्टान्तानुपरोधात् एवंप्रतितादृष्टान्तौकृतौनोपरुध्येते प्रतितातावा उततमादेशमप्राप्तयेनाश्रुतं अ
तंभवत्यमतंमतमविज्ञानंविज्ञातमिति तत्रचैकेनविज्ञातेनसर्वमन्यदविज्ञातमपि विज्ञातंभवतीतिप्रतीयते त
चापादानकारणविज्ञानेसर्वविज्ञानेसंभवतिउपादानकमण्यवतिरेकात्कार्यस्य निमित्तकारणव्यतिरेक
स्तुकार्यस्यनालिलोकेतत्वात् प्राप्तादव्यतिरेकदर्शनात् दृष्टान्तोपि यथासौम्येकेनमस्तिडेनसर्वमन्यदविज्ञा
तस्याहाचारंभागाविकारोनामपेयंमतिकेयवसत्यमित्युपादानकारणागेचरएवाभ्युपगतेतथैकेनलोदमणि
नासर्वलोदमयेविज्ञातस्यादेकेननखनिर्कृतनेनसर्वकासायसंविज्ञातेस्यादिति च तथाप्यत्रापिकस्मिन्
भगवोविज्ञातेसर्वमिदंविज्ञातंभवतीतिप्रतिताययथापृथिव्यामोषप्रयः संभवतीतिदृष्टान्तः ॥

२५

रणात्वेतयोस्वाधोभवतीत्याह एवमिति कर्तृज्ञानादपिसर्वकार्यज्ञानं किंनस्यादित्यतग्रह निमित्तकारणव्यतिरेकस्ति
ति मृदादीनामुपादानानां दृष्टान्तत्वाद्वाहो . नि कस्यचस्याउपादानत्ववाच्यमित्याह दृष्टान्तोपीति वागारभेनाममात्रे
विकारेनवल्लुतोलीतिसत्यकारणातोना द्विकारत्वात्तयुक्तमित्यर्थः गतिसामान्यायमेडकेपिप्रतितादृष्टान्तावाद् तथा

रज्जोपीति १२

प्रा.
मा.
२१

118

ननु कृतेराश्रयः सिद्धो भवति विषयत्वात् साधकस्यैव भवेत् सिद्धिर्दृष्टमिदं शक्यते कथं पुनरिति यथासदः साध्यपरिणामाभेदेन कृतिवि
षयत्वेन ह्यसत्त्वं नरस्य परिणामादिति आत्मानमित्यविरोधप्रतिपक्षः सिद्ध्यापि साध्यत्वे ह्येतन्माह विकारान्मनेति ननु स्यात्
आत्मानमिति द्वितीयपाकार्योत्पन्ना साध्यत्वात् प्रकृतित्वं कर्तृत्वमिति तत्राह सत्यमिति चेति त्रयमाह कृतिकर्मत्वाप
पादनाय परिणामादिति पदव्याख्यापान्थापि व्याचष्टे पृथक् तत्रमिति स्पष्टतरातिवद्भूतसत्त्वचेति परिणामसामानाधिकर
ण्यश्रुतेः त्रयमाह प्रकृतित्वमित्यर्थः सत्यमन्तर्भूतत्रयत्वस्येदो भूतद्वयविरक्तवक्तृशक्ततादि अनिरुक्तवक्तृशक्तकर्म
नरुपाधिकं त्रयैवाभवदित्यर्थः अत्र सत्त्वे परिणामशब्दः कार्यमात्रपरः न तत्सत्त्वकार्योत्पत्तिपरिणामपरः तदनन्त्यमिति वि

कथं पुनः पूर्वसिद्ध्या सतः कर्तृत्वेन वाच्यं स्थितस्य क्रियमाणत्वं साधकं संपादयितुं परिणामादिति त्रयः एवं सिद्ध्यापि दिस
त्रात्मा विशेषणविकारात्मना परिणामयामासात्मानमिति विकारात्मना च परिणामोऽप्युदाहृत्य प्रकृतिसूचकः सत्य
मिति च विशेषणतन्निमित्तोत्तरानपेक्षत्वमपि प्रतीयते परिणामादिति वा पृथक् तत्र तस्यैवार्थः इत्युपप्रकृतिप्रसक्त
राश्रयत्वात् एव विकारात्मनः परिणामः सामानाधिकरण्येनास्मात्प्रयते सच्चत्वात् भवतिरुक्तं चानिरुक्तं च तदिति चेति यानि
अस्मिन्मते १ इत्युपप्रकृतिप्रसक्तस्य साधकस्यैव निमित्तमिति चेदेवेदं तेषु कर्तारमीशेषं पुरुषं त्रयस्यैव निमित्तमिति यद्वतयो
निपरिपश्यन्ति धीमा शतं च यानि शब्दप्रकृतिवचनः समधिगतो लोके पृथिवीयोनिवाषधिवनस्पतीनामिति स्त्रीयानेर
ण्यस्यैवावयवद्वारा राश्रयं प्रत्युपादानं कारणात् क्वचिच्छानवचनोपयोगिनिशब्दोऽप्युनिशब्दं निषेधेन कारीति वा
काश्यातत्र प्रकृतिवचनतापसिद्धयुक्तयोर्गोलाभिः सज्जतेऽदहते चेत्येवैवाजीयकोऽप्युपप्रकृतित्वं त्रयमाह प्रसिद्धं यत्पुन
रिदमन्तं ईसापूर्वककृतित्वं निमित्तकारणं च वक्तृत्वमलोदिष्टलोकेऽप्युपादाने स्थित्यादितत्त्वमुच्यते न लोकावदिदं
भवितव्यं न ह्ययमनुमानगम्यार्थः शब्दगोम्यत्वात् तस्यायं स्पष्टाशब्दमिदं भवितव्यं शब्दप्रकृतिवचनस्य प्रकृतित्वं प्र

वर्तमानस्य वक्ष्यमाणत्वात् योनिशब्दाच्च प्रकृतित्वमित्याह योनिश्चेति कर्तारं क्रियाशक्तिमन्तमीशं नियन्तारं पुरुषं प्रत्येवं त्रयस्य
गोपानि प्रकृतिधातुनेन पश्यतीत्यर्थः नन्वनुपादाने पि स्त्रीयानेराश्रयानि शब्दोऽप्युपप्रकृतित्वं त्रयमाह स्त्रीयानेरिति शोणितमवयवशब्दा
र्थः योनिशब्दस्य स्थानमप्यर्थो भवति सोऽनुपादानादिराश्रयैर्न प्रोक्तः ऊर्णनाभादिप्रकृतेरहं तवाकाशेऽपि विरोधादिमाह क
चिदिति हेतुं तत्तद्वनिषदेऽप्येव शब्दाय योनिः स्थानं मया अकारि कृतमित्यर्थः एवं पदोक्तानुमानानि त्रयस्यैव साधकमाह
यत्पुनरित्यादिना नन्वनुमानस्य श्रुत्यनपेक्षत्वात् तदा वा धार्यत आह न हीति न गतं तोपत्तः प्रत्येव सिध्यति या कृतिः सा
शरीरज्ञानेति व्याप्तिविरोधेन नित्यकृतिमतो ननु मानासंभवादतः श्रोतमीश्वरं पदोक्तानुपादानत्वं साधने भवत्येवोपजीव्य
या प्रकृतित्वं बोधककृत्या बाध इत्यर्थः ॥

सुदुराण्येकेषां च तदात्मनीति सुदः सुदनीत्यनुगोष्ठां प्रकृतित्वा दतिरेकेण विकारानसंतीति मेयमर्थोयथा स्फुटः स्फातया
 दृष्टानः सचोत्तरममानदंडमिनन्यात्तु ससामान्याह्यान्विष्य साक्षात्सामान्यप्रदत्तानिरेकेण दृष्टयगुदीतं प्रातत ॥ १ ॥ कुर्यात्सामान्य
 सतप्रदो न दंडुपासातजशसविषोषो गदीतो भवति तस्य वा प्रदो न तदवांतरशो गदीतो भवति अतः शत्रुसामान्यप्रदत्ता
 द्यान्विषोषा सामान्यकल्पिताः तदुदात्तमानभास्यानुदात्तप्रामाणिकल्पितारूपः प्रतित्वा र्थात्ता नुरोधा द्वािगात्रसामान्यः प्रकृतित्वसु
 त्वापंचमीप्रमाणाद यतरति यतोचारस्य प्रतोयतरतियंचमीप्रकृतौ दृष्टवेत्यन्यः जतिकर्तृतायमानस्य कार्यस्य प्रकृतिरपादानसं

न२ तदात्मनित्वत्वेरेष्टे अनेमते विज्ञातारं संवेदिदितमिति प्रतित्वा मयथा दंडभेदं समानसंवाद्यान्त्रयां कुर्यादुदात्तयदंडभे
 सप्रदो न दंडुपासातस्य शो गदीतारतिदृष्टानः एवं यथासंभवे प्रतिवेद्येने प्रमिज्ञा र्थात्ता प्रकृतित्वप्रसाधनो प्रमेतवो यतरती
 यमपि पंचमीयतो चारमानिभूता नार्थेने रगजजविकर्तः प्रकृतिरिति विषोषस्वरूपान् प्रकृतित्वत्वात्वापादाने दृष्टानि निमित्तं
 न विष्टेतरभावाद शिगेत्यं यथादिना के सत्त्वार्थदिक सपादनकारणां कुलात्तमुवर्णकारादी न धिष्टादनपेत्पवर्तते नै
 वं अस्मात्पादानकमप्यसमो नो शिष्टातापेयस्ति प्रागुत्तरैकमेवादितो यमिस्यवधारण दधिमात्रेतराभावोपि प्रतित्वा
 द्वाता नुरोधा देवोदितो वेदितव्यः अधिष्टातीति युपादानादन्यमिन्नभुपरासमाने अनरण्यकचित्तानेन संवेदितानस्य संभवा
 त प्रतित्वा र्थात्ता परोपपन्नान् तस्मादधिष्टात्रतराभावादात्मनः कर्तृत्वमुपादानांतराभावाच्च प्रकृतित्वकुतश्चात्मनः क
 र्त्तृत्वप्रकृतित्वं अधिष्टापदेशाच्च २२ अधिष्टापदेशात्तानः कर्तृत्वप्रकृतित्वगमयति सोका मयतवदसा प्रजायेति तदे
 दंतवदसा प्रजायेति च तत्र अधिष्टान पूर्विकायाः स्तानं प्रप्रहर्तकनेति गम्यते वदसा मिति प्रत्यगात्मविषयत्वात् वदभचनाभि
 धानस्य प्रकृतिरिति गम्यते साक्षात्ताभवात्तानात् २२ प्रकृतित्वस्यायमभुचयः इत्यप्रकृतिरेत्ययत्का रागसात्ता दृष्टेवका
 रागमुपादायोमो प्रत्यप्रभवाचा म्नायेते सर्वादिदवास्मानिभूताया काका देवसमभुचये आकाशं प्रत्यसंयतीति यदियस्मा
 दभवतियस्मिन् प्रतीयते तत्तस्यापादाने प्रसिद्धे यथावीदियवादीनां शिष्टी सात्ता दितोपादानांतराच पादाने दरीयसाकत्वा
 देवेति प्रत्यसमयचुतोपादानादन्यत्र कार्यस्य दृष्टः आत्मकृतेः परिरामात् १ इत्यप्रकृतिरेत्ययत्कारणं प्रप्रक्रियायान्ता
 त्तानेस्यमक्रुतेत्यात्मनः कर्मत्वकर्तृत्वच दर्शयति ज्ञाताजमिति कर्मत्वेत्ययमक्रुतेति कर्तृत्वे ॥

४३

सिकाभवतीति सूत्रार्थः संज्ञायाः फलमपादाने पंचमीति सूत्रात् प्रकृतौ पंचमीत्यर्थः एवं ज्ञातः प्रकृतित्वसाध्यकर्तृत्वापयति निमित्त
 तत्वमिति सूत्रस्यातिरिक्तकत्रेष्टिये प्रकृतित्वान्तरादिदवास्मानिभूताया काका देवसमभुचये आकाशं प्रत्यसंयतीति तद्वत्कर्तृत्वेत्ययमपि
 सूत्रेणोपयति अधिष्टातीति एकस्याभ्योरूपकारणत्वमवेदुमिति सूत्रचतस्रयेन साधयति कुतश्चुपादिना अधिष्टात्तद्विसेकत्वात् अ
 भ्युचयादन्तर आकाशा देवसंभवात्तु चित्तमुपादानांतरा नपादानमयदसात्ता दितिवदेन सूत्रकारोदयोप नोति योजनो आत्मसंवे

प्रतिपत्तिविषयत्वप्रपत्तेरिति संवेद्यमानः कृतिरिति विषयत्वप्रपत्तेरिति संवेद्यमानः

120

शरीरक श्री नंसाभा.
७ प्रश्नका चतुर्थपादः
प. ५३३